हिन्दोस्तां हमारा

दूसरा भाग

सम्पादक
जां निसार अख़्तर

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट
राजमहल, ग्राउन्ड फ़्लोर
८४ वीर नरीमान रोड,
चर्च गेट, बम्बई-४०००२०

विषय-सूची

भूमिका . जां निसार अख्तर १–३४

पहला अध्याय (१८५७ से पहले)

वीरानिए-आलम	शाह जहूरुद्दीन हातिम	३७
शहर-आशोब	शाह ज़हूरुद्दीन हातिम	३८
शिकायते-जमाना	अशरफअली खा फुगां	४०
आईने-दावरी	मिर्ज़ा महम्मद रफी सौदा	४०
वीरानिए-शाहजहानाबाद	मिर्जा महम्मद रफी सौदा	४२
शहर-आशोब	मीर तकी 'मीर'	४४
शहर-आशोब	शाह कमालुद्दीन 'कमाल'	४७
शहर-आशोब	गुलाम हमदानी 'मुस्हफी'	५१
दरबयाने-इंकिलाबे-जमाना	शेख़ गुलाम अली रासिख़	५२
रुख्सत अय अह्ले-वतन	वाजिदअली शाह अख्तर	५६
हुज्ने-अख्तर	वाजिदअली शाह अख्तर	५८
मरसिय ए-लखनऊ	मिर्जा महम्मद रज़ा बर्क	५९

दूसरा अध्याय
जंगे-आज़ादी और देहली-ए-मरहूम

नौहः-ए-गम	बहादुरशाह ज़फर	६५
बयाने-गम	बहादुरशाह ज़फर	६७
फत्हे-अफवाजे-शर्क	मुहम्मद हुसैन आज़ाद	६८
दागे-हिज्रा	मिर्जा असदुल्ला खा 'गालिब'	७०
फ़ुगाने-देहली	मुहम्मद सदरुद्दीन खां 'आजुर्दा'	७१

मर्सिय ए-देहली	ज़हीरुद्दीन ज़हीर 'देहलवी'	७२
हंगाम-ए-दारो-गीर	ज़हीरुद्दीन ज़हीर 'देहलवी'	७४
इंकिलाबे-देहली	मिर्ज़ा कुर्बान अली वेग सालिक	७५
नौह ए-देहली	मुहम्मद अली तिश्ना	७६
देहली-ओ-लखनऊ	हकीम आगा जान ऐश	७९
मसाइबे-कैद	मुनीर शिकोहावादी	८०
दागे-गम	मुनीर शिकोहावादी	८२
मरसिय ए-देहली	मिर्ज़ा दाग	८३
मरसिय ए-देहली	मीर मेहदी मजरूह	८६
देहली-ए-मरहूम	ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली	८७

तीसरा अध्याय

पहला भाग

हुव्वे-वतन और एहसासे-गुलामी

हुव्वे-वतन	मुहम्मद हुसैन आज़ाद	९१
हुव्वे-वतन	ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली	९२
आज़ादी की कद्र	ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली	९५
इंग्लिस्तान की आज़ादी और हिन्दोस्तान की गुलामी	ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली	९६
अच्छा ज़माना आनेवाला है	इस्माईल मेरठी	९६
कोराना अंग्रेज़परस्ती	इस्माईल मेरठी	९८
जल्व ए-देहली दरवार	अकवर इलाहावादी	९९
ब्रिटिश राज	अकवर इलाहावादी	१०१
देहली दरवार	अकवर इलाहावादी	१०२
दुआए-उम्मीद	डा० मुहम्मद इकवाल	१०३

दूसरा भाग

मुसलमानो में अंग्रेज़-दुश्मनी का जज्वा

शहर आशोबे-इस्लाम	शिवली नोमानी	१०७
हज़रत रिसालत मआव मे	डा० मुहम्मद इकवाल	१०९
वेदारि ए-इस्लाम	हसरत मोहानी	१११
तकाज़ाए-गैरत	हसरत मोहानी	११२
चल बल्कान चल	सैयद हाशमी फरीदावादी	११३

कार फर्माई | सैयद हाशमी फ़रीदाबादी | ११४
इकिलाबे-चर्खे-गर्दूं | शिबली नोमानी | ११५
मारक ए-कानपूर | शिबली नोमानी | ११७
हम हैं मज़लूम | शिबली नोमानी | ११८

चौथा अध्याय

पहला भाग

(१९१४ से सन् १९२१ तक)

पहली जगे-अज़ीम और उसके नताइज

जंगे-यूरोप और हिन्दोस्तानी | शिबली नोमानी | १२१
आवाज:ए-कौम | ब्रजनारायण चकबस्त | १२२
वतन का राग | ब्रजनारायण चकबस्त | १२४
माटेग्यू रिफार्म | हसरत मोहानी | १२५
मज़ालिमे-पंजाब | जफर अली खां | १२६
शोल ए-फानूसे-हिन्द | ज़फर अली ख़ाँ | १२७
शिकव-ए-सैयाद | तिलोकचन्द महरूम | १२८
जलियान वाला बाग | डा० मुहम्मद इकबाल | १३१
इकिलाबे-जमाना | अकबर इलाहाबादी | १३१
रद्दे-सहर | मुहम्मद अली जौहर | १३३
तस्वीरे-दर्द | डा० मुहम्मद इकबाल | १३४
अंग्रेजी ज़िहन की तेजी | अहमक फफूदवी | १३७
अहदे-फिरग | अहमक फफूदवी | १३८

दूसरा भाग

तहरीके-ख़िलाफ़त और तर्के-मवालात

दावते-अमल | ज़फ़रअली खा | १४५
एलाने-जग | जफरअली खा | १४६
इंकिलाब् | जफरअली खा | १४७
जौरे-गुलामाने-वक्त | हसरत मोहानी | १४८
दावते-अमल | मीर गुलाम भीक नैरंग | १४९
काम करना है यही | मुहम्मदअली जौहर | १५१

...म-भूनावा बार
आनिया बरबाद
तूगरे-सितम
बेदारिए-हिन्द
वाते-बेदारी
ज़ुम्हिय ए-यूरोप
बन जाये निशेमन तो
नाल:ए-अन्दलीब
पैगामे-अमल
तरान ए-जिहाद

मुहम्मदअली जौहर १५२
मुहम्मदअली जौहर १५३
मुहम्मदअली जौहर १५४
लाला लालचन्द फलक १५५
मुहम्मद हुसैन महवी लखनवी १५६
आगा हश्र काश्मीरी १५७
इकबाल अहमद सुहेल १५६
महमूद इसराईली १६१
सागर निजामी १६३
एहसान दानिश १६४

पांचवां अध्याय

पहला भाग

सन् १९२१ से सन् १९३५ तक; सिविल नाफ़रमानी की तहरीक और नया कानून

मुकाबमिते-मज्हूल — तिलोकचन्द महरूम १६९
स्वदेशी तहरीक — तिलोकचन्द महरूम १७०
स्वराज — ज़फरअली खां १७१
सायमन कमीशन — ज़फरअली खां १७२
सायमन कमीशन — जोश मलीहाबादी १७३
सर मैलकम हेली के मल्फूज़ात — ज़फरअली खां १७४
फूल बरसाओ — तिलोकचन्द महरूम १७५
हिन्दी नौजवानो से — तिलोकचन्द महरूम १७७
...ारदोली — रविश सिद्दीकी १७८
...ामारे-इकिलाब — जोश मलीहाबादी १८०
...नस्ते-ज़िन्दा का ख्वाब — जोश मलीहाबादी १८१
...ज़ादी — हफीज़ जालन्धरी १८२
...ए-जरस — जमील मज़हरी १८५
...ब्याने-वतन का नारा — आनन्दनारायण मुल्ला १८८
...-वतन — अज़ाद असारी १९०
...इत्तिहाद — जाफरअली खां असर १९३
...-शबाब — जोश मलीहाबादी १९८

नाकूसे-बेदारी — एहसान दानिश २०१
हयात — अली जव्वाद जैदी २०३

दूसरा भाग

अवामी बेदारी की लहर

सरमाया-ओ-मेहनत — डा० मुहम्मद इकबाल २०६
अल अर्ज़ो लिल्लाह — डा० मुहम्मद इकबाल २१०
सल्तनत — डा० मुहम्मद इकबाल २११
लेनिन (खुदा के हुज़ूर मे) — डा० मुहम्मद इकबाल २१२
फरमाने-खुदा — डा० मुहम्मद इकबाल २१५
ज़वाले-जहाबानी — जोश मलीहाबादी २१६
किसान — जोश मलीहाबादी २१७
निजामे-नौ — जोश मलीहाबादी २१६
तुलूए-खुर्शीदे-नौ — हामिदुल्ला अफसर मेरठी २२०
नये दौर का फरमान — शोरिश काश्मीरी २२१
ज़रा सब्र — शोरिश काश्मीरी २२३

छठा अध्याय

पहला भाग

(सन् १९३५ से १९४६ तक)

सिविल नाफ़रमानी की तहरीक़ : नया क़ानून और उसके बाद

इडिया ऐक्ट सन् ३५ — ज़फरअली खा २२७
आईने-जदीद — अहमक फफूदवी २२७
विफाक — जोश मलीहाबादी २२९
नवंदे-आजादि-ए-हिन्द — ज़फरअली खा २३०
जमाने का चैलेंज — फिराक गोरखपुरी २३१
नौजवानो से खिताब — शोरिश काश्मीरी २३३
भारत माता — जमील मजहरी २३४
वफादाराने-अजली का पैगाम शहशाहे-हिन्दोस्ता के नाम — जोश मलीहाबादी २४१

जिन्दगी की ललकार	फिराक गोरखपुरी	२४४
बेदारिए-मश्रिक	रविश सिद्दीकी	२४५
जमीदार और किसान	इकबाल अहमद सुहेल	२४८
मजदूर की बासुरी	जमील मजहरी	२५१
इकिलाब	असारुलहक मजाज	२५३
नौजवानो मे	असारुलहक मजाज़	२५४
साकी	जा निसार अख्तर	२५५
जहाने-नौ	मखदूम मोहिउद्दीन	२५६
मश्रिक	मखदूम मोहिउद्दीन	२५६
तमल्ली	फैज़ अहमद फैज	२५७
अय काश	मोईन अहसन जज्बी	२५८
आज़ादी	अली सरदार जाफरी	२५६
वक्त का तराना	अली सरदार जाफरी	२६१
एक सवाल	अली सरदार जाफरी	२६३
शफके-सुर्ख	अहमद नदीम कासमी	२६४
नयी दुनिया	मसूद अख्तर जमाल	२६५
किसानो का गीत	मसूद अख्तर जमाल	२६८
सात रग	सलाम मछली शहरी	२६६
तुलूए इश्तिराकियत	साहिर लुधियानवी	२७०

दूसरा भाग

दूसरी जगे-अज़ीम

ईस्ट इडिया कम्पनी के फर्जन्दो से खिताब	जोश मलीहाबादी	२७५
अंधेरी रात का मुसाफिर	असारुल हक मजाज़	२७६
अंधेरा	मखदूम मोहिउद्दीन	२८१
जग और इकिलाब	सरदार जाफरी	२८२
वतन आजाद करने के लिए	अल्ताफ मुशहदी	२८४
सवालिया निशान	अख्तरुल ईमान	२८५
लम्ह ए- गनीमत	साहिर लुधियानवी	२८६
सवेरा	जा निसार अख्तर	२८६

तीसरा भाग

अगस्त सन् १९४२ की बग़ावत और उसके बाद

अय हमरहाने-काफला	जा निसार अख्तर	२९१
अभी नही	जा निसार अख्तर	२९२
कैदी की लाश	अली जव्वाद जैदी	२९३
कुछ देर जरा सो लेने दो	शमीम किरहानी	२९५
किला अहमदनगर	कैफी आजमी	२९७
बिदेसी मेहमान से	अस्रारुल हक मजाज़	२९८
मौसम के इशारे	जमील मजहरी	२९९
ख्वाबे-सहर	अस्रारुल हक मजाज	३०१
गाधी-जिनाह मुलाकात पर	जा निसार अख्तर	३०२
किरन (गाधी-जिनाह मुलाकात)	कैफी आज़मी	३०३
समन्दर पार के फरिश्ताहाए-रहमत से	अहमद नदीम कासमी	३०५
पाकिस्तान चाहने वालो से	शमीम किरहानी	३०६
मंज़िल करीबतर है	सीमाब अकबराबादी	३०७
आज़ादी	फिराक गोरखपुरी	३०८
आज़ादिए-वतन	मखदूम मोहिउद्दीन	३१०
बोल	फैज़ अहमद फैज	३११
कहते-बगाल	तिलोकचन्द महरूम	३१२
कहते-बगाल	जिगर मुरादाबादी	३१३
कहते-कलकत्ता	आनन्दनारायण मुल्ला	३१४
एक सवाल	अख्तरुल ईमान	३१६
भूका है बगाल	वामिक जौनपुरी	३१७
कलकत्ते के बाज़ारो मे	साहिर लुधियानवी	३१९
वजारती वफद का फरेब	जोश मलीहाबादी	३२०
एहसासे-कामरा	मसूद अख्तर जमाल	३२१
आखरी मर्हला	कैफी आज़मी	३२३
आजाद हिन्द फौज	जगन्नाथ आजाद	३२४
आजाद हिन्द फौज	तिलोकचन्द महरूम	३२५
जय हिन्द	तिलोकचन्द महरूम	३२७
आजादी	तिलोकचन्द महरूम	३२८

सुभाषचन्द्र बोस :

बहादुरशाह जफर के मजार पर — जगन्नाथ आज़ाद ३२९

यह किसका लहू है ? — साहिर लुधियानवी ३३१

नजरे-अकीदत — इकबाल अहमद सुहेल ३३२

बगावत — सिकन्दर अली वज्द ३३४

सातवां अध्याय

आजादी का एलान : सन् १९४७

जश्ने- आज़ादी — जा निसार अख्तर ३३९

यौमे-आजादी — सिराज लखनवी ३४०

मुबारकबादे-आज़ादी — इकबाल अहमद सुहेल ३४१

आ ही गया — आनन्दनारायण मुल्ला ३४४

अय सुब्हे-वतन — सागर निजामी ३४५

एलाने-आजादी — अमीन सलोनवी ३४६

जश्ने-आजादी — असरारुल हक मजाज़ ३४७

सुब्हे-आजादी का तुलूअ — याह्या आजमी ३४९

हमारी कहानी — कमाल अहमद सिद्दीकी ३५०

आफ्ताबे ताजा — सिकन्दर अली वज्द ३५२

आठवां अध्याय

आज़ादी के बाद से आज़ादी की रजत जयन्ती तक

पाच सौ बरस तवील रात — कैसरुल जाफरी ३५७

गोवा के सितम शिआर — तिलोकचन्द महरूम ३५८

बादिए-गुल — रिफअत सरोश ३५९

मादरे-हिन्द मे — नज़ीर बनारसी ३६०

पयामे-सुलह — तिलोकचन्द महरूम ३६१

हम एक हैं — जा निसार अख्तर ३६३

बुतशिकनी — कैफी आज़मी ३६४

लहू का टीका — आनन्दनारायण मुल्ला ३६५

हिमाला की जानिब चलो — सैयद हुर्मतुल इकराम ३६७

फूल जख्मी हैं — अजमल अजमली ३६८

चीन की पैमाशिकनी के नाम	मजरूह सुल्तानपुरी	३६९
शाखे-गुल ही नही	नरेशकुमार शाद	३७०
दोस्तो आओ सूए-हिमाला चलें	जफर गोरखपुरी	३७१
मेरे आजाद वतन	काज़ी सलाम	३७३
नागुज़ीर	एजाज सिद्दीकी	३७४
फर्ज	कैफी आजमी	३७५
कौन दुश्मन है	सरदार जाफरी	३७६
सुब्हे-फर्दा	सरदार जाफरी	३७९
ताशकन्द की शाम	सरदार जाफरी	३८१
रूहे-ताशकन्द	रिफअत सरोश	३८२
अहबावे-पाकिस्तान के नाम	जगन्नाथ आजाद	३८४
बगला देश	कैफी आज़मी	३८७
फत्हे-बगला	जा निसार अख्तर	३८८
बगला देश	मैकश अकबराबादी	३९०
बगला देश की कहानी		
बगला देश की ज़बानी	जिया सरहदी	३९१
रोशनी (शिमला कान्फ्रेंस के मौके पर)	यूसुफ नाज़िम	३९३
शिमला समझौता	जमील ताबा	३९४
आज़ादी की पच्चीसवी साल गिरह	सागर निज़ामी	३९६
जश्ने-सीमी पर	जा निसार अख्तर	३९९
बहारे-आज़ादी	नुशूर वाहिदी	४०१
दौलते-सीमी	शमीम किर्हानी	४०३
शजरे-नूर	फज़ा इब्ने-फैज़ी	४०४
मज़िल-ब-मजिल	रिफअत सरोश	४०७
जश्ने-सीमी	वकार वासकी	४०८
अहद	ज़किया सुल्ताना नैयर	४०९
हमारी तारीख	जा निसार अख्तर	४११
नदी की आवाज़	शमीम किर्हानी	४१३
उरूसे यकजिहती	रिफअत सरोश	४१५
नफरतो की सिपर	सरदार जाफरी	४१७
बहरूपनी	कैफी आजमी	४१७
दिल के अन्दर जो रावण है	असरार अकबराबादी	४२०
मुस्तक्बिल के ख्वाब	खुर्शीद अहमद जामी	४२२
मुस्तक़्बिल के ख्वाब	हुर्मतुल इकराम	४२३

इतिका का सफर — हुर्मतुल इकराम ४२४
मुस्तक्बिल के ख्वाब — शमीम क़िर्हानी ४२५
पयाम — नाज़िश परतावगढी ४२७
वेदारिए-हिन्द — खलीलुर्रहमान आजमी ४२८

जमीमा (परिशिष्ट)

हमारे क़ौमी रहनुमा

सुल्तान शहीद — सीमाव अकवरावादी ४३३
टीपू सुल्तान — इज्तवा रिज़वी ४३४
टीपू की आवाज़ — आले-अहमद सुरूर ४३५
चाद सुल्ताना — अफसर सीमावी ४३६
वहादुर शाह जफर — अर्श मलसियानी ४३८
लक्ष्मीवाई — मख्मूर जालन्धरी ४३९
झासी की रानी — राही मासूम रज़ा ४४२
पयामे-वफा — व्रजनाराण चकवस्त ४५०
वाल गगाधर तिलक — व्रजनारायण चकवस्त ४५१
तिलक — हसरत मोहानी ४५३
गोपाल कृष्ण गोखले — व्रजनारायण चकवस्त ४५४
शहीद भगतसिंह — तिलोकचन्द महरूम ४५६
देख अय हिलाले-शाम — तिलोकचन्द महरूम ४५७
नौह ए-सी० आर० दास — तिलोकचन्द महरूम ४५९
अश्के-खू — तिलोकचन्द महरूम ४६२
पयामे-हुरियत — तिलोकचन्द महरूम ४६७
मोतीलाल नेहरू — आनन्दनारायण मुल्ला ४६८
आह मोतीलाल — तिलोकचन्द महरूम ४७०
मोतीलाल नेहरू — आले-अहमद सुरूर ४७१
रहलते-महम्मद अली — जोश मलीहावादी ४७२
मज़ारे-रहनुमा — असारुल हक मजाज़ ४७४
नेताजी — तिलोकचन्द महरूम ४७४
सुभापचन्द्र वोस — दर्शनसिंह दुग्गल ४७५
गाधीजी — असर लखनवी ४७६
महात्मा गाधी का कत्ल — आनन्दनारायण मुल्ला ४७८
गाधी — हुर्मतुल इकराम ४८१

सानिहा अस्नारुल हक मजाज ४८२
रौशनी का सफ़ीर शमीम किरहानी ४८४
एम० एन० राय गोपाल मित्तल ४८५
सरोजनी नाइडू कैफी आजमी ४८६
यादे-किदवाई तिलोकचन्द महरूम ४८७
मौलाना अबुलकलाम आजाद परवेज शाहिदी ४८८
बूढा माझी आनन्दनारायण मुल्ला ४८९
दिलतग न हो रविश सिद्दीकी ४९३
जवाहरलाल नेहरू साहिर लुधियानवी ४९४
नेहरू मखदूम मोहिउद्दीन ४९६
मसीहा कैफी आजमी ४९६
ख्वाबो का मसीहा एजाज सिद्दीकी ४९८
सुर्ख गुलाबो ने कहा सलाम मछली शहरी ५०१
जवाहर ज्योति रिफअत सरोश ५०२
नेहरू की वसीयत अख्तर अंसारी ५०३
सन्दल-ओ-गुलाव की राख सरदार जाफरी ५०५
अमानते-गम सरदार जाफरी ५०६
जाकिर हुसैन कुवर महेन्द्रसिंह बेदी सहर ५०८
रौशन चेहरे फ़सीह अकमल कादरी ५०९

भूमिका

'हिन्दोस्ता हमारा' के इस दूसरे भाग मे हमने उर्दू की उन नज्मो का एक संकलन दिया है जो शुरू से लेकर आज तक के राजनैतिक आन्दोलनो से सबध रखती हैं। यह सच है कि उर्दू शाइरी ने हिन्दुस्तान के राजनैतिक इतिहास को पूर्ण रूप से अपने सीने मे सुरक्षित कर रखा है। साथ ही, यह बात भी याद रखने योग्य है कि उर्दू शाइरी ने केवल राजनैतिक घटनाओ और स्थितियो के चित्र ही हमारे सामने पेश नही किये बल्कि हर युग के सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलनो को बढावा देने मे उसका जबरदस्त हाथ रहा है। प्रोफेसर आले अहमद सुरूर ने अपने एक लेख मे लिखा है कि साहित्यिक और शाइर सामयिक राजनीति मे बह सकता है मगर वह राजनैतिक आन्दोलनो के तूफान मे तिनके की तरह नही बह जाता। वह दरियाओ का रुख मोडता और मौजो को अपने काबू मे लाता है—वह तूफान और इकिलाब के लिए वातावरण तैयार करता है। वह भूतकाल का अमीन, वर्तमान का इशारिया और भविष्य का पयम्बर होता है। वह दिलो की गहराई मे उतरता है जहा आरजूए मचलती और करवट लेती है और इन अधेरी वादियो मे एक बडे उद्देश्य की शमा जलाता है। अतएव हम देखते है कि जैसे-जैसे जमाने के साथ सामाजिक और राजनैतिक चेतना बढती गयी, उर्दू शाइरी उससे अधिक शक्ति प्राप्त करती गयी। इस पूरी सम्पत्ति मे हमको विभिन्न मानसिक स्तरो पर नज्मे मिलेंगी। वह नज्मे, जो अंग्रेजी सरकार के खिलाफ एलाने जग की हैसियत रखती है, इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हैं कि उनके कहने वालो ने जिस साहस और बागियाना अमल का इज्हार किया है वह अनुकरण-मात्र न था बल्कि उनमे कुछ ऐसी ही लगन थी कि वह हर खतरा मोल लेने के लिए तैयार हो गये थे। आजादी

की वह भावना, जो फासी के फन्दे को तुच्छ समझती है, उनमे वर्तमान थी। हमारे एक समालोचक ने बहुत खूबसूरत बात कही है कि "सियासी शाइरी और इबादत मे कोई खास फर्क नही।" अपनी जान पर खेलकर शेर कहना असली सियासी शाइर ही का काम है।

कभी-कभी यह सवाल उठाया जाता है कि वह अदीब और शाइर, जो प्रत्यक्ष रूप मे राजनीति मे भाग नही लेते, राजनैतिक शाइरी कैसे कर सकते हैं। लेकिन हम समझते हैं कि यह सही नही। यह बात शाइर की चेतना और विवेक से सम्बन्ध रखती है। एक समालोचक ने कहा है कि राजनैतिक विषयो या राजनैतिक व्यक्तियो के साथ शाइर का वह रिश्ता अधिकतर स्थापित नही होता जो शाइरी की बुनियाद होता है। शायद उसके कहने का यही मतलब है कि ऐसे शाइरो को, जो व्यावहारिक राजनीति मे नही है, राजनैतिक विषयो पर कविता नही कहनी चाहिए। शम्सुर्रहमान फारूकी ने अपने लेख 'हिन्दुस्तान की जगे आजादी मे उर्दू शाइरो का हिस्सा' मे इस बात का जवाब दिया है। वह कहते हैं कि "राजनैतिक शाइरी के अच्छे या बुरे होने का आधार शाइर के निजी चरित्र या उसके शाइराना व्यक्तित्व या उसकी सियासी सरगर्मियो पर नही बल्कि उस शक्ति पर है जो उसके शाइराना व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। मुम्किन है कि राजनैतिक और जन आन्दोलनो और व्यक्तित्वो के साथ निजी सम्पर्क स्थापित करने के बावजूद कोई शाइर उन्हे अपनी शाइरी का विषय बनाने मे कामयाब न हो, और मुम्किन है कि कोई शाइर तूफान से दूर रहकर भी अपने काल्पनिक अनुभव की शक्ति और आनन्द के बल पर तूफान के वेग को शेर का रूप प्रदान कर दे।" इस सम्बन्ध मे एक और सवाल भी हमारे सामने आता है कि क्या इस तरह की शाइरी राजनैतिक प्रचार मात्र होकर नही रह जाती? यह सवाल बुनियादी तौर पर उस हकीकतनिगारी के अन्तर्गत आता है जो जन-साधारण को राजनैतिक और सौंदर्यशास्त्र की शिक्षा देने का दावा करती है। हम समझते हैं कि जन-साधारण हर उस साहित्य को रद्द कर देते है जो राजनैतिक सूझ-बूझ तो दे, लेकिन सौंदर्य-भावना को तृप्त न कर सके। साथ ही वह उस सौंदर्यशास्त्रीय या विशुद्ध कलात्मक स्तर को भी महत्त्व नही देते जो अदब या शाइरी को उनके जीवन से दूर ले जाने वाला हो। शाइरी, चाहे वह राजनैतिक विषयो पर ही क्यो न हो, जीवन-चेतना और जीवन-सौंदर्य को उजालने वाली होनी चाहिए। हम यह दावा तो नही करते कि उर्दू की सारी सियासी शाइरी इस स्तर पर पूरी उतरती है, लेकिन एक बड़ा हिस्सा ऐसा जरूर है जो किसी भी प्रकार से नजरअन्दाज नही किया

जा सकता। जाहिर है कि उर्दू के प्रारभिक दौर की शाइरी मे हम राष्ट्रीयता या देशभक्ति का वह तसव्वुर तो नही पा सकते जो वास्तव मे यूरोप की देन है और अट्ठारहवी सदी की पैदावार है। उस दौर मे जो कुछ लिखा गया अपने ढग से लिखा गया। प्राचीन शाइरो ने जो शहर-आशोब लिखे हैं उनमे अपने युग के चित्रण पर ही सन्तोष नही किया गया वल्कि कही-कही आलोचनात्मक दृष्टि भी डाली है। जैसे-जैसे उर्दू शाइरी आगे कदम बढाती गयी उसमे वह मूल्य पैदा होते गये जो कल्पना और कला दोनो दृष्टि से उच्चस्तरीय शाइरी को जन्म देते हैं। यही नही, बल्कि सरदार जाफरी के कथनानुसार—"उर्दू वालो ने आजादी के सघर्ष को राष्ट्रीय परिधि तक सीमित नही रखा। उसके दायरे अन्तर्राष्ट्रीयता से मिलाये और इस प्रकार एक ज्यादा जानदार और व्यापी चेतना को आम किया।"

हम उर्दू शाइरी पर यकीनन गर्व कर सकते हैं जो सही अर्थो मे हिन्दुस्तानी राजनैतिक आन्दोलनो का एक विश्वसनीय ऐतिहासिक भडार भी है और कला की कसौटी पर भी सच्चा उतरता है। आइए, इस भाग के हर अध्याय पर एक नज़र डाली जाये ताकि हर युग के राजनैतिक आन्दोलनो के साथ-साथ उर्दू शाइरी मे राजनैतिक चेतना और जमालियाती मूल्यो की तरक़्की और रफ्तार को हम पूरी तरह समझ सकें।

पहला अध्याय

हमने पहले अध्याय मे उन शहर-आशोबो का सकलन दिया है जो १८५७ से पहले लिखे गये है। औरगज़ेब की मृत्यु (सन् १७०७ ई०) के बाद ही से मुगल साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा था। उर्दू शाइरी ने इसी युग से सामाजिक और राजनैतिक स्थिति को अपने अन्दर समोना शुरू कर दिया था। अतएव इसी के फलस्वरूप शाइरी की एक प्रकार, जिसे शहर-आशोब का नाम दिया गया, अट्ठारहवी सदी के आरम्भ मे पैदा हुई जिसमे सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक हालात लिखे जाने लगे। हर तरफ पतन और दुर्दशा के लक्षण दिखाई देने लगे थे और जन-साधारण से लेकर जन-विशेप पर जो वरबादी मडराने लगी थी उसके चित्रण के लिए यह सिंफ (प्रकार) सुरक्षित हो गयी। शेख़ जहूरुद्दीन हातिम (मृत्यु १७८१ ई०), अशरफ अली फुगा (मृत्यु १७७२ ई०), मिर्ज़ा महम्मद रफी सौदा (मृत्यु १७८० ई०), मीर तकी मीर (मृत्यु १८१० ई०) के लिखे हुए शहर-आशोवो के उद्धरण इस अध्याय मे

शामिल है। इन शहर-आशोवो मे एक तरफ सरकारी अधिकारियो की अकर्मण्यता का जिक्र है तो दूसरी तरफ राजनैतिक पतन, रिश्वत की गरमबाजारी, राजघराने की दुर्दशा, फौजी लश्करो की बरबादी, पेशावरो की परेशानहाली, कलाकारो की नाकदरी का विस्तृत वर्णन हमे मिलता है। यही नही, बल्कि डा० नईम अहमद के कथनानुसार—"व्यक्तिगत शासन के इस युग मे भी हमारे शाइरो मे इतना नैतिक साहस था कि वह बादशाह की दुर्बलताओ पर भी आलोचना कर सकते थे।" 'कायम' के शहर-आशोवो मे जहांदारशाह, आलमगीर द्वितीय और शाह आलम द्वितीय पर अयोग्यता का इल्जाम है। यह सच है कि औरगजेब के बाद मुगल साम्राज्य हर तरह अपना वकार खोने लगा। उस समय अग्रेज व्यापारियो के षड्यत्रो और दोरुखी नीति से देश मे अराजकता फैलती गयी। मुहम्मदशाह के जमाने मे नादिरशाह का हमला (सन् १७३६ ई०) एक और चोट साबित हुआ। नादिरशाह के इस हमले और उसके तख्ते-ताऊस ले जाने पर एक प्राचीन शेर हमे अब्दुल हई ताबा के कलाम मे मिलता है—

दाग हो हाथ से नादिर के मिरा दिल ताबा
नही मकदूर कि जा छीन लू तख्ते - ताऊस

शाह आलम के अहद तक पहुचते-पहुचते देश की दुर्दशा और अराजकता अपनी चरम सीमा तक पहुच गयी।

१८५७ ई० हिन्दुस्तान की सियासी तारीख मे वह साल है जब बगाल के नवाब सिराजुद्दौला से अग्रेजो का मुकाबला पलासी के युद्ध मे हुआ और नवाब पराजित हो गया। यह पराजय दरअसल अमीनचद की साजिश से हुई जिसके द्वारा अग्रेजो ने नवाब के फौजी कमाडर मीर जाफर उसके खजाची राय दुर्लाब और जगत सेठ को, जो बगाल का समृद्ध साहूकार था, अपने साथ मिला लिया था। नवाब सिराजुद्दौला को अग्रेजो ने मीर जाफर के बेटे मीरन के हाथ से शहीद करवा डाला। इस मारके से दरअसल अग्रेजी शासन की शुरुआत हुई। उर्दू गजल मे जो प्राचीनतम सियासी शेर मिलते है उनमे राजा रामनारायन 'मौजू' का कहा हुआ यह शेर भी है जो सिराजुद्दौला की शहादत पर उन्होने कहा था—

गजाला तुम तो वाकिफ हो, कहो मजनू के मरने की
दिवाना मर गया आखिर को वीराने पे क्या गुजरी

पलासी के युद्ध से भी अधिक जिस युद्ध के नतीजे मे हिन्दुस्तान गुलामी

की जजीरो में जकडा गया, वह बक्सर की लडाई है। अधिकाश इतिहासकार जिनमे ब्रूम सर जेम्ज़ स्टीफन (Sir Broome James Stephen) और रेम्जे म्यूर (Ramsey Muir) भी शामिल है, पलासी के युद्ध से अधिक बक्सर की लड़ाई (अक्तूबर १७६४ ई०) को महत्त्व देते है। कारण स्पष्ट है क्योकि इस लडाई मे शाह आलम, मीर कासिम और अवध के नवाव वजीर को एक साथ अग्रेजो से पराजित होना पडा। अतएव इसके वाद अंग्रेजो का प्रभुत्व हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया।

सन् १७७३ ई० मे जव ईस्ट इडिया कम्पनी ब्रिटिश पार्लियामेट के फरमान के अन्तर्गत आ गयी तो क्लाइव की जगह वारेन हेस्टिग्ज को पहले बगाल का गवर्नर और बाद मे गवर्नर-जनरल नियुक्त कर दिया गया। इसी के ज़माने मे मैसूर के नवाब हैदरअली को अग्रेजो से जूझना पडा। सन् १७८२ ई० मे हैदरअली की मृत्यु के वाद उसके वेटे टीपू सुल्तान से अंग्रेजो की लगातार लडाइया होती रही। यहाँ तक कि लार्ड वेलेज्ली के अहद मे टीपू सुल्तान को मैसूर की चौथी लड़ाई (सन् १७९९ ई०) मे अग्रेजो से न केवल पराजित होना पड़ा बल्कि टीपू सुल्तान एक वहादुर जनरल की तरह सरगापट्टम के किले के दरवाज़े पर लडता हुआ शहीद हो गया। उर्दू शाइरी मे टीपू सुल्तान पर कई नज्मे मौजूद है जिनमे से कुछ नज्मे हमने इस किताव के नवे अध्याय 'हमारे कौमी रहनुमा' मे शामिल की है। लेकिन ये सव बहुत वाद की कही हुई हैं। लतीफी की नज्म जो हमे पूर्णरूप मे प्राप्त नही हो सकी और जो इस संकलन मे सम्मिलित नहीं है, उसके चन्द शेर देखिये—

अय हिन्द के सवादे जुनूबी के रहनवर्द
मैसूर का फसाना-ए-ख़ूनी न हमसे पूछ
ख़ुद बन गया कमान का जो आख़री ख़दग
अज़्मे सतेजो मार के उसके अलम से पूछ
वर्क उनमे वेकरार है किस इत्तेहाव की
यह ज़र्राहाए ख़ाके सरगापटम से पूछ

वेलेज्ली ही के शासन काल मे अग्रेजो ने लखनऊ, पूना, हैदरावाद और मैसूर मे अपने कदम अच्छी तरह जमा लिये थे।

अवध का स्वतत्र अस्तित्व मुगल साम्राज्य के पतन के दौर से शुरू हुआ था लेकिन इसके बावजूद उन्हे दिल्ली सम्राट का वजीर माना जाता था। लार्ड हेस्टिग्ज के जमाने मे अवध के नवाब को 'शाह' का खिताव दिया गया और मौलाना सैयद मुहम्मद मिया के कथनानुसार, "वजारत से शाहियत ज्यादा

गुनामाना साबित हुई।" आसिफुद्दौला का देहांत सन् १७६७ ई० मे हो चुका था। उनके बाद वजीर अली की तख्तनशीनी हुई लेकिन अंग्रेजो ने सआदत अली खा की हिमायत की और वजीर अली को उतारकर गद्दी उनके सुपुर्द कर दी। शाह कमालुद्दीन 'कमाल' का जो शहर-आशोब हमने इस अध्याय मे शामिल किया है, वह इन्ही हालात की पृष्ठभूमि मे कहा गया है। 'जुरअत' का यह मशहूर कता भी उसी दौर की यादगार है—

समझे न अमीर उनकी अहले तौकीर
अंग्रेजो के हाथ से कफस मे हैं असीर
जो कुछ वह पढायें वही मुह से बोलें
बंगाले की मैना हैं ये पूरब के अमीर

मुस्हफी का शहर-आशोब लखनऊ आने से पहले का है—अतएव इसमे शाह आलम द्वितीय के अहद मे दिल्ली का अहवाल कलमबन्द है।

लार्ड हेस्टिंग्ज से लेकर लार्ड हार्डिग (१८४४ से १८४८) के शासन काल तक अंग्रेजो का प्रभुत्व बढता ही चला गया। लार्ड डलहौजी के जमाने मे बर्मा और पजाब भी व्यावहारिक रूप मे कम्पनी के राज्य मे शामिल हो गये। इस जमाने मे अवध के हालात और नाजुक हो गये। डलहौजी अवध की सल्तनत का खातमा करने पर तुला हुआ था। अतएव ७ फरवरी, १८५६ मे वाजिदअली शाह को पदच्युत करके रगून भेज दिया गया। अवध का आखिरी ताजदार वाजिदअली शाह 'अख्तर' अरबी, फारसी और उर्दू का विद्वान् था और शाइरी मे बेहद लगाव रखता था (वाजिदअली शाह भाषा और सस्कृत मे भी शेर कहता था और उसमे बजाय अख्तर के अपना तखल्लुस अखतर लिखता था।) इस अध्याय मे हमने उसकी वह नज्म शामिल की है जो उसने लखनऊ से विदा लेते वक्त कही थी। दूसरे कुछ शेर मस्नवी 'हुज्ने अख्तर' से लिये गये हैं जो उसने कैद मे लिखी थी। आखिर मे 'मर्सिय-ए-लखनऊ' के शीर्षक से मिर्जा मुहम्मद रजा बर्क का मुसद्दस है जिसका विषय लखनऊ की तबाही और वाजिदअली शाह का अपदस्थ होना है।

हमने इस अध्याय मे १८५७ से पूर्व की उर्दू शाइरी से जो शहर-आशोब दिये हैं वह नमूने के तौर पर है, वरना डा० नईम अहमद ने लगभग उस दौर के चालीस शहर-आशोबो का सकलन अपनी किताब 'शहर-आशोब' मे दिया है। यही नही, बल्कि उस दौर की उर्दू गजलो मे भी सियासी और मुल्की हालात और घटनाओ के बारे मे सैकडो शेर पाये जाते हैं। इस दृष्टिकोण से यदि गजलो पर शोध-कार्य किया जाये तो एक बहुमूल्य भडार हमारे सामने

ग्रा सकता है जो उर्दू गज़ल पर लगाये गये ग्रारोपो को धोकर रख देगा। उदाहरण के लिए हम दो शेर मुस्हफी के देते है—

लानत है ऐसे सिक्के पे ग्रौर जर चलाने में
सर कम्पनी का कट के बिका सोलह ग्राने मे

या

हिन्दुस्तान की दौलतो-हश्मत जो कुछ कि थी
काफिर फिरगियो ने बतदवीर लूट ली

बहरकैफ इस संकलन मे हमने पूर्णरूप से उर्दू नज्म ग्रौर उसके प्रकार ही को सामने रखा है।

दूसरा ग्रध्याय

इस ग्रध्याय मे सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध से सम्बन्धित नज्में हैं। प्रोफेसर वारी ने ग्रपनी किताव 'कम्पनी की हुकूमत' में १९५७ की जंगे ग्राजादी को "मिटती हुई जागीरशाही की ग्रगडाई" कहा है। यह किसी खास दृष्टिकोण से ठीक भी है। फिर भी यह बुनियादी तौर पर हिन्दुस्तानी जनता का ग्रग्रेजी शासन के विरुद्ध पहला जंगी कदम था। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने ग्रपने शासन-काल मे हिन्दुस्तान को नष्ट करने मे कसर न उठा रखी थी। उद्योग धन्धो को बुरी तरह तबाह कर डाला था। किसान ग्रौर मजदूर वर्ग हैरान ग्रौर परेशान हो चुका था। मौलाना हुसैन ग्रहमद मदनी की रचना 'नक्शे हयात' ग्रौर मौलवी तुफैल ग्रहमद की किताव 'रौशन मुस्तकविल' मे यह मसाला बडी हद तक एकत्र है। सर सैयद ने 'ग्रस्बाबे वगावते हिन्द' मे साफ तौर पर लिखा है कि "हिन्दुस्तानी ग्रमलदारियो से हिन्दुस्तानिग्रो को वहुत ग्रासूदगी थी, नौकरिया ग्रक्सर हाथ ग्राती थी, हर प्रकार की हिन्दुस्तानी चीज़ो का व्यापार था। इन ग्रमलदारियो के खराव होने से दरिद्रता ग्रौर निर्भरता बढती जा रही थी।"

यही नही, बल्कि जन-साधारण को ग्रपने धार्मिक मामलो मे ग्रग्रेज़ो का हस्तक्षेप भी खटकने लगा था ग्रौर वह दिन-प्रतिदिन ग्रधिक वेचैनी ग्रौर क्रोध का कारण बन रहा था। ग्रतएव मौलवी ज़काउल्ला ने 'तारीखे उरूजे ग्रहदे इग्लिशिया' मे मुसलमानो ग्रौर हिन्दुग्रो, दोनों की भावनाग्रो को विस्तार से बयान किया है। इसके ग्रलावा हिन्दुस्तान की इज्ज़त ग्रौर खुद्दारी १७५७ की जगे पलासी से लेकर इस वक्त तक ग्रग्रेज़ो के पैरो तले कुचली जा रही थी। वह सब मुल्की हालात भी, जिसमे ग्रंग्रेज़ो का विभिन्न सूवो ग्रौर इलाको को

ईस्ट इंडिया कम्पनी के अन्तर्गत लाना था, इस जगे आज़ादी के प्रेरक साबित हुए। यह लावा, जो सौ साल बल्कि और भी ज्यादा अरसे से हिन्दुस्तान के सीने में पक रहा था, आखिरकार फूट पडा।

जनवरी, ५७ ई० में इस बेचैनी ने दमदम में अमली सूरत इख्तियार कर ली थी और बैरेकपुर तथा बहरामपुर की रेजीमेंटें बगावत पर उतर आयी। बैरेकपुर ही की एक रेजीमेंट के फौजी मंगल पांडे ने अंग्रेज़ों पर गोली चला दी जिसे फांसी की सज़ा दे दी गयी। यही खबरें जब मेरठ पहुंची तो सिपाहियों ने उन कारतूसों को, जिन्हें दांत से काटना होता था, चलाने से इन्कार कर दिया। ६ मई को ८५ फौजियों को कैद की सजा सुनायी गयी और दूसरे ही दिन बगावत का शोला भडक उठा। बैरेकें फूंक दी गयी, जेलखाने तोडकर कैदियों को छुडा लिया गया और 'दिल्ली चलो' का नारा हर तरफ गूंजने लगा। ११ मई को इंकिलाबी फौज दिल्ली पहुंच गयी। बहादुरशाह को राज़ी कर लिया गया। दिल्ली छावनी में हिन्दुस्तानी फौजियों के तेवर भी बदल गये और उन्होंने भी बगावत का एलान कर दिया। दिल्ली में लूटमार, कत्ल और खून का बाज़ार गर्म हो गया। चार महीने तक जगे आज़ादी के मतवाले अंग्रेजी फौज का मुकाबला करते रहे जिसमें जनरल बख्त खां की बहादुरी और साहस का बहुत बडा हिस्सा था। कश्मीरी गेट से जब अंग्रेजी फौजें लाल किले की तरफ बढने लगीं तो एक-एक कदम पर खूरेज मुकाबला हुआ और लाल किले तक पहुंचने में पांच दिन लग गये। जनरल बख्त ने जब दिल्ली से निकलकर रुहेलखंड में मोर्चा जमा लिया तो बहादुरशाह ज़फर ने लाल किले से निकलकर हुमायूं के मकबरे में पनाह ली, लेकिन दूसरे ही दिन गिरफ्तार कर लिये गये। जवां बख्त के अलावा जो शहज़ादे मिले कत्ल कर दिये गये और उनके सर बहादुरशाह ज़फर के सामने लाये गये—

तीसरे फाके में इक गिरते हुए को थामने
किसके सर लाये थे तुम शाहे ज़फर के सामने
—जोश

जगे आज़ादी के शोले हिन्दुस्तान के कोने-कोने में भडक उठे थे। यद्यपि एक हद तक यह सही है कि यह आन्दोलन अनुशासन से अपरिचित था लेकिन सावरकर ने जगे आज़ादी का इतिहास सम्पादित करते हुए लिखा है कि गुप्त संगठनों ने इस आन्दोलन को परवान चढाया था। उनका कहना है कि धोंडू पंत, नाना और उनके सलाहकार अज़ीमुल्ला खां ने इस आन्दोलन का बीज बोया था। अज़ीमुल्ला खां सन् '५७ की इंकिलाबी जंग का एक बहुत

ही महत्त्वपूर्ण किरदार है। आजादी की जग छिडते ही जगह-जगह हगामे उठने लगे थे, उनमे एक महत्त्वपूर्ण स्थान कानपुर भी था। इस महाज पर अजीमुल्ला खा के कारनामे कभी नही भुलाये जा सकते। कुछ समय तक उसने तात्या टोपे से मिलकर अग्रेजो का मुकाबला किया। मुफ्ती इन्तिजामुल्ला ने अपनी किताब 'गदर के चन्द उलेमा' मे लिखा है कि वह लखनऊ भी पहुंचा था और कुछ दिन तक मौलवी अहमदुल्ला का दाहिना हाथ रहा, फिर नेपाल चला गया। अजीमुल्ला खा ने १८५६ मे 'पयामे आजादी' के नाम से एक अखबार भी निकाला था। बाद मे उसकी एक प्रति भी किसी के कब्जे मे होना उसे मौत की सजा दिलवाने के लिए काफी था। सैयद अहमदशाह मद्रासी भी इस जगे आज़ादी के बडे हीरो थे। उनके हालात मौलाना फतेह मुहम्मद 'ताइब' लखनवी ने एक मसनवी की सूरत मे नज्म भी किये थे जिसका नाम 'सवानेह अहमदी' रखा था—

जो मकतब से उनको फरागत मिली
बढा सूए शमशीर शौके दिली

फैजाबाद मे फौजियो ने जब अग्रेजो के खिलाफ हगामा बरपा किया तो उस वक्त मौलवी अहमदुल्ला, जिन्हे 'फैजाबाद का मौलवी' भी कहा जाता था, अग्रेजो की कैद मे थे। इस बागी फौज के सरदार सूबेदार दिलीपसिंह थे जो अग्रेज़ी कैदखाने की दीवारे तोडकर मौलवी अहमदुल्ला को निकाल लाये और फैजाबाद की हुकूमत अहमदुल्ला के सुपुर्द कर दी। लेकिन मौलवी अहमदुल्ला ने एलान किया कि असली बादशाह मैं नही, वाजिदअली शाह है। लखनऊ मे इस धर्मयुद्ध का आरम्भ ३० मई, १८५७ को हुआ। जुलाई मे बिरजीस कदर की गद्दीनशीनी के एलान के बाद इसमे तेजी आ गयी। उस वक्त अहमदुल्ला ही वह व्यक्ति थे जो लखनऊ मे जिहादियो का न केवल मार्ग-प्रदर्शन कर रहे थे बल्कि तलवार हाथ मे लेकर मैदान मे उतर आये थे। मार्च १८५८ मे जब लखनऊ फतह हुआ तो पहले बाडी मे और बाद मे शाहजहापुर मे उन्होने मोर्चा बनाया जो एक विचार से उनकी मुजाहिदाना सरगर्मियो का आखिरी मैदान था। मौलवी अहमदुल्ला को धोखे से शहीद किया गया। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने सेन की किताब के दीबाचे मे लिखा है कि "चन्द अपवादो को छोड़कर सब लोगो ने निजी कारणो से १८५७ के हगामे मे हिस्सा लिया और अपवादो मे दो व्यक्ति प्रमुख है। एक अहमदुल्ला और दूसरा तात्या टोपे।" अवध की लडाई मे हजरतमहल के भी शानदार कारनामे हैं। गुलाम रसूल महर ने '१८५७

के मुजाहिद' मे लिखा है कि "नाजुक से नाजुक मौके पर भी हजरतमहल के इरादो और साहस मे फर्क नही आया और एक मौके पर वह परदादारी के बावजूद मैदाने जग मे भी पहुंची।"

लार्ड डलहौजी ही के जमाने मे झासी को मिलाने का मसला उठ खडा हुआ था। जिस बहादुरी से झासी की रानी ने अग्रेजो का मुकाबला किया उसे इतिहास नही भुला सकता। जनरल ह्यू रोज ने, जिसका लक्ष्मीबाई से कई लडाइयो मे मुकाबला हुआ, खुद स्वीकार किया है कि "बागियो मे रानी बडी योग्य और साहसी फौजी सालार थी।" पश्चिमी मालवे मे अंग्रेजो के खिलाफ जो आग भडक उठी थी और जो फौज उठ खडी हुई थी, उसका नेता शहजादा फीरोजशाह था। यह मुगल खान्दान का शहजादा जल्दी-से-जल्दी दिल्ली पहुचना चाहता था लेकिन यह मुम्किन न हुआ। इसी तरह मौलवी लियाकत अली इलाहाबादी ने इलाहाबाद मे जिहाद का नेतृत्व किया। इन मुजाहिदो के अलावा न जाने कितने हीरो है जिन्होने जगे आजादी मे हिस्सा लिया। इनमे मौलाना रहमतुल्ला है जिन्होने मुजफ्फरनगर, विशेषत किराना मे मुजाहिदो की फौज की सिपहसालारी की। डा० वजीर खा है जो आगरे पहुचे और वहा से मौलवी फैज अहमद बदायुनी के साथ जगे आजादी मे हिस्सा लेने के लिए दिल्ली जा पहुचे। बादा के नवाब अली बहादुर ने कालपी की जग मे हिस्सा लिया और रानी झासी, नानाराव और तात्या टोपे के साथ-साथ लडे। फर्रुखाबाद के नवाब तफज्जुल हुसैन खा ने फतेहगढ की बागी फौज का नेतृत्व किया। उन्हे यद्यपि फासी की सजा का हुक्म हुआ था लेकिन सिर्फ राज्य छीनकर हिन्दुस्तान बदर कर दिया गया। यह नवाब तजम्मुल हुसैन खा के भतीजे थे जिनके बारे मे गालिब का मशहूर शेर है—

दिया है और को भी ता उसे नजर न लगे
बना है ऐश तजम्मुल हुसैन खा के लिए

इनके छोटे भाई नवाब सखावत हुसैन खा को फासी दी गयी। मुनीर शिकोहाबादी ने उनकी तारीखे शहादत कही है—

रियाजे खल्क, सखावत हुसैन खा नवाब
निहाले बागे करम, जेबे मसनदे शौकत
वह बेगुनाह हुआ तेगेमर्ग मे मकतूल
इनायत उसको किया हक ने गुलशने जन्नत
मुनीर ने यह कही उसके कत्ल की तारीख
हुआ शहीद अमीर, दिलेर बा हिम्मत

इसी तरह मुनीर ने नवाब इकबाल मन्द खा और गजनफर हुसैन खा की भी तारीखे शहादत कही है, जिन्हे फांसी पर लटका दिया गया था।

इकबाल मन्द खा व गजनफर हुसैन खा
दोनो दुरमुहीते अता, आह आह हाय
तारीख उनके कत्ल की काफी है यह मुनीर
दोनो शहीद राह खुदा आह आह हाय

बरेली मे खान बहादुर खा की हुक्मरानी का एलान हो चुका था और लगभग साल-भर उनकी हुकूमत कायम रही। अंग्रेजो से बराबर लडाइया होती रही। गिरफ्तारी के वाद बरेली की कोतवाली के सामने ही उन्हे फासी दी गयी। ज़िला बिजनौर का शासन नवाब महमूद खा ने सभाल लिया था और मुकावले पर उतर आया था। अंग्रेज़ो के कब्जे के वाद उसे समुद्रपार आजीवन कारावास की सजा दी गयी लेकिन रवाना होने से पहले ही उसका देहात हो गया। इन्ही नामवर मुजाहिदो मे से मौलाना किफायत अली काफी भी थे जिनका वतन मुरादावाद था। इसी तरह कुवरसिंह ने आरा, मिर्जापुर और आजमगढ मे अंग्रेजो के छक्के छुडा रखे थे। वह आखिरी दम तक लडता रहा। उसके वाद उसके भाई अमरसिंह ने जग जारी रखी। उसके साथियो मे अमरसिंह, निशान, दिलावर खा और सरनामसिंह के नाम अमर हैं जिन पर आज भी शाहावाद के राजपूत गर्व करते है। मतलब यह कि हजारो जाबाजो ने जगे आज़ादी मे कुर्वानिया पेश की। इस सूची मे नवाब वलीदाद खा मालागढ जिला वुलन्दशहर के रईस और मुफ्ती इनायत अहमद काकोरवी के नाम भी शामिल हैं। इस सूची मे लालबहादुर खा मेवाती और राजा वेनीमाधव वख्श, राजा लालसिंह, नवाव मुहम्मद हसन खा, हकीम मुहम्मद अब्दुल हक, जनरल नियाज मुहम्मद खा, मिर्ज़ा वेदार वख्त जो बहादुरशाह के पोते थे, ये और अनेक नाम गिनाये जा सकते है। यही वह व्यक्ति थे जिन्हे आज भी हिन्दुस्तान की आबरू के रखवाले कहा जा सकता है।

इस जगह वलीउल्ही जमात का जिक्र भी ज़रूरी है जिसे शाह वलीउल्लाह ने आरम्भ किया था। यह आन्दोलन बज़ाहिर धार्मिक था लेकिन वास्तव मे आर्थिक और राजनैतिक। इस आन्दोलन का राजनैतिक उद्देश्य अंग्रेजो को हिन्दुस्तान से वाहर निकाल देना, आर्थिक संतुलन कायम करना और मज़दूर वर्ग के पूरे अधिकार दिलाना था। शाह वलीउल्लाह के देहात के वाद सैयद अहमद बरेलवी और शाह इस्माईल शहीद के ज़माने मे यह आन्दोलन अपनी चरम सीमा तक पहुच गया था। इससे प्रभावित होनेवाले अदीवो और शाइरो

मे हकीम मोमिन खा 'मोमिन' का नाम विशेष महत्त्व रखता है। उनकी मस्नवी 'जिहादया' का हमने उद्धरण नही दिया, सिर्फ इस खयाल से कि इस पर मजहबी रग छाया हुआ है जिससे कोई गलतफहमी न पैदा हो। इस आन्दोलन के अनुयायी तहरीक के राजनैतिक पहलू मे हिन्दुओ को साथ रखने की कोशिश करते रहे। ख्वाजा अहमद फारूकी ने अपनी किताब 'उर्दू मे वहाबी अदब' मे सैयद अहमद बरेलवी के उन पत्रो के उद्धरण दिये है जो उन्होने राजा हिन्दूराय और दौलतराव सिंधिया के नाम लिखे थे। अतएव १८५७ के इकिलाब मे भी वहाबी तहरीक के मानने वालो ने अमली हिस्सा लिया जिसके नतीजे मे सन् '६४ से सन् '७१ ई० तक वहाबी नेताओ पर अग्रेजो ने सरकारी मुकदमे चलाये और उन्हे मौत या आजीवन कारावास की सजाए भुगतनी पडी। उनके अलावा दूसरे उलेमा का भी बहुत बडा हिस्सा रहा है। मौलाना फजल हक खैराबादी ने मुसलमानो को जंग के लिए तैयार करने के लिए जो फतवा तैयार किया था और जिस पर दिल्ली के उलेमा के दस्तखत लिये गये थे, उन पर विपत्तिया आने का कारण बना और उन्हे समुद्रपार आजीवन कारावास की सजा दी गयी, जहा १६ अगस्त, १८६१ ई० मे उनका देहान्त हुआ। मुफ्ती सदरुद्दीन आजुर्दा जिन्होंने अग्रेजो की जेल काटी, नवाब मुस्तुफा खा शेफता जो नवाब वलीदाद खा, रईस मालागढ से सम्बन्धित थे, हगामा दबने के बाद गिरफ्तार किये गये और सात साल की सजा के पात्र करार पाये। मौलाना इमाम बख्श सहबाई, जिन्हें जमुना किनारे गोली का निशाना बनाया गया, यहा तक कि उनकी लाश का भी पता न चला, आजुर्दा ने फारसी मे उनका मर्सिया कहा है। उर्दू मे यह शेर मशहूर है—

क्योकि आजुर्दा निकल जाये न सौदाई हो
कत्ल इस तरह से बेजुर्म जो सहबाई हो

मौलवी इमामबख्श सहबाई के अलावा सन् '५७ ई० के शहीद शाइरो की एक लम्बी सूची है। मिर्जा आगा खा 'आगा' देहलवी, मिर्जा अहमद बेग अहमद, मिर्जा गुलाम मोहिउद्दीन अश्की, अब्दुल हलीम बिस्मिल, मिर्जा प्यारे रिफअत, इकरामुद्दीन रिन्द, अब्दुल करीम सोज, अमीर खा जब्त, मुहम्मद हुसैन जिया शाहजहापुरी, मुशी घनश्यामदास आसी, मिर्जा आलीबख्त आली, मौलवी अब्दुल अजीज 'अजीज' देहलवी जो इमामबख्श सहबाई के सुपुत्र थे, मिर्जा खुदाबख्श कैसर, मीर अहमद हुसैन मैकश जिन्हें गालिब कभी नही भूले और अपने विभिन्न पत्रो मे उनका जिक्र किया है, और मिर्जा खिजर सुल्तान खिजर, जो बहादुरशाह जफर के नवमे छोटे बेटे थे जिनकी पैदाइश पर

गालिब ने यह शेर कहा था—

खिज़र के सुल्ता को रखे खालिके अकबर सरसब्ज़
शाह के बाग मे यह ताज़ा निहाल अच्छा है

ये और न जाने कितने उर्दू के शाइर अग्रेज़ो की गोली का निशाना बने। उर्दू के वे शाइर जिन्हे बाद मे गिरफ्तार करके फासी पर लटकाया गया उनमे शहजादा रहीमुद्दीन इजाद, नवाब जफरयार खा रासिख, नवाब गजनफर हुसैन सईद, मुशी महाराजसिह अजीज देहलवी, मिर्ज़ा अजीजुद्दीन सुरूर गोरगांवी, मिर्ज़ा गयासुद्दीन शरर, मिर्ज़ा कमरुद्दीन शैदा, इमामुद्दीन हादी सम्बली और मुहम्मद इस्माईल फौक, जो उस्ताद ज़ौक के इकलौते सुपुत्र थे, ये और खुदा जाने कितने दूसरे शामिल है।

इस जगह यह स्पष्ट करना भी जरूरी है कि उर्दू के शाइरो पर बगावत का ही आरोप नही लगा बल्कि उनमे से कितनो ने मैदाने जग मे अपनी तलवार के जौहर भी दिखाये और अपने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। ऐसे शाइरो मे हम नवाब मुशीर अली खा 'आजिज' मुरादाबादी का नाम ले सकते हैं जो मुरादाबाद की जग मे जनरल बख्त खा के साथ थे। हम नाम ले सकते हैं मौलवी फैज़ अहमद 'रुस्वा' बदायुनी का जिन्होने जनरल बख्त खा और डाक्टर वज़ीर खा के साथ-साथ लड़ाइया लडी और फिरगियो की गोलियो का निशाना बने। हम नाम ले सकते हैं मौलवी किफायत अली 'काफी' मुरादाबादी का, नासिर खा 'नासिर' फर्रुखाबादी का, नसीमुल्ला नसीम कोलवी का, मिर्ज़ा आशोकबेग सनाई का जो बाक पर्वत पर गोरो का मुकाबला करते हुए मारे गये। खानबहादुर खा बरेलवी खुद भी शाइर थे और मसरूफ तखल्लुस करते थे। उनका जो हिस्सा जगे आजादी मे रहा है उसकी तरफ हम पहले इशारा कर आये हैं। ये चन्द नाम है वरना कितने शाइर इस धरती को अपने खून से सीचकर चिर निद्रा मे सो गये। मौलाना इम्दाद साबरी ने '१८५७ के मुजाहिद शोरा' के नाम से जो किताब प्रकाशित की है, इस सिलसिले मे उसका अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

हमने जगे आज़ादी पर कुछ विस्तार से इसलिए बात की है कि बहुत-से गुमनाम मुजाहिद और उनके कारनामे, जो हमारे इतिहास की नजर से छुपे हुए है, सामने आ सकें।

इस अध्याय मे हमने सबसे पहले बहादुरशाह ज़फर के कलाम से एक मुसद्दस नौहा-ए-गम दिया है। इसमे उस लाचारी और बेबसी का इजहार है

को इनका एहसास था। अतएव उनका मशहूर शेर है—

हैं जफर बस अब तुझी तक इन्तिज़ामे सल्तनत
बाद तेरे नै वलीग्रहदी न नामे सल्तनत

'बयाने गम' बहादुरशाह जफर की उस दौर की गजल है जो अंग्रेजों की कैद मे गुजरा। उसके बाद हमने मुहम्मद हुसैन आज़ाद की नज्म 'फतह अफ-वाजे शर्क' को शामिल किया है। जगे आजादी के प्रारम्भ मे हिन्दुस्तानी फौजो को जो विजय अंग्रेजो पर प्राप्त हुई उससे न सिर्फ मेरठ मे बल्कि हर तरफ खुशी महसूस की जाने लगी थी। यह नज्म २४ मई, १८५७ ई० के 'उर्दू अखबार' मे प्रकाशित हुई थी। इस अखबार के एडीटर मौलाना आजाद के वालिद मुहम्मद बाकर थे, जिन्हे अंग्रेजो ने टेलर के कत्ल का इल्ज़ाम लगाकर फासी पर चढा दिया। मुहम्मद हुसैन आजाद की तलाश की गयी लेकिन ये किसी तरह बच निकले।

दिल्ली की तबाही और बरबादी का विवरण हमें ज़हीर देहलवी की 'दास्ताने गदर' और मौलवी जकाउल्ला की 'तारीख उरूजे इग्लिशिया' मे मिल सकता है। गालिब के पत्रो मे भी दिल्ली की बरबादी की बहुत-सी झलकिया मौजूद हैं। उनका एक कता 'दागे-हिज्रा' के नाम से शामिल है, जो अलाउद्दीन अहमद खा के नाम लिखे हुए एक खत से लिया गया है। हमने मुफ्ती सदरुद्दीन 'आज़ुर्दा, ज़हीरुद्दीन 'ज़हीर' देहलवी, मिर्जा कुरबान अली बेग 'मालिक', मुहम्मद अली 'तिश्ना', हकीम आगाजान 'ऐश', मिर्ज़ा दाग देहलवी के शहर-आशोबो के उद्धरण भी दिये हैं जो इस दौर की उजडी हुई दिल्ली की तस्वीरें है। मुनीर शिकोहाबादी की जेल की यातनाओ के बारे मे गुलाम रसूल मेहर का कहना है कि मुनीर को नवाबजान वेश्या के कत्ल के मुकदमे मे उलझा दिया गया था और काले पानी की सज़ा इसी सिल-सिले मे उन्हे भुगतनी पड़ी थी। यह ठीक है लेकिन यह जाल भी दरअसल अंग्रेज़ अधिकारियो का बिछाया हुआ था। बहरकैफ मुनीर ने अंग्रेज़ी कैद की यातनाए झेलीं और उसे नज्म मे बयान किया। आखिर मे मीर मेहदी मजरूह और ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली की नज्मे हैं। विशेषतः हाली की नज्म 'देहली-ए-मरहूम' बेहद दर्दनाक है।

तीसरा अध्याय

इस किताब के तीसरे अध्याय को हमने दो भागो मे बाट दिया है। पहला भाग देशभक्ति और एहसासे-गुलामी है। सन् '५७ की जगे आजादी के

बाद कुछ समय के लिए शाति का वातावरण स्थापित हो गया था। धीरे-धीरे देश मे विभिन्न सामाजिक और धार्मिक सस्थाए उभरने लगी। वैसे तो राजा राममोहन राय ने सन् १८२८ ई० ही मे ब्रह्म समाज की स्थापना कर दी थी, महर्षि टैगोर और केशवचन्द्र सेन भी धार्मिक और सामाजिक सुधार की तरफ ध्यान दे रहे थे। मुसलमानो मे जो आन्दोलन सैयद अहमद बरेलवी, शाह अब्दुल अजीज़ देहलवी और मौलवी करामत अली जौनपुरी के आभारी थे, उन्होने धार्मिक सुधारो के लिए मुसलमानो को बडी हद तक तैयार किया हुआ था। सुधारवाद का यह दौर जो जगे आजादी की नाकामी के बाद दुबारा शुरू हुआ था, उसमे मुसलमानो की हद तक सर सैयद की तहरीक को, जो मुलहपसन्दी पर आधारित थी, बडा महत्त्व प्राप्त है। सर सैयद का रिश्ता अगर एक तरफ वलीउल्ही तहरीक से मिलता था जो धार्मिक मामलो मे सुधार की समर्थक थी, तो दूसरी तरफ यह उस राष्ट्रीय भावना की पैदावार था जिसने जगे आज़ादी के शुरू होने से कही पहले ब्रिटिश इडिया सोसायटी, (सन् १८४३ ई०), बम्बई एसोसियेशन, जिसे सन् १८५० मे दादाभाई नौरोजी और जगन्नाथ शकर शेट का सरक्षण प्राप्त था या फिर राजेन्द्रलाल मित्र और रामगोपाल की ब्रिटिश इडिया एसोसियेशन जो १८५१ ई० में स्थापित हुई थी और ऐसी दूसरी जमातो को जन्म दिया था। सर सैयद के बारे मे आम तौर पर ऐसा समझा जाता है कि वह कोई राष्ट्रीय तसव्वुर नही रखते थे, लेकिन यह सही नही है। २६ जनवरी १८८२ को अमृतसर की अंजुमने इस्लामिया मे तकरीर करते हुए उन्होने कहा था कि "कौम से मेरा मतलब सिर्फ मुसलमानो ही से नही है बल्कि हिन्दू और मुसलमान दोनो से है" हिन्दुओ के अपमान से मुसलमानों का और मुसलमानो के अपमान से हिन्दुओ का अपमान है। ऐसी हालत मे जब तक यह दोनो भाई एकसाथ परवरिश न पावें, एक ही साथ शिक्षा न पावें, एक ही प्रकार के उन्नति के साधन दोनो के लिए उपलब्ध न किये जायें, हमारी इज्ज़त नही हो सकती।"

आगे चलकर यद्यपि सर सैयद का ज्यादा ध्यान मुसलमानो की मागो की तरफ जाने लगा था लेकिन वास्तव मे वह नतीजा था अग्रेज़ो के इस बरताव का कि वह हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच भेद करके मुसलमानो को पीछे डालना चाहते थे।

सर सैयद ने जिस तालीमी और इस्लाही आन्दोलन की शुरुआत की उसने उर्दू अदब को एक नया मोड़ दिया। उनके आस-पास साहित्यकारो का एक बडा गिरोह जमा हो गया था जिसने अदब की उपादेयता पर जोर दिया

और अदब और जिन्दगी के रिश्ते को उजागर करना शुरू किया, यद्यपि इसकी शुरुआत कर्नल हालराइड की 'अंजुमने पंजाब' १८७४ ई० ही से हो गयी थी। हाली मुसलमानो की तबाही के मर्सिये से चलकर देशभक्ति तक आये, लेकिन मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद ने शुरू ही से आम देशभक्ति की चेतना को नज्म का विषय बनाया। यही वह दौर है जहा से उर्दू शाइरी मे राष्ट्रीयता का नवीन तसव्वुर दाखिल हुआ। देशभक्ति पर आजाद और हाली की नज्मो के उद्धरण हमने इस अध्याय मे शामिल किये हैं। अली जव्वाद जैदी ने 'उर्दू मे कौमी शाइरी के सौ साल' मे इन नज्मो पर तबसिरा करते हुए लिखा है, "शायद हाली के यहा तीव्रता इसलिए कम थी कि वह सर सैयद से प्रभावित थे और उनके अधीन थे और आजाद इस निकट प्रभाव से अपेक्षाकृत आज़ाद थे।" मगर हमारे विचार मे यह उनके सोचने का ढग और स्वभाव का फर्क है।

उन्नीसवी सदी के खात्मे तक पहुचते-पहुचते न जाने कितनी संस्थाए मैदाने अमल मे आ चुकी थी जिनमे हिमायते इस्लाम, लाहौर, अजुमने तहज़ीब, लखनऊ, प्रार्थना-समाज, दकन एजुकेशनल सोसायटी, देहली सोसायटी वगैरा सामाजिक सुधार के कामो मे प्रमुख होने लगी थी। पश्चिमी शिक्षा के असर से जो राष्ट्रीयता की भावना उभरने लगी थी उसने धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनो के डाडे धीरे-धीरे राजनैतिक जागृति से मिला दिये। धीरे-धीरे एक ऐसे देशव्यापी संगठन के लक्षण दिखाई देने लगे थे जो राजनैतिक विचारो को प्रकट कर सके। इसमे ह्यूम का बड़ा हाथ था। २८ दिसम्बर, १८८५ ई० मे बम्बई मे इडियन नेशनल काग्रेस का पहला इजलास हुआ और हुकूमत मे मागो का दौर शुरू हुआ। शुरू मे काग्रेस पर नरमदलीय लोगो का कब्जा था। बहुत-से अखबार भी इनके समर्थक थे। कुछ ही दिनो बाद एक गरम दल भी धीरे-धीरे उभरना शुरू हो गया।

इन हालात से उर्दू अदब बराबर प्रभावित हो रहा था। 'अवध पच' का पूरा गिरोह ही राष्ट्रीय विचार रखता था, जिनमे मुशी सज्जाद हुसैन, मिर्ज़ा मच्छू बेग, रतननाथ सरशार, त्रिभुवननाथ हिज्र, बृजनारायण चकबस्त खास नाम है। इस अध्याय मे आज़ाद और हाली की नज्मो के अलावा इस्माइल मेरठी की नज़्म 'अच्छा ज़माना आनेवाला है' और 'कोराना अग्रेज़परस्ती' भी शामिल है। अकबर इलाहाबादी अंग्रेज़ी हुकूमत के मुलाज़िम होते हुए विदेशी शासन के खिलाफ थे। उनकी तीन नज्मे 'जल्वा-ए-देहली दरबार' जो १९०१ ई० एडवर्ड सप्तम के जश्ने-ताजपोशी के सिलसिले मे कही गयी

थी, जिसमे ड्यूक आफ कनाट ने शिरकत की थी, दूसरी नज्म जो १९११ ई० मे पचम जार्ज की ताजपोशी के मौके पर कही गयी और तीसरी नज्म 'ब्रिटिश-राज" शामिल की गयी है। इनमे अकबर के व्यग की काट स्पष्ट है—

महफिल उनकी, साकी उनका
आखें मेरी, बाकी उनका

प्रोफेसर एहतिशाम हुसैन ने अपनी किताब 'रिवायत और बगावत' मे लिखा है कि "जिस तरह अकबर ने सियासी हालत को समझा था, उस तरह कम लोग समझते हैं और जिस तरह उन्होने इन समस्याओ को अपनी शाइरी का अग बनाया, उस तरह और कोई न बना सका।"

चकबस्त और सुरूर जहानाबादी की जो नज्मे देशभक्ति के अन्तर्गत आती हैं वह हमने इस किताव के पहले भाग के अध्याय 'हिन्दुस्तान की अज्मत' मे शामिल कर दी है। अतएव इस जगह उनकी पुनरावृत्ति अनावश्यक थी। अल-बत्ता डा० इकबाल की एक नज़्म 'शुआ-ए-उम्मीद' इसमे मौजूद है जो अपने खुलूस और तड़प की मिसाल आप है।

इस अध्याय के दूसरे भाग मे हमने वह नज्मे दी हैं जिनमे मुसलमानो की अग्रेज दुश्मनी का खुला हुआ परिचय है। मुसलमान यद्यपि सार्वजनिक रूप मे राजनीति से दूर थे लेकिन वह राजनैतिक समस्याओ से दिलचस्पी जरूर रखते थे। सर सैयद पर तो खैर ढके-छुपे काग्रेस की मुखालिफत का इल्ज़ाम आया, लेकिन डिप्टी नज़ीर अहमद ने बाकायदा काग्रेस का विरोध किया। इसका तोड शिवली नोमानी ने जोरदार तरीके पर किया। अतएव जब १९०६ ई० मे मुस्लिम लीग की बुनियाद पडी तो शिबली ने उसकी सरकारी सरपरस्ती के बुरी तरह परखचे उडाये। यह सच है कि मुसलमानो मे अग्रेज़ दुश्मनी का जज्बा उस वक्त पूरी तीव्रता के साथ उभरा जब अग्रेजो ने तुर्कों के विरुद्ध षड्यत्र शुरू किये। १९११ ई० मे जब बल्कान युद्ध छिडा तो ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध शिबली ने अपनी मशहूर नज़्म 'शहर-आशोब इस्लाम' लिखी। इसी ज़माने की यादगार इकबाल की 'हुजूर रिसालत मआब' मे भी है। हसरत मुहानी और सैयद हाशमी फरीदावादी की भी चन्द नज्मे हमने शामिल की है।

इसी जमाने मे जब बल्कान और तुर्की की लड़ाई जारी थी, कानपुर की मस्जिद की घटना पेश आई, जिसने हिन्दुस्तानी मुसलमानो को अग्रेज़ो के खिलाफ और ज्यादा भडका दिया। इस मौके पर शिवली ने 'मार्का-ए-कान-पुर' और 'हम है मजलूम' जैसी नज्मे कही। सैयद सुलेमान नदवी का मज-मून 'शुद्ध अकवर', जिस पर अलहिलाल की जमानत ज़ब्त कर ली गयी,

मुसलमानो को क्रोधित करने मे वेहद सहायक सावित हुआ था। आज़ादी का आन्दोलन मुसलमानो के दिलो मे तो मौजें मारने ही लगा था, इस मौके पर हिन्दू जन-साधारण ने भी यह अनुभव कर लिया था कि साम्राज्यवादी राज्यो का पूर्वी देशो पर काविज़ होना हिन्दुस्तान की गुलामी की ज़जीर को और कस देगा। अकबर जैसे शाइर ने इस मौके पर कहा था—

वहम्दोलिल्लाह अब खूने शहीदा रग लाया है

चौथा अध्याय

हम ऊपर वता चुके हैं कि काग्रेस मे एक जमात नरमदलीय लोगो की पैदा होने लगी थी। धीरे-धीरे इसका ज़ोर वढता गया। इसने 'अमली कार्रवाई' पर ज़ोर दिया। इसके नेता वाल गगाधर तिलक, लाजपत राय, चन्द्रपाल और अरविन्द घोप थे। दूसरा गिरोह जो नर्मदलीय लोगो का था, उसका नेतृत्व दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ वनर्जी, गोखले और वदरुद्दीन तैयवजी कर रहे थे। १९०६ ई० के कलकत्ता अधिवेशन मे हुकूमत से स्वराज्य की माग की गयी और विदेशी चीज़ो के वहिष्कार का प्रस्ताव मजूर हुआ। इसी साल आतंकवादियो का आन्दोलन भी शुरू हुआ, लेकिन यह ज्यादातर वगाल तक ही सीमित रहा, यद्यपि उत्तरी भारत मे भी कई आतकवादी पार्टियो ने जन्म लिया था। आतकवादियो की इस विचारधारा को वगभग के १९०५ के आन्दोलन से भी वढावा मिला था। इस दौर मे वहुत-सी राष्ट्रीय नज़्मे लिखी गयी। हसरत मुहानी का सम्वन्ध गरम दल से था, अतएव उनके शेरो मे यह झलक हमे स्पष्ट दिखाई देती है। अकवर ने जो नज़्म दिल्ली-दरवार १९११ पर कही थी, वह हम १९०१ ई० के जश्ने ताजपोशी के साथ ही दे चुके है, ताकि पूर्णरूप से अकवर की व्यंगात्मक प्रवृत्ति का पता चल सके। हम उस दौर के उर्दू रिसाले उठाकर देखे तो पता चलता है कि कौमी नज्मो की एक वाढ आयी हुई थी। चकवस्त, ज़फरअली खा और वर्क देहलवी की नज़्मे हमारी सियासी शाइरी की वहुमूल्य सम्पत्ति है। १९१४ का साल आया तो इग्लैड और जर्मनी मे युद्ध छिड गया। इस समय हिंदुस्तानियो ने अग्रेजो का साथ दिया, लेकिन शिवली ने उस मौके पर भी वार किया। उनकी नज़्म 'जगे यूरोप और हिन्दुस्तानी', जो इसमें शामिल है और जिस पर उनके नाम गिरफ्तारी का वारंट भी जारी किया गया, उनकी वरतानवी हुकूमत से दुश्मनी की वडी साफ मिसाल है।

१९१५ ई० के काग्रेम अधिवेशन मे हुकूमत खुद इख्तियारी की माग की

गयी जिस पर बहुत-से लीडरो को नजरबन्द कर दिया गया। १६१६ मे होमरूल के आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ा कि होमरूल लीग की स्थापना हुई। चकबस्त की 'आवाज-ए-कौम, वतन का राग' इसी आन्दोलन की द्योतक है। सन् १६१७ ई० मे माटेग्यू सुधार और १६१८ ई० मे माटेग्यू-चेम्सफोर्ड योजना का एलान भी हुआ, लेकिन हिन्दुस्तानी इसे मानने के लिए तैयार न हुए। हसरत मुहानी की जो नज्म हमने दी है वह इसका प्रत्यक्ष सबूत है। १६१८ ई० मे महायुद्ध खत्म होने पर रोलेट एक्ट पास हुआ, जिसके विरुद्ध देश-भर मे आवाज उठाई गयी। इस विरोध पर अंग्रेजो की तरफ से जिस बर्बरता का प्रदर्शन किया गया उसे अब्दुल माजिद बदायुनी के लेख 'रोलेट बिल' मे पढ़ा जा सकता है और उन्ही के कथनानुसार, "यह लेख इस उद्देश्य से लिखा गया है कि आने वाली नस्लें हिन्द के पीडित और लाचार लोगो की याद ताजा रखें।" उस जमाने मे गाधीजी के नेतृत्व मे जो आन्दोलन चला उसमे हिन्दू और मुसलमान दोनो शरीक थे। अप्रैल १६१६ ई० मे जलियानवाला बाग की घटना घटी जिसने मुल्क मे गम और गुस्से की लहर दौडा दी। महात्मा गाधी ने बरतानवी सरकार को शैतानी सरकार के नाम से पुकारा और उसके शासन को लानत की उपाधि दी। सैकडो निहत्थे लोग शहीद हुए। देशभक्ति की यह शानदार मिसाल हमारे दिलो मे हमेशा ताजा रहेगी कि गढ़वाल रेजीमेट ने हिन्दुस्तानी नेताओ और उस निहत्थे जनसमूह पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया, जिस पर बगावत का आरोप लगाया गया और सारी रेजीमेट गिरफ्तार कर ली गयी—

अभी तो दास्ता ताज़ा है गढवाली जवानो की
मुसीबत जिनका तकिया, खाके ज़िन्दा जिनका बिस्तर है
न सर होगी ये बन्दूकें वतन के पास्बानो पर
यह जुरअत आज्मा इन्कार कितना रूहपरवर है।

—सरदार जाफरी

उर्दू ज़बान मे सैकड़ो नज़्मे इस घटना से प्रभावित होकर लिखी गयी। जफरअली खा की 'मजालिमे-पंजाब और शोला-ए-फानूसे-हिन्द', त्रिलोकचन्द महरूम की 'शिकवा-ए-सैयाद', डाक्टर इकबाल की 'जलियानवाला बाग' हमने इस अध्याय मे शामिल की है। मौलाना मुहम्मद अली ने गज़ल के शेरो मे जगह-जगह इसकी तरफ इशारा किया है लेकिन उनकी वह तकरीर, जो उन्होने १३ दिसम्बर, १६१६ ई० को अमृतसर काग्रेस के अधिवेशन मे की है, हमेशा याद रहेगी। उसी के साथ उनका लेख 'इम्पीरियलिज्म की रूह' भी

एक महत्त्वपूर्ण लेख है। इनके अलावा इस भाग मे मुहम्मद अली जौहर की नज्म 'रदे महर' भी शामिल है जो उन्होंने अपनी पहली नज़रबन्दी (सन् १९१५ ई० से १९१७ ई०) पर कही थी। इकबाल की नज्म 'तस्वीरे दर्द' का एक लम्बा उद्धरण भी दिया गया है, जिसमे वतन का दर्द एक-एक शब्द से झलकता है। दो नज़्मे अहमक फफूदवी की अपने रंग मे हैं जिन्होंने शाइरी ही नही की, वतन की मुहब्बत मे हसरत की तरह जेल भी काटी थी।

इसमे शक नही कि जलियानवाला बाग की घटना के बाद हिन्दुस्तान का वातावरण शोला-अगेज़ (फट पडने वाला) हो चुका था और 'नवा-ए-आज़ादी' के लेखक के कथनानुसार, "लीडरो के बयानात, मुकर्रिरो की शोला-बयानियो और शाइरो की आतिशनवाइयो ने वह काम नही किया जो इस घटना ने किया।" इसके अलावा इस मौके पर खिलाफत आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन उठ खडे हुए। गांधीजी और अली बिरादरान ने देश-भर का दौरा किया और देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आग लगा दी। मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इस दौर मे उभरकर हमारे सामने आये। मौलाना मुहम्मद अली की वह तकरीर, जो उन्होंने अक्तूबर १९२० ई० मे लाहौर मे की और जो 'राहे अमल' के नाम से प्रकाशित हुई और मौलाना आज़ाद का मज़्मून 'सूरबेदारी' और 'आखरी मंज़िल और हमारा फर्ज़' खास महत्त्व रखते हैं। सन् १९२१ मे बगावत के अपराध मे आज़ाद पर मुकदमा चलाया गया। उन्होंने जो बयान अदालत मे दिया और जो 'कौलो फ़ैसल' के नाम से मशहूर है, सियासी ही नही अदबी हैसियत से भी शाहकार कहा जा सकता है। इनके अलावा लाला लाजपतराय, ज़फरअली खां और चौधरी अब्दुलगनी वगैरा के लेख भी बडा महत्त्व रखते हैं। जहां तक शाइरी का संबध है, ज़फरअली खां की जोशीली नज्मे बडा महत्त्व रखती हैं। 'दावते अमल', 'ऐलाने जग' और इंकिलाब' इस अध्याय मे शामिल हैं। हसरत मुहानी की 'जौरे गुलामाने वक्त', मीर गुलाम नैरंग की 'दावते अमल', मुहम्मद अली जौहर की 'काम करना है यही, चश्मे खूनाबाबार, आशियां बरबाद और खूगर सितम', लाला लालचन्द फलक की 'बेदारी-ए-हिन्द', महवी लखनवी की 'वक्ते बेदारी', आगा हश्र काश्मीरी की नज्म 'शुक्रिया-ए-यूरोप', इकबाल अहमद सुहैल की 'बन जाये नशेमन तो', महमूद इस्राईली की 'नाला-ए-अन्दलीब', सागर निज़ामी की 'पैगामे अमल', एहसान दानिश का 'तराना-ए-जिहाद' उस अहद की सैकडो नज्मो मे से चन्द नज्मे हैं जिनमे उस सियासी बेदारी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जो उर्दू शाइरी की रग-रग मे समा गयी थी।

पांचवां अध्याय

सन् १६२१ से १६३५ ई० तक का ज़माना भी हिन्दुस्तान की सियासी तारीख़ मे बडी अहमियत रखता है। इस विप्लवग्रस्त ज़माने मे न जाने कितने लोगो को फासी पर लटका दिया गया। मालेगांव जिला नासिक से सुलेमान शाह, मधु फरीदन, मुहम्मद शाबान और असरील अल्लारखा को यरवदा जेल मे फांसी दी गयी। इससे पूरे हिन्दुस्तान की कल्पना की जा सकती है। सन् १६२५ ई० मे काकोरी केस चला। ८ अगस्त, १६२५ ई० को शाहजहापुर मे क्रातिकारियो का एक जलसा हुआ जिसकी सदारत रामप्रसाद विस्मिल ने की जिसमे इकिलाब के लिए दरकार पूजी हासिल करने के लिए खजाना ले जाने वाली ट्रेन को लूटने का निश्चय किया गया। यह काम अशफाकुल्ला खा के सुपुर्द हुआ और काकोरी मेल को लूट लिया गया। अशफाकुल्ला खा शहीद और रामप्रसाद बिस्मिल दोनो को गिरफ्तार किया गया और फासी दे दी गयी। अशफाकुल्ला खा, जो फैजाबाद जेल मे १८ दिसम्बर को फासी पर झूल गये, उर्दू के अच्छे गजलगो शाइर थे। उनके चन्द शेर देखिये—

सभी सामाने इश्रत थे मज़े से अपनी कटती थी
वतन के इश्क ने हमको हवा खिलवाई जिन्दा की
वह गुलशन जो कभी आबाद था गुज़रे जमाने मे
मैं शाखे खुश्क हू हा हा उसी उजडे गुलिस्ता की
ये झगडे और बखेडे मेटकर आपस मे मिल जाओ
ये तफरीके अबस मैं हूं हिन्दू मैं मुसलमा की

इस तरह रामप्रसाद बिस्मिल भी उर्दू के वह शाइर थे जिनकी गजलो मे वतनी जज्बात कूट-कूटकर भरे थे। उनकी वह गज़ल जो एक वक्त हिन्दुस्तान के बच्चे-बच्चे की जबान पर थी, आज भी उस अहद की यादगार बनकर हमारे ज़हनो मे जिन्दा है—

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है
देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल मे है[1]

वेलगाम के कांग्रेस अधिवेशन सन् १६२४ ई० मे महात्मा गाधी के ये शब्द कि "मैं सल्तनत के अन्दर रहकर स्वराज्य के लिए संघर्ष करूगा—

---

1. कुछ लोगो के अनुसार यह गजल शाह अहमद हुसैन बिस्मिल इलाहाबादी की है जो शाद अज़ीमाबादी के शागिर्द थे और असहयोग आन्दोलन के सरगर्म कार्यकर्ता थे।

लेकिन अगर बरतानिया की गलती से ज़रूरत आ पड़ी तो मैं सल्तनते बरतानिया से तमाम संबंध तोड लूगा।" बड़े महत्त्वपूर्ण थे और एक अर्थ मे सम्पूर्ण आजादी की माग की बुनियाद बनने वाले थे। सन् १९२८ ई० मे सायमन कमीशन की आमद पर और भी हगामा उठा। ज़फरअली खा की नज्म 'सायमन कमीशन का मुकाअता' और जोश मलीहाबादी की नज्म 'सायमन कमीशन' वगैरा इस दौर की यादगार नज्मे है। इसी साल काग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन मे जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस ने सम्पूर्ण आज़ादी के लिए आवाज़ उठाई। आखिरकार सन् १९३० ई० मे काग्रेस मे गरमदलीय लोग हावी हो गये और सम्पूर्ण आजादी काग्रेस का आदर्श मान लिया गया। अतएव इसी साल मार्च मे सिविल नाफरमानी का आन्दोलन शुरू हुआ। हज़ारो को जेल भेज दिया गया, हज़ारो गोली से मारे गये लेकिन आन्दोलन जारी रहा।

इसी साल बरतानवी हुकूमत ने पहली गोलमेज़ कान्फ्रेंस की, लेकिन काग्रेस ने शिरकत से इन्कार कर दिया। दूसरी कान्फ्रेंस से पहले महात्मा गाधी और दूसरे लीडरो को रिहा कर दिया गया। काग्रेस ने इसमे भाग लिया, लेकिन जो साम्प्रदायिक समस्या मुस्लिम लीग ने खडी कर रखी थी उसके कारण कोई हल न निकल सका। तीसरी कान्फ्रेंस के नतीजे में 'ह्वाइट पेपर' प्रकाशित हुआ लेकिन गाधीजी इससे सन्तुष्ट न थे। उन्होने दुबारा सिविल नाफरमानी का आन्दोलन शुरू किया जो सन् १९३४ तक जारी रहा। आखिरकार १९३५ ई० मे नया कानून बना और देश मे काग्रेस और मुस्लिम लीग के मंत्रिमंडल बने। इस दौर मे उर्दू शाइरी बराबर अपना रोल अदा करती रही। त्रिलोकचन्द महरूम, जफरअली खा, जोश मलीहाबादी, रविश सिद्दीकी, हफीज़ जालंधरी, जमील मज़हरी, आनन्द नारायण मुल्ला, आजाद अंसारी, जाफरअली खां असर, एहसान दानिश, अली जव्वाद जैदी, जिनकी विभिन्न नज्मे इस भाग मे शामिल हैं, इसका स्पष्ट सबूत हैं। यह सच है कि उर्दू अदब ने जंगे आजादी की पूर्ण रूप से तरजुमानी की है। हम इस वक्त उर्दू के सिर्फ शेरी अदब मे बहस कर रहे हैं, वरना उर्दू की अफसानानिगारी भी आज़ादी के आन्दोलन का साथ देने मे बराबर अग्रसर रही है।

मन्त्रिमंडलो की स्थापना के बाद बहुत-कुछ पाबन्दिया उठने लगी थी और दूसरी तरफ कृषि-सुधार पर भी ध्यान दिया जाने लगा था। पहले महायुद्ध के दौरान रूस मे साम्यवादी दृष्टिकोण अमली रूप धारण करने लगा था। सन् १९१७ ई० मे जार की हुकूमत का खात्मा हुआ और मार्क्सवादी सिद्धान्तो

ने विश्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त करनी आरम्भ कर दी । हिन्दुस्तान में सन् १६१६ ही मे मजदूर वर्ग अपना सगठन कर चुका था और धीरे-धीरे उनका आन्दोलन जोर पकड रहा था। इस आन्दोलन पर अगर एक तरफ रूसी इंकिलाब का प्रभाव पडा तो दूसरी ओर विभिन्न समाजवादी और प्रगतिशील सस्थाएं खुद हिन्दुस्तान मे जन्म ले रही थी। इन विभिन्न पार्टियों को पंडित जवाहरलाल नेहरू, अशोक मेहता, सुभाषचन्द्र बोस, पी० सी० जोशी, अजय घोष, सोहन सिंह जोश, एम० एन० राय वगैरा की सरपरस्ती प्राप्त थी। सन् १६३५ ई० मे प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हिन्दुस्तान में हुई जिसकी पहली कान्फ्रेंस अप्रैल १६३६ ई० मे लखनऊ मे मुशी प्रेमचन्द की अध्यक्षता मे हुई। इस सस्था को पडित नेहरू, जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्रदेव, यूसुफ मेहरअली, सज्जाद जहीर, डाक्टर अलीम जैसे मार्क्सवादी दोस्तो ने बढावा दिया। टैगोर, प्रेमचन्द और डाक्टर अब्दुल हक का सहयोग प्राप्त हुआ। टैगोर ने प्रगतिशीलता के नाम जो सन्देश दिया था उसमे कहा था—"देश का कण-कण दुख की तस्वीर वना हुआ है। हमे इस गम और क्षोभ को दूर करना है और फिर से जीवन के उपवन की सिंचाई करना है।"

जहा तक उर्दू शाइरी का सबंध है, एक बहुत बडा गिरोह शाइरो का उभरा जो उर्दू अदव पर छाकर रह गया। इसमे मजाज, जज्बी, जानिसार अख्तर, फैज़ अहमद फैज, मखदूम, अली सरदार जाफरी, अली जव्वाद ज़ैदी, शमीम किरहानी, सलाम मछली शहरी वगैरा अहम नाम हैं। आजादी की इच्छा और गुलामी के खिलाफ नफरत के साथ-साथ उस वक्त उर्दू शाइरी मे आर्थिक और सामाजिक समस्याएं भी उभरकर आने लगी। साम्राज्यवाद और पूजीवाद के खिलाफ खुल्लमखुल्ला एलाने जग हुआ। यद्यपि प्रारम्भ मे साहित्य मे नारेबाज़ी ज्यादा हुई लेकिन धीरे-धीरे वर्ग-संघर्ष और आर्थिक स्थिति के विश्लेषण पर ध्यान दिया जाने लगा। हमने इस अध्याय के दूसरे भाग मे उन नज्मो का एक छोटा-सा सकलन दिया है जो साम्यवादी प्रभाव के अन्तर्गत कही गयी। यह वात कम महत्त्व नही रखती कि मार्क्सिज़्म का प्रभाव रूसी क्रांति से भी पहले उर्दू शाइरी पर पडने लगा था। इकवाल की नज़्म 'खिज्रे राह' मे, जिसका एक उद्धरण हमने 'सरमाया व मेहनत' के नाम से दिया है, जो दर्दमन्दी और जो मुजाहिदाना लहजा है और जिस अन्दाज़ मे बेदारी और अमल का पैगाम दिया गया है वह उर्दू की कम नज़्मो मे नजर आता है। आलेअहमद सुरूर ने ठीक कहा है कि "यह नज़्म New Testament की हैसियत रखती है।"

हसरत मुहानी बेशक रूसी क्रांति के बाद ही मार्क्सिज्म से प्रभावित हुए। उन्होंने १९२६ ई० में स्वागताध्यक्ष की हैसियत से जो भाषण पहली अखिल भारतीय कम्युनिस्ट कान्फ्रेंस, कानपुर मे दिया था उसकी एक तारीख़ी हैसियत है। इकबाल की 'ख़िज़्रे-राह' ही से हमने एक और उद्धरण 'सल्तनत' शीर्षक मे दिया है। इसके अलावा 'लेनिन खुदा के हुजूर मे', 'अलअर्ज़ अल्लाह', 'फरमाने ख़ुदा' उनकी इस सिलसिले की नज़्मे हैं।

जोश की नज़्म 'ज़वाले जहांबानी, किसान, निजामे नौ' मे जोश का जोशीला लहजा और दबग आवाज हमे सुनाई देती है। इसके अलावा हामिदुल्ला अफसर, शोरिश काश्मीरी वगैरा की चन्द नज़्मे इसमे शामिल हैं।

छठा अध्याय

यद्यपि १९३५ के गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट के अन्तर्गत प्रान्तो मे सीमित खुदमुख़्तारी दी गयी थी लेकिन कितने अदीब और शाइर ऐसे थे जो इस एक्ट मे खुश नजर नही आते थे। मौलाना ज़फरअली खा की नज़्म 'इडिया एक्ट १९३५ ई०', अहमक फफूदवी की नज़्म 'आईने जदीद', जोश की नज़्म 'वफ़ाक' वगैरा इस बात का स्पष्ट सबूत है। बहर कैफ १९३५ से लेकर १९४२ तक विदेशी शासन की मुख़ालिफत और सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण पर आधारित बेशुमार नज़्मे हमारे सामने आती हैं। इसमे एक तरफ अगर जोश, सीमाब, ज़फरअली खा, फिराक गोरखपुरी, शोरिश काश्मीरी, जमील मज़्हरी, रविश सिद्दीकी, इकबाल अहमद सुहैल वगैरा की रचनाए है, तो दूसरी तरफ नये प्रगतिशील शाइर इस्रारुल्हक मजाज़, जानिसार अख़्तर, मख़दूम, फैज, जज़्बी, जाफरी, एहतिशाम, नदीम कासमी, मसऊद अख़्तर जमाल और माहिर वगैरा की तरक्कीपसन्द नज़्मे हैं जो हिन्दुस्तान की आजादी के जज़्बे और साम्यवादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण नजर आती हैं। इस अध्याय के इस भाग मे जोश मलीहाबादी की नज़्म 'वफादाराने अज़ली का पयाम शहंशाहे हिन्दुस्तान के नाम' भी शामिल है जो उन्होने जार्ज के जश्ने ताजपोशी पर कही थी। सरदार जाफरी ने अपनी किताब 'तरक्कीपसन्द अदब' मे इस नज़्म का जिक्र करते हुए लिखा है कि "इसके एक-एक मिसरे से वह नफरत टपकती है जो अंग्रेजी हुकूमत के लिए हर हिन्दुस्तानी के दिल मे थी। इसमे बज़ाहिर व्यंग है लेकिन दरअसल बड़ी तीव्र और गहरी नफरत है।" १९३९ ई० मे जब दूसरा महायुद्ध छिडा और वायसराय ने लेजिस्लेटिव असेम्बली से परामर्श किये बिना एलान किया कि हिन्दुस्तान जग मे शरीक

है जो दरअसल नियम-विरुद्ध था, तो काग्रेसी मन्त्रिमंडलो ने विरोधस्वरूप त्यागपत्र दे दिया। जोश मलीहाबादी ने उस वक्त जंगे अज़ीम पर अग्रेजो की बौखलाहट पर एक तजिया नज्म 'ईस्ट इडिया कम्पनी के फरज़न्दो के नाम' से कही जिसमे हिन्दुस्तान के जज्बात को समो दिया है। यह नज्म ज़ब्त कर ली गयी और जोश के घर की तलाशी ली गयी, जिस पर जोश ने एक नज्म 'तलाश' शीर्षक से भी कह डाली। जोश की 'ईस्ट इडिया कम्पनी के फरज़न्दो के नाम' के अलावा उस दौर की चन्द यादगार नज़्मे, मजाज़ की 'अधेरी रात का मुसाफिर', मखदूम की 'अधेरा' और 'ज़ुल्फे चलीपा', सरदार जाफरी की 'जग और इकिलाब', अल्ताफ मशहदी की 'वतन आजाद करने के लिए', अख्तरुल ईमान की 'सवालिया निशान', साहिर की 'लम्हा-ए-गनीमत', जानिसार अख्तर की 'सवेरा' हैं जिन्हे उस वक्त काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। उस समय हुकूमत ने तहरीर और तकरीर पर पाबन्दिया लगा दी थी और जन-साधारण की आवाज़ को दवाने के लिए जेलखानो के दरवाजे खोल दिये थे। तमाम वडे-बडे काग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिये गये थे। जब बरतानवी हुकूमत हिटलर की लगातार विजय से घबराई तो हिन्दुस्तान को जग के बाद नौआबादयाती दर्जा देने का वादा किया। सन् १९४१ ई० मे हिन्दुस्तान की आजादी का वादा किया गया और गिरफ्तारशुदा नेताओ को रिहा कर दिया गया, लेकिन आजादी का स्पष्टीकरण नही किया गया। काग्रेस ने दुबारा अग्रेजों से युद्ध के मामले मे सहयोग करने से इन्कार कर दिया तो क्रिप्स मिशन आया, लेकिन नाकाम रहा। इसके बाद ही 'हिन्दुस्तान छोडो' आन्दोलन शुरू हुआ। अगस्त, १९४२ ई० मे आन्दोलन शुरू होते ही तमाम लीडर गिरफ्तार कर लिये गये। सिर्फ सुभाषचन्द्र वोस हिन्दुस्तान से फरार होने मे कामयाब हुए जिन्होने आज़ाद हिन्द फौज वनाई जो अग्रेजो के लिए वबालेजान बन गयी। इस अध्याय के तीसरे भाग मे जानिसार अख्तर की नज्म 'अय हमरिहाने काफला' उस समय की स्थिति का सच्चा चित्र पेश करती है। जव्वाद जैदी की 'क़ैद की तलाश' महादेव देसाई की मौत पर है जिसके पीछे बरतानवी साजिश का हाथ था। शमीम किरहानी की 'कुछ देर सो लेने दो' महात्मा गाधी की गिरफ्तारी से सम्बन्धित है और कैफी आज्मी की नज्म 'किला-ए-अहमदनगर' है जहा काग्रेसी नेता नज़रबन्द थे। इनके अलावा मजाज की 'विदेशी मेहमान से' और 'ख्वाबे सहर', जमील अहमद मज़्हरी की 'मौसम के इशारे' और फैज की 'वोल' इस भाग मे शामिल है जो उस वक्त शाइरो के तेवर के गम्माज़ हैं। जन-साधारण के दिलो

की आग पूरी तेजी से भडक रही थी कि बंगाल का अकाल टूट पडा, जिसमे लाखो हिन्दुस्तानियो की जानें गयी। इसके पीछे क्या था ? शायद जिगर का यह शेर पढना काफी है—

इक तेग की जुबिश सी नज़र आती है मुझको
इक हाथ पसे परदा-ए-दर देख रहा हू

बगाल के अकाल पर उर्दू शाइरी मे अनगिनत नज़्मे कही गयी हैं जिसमे मे हमने इस अध्याय मे सिर्फ त्रिलोकचन्द महरूम, जिगर मुरादाबादी, आनन्द नारायण मुल्ला, अख्तरुल ईमान, वामिक जौनपुरी और साहिर लुधियानवी की नज़्मे शामिल की है।

सन् ४५ ई० मे जब महायुद्ध समाप्त हुआ तो केबीनेट मिशन हिन्दुस्तान आया, जिस पर जोश की नज़्म 'वज़ारती वफ्द का फरेब' और अहमद नदीम कासमी की नज़्म मे हिन्दुस्तान की आवाज़ छुपी हुई सुनाई देती है। इस दरमियान मे गाधी-जिन्ना मुलाकात से अवाम को बडी-बडी आशाए थी जिसका इज़्हार जानिसार अख्तर और कैफी आज़मी की नज़्मो से होता है। लेकिन वह उमीद भी बेकार साबित हुई और गाधी और जिन्ना किसी समझौते पर न पहुच सके। मुस्लिम लीग की बटवारे की माग कायम रही। शमीम किरहानी की नज़्म 'पाकिस्तान चाहने वालो से' एक वतनपरस्त के दिल की सदा है। सन् १९४६ ई० मे जब आज़ादी का आन्दोलन हर क्षण अपनी मज़िल के करीब होता जा रहा था, जहाज़ियो की बगावत ने अग्रेजो के छक्के छुडा दिये। इसके बाद ही इग्लिस्तान के प्रधान मत्री एटली ने एलान किया कि १९४७ ई० मे शासन हिन्दुस्तानियो के सुपुर्द कर दिया जायेगा। उस वक्त हिन्दुस्तान के वायसराय लार्ड माउटबेटन थे। जब किसी तरह काग्रेस और मुस्लिम लीग मे कोई समझौता न हो सका तो मुल्क हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे बाट दिया गया। इस भाग मे कई और नज़्मे हमने दी हैं। सीमाब अकबराबादी की 'मज़िल करीबतर है', फिराक की 'आज़ादी', मखदूम की 'आज़ादी-ए-वतन', मसऊद अख्तर जमाल की 'एहसासे कामरा', कैफी आज़मी की 'आखरी मरहला', इक़बाल अहमद सुहैल की 'मज़रे रुख्सत' और सिकन्दर अली वज्द की 'बशारत' इस पूरे दौर की तस्वीर पेश करती हैं।

अलावा इनके जगन्नाथ आज़ाद और त्रिलोकचन्द महरूम की नज़्मे, जो 'आज़ाद हिन्द फौज' के शीर्षक से हैं, उसमे शामिल हैं। 'सुभाषचन्द्र बोस बहादुरशाह ज़फर के मज़ार पर' भी आज़ाद की एक लोकप्रिय नज़्म है।

सातवां अध्याय

इस अध्याय मे उन नज्मो का एक सक्षिप्त संकलन है जो जश्ने आज़ादी के मौके पर कही गयी। १४-१५ अगस्त की दरमियानी रात हिन्दुस्तान के लिए सूरज से ज्यादा रौशन थी। जिस आजादी के लिए हमारे अवाम ने अनगिनत कुर्बानिया दी थी—

सीने से आधी रात के
फूटी वह सूरज की किरन

अगर हम पीछे की तरफ नज़र डालें तो मालूम होगा कि आजादी की प्राप्ति के लिए प्रारम्भिक सघर्ष से लेकर आजादी की प्राप्ति तक उर्दू शाइरी मे अशफाकुल्ला शहीद और रामप्रसाद बिस्मिल तो फासी पर ही झूल गये, जिन्होने अग्रेजो के हाथ कैद की यातनाएं झेली उनमे मौलाना हसरत मुहानी, मौलाना मुहम्मद अली जौहर, जमील मज्हरी, गोपीनाथ अमन, मेलाराम वफा, फिराक गोरखपुरी, अहमक फफूदवी, सरदार जाफरी, मखदूम मोहिउद्दीन और न जाने कितने अदीब और शाइर हैं।

इस मौके पर बेशुमार नज्मे कही गयी जिनमे से हमने जानिसार अख्तर, सिराज लखनवी, इकबाल अहमद सुहैल, आनन्द नारायण मुल्ला, सागर निज़ामी, अमीन सलोनवी, मजाज लखनवी, याह्या आजमी, कमाल अहमद सिद्दीकी, सिकन्दरअली वज्द की नज्मे या उनका उद्धरण दिया है। ये नज्मे सचमुच दिली जज्बात का जगमगाता आइना है। इनमे शाइरो के दिल की उमग और तवानाई बेदार नजर आती हैं।

आठवां अध्याय

इस अध्याय मे हमने उन चन्द अहम तारीखी घटनाओ से सबधित नज्मे दी है जो आजादी के पच्चीस सालो मे घटी। अक्तूबर १९४९ ई० मे पाकिस्तानियो ने कश्मीर मे छेड़छाड शुरू की। कबाइलियो को काश्मीरियो के भेस मे समावेली और ठाढूचक के रास्तो से काश्मीर की वादी मे दाखिल किया गया जिसका मक्सद इस इलाके मे अराजकता फैलाना था। शेख़ अब्दुल्ला ने हिन्दुस्तानी हुकूमत से मदद चाही और २७ सितम्बर को हिन्दुस्तानी फौज हरकत मे आयी और अक्तूबर मे यह हमला पस्त कर दिया गया। ब्रिगेडियर उस्मान जो इस जग मे शहीद हुए, सही मानो मे हीरो की हैसियत रखते है। इस मौके पर जो नज्मे उर्दू शाइरों ने कहीं, उनमे से हमने रिफत सरोश की

'वादिए गुल', नजीर बनारसी की 'मादरे हिन्द से' और त्रिलोकचन्द महरूम की नज्म 'पयामे सुलह' शामिल की हैं।

दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना फ्रांसीसी शासन के अधीन भारतीय भागो का दुबारा हिन्दुस्तानी शासन मे आना था।

सन् १६६४ ई० मे फ्रेंच ईस्ट इडिया कम्पनी कायम हुई थी और सूरत तथा मसूलीपट्टम मे उन्होने अपनी फैक्टरिया कायम की थी। फ्रासिस मार्टिन के ज़माने मे पाडिचेरी पर फ्रासीसियो का कब्ज़ा हुआ और उसे हिन्दुस्तान मे फ्रासीसी कालोनियों की राजधानी बनाया गया। फ़्रासीसियो का सबसे योग्य गवर्नर डूप्ले (DUPLEIX) था, लेकिन वह क्लाइव की तुलना मे कुछ भी न था जिसने हिन्दुस्तान मे अंग्रेज़ी साम्राज्य की बुनियाद डाली। हिन्दुस्तान की आजादी के बाद फ्रासीसियो ने एक संधि के द्वारा अपनी कालोनियो को आज़ाद कर देना खुद पसन्द किया, अतएव २८ मई १९५६ ई० को ये इलाके भी हिन्दुस्तानी शासन का अंग बन गये।

तीसरी महत्त्वपूर्ण घटना पोर्तगीज़ नौआबादियो की मुक्ति थी। हिन्दुस्तान मे जिस पहली यूरोपियन कौम ने कदम रखा था वह पुर्तगाली ही थे। ये लोग भी व्यापारी के रूप मे ही आये थे। उन्होने कालीकट, कोचीन और कानानूर मे अपने व्यापार-केन्द्र स्थापित किये थे। धीरे-धीरे भारत की धरती पर अपनी नौआबादिया बना ली। उनका पहला वायसराय, जिसे हिन्दुस्तान मे पुर्तगाली शासन का सस्थापक कहा जाता है, अलफांसो था। उसी ने गोवा को बीजापुर की सल्तनत से छीनकर पुर्तगाली राज्य मे शामिल किया था। इस वायसराय के बाद हिन्दुस्तान के और भी हिस्से डीव, बसीन और दमन पुर्तगालियो के अधीन आ गये। सन् १५२६ ई० मे जब बाबर ने मुगल शासन की नीव रखी तो पुर्तगालियो को एक हद तक मुह की खानी पडी। इसी तरह जब डच और अंग्रेज हिन्दुस्तान मे आये तो पुर्तगालियो की ताकत को और धक्का पहुचा। डच भारत मे अपना राज्य स्थापित न कर सके। सिर्फ चन्द व्यापार-केन्द्र ही अस्थायी रूप से उनके अधिकार मे रहे। डेनिस जिन्होने सत्रहवी सदी के प्रारम्भ मे अपने व्यापार-केन्द्र तंजौर (मद्रास) और सीरमपुर (बगाल) मे कायम किये थे वह केन्द्र सन् १८४५ ई० मे उन्होने अंग्रेज़ों के हाथ बेच दिये।

हिन्दुस्तान की आज़ादी के बाद जो आन्दोलन हिन्दुस्तानी वालटियरो ने पुर्तगालियो से दीव, दमन और गोवा को खाली कराने के लिए चलाया, वह ११ दिसम्बर १९६१ को रग लाया जब हिन्दुस्तानी फौज की मदद से इन इलाको को विदेशी गुलामी से आज़ादी मिली। कैसरुज्जाफरी की नज़्म 'पाच

सौ बरस लम्बी रात' की यही तारीखी पृष्ठभूमि है। त्रिलोकचन्द महरूम की नज्म 'गोवा के सितमशिग्रार' उन अत्याचारो का हवाला देती है जो पुर्तगाली शासको ने निहत्थे स्वयसेवको पर ढाये थे।

१९६२ मे हिन्दुस्तान और चीन के बीच लडाई की नौबत आयी। हिन्दुस्तान और चीन के व्यापारिक और मैत्री सम्बन्ध दो हजार साल से भी पुराने रहे है। हिन्दुस्तान की प्राचीन कितावो मे चीन की मित्रता का ज़िक्र मिलता है। पहली सदी ईस्वी मे बौद्ध धर्म चीन मे फैलना शुरू हो गया था। कितने ही चीनी बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने हिन्दुस्तान आते रहे। बुद्ध बद्धरा और बुद्ध धर्मा ने प्राचीन काल मे चीन मे बौद्ध आराधना-गृह स्थापित किये। यद्यपि बीच की कई सदियो का इतिहास हमारी नजरो से ओझल है, लेकिन हिन्दुस्तान मे अग्रेजी शासन स्थापित होने के बाद इन सम्बन्धो ने राजनैतिक रूप धारण कर लिया था। सन् १९१३ मे जो कान्फ्रेंस बरतानिया, चीन और तिब्बत के बीच अग्रेजो ने बुलाई थी उसमे चीन की भारत-तिब्बत सीमा के मसले पर इख्तिलाफ था। इस मौके पर मैकमोहन लाइन भारत और तिब्बत के बीच अस्तित्व मे आयी। भारत की आजादी के बाद भारतीय नेताओ ने भारत-चीन सम्बन्धो को मैत्रीपूर्ण बनाने की पूरी कोशिश की। रवीन्द्रनाथ टैगोर और पडित नेहरू उन लोगो मे से थे जिन्होने हिन्द-चीन के सम्बन्धो को बडा महत्त्व दिया। अतएव टैगोर ने शातिनिकेतन मे एक चीनी भवन भी बना डाला था। सन् १९४९ ई० मे माओ त्सेतुग के शासन की बागडोर सम्भालते ही हिन्दुस्तान उन चन्द पहले देशो मे से था जिसने चीनी गणतन्त्र को तस्लीम किया, यहा तक कि पचशील के सिद्धान्तो को दोनो देशो ने मिलकर माना और उसे बढावा देने की कोशिश की।

सन् १९५० ई० मे जब चीनी हुकूमत ने तिब्बत को अपने मे शामिल कर लिया तो भारत ने उस समय भी चीन का हक तिब्बत पर मान लिया। सन् १९५७ ई० मे जो चीनी नक़्शे प्रकाशित हुए उनमे नेफा, लद्दाख और उत्तरप्रदेश के कुछ हिस्सो को चीनी सीमा मे दिखाया गया था और यही से भारत के दिल मे चीनियो की तरफ से सन्देह पैदा होने लगा। सन् १९५९ मे चीनी फौजो ने भारत की सीमा को पार करके लागचू पर फार्यरिंग की। नेहरू और चाओ एन लाई के बीच पत्र-व्यवहार का सिलसिला जारी ही था कि जुलाई १९६२ ई० मे गुलवान वादी मे जग छिड़ गयी।

२० अक्तूबर को चीन का ज़बरदस्त हमला हुआ। भारत इस अचानक आफत का मुकाबला करने के लिए उठ खड़ा हुआ। एकता और देशभक्ति

की लहर देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड गयी। उर्दू शाइरो ने सैकडो नज़्मे लिखी जिनमे इस जग के मौके पर देश की एकता पर जोर दिया। जानिसार अख्तर की 'हम एक हैं', कैफी आज़मी की 'बुतशिकनी', आनन्द नारायण मुल्ला की 'लहू का टीका', हुरमतुलइक्राम की 'हिमालय की जानिब चलो', अजमल अजमली की 'फूल ज़ख्मी है', मजरूह की 'चीन की पैमा-शिकनी के नाम', नरेशकुमार शाद की 'शाखे गुल ही नही', ज़फर गोरखपुरी की 'दोस्तो आओ सूए हिमाला चलें', काजी सलीम की 'मेरे आज़ाद वतन', एजाज़ सिद्दीक़ी की 'नागुज़ीर'—ये चन्द मुतखब नज़्मे हैं जो उस वक्त उर्दू मे कही गयी।

२१ नवम्बर सन् १९६२ ई० को यद्यपि चीन ने युद्धबंदी का एलान कर दिया लेकिन कई हजार मील का इलाका उनके कब्ज़े मे रह गया।

इस युद्ध को ज़्यादा अरसा नही गुज़रा था कि पाकिस्तान ने फिर जगी ढग इख्तियार किया और सितम्बर १९६५ ई० मे छम्ब जौरिया से काश्मीर को पूरी तरह काट देने की कोशिश की। भारतीय फौजो ने मजबूर होकर लाहौर का महाज़ खोल दिया। १४ दिन के बाद लडाई बन्द हो गयी। अक्तूबर मे ताशकन्द मे लालबहादुर शास्त्री और अय्यूब खा के बीच समझौता हुआ जो ताशकन्द-सधि के नाम से मशहूर हुआ। इस हिन्द-पाक जग के दौरान जो नज़्मे विशेष महत्त्वपूर्ण हैं, वह कैफी आज़मी की 'फर्ज़', अली सरदार जाफरी की 'कौन दुश्मन है ?' और 'सुब्हे फरदा' है। ताशकन्द-सधि की तरजुमानी सरदार जाफरी की 'ताशकन्द की शाम' और रिफत सरोश की 'रूहे ताशकन्द' करती हैं। एक नज़्म जगन्नाथ आज़ाद की 'अहबाबे पाकिस्तान के नाम' भी शामिल है जो उस दोस्ती की भावना की प्रतिनिधि है जिसके लिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जनता हमेशा बेचैन रही है।

पश्चिमी पाकिस्तान ने शुरु ही से पूर्वी पाकिस्तान के साथ जो भेदभाव बरता और जिस तरह वहा की जनता को दबाकर रखने की कोशिश की, वह एक खुला हुआ सत्य है। सन् १९५८ ई० मे जनरल अय्यूब खा ने पाकिस्तान के डिक्टेटर की हैसियत प्राप्त की तो उनका रवैया भी बगालियो के साथ भेदभाव का रहा। उनकी किताब 'Friends Not Masters' का अध्ययन इसे स्पष्ट करता है। सन् १९६२ ई० मे मार्शल ला के उठ जाने और 'बुनियादी जम्हूरियत' के नाम पर अपनी स्कीम को लागू करने पर जो कदम अय्यूब खा की हुकूमत ने उठाये वह पश्चिमी पाकिस्तान के लिए कितने ही लाभदायक हों, पूर्वी पाकिस्तान उससे कुछ भी प्राप्त न कर सका। अय्यूब खा के बाद याह्या खा

के शासन-काल मे भी पूर्वी पाकिस्तान के साथ वही बरताव जारी रखा गया। लेकिन जब याह्या खा ने पाकिस्तान मे पहले ग्राम चुनाव का निश्चय किया और उसके नतीजे मे मुजीबुर्रहमान और उनकी अवामी लीग जीत गयी तो याह्या खा को दुबारा 'गौर' करना पड़ा। २५ मार्च १९७१ को बगालियो को समाप्त कर देने की ठान ली गयी। बगालियो के उलेमा, प्रोफेसर, विद्यार्थी और जन-साधारण का खून बहाया जाने लगा। यहा तक कि ईस्ट पाकिस्तान रेजीमेट भी याह्या खा के गुस्से से न बच सकी। यह आग इतनी भडकी कि लाखो की सख्या मे बगाली शरणार्थियो ने भारत मे पनाह ली। भारत को मजबूरन इस जग मे हस्तक्षेप करना पडा। बगला देश की मदद हमारे देश ने अपने ऊचे आदर्शो के आधार पर की। पाकिस्तानी फौज के हथियार डालने के बाद हिन्दुस्तान ने ६ दिसम्बर, १९७१ ई० को बगला देश गणतत्र को स्वीकार कर लिया। बगाल के कितने शाइर हैं जिनकी नज्मो और गीतो मे भारत दोस्ती और मेलजोल की भावना भरी हुई है। शम्सुर्रहमान, दाऊद हबीब, बेगम आतिफा, जहाआरा, कारी लतीफा हक, ज़ैबुन्निसा जमाल, अस्मा अब्बासी और मेहरुन्निसा के नाम काबिले जिक्र हैं। बेगम सोफिया कमाल ने काजी नजरुल इस्लाम के बारे मे लिखा है कि "आप वह हैं जिन्होने हमे नया रास्ता दिखाया।" यह दरअसल इशारा है काज़ी नजरुल इस्लाम के उस गीत की तरफ जिसमे उन्होने कहा है—

"हिन्दू और मुसलमान एक ही डाल के दो फूल हैं, एक ही मा की दो आखें हैं।"

आज बगला देश एक यथार्थ है। बंगला देश की जगे आजादी के मौके पर उर्दू शाइरो ने जो नज्मे कही, उनमे जानिसार अख्तर की नज्म 'फतह बगला' और कैफी आजमी की 'बगला देश' विशेष महत्त्व रखती हैं। मैकश और ज़िया सरहदी की नज्मे भी इस सिलसिले मे दी गयी हैं। इस समय जो समस्याएं भारत, पाकिस्तान और बगला देश के परस्पर सहयोग से हल होना ज़रूरी हैं और जिसके लिए पहला कदम 'शिमला कान्फ्रेंस' के रूप मे उठाया जा चुका है, यह एक शुभ लक्षण है। यूसुफ नाज़िम की नज्म 'रौशनी' शिमला कान्फ्रेस के मौके पर कही गयी है। जमील ताबा की 'शिमला समझौता' और न जाने कितनी नज्मे इस मोड पर उर्दू ज़बान मे हमारे सामने आती है।

१५ अगस्त, १९७२ ई० हमारी आजादी की पच्चीसवी सालगिरह लेकर आया। यह बकौल सागर निजामी, "खुशी का साल भी है और सोच का लम्हा भी।" इस समारोह पर सागर की नज्म 'पच्चीसवी सालगिरह', जानिसार

अख्तर की नज़्म 'जश्ने सीमी पर', नुशूर वाहिदी की 'वहारे आजादी', शमीम किरहानी की 'दौलते सीमी', फज़ा इब्ने फैज़ी की 'शजरे नूर', रिफत सरोश की 'मज़िल व मजिल', वकार की 'जश्ने सीमी' वह चन्द नज्मे हैं जो इस अध्याय मे शामिल की गयी हैं।

हमारे मुल्क ने इन पच्चीस सालो मे जो उन्नति की तरफ कदम वढाया है उसके विवरण का यह मौका नही, फिर भी हम भविष्य पर नजर जमाये हुए हैं और ऐसे शानदार भविष्य की ओर वढने की प्रतिज्ञा किये हुए हैं जो हमारे राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्वी वना दे। यह आर्थिक स्वतत्रता किसी देश के लिए भी वडा महत्त्व रखती है। हमारी प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने आज़ादी-ए-हिन्द की इस पच्चीसवी सालगिरह पर अपने सन्देश मे कहा था कि "यदि हमे एक ऐसे नये सर्जक समाज की रचना करनी है जहा सवके लिए न्याय हो, सवके लिए समान अवसर हो, जहा हर शहरी को अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर प्राप्त हो, जहा सवके-सव मर्द और औरतें जम्हूरी तरीको पर कारवन्द हो, जहा सवके-सव नागरिक अपने साथियो और इमानो के ति जिम्मेदारी की भावना रखते हो तो हमे इस लक्ष्य की प्राप्ति मे आत्मविश्वास और साहस को अपना रफीके सफर वनाना होगा।" समाजवाद के लिए, इस सघर्ष के लिए यकीनन हमारा देश तैयार हो चुका है। लेकिन हमे मार्ग की कठिनाइयो का सामना भी करना होगा। वहुत-से मसले हैं और हम समझते हैं कि इनमे सवसे अहम राष्ट्रीय एकता को वरकरार रखना है जो हमारे इतिहास और सस्कृति की सवसे मूल्यवान धरोहर है। जानिसार अख्तर की नज्म 'हमारी तारीख' इस विचार से एक महत्त्वपूर्ण नज्म है क्योकि यह हमारे इस आदर्श पर रौशनी डालती है। राष्ट्रीय एकता की समस्या एक तरह वुनियादी समस्या वन जाती है क्योकि परस्पर एकता के विना उन्नति की रफ्तार तेज़ नही हो सकती। यदि हम अपने प्राचीन सास्कृतिक इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमे मालूम होगा कि महान भारतीय राष्ट्रीयता की शक्ति का रहस्य यह रहा है कि हिन्दुस्तान के सव लोग अपने मज़हव, नस्ल और जवान के फर्क के वावजूद एक ऐसे देशव्यापी समाज की रचना हमेशा से करते आये हैं जिसमे धार्मिक, जातीय और भाषा सवधी दायरे मे सव आजाद रहे हैं और राष्ट्रीयता के वड़े दायरे मे एक-दूसरे के पावद। आज इसकी ज़रूरत है कि एक संतुलित और मैत्रीपूर्ण रवैया इख्तियार किया जाये जिसमे सव सम्प्रदाय स्वय को सुरक्षित समझें। कुछ राजनैतिक सम्प्रदायवादी व्यक्ति और सस्थाए अपने सीमित उद्देश्य प्राप्त करने के लिए संगठित योजनाए अपनाती रहती हैं और

साम्प्रदायिकता के ज़हर को फैलाना चाहती हैं। हमे उनसे सावधान रहने की ज़रूरत है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने राष्ट्रीय अखडता पर ज़ोर दिया था। उनका यह वाक्य कि "जहा दुनिया तग घरेलू दीवारो मे बट कर टुकडे-टुकड़े न हो चुकी हो।" उनके आइडियल को स्पष्ट करता है। पडित जवाहरलाल नेहरू ने खुले शब्दो मे यही बात दोहराई थी—

There is only one India of which all of us are inheritors. It belongs to all of us.

उर्दू शाइरी मे इस कौमी वहदत और एकता की आवाज़ हमेशा बलन्द रही है और इस किताब 'हिन्दोस्ता हमारा' की पहली जिल्द के दीबाचे मे हम इस विषय पर बहुत कुछ प्रकाश डाल चुके हैं।

गाधीजी ने एक जगह कहा था कि "भारत के सब धर्मों और जातियों के लोगो को एक ही झडे के नीचे लाकर जमा कर दो और उनमे एकता की भावना इस तीव्रता से पैदा कर दो कि उनके दिमागो से साम्प्रदायिकता और तगनजरी का नामोनिशान तक मिट जाये।" उर्दू शाइरी का भडार खोलकर देखें तो ऐसा महसूस होता है मानो वह महात्मा गाधी के इस उपदेश पर सदियो से अमल करती आ रही है।

इस जगह भी हमने कुछ ऐसी नज़्मे दी हैं जो उस शाइरी की इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करती हैं। शमीम किरहानी की 'नदी की आवाज़', रिफत सरोश की 'उरूसे यकजिहती', सरदार जाफरी की 'नफरतो की सपर', कैफी आज़मी की 'बहुरूपिनी' जो साम्प्रदायिकता के विरुद्ध एक एहतिजाज है, और असरार अकबराबादी की नज्म 'दिल के अन्दर जो रावण है' जो दो दिलो और दो रूहो को मिलाने की दीक्षा देती है, इस भाग मे शामिल है—

अन्दर का ससार सजाकर बाहर का संसार सजाओ

इसके बाद कुछ नज़्मे ऐसी भी दी गयी है जो हमारे भविष्य के इरादो की तरफ इशारा करती हैं और हमारे दिलो को शक्ति देती हैं। खुर्शीद अहमद जामनी, हुरमतुल इक्राम, शमीम किरहानी, नाज़िश प्रतापगढी, खलीलुर्रहमान आज्मी की नज़्मे इसी विपय पर हैं।

अत मे 'हमारे कौमी रहनुमा' के शीर्षक से एक परिशिष्ट शामिल है जिसमें तमाम उन महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वो पर उर्दू शाइरो की नज़्मे हैं जो हिन्दुस्तान की तकदीर के बनाने वाले रहे है। सुल्तान टीपू, बहादुरशाह ज़फर, महारानी लक्ष्मीबाई, मिसेज़ बेसेंट, बाल गगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, शहीद, भगतसिंह, जीतेन्द्रदास, सी० आर० दास, लाला लाजपत राय, मौलाना मुहम्मद

अली, मोतीलाल नेहरू, डाक्टर अन्सारी, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, एम० एन० राय, सरोजिनी नायडू, रफी अहमद किदवाई, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री और डाक्टर ज़ाकिर हुसैन, सभी को उर्दू शाइरी ने श्रद्धा के फूल पेश किये हैं और उनकी यादों को अपने सीने में सुरक्षित कर रखा है।

इस किताब को पेश करते हुए हम इसकी कमियां और त्रुटियां अनुभव करते हैं। फिर भी यह उस वतनी शाइरी की एक झलक ज़रूर है जो उर्दू ज़बान में की गयी। इस संकलन में अनेक महत्त्वपूर्ण नज़्में शामिल होने से रह गयी होंगी जिसके लिए हम अपने सीमित साधनों से मजबूर थे। कई ऐसे शाइरों का कलाम भी शामिल न हो सका जिनके प्रकाशित संग्रह उपलब्ध न हुए। मिसाल के तौर पर नियाज़ हैदर का नाम लिया जा सकता है, जिसका हमें अफ़सोस है। इस किताब के लिए सामग्री एकत्रित करने में जिन सज्जनों ने हमारी मदद की है, खासतौर पर डाक्टर अब्दुल सत्तार दलवी के हम विशेष रूप से आभारी हैं।

जां निसार अख़्तर
९ जनवरी १९७३

पहला अध्याय

सन् १८५७ से पहले

वीरानिए-आलम

शाह ज़हूरुद्दीन हातिम

क्या बयां कीजिए नैरंगिए-औजाए-जहा[१]
कि बयक चश्म ज़दन[२] हो गया आलम वीरा

जिन के हाथी थे सवारी को स्यो अब नगे पाव
फिरे हैं जूते को मुहताज पडे सरगर्दा[3]

नेमतें जिन को मुयस्सर[४] थी हमेशा हर वक़्त
रोज फिरते है यहा कूत[५] को अपने हैरा

जिन के पोशाक से मामूर[६] थे तोशाखाने[७]
सो वह पैवन्द को फिरते है तरस्ते उरिया[८]

पर्च.ए-नान[९] को रख हाथ मे खाते हैं अमीर
जिसको देखू हूं सो है फिक्र मे गल्ता पेचा[१०]

ख्वाने-अल्वान[११] कहा और वह कहां दस्तरख्वां
यानी चे मीरो-चे मिर्ज़ा-ओ-चे नवाब, चे खा

पूछता कोई नही हाल किसी का इस वक्त
है अदम[१२] दहर की आखो से मुरव्वत का निशां

कान धर बात किसू की नही सुनता कोई
आख से आंख मिलाना तो यहा क्या इम्कां

१ दुनिया वालो के व्यवहार की परिवर्तनशीलता, २ पलक झपकते ही, ३. व्याकुल, परेशान, ४. प्राप्त, ५ आहार, ६. भरे हुए, ७ गोदाम, ८ नगे, ९. रोटी का टुकड़ा, १०. डूबा हुआ, ११. विभिन्न प्रकार के खानो की थालिया, १२ अनुपलब्ध।

वे जो बेकार हैं उनका तो खुदा हाफिज़ है
वे नहीं नाम को नौकर उन्हे तन्ख्वाह कहा

क्या ज़माने की हवा हो गयी सुब्हान अल्लाह
जिन्दगानी हुई हर एक की अब दुश्मने-जा

ज़न-ओ-बच्चो[13] से छुपा खाते हैं टुकडे के तईं
गजब आये जो कोई जाये किसी के मेहमा

वे जो ठंडे को तरसते थे सो इस दौर मे आज
हुए हैं साहिबे-मालो-महलो-फीलो-निशा[14]

रुत्वा शेरो का हुआ हैगा शगालो[15] को नसीब
जाए-बुलबुल है चमन बीच गज़लख्वा जागा[16]

अय खुदा ! खूब कहा है यह किसू ने मिसरा
'यानी नेमत बसगा बख्शी-ओ-दौलत बखरा'[17]

शहर-आशोब[1]

शाह जहूरुद्दीन हातिम

तू खोल चश्मे-दिल[2] और देख कुदरते-हक[3] यार
कि जिन्ने अर्ज़ो-समा[4] और किया है लैलो नहार[5]
न खो तू उम्र को गफलत मे टुक तू हो हुशियार
कि दौर बारह सदी का है सख्त कज रफ्तार[6]
जहा के बाग मे यकसा है अब बहारो-खिज़ा[7]

१३ औरत और बच्चे, १४ माल, महल हाथी और निशान वाले, १५ सियार, १६ कौवे, १७ कुत्तो के लिए नेमत और गधो को दौलत बख्शी जाती है।

शहर-आशोब

१ छन्द का प्रकार, २ दिल की आखें, ३ खुदा की कुदरत, ४ धरती और आकाश, ५. रात-दिन, ६ टेढ़ी चाल वाला, ७ वसन्त और पतझड।

शहो के बीच, अदालत की कुछ निशानी नही
अमीरो बीच, सिपाही की कद्रदानी नही
बुज़ुर्गों बीच कही, कोई मेहरबानी नही
तवाज़ो[८] खाने की चाहो कही, तो पानी नही
गोया जहा से जाता रहा सखावतो-प्यार[९]

यहा के काजी-ओ-मुफ्ती[१०] हुए हैं रिश्वतखोर
यहा के देख लो सब, अहले-कार[११] हैंगे चोर
यहा करम से नही देखते हैं और की ओर
यहा सभो ने भुलाई है दिल से मौत और गोर
यहा नही है मदारा[१२], वगैर दारोमदार

अमीरजादे है हैरान अपने हाल के बीच
थे आफ्ताब[१३] पर, अब आ गये ज़वाल[१४] के बीच
फिरे है चर्ख़ी से हर दिन, तलाशे-माल के बीच
वही घमडे-इमारत है, हर खयाल के बीच
खुदा जो चाहे तो फिर हो, पर अब तो है दुश्वार

रजाले[१५] आज नशे बीच जर के माते है
पहन लिबासे-जरी[१६], सब को सज दिखाते हैं
मिस्सी पे पान को खा सुर्ख़रू[१७] कहाते है
कभू सितार, कभी ढोलकी बजाते हैं
गुरूरो-गफ्लतो-जोबन के मध मे हैं सरशार[१८]

८ स्वागत, अतिथि-सत्कार, ९ उदारता और मुहब्बत, १० धर्मगुरु, ११ कर्मचारी, १२ गुज़ारा, १३ सूर्य, १४. पतन, १५ नीच, १६ स्वर्णवस्त्र, १७. कामयाब, १८. डूबे हुए।

शिकायते-ज़माना

अशरफ अली खां फुगा

क्योकर कटेंगे यारब, यह वेशुमार फाका
मुझको तो दूसरा है, नफरो[1] को चार फाका

शाहो-गदा[2] की हालत यकसा है मीर साहव
तन्ख्वाहदार भूके, रोज़ीनादार फाका

मुर्गे-चमन को अब तो मिलता नही दरे-गुल[3]
बुलवुल ने इस चमन मे, काटे हजार फाका

बन्दे सभी खुदा के कहते फिरे है अलजूअ[4]
आगे फुगा[5] कहूं क्या, सारा दयार[6] फाका

आईने-दावरी[1]

मिर्जा मुहम्मद रफी सौदा

किसी गदा ने सुना है यह एक शह से कहा
करू मैं अर्ज़ गर इसको न सरसरी[2] जाने

उमूरे-मुल्की[3] मे अव्वल है शह को यह लाजिम
गदा नवाज़ी[4]-ओ-दरवेश पर्वरी[5] जाने

१ व्यक्ति, २ राजा और रक, ३ फूल का दरवाजा, ४ भूख-भूख, ५ हाहाकार, ६. घर।

आईने-दावरी

१ विधि या विधान, २ साधारण, ३. राजकाज, ४ दरिद्र की सेवा, ५ फ़कीरो की परवरिश।

मकामे-अदल[६] पे जिस दम सरीर आरा[७] हो
हर एक खुर्दो-कला[८] मे बरावरी जाने

वही हो राए मुबारक मे उसके गोश नशी[९]
कि जिसमे आम ए-खिल्कत[१०] की बेहतरी जाने

मुलाजिमों से यह लावे उसी को वरसरे-कार[११]
कि जिससे कारे-खलाइक[१२] की वेहतरी जाने

चमन मे मुल्को-रैयत[13] है गुल उन्हूं के लिए
बिसाने-अब्रे-सियह[१४] साया गुस्तरी[१५] जाने

हमेशा जूदो-करम[१६] मे समझ हर एक की कद्र
मसावी अज़ उमरा ता ब लश्करी[१७] जाने

बजा जो तरह सिपाही हो उसके समझे मर्द
न यह कि मरने को बेजा सिपहगरी[१८] जाने

जो शख्स नाइब दावर[१९] कहाये आलम में
यह क्या सितम है न आईने-दावरी जाने

सिवाए इन सुखनों[२०] के नो ताजे ज़रीं को
खयाल अपने मे सर धर के सरवरी[२१] जाने

यह फखे-ताज[२२] तो यू निज्दे-फहम[२३] है जिस तरह
खुरूस[२४] अपने को सुल्ताने-खावरी[२५] जाने

गरज़ यह वह गजले कतअबन्द[२६] है सौदा
कि इसकी कद्र कोई क्या जुज़ अनवरी[२७] जाने

६ न्याय-स्थल, ७ विराजमान, ८ छोटे-वडे, ९. कान पर डालना, १० जनसाधारण, ११ काम मे लगा हुआ, १२ जनता के काम, १३ देश और जनता, १४ काले बादल की तरह, १५ छाव करना, १६ उदारता, १७ अमीरो से सिपाही तक, १८ सिपाही की कला, १९ खुदा का प्रतिनिधि, २० उपदेश, २१ बादशाहत, २२ ताज का गर्व, २३ मेरी अक्ल के अनुसार, २४ मुर्गा, २५ पूर्व का वादशाह, २६ कवितावद्ध, २७ अनवरी (ईरानी शाइर) के सिवा।

वीरानिए-शाहजहानाबाद

मिर्ज़ा मुहम्मद रफी सौदा

सुखन[1] जो शहर की वीरानी से करू आगाज[2]
तो इसको सुन के करे होश, चुग्द[3] के परवाज़
नही वह घर, न हो जिसमे, शगाल[4] की आवाज़
कोई जो शाम को, मस्जिद मे जाये बहरे-नमाज
तो वा चराग नही है, बजुज चरागे-गोल[5]

किसी के या न रहा, आसिया[6] से ताव अजाग[7]
हज़ार घर मे कही एक घर, जले है चराग
सो क्या चराग, वह घर है घरो के गम से दाग
और इन मकानो मे हर सम्त रेंगते है अलाग[8]
जहा वहार मे सुनते थे बैठकर हिंडोल

यह बाग खा गयी किस की नज़र, नही मालूम
न जाने किन ने रखा यहा कदम, वह कौन था सूम[9]
जहा थे सर्वो-सनोवर, है उस जगह मे ज़कूम[10]
मचे है ज़ागो-ज़गन[11] से अब उस चमन मे धूम
गुलो के साथ जहा, बुलबुलें करें थी किलोल

रखे थे सैर यह पनघट के गिर्द के देहात
कि लब जहा की थे पन्हारियो के आबे-हयात
और इन दरख़्तो की वे छाए, वे घने-घने पात
न वे दरख़्त हैं अब वहा, न आदमी की जात
कुओ मे मुर्दे पडे हैं, ने रेसमा[12] है न डोल

१ बातचीत, बखान, २ प्रारम्भ, ३ उल्लू, ४ सियार, ५ भूत-प्रेतों का चिराग़, ६ चक्की, ७ चूल्हा, ८. गधा, ९ मनहूस, अभागा, १० विषैला दरख़्त, ११ चील-कौवे, १२ रस्सी।

जहानाबाद तू कब इस सितम के काबिल था
मगर कभू किसी आशिक का, यह नगर दिल था
कि यू मिटा दिया गोया कि नक्शे-बातिल[13] था
अजब तरह का यह, बहरे-जहा मे साहिल था

कि जिसकी खाक से लेती थी खल्क[14] मोती रोल

दिया भी वहा नही रौशन, थे जिस जगह फानूस
पडे है खडरो मे, आईनाखानो के मानूस[15]
करोड दिल पुर अज़ उम्मीद, हो गया मायूस
घरो से यू नुजबा[16] के निकल गयी नामूस[17]

मिली न डोली उन्हे, थे जो साहबे चडोल

नजीबजादियो का इन दिनो है यह मामूल[18]
वह बुर्का सर पे कि जिसका, कदम तलक है तूल
है एक गोद मे लडका, गुलाब का सा फूल
और उनके हुस्ने-तलब का, हर एक से यह उसूल

कि खाके-पाक की तस्बीह है जो लीजिये मोल

अगर मुहिब हुआ मुस्तमअ[19] तो सुन यह नाम
दिया कुछ उसने बमकदूर[20], करके नज्रे-इमाम[21]
पडा जो शामते-ताले से खारजी से काम
दरोग दर अस्त का लाया, वह दरमिया मे कलाम

यह आगे और चली, कह के जेरे-लब[22] लाहौल

१३ झूठ का निशान, १४ जनसाधारण, १५ परिचित, १६ शरीफ लोग, १७ इज्जत, १८. नियम, १९ सुनने को तैयार, २०. भाग्यवश, २१ इमाम की भेंट, २२ होठो ही होठो मे।

गरज़ मैं क्या कहू यारो, कि देखकर यह कहर[२३]
करोड मर्तबा खातिर[२४] मे गुज़रे है यू लहर
जो टुक ही अम्ने-दिल[२५] अपने को, देवे गर्दिशे-दहर[२६]
कि बैठकर कही पे रोइये, कि मर्दुमे-शहर[२७]

घरो से पानी को वाहर करें झकोल झकोल

वस अब खामोश हो सौदा, कि आगे ताव[२८] नही
वह दिल नही कि अब इस गम से जो कवाव नही
किसी की चश्म न होगी कि वह, पुर आव[२९] नही
सिवाए इसके तिरी वात का जवाव नही

कि यह ज़माना है वेतरह का, ज़्यादा न वोल

(इक्तिवास)

शहर-आशोब

मीर तकी 'मीर'

मुश्किल अपनी हुई जो वूदो-वाश[१]
आये लश्कर[२] मे हम वराए-तलाश[३]
आन के देखी या की तुर्फा मआश[४]
है लबे-नान पे सौ जगह खराश

न दमे-आव है न चमच.ए-आश[५]

२३ विपत्ति, २४ दिल, २५ दिल की शांति, २६ दुनिया का चक्कर, २७. शहर के मर्द, २८ शक्ति, २९ अश्रुभरी।

शहर-आशोव

१ रहन-सहन, २ सेना, फौज, ३. खोज के लिए, ४ रहन-सहन का विचित्र ढंग, ५. चमचा-भर दुनिया।

मरने के मर्तबे मे हैं अहबाब[६]
जो शनासा मिला सो बेअस्बाब
तगदस्ती से सब बहाले - खराब
जिस के है बाल तो नही है तनाव[७]

जिस के है फर्श तो नही है फर्राश[८]

ज़िन्दगानी हुई है सब पे वबाल[९]
कुजड से झीके है रोते है बकाल[१०]
पूछ मत कुछ सिपाहियो का हाल
एक तलवार नीचे है इक ढाल

बादशाहो - वज़ीर सब कल्लाश[११]

पैसे वाले जो थे हुए है फकीर
तन से ज़ाहिर रगें हैं जैसी लकीर
हैं मुअज़्ज़ब[१२] गरज़ सगीरो-कबीर[१३]
मक्खिया-सी गिरें हज़ारो फकीर

देखें टुकडा अगर बराबर माश

शोर मुत्लक[१४] नही किसू सर मे
जोर बाकी नही अस्पो - अश्तर[१५] मे
भूक का जिक्र अक़्लो-अक्सर[१६] मे
खानाजगी से अम्न लश्कर मे

न कोई रिन्द है न कोई औबाश[१७]

६. यार-दोस्त, ७ तम्बू की डोरी, ८ फर्श बिछाने वाले, ९ बोझ, १० बनिये, ११ निर्धन, १२ अज़ाब मे फसे हुए, १३ छोटे-बड़े, १४ बिल्कुल, १५ घोड़े और ऊंट, १६ कम और ज़्यादा ,लोगो मे, १७ आवारा ।

जितने हैं यां अमीर वेदस्तूर[१८]
फिर यह हुस्ने मुलूक सब मश्हूर
पहुचना उन तलक वहुत है दूर
बात कहने का वा किसे मकदूर
हासिल उनसे न दिल को गैर खराश

यारो के जूद[१९] का क्या क्या है
वहम मे उनके भी जहा क्या है
आशकार[२०] है सब निहा क्या है
देखते हैं कही कि या क्या है
ऐसी सुहबत मे हम न होते काश[२१]

बस कलम अब जबा को अपनी सभाल
खुशनुमा कब है ऐसी कालो-मुकाल[२२]
है कुढब चर्खे-रू सियह[२३] की चाल
मसलिहत है कि रहिये होकर लाल
फायदा क्या जो राज़ करिये फाश

(इक्तिबास)

१८ बेफायदा, १९ उदारता, २० प्रकट, २१ क्या ही अच्छा होता, २२ बातचीत,
२३ काला आकाश।

शहर-आशोब

शाह कमालुद्दीन 'कमाल'

जिबस्के[1] है फलके-दू परस्त[2], नाहजार[3]
रहे है नित नजीबाओं[4] के दर प आज़ार[5]
हर एक शख्स है हाथो से उसके जारो-नजार[6]
अजब तरह से गुजरता है आह, लैलो-नहार[7]
न चैन जी को किसी के, न एक जा है करार

जो शख्स अहले-कमाल[8] और हैंगे अहले-हुनर[9]
वह फिक्रे-कूत[10] मे इतना है शशदरो-मुज़्तर[11]
कि तन को जा की, न जा को है तन की खबर
फिराता हर कसो-नाकस[12] के उनको है दर दर
वज़ीरो-शाह[13] से मिलना था जिनको नगो-आर[14]

वसद तलाश[15] मुयस्सर[16] जो आये भी है तुआम[17]
कलील[18] इतना कि सूझे है मौत का अजाम
तो एक जा पे जनो-मर्द[19] जमा होके तमाम
वह खाते उसको है यू आह, जू बमाहे-सियाम[20]
करे हैं शाम को रोज़े को, रोज़ादार अफ्तार[21]

१ चूकि, २ कमीनो का साथी, ३ बदज़ात, कमीना, ४ शरीफ लोग, ५ सताने पर तैय
६. परेशान, कमज़ोर, ७ दिन-रात, ८ कलाकार, ९ गुणी, १० रोटी की चिन्ता, ११ है
और बेचैन, १२ दुर्बल और शक्तिशाली, १३ राजा और मन्त्री, १४ शर्म की बात, १५ सैक
तलाश के बाद, १६ प्राप्त, १७. भोजन, १८. कम, १९ स्त्री-पुरुष, २० रोज़ो का मही
रमज़ान, २१ रोज़ा खोलना ।

वो ही यह शहर है और वो ही है यह हिन्दोस्तान
कि जिसको रश्के-जिना[22] जानते हैं सब इंसान
फिरंगियो की सो कसरत[23] से, होके सब वीरान
नज़र पडे है बस अब सूरते-फिरगिस्तान[24]

नही सवार रहे यहा सिवाए तुर्क सवार

जहा कि नौवतो-शहनाई, झाझ की थी सदा
फिरंगियो का है इस जा[25] पे अब टमटम बजता
इसी से समझो, रहा सल्तनत का क्या रुत्बा
हो जबकि महलसराओ[26] मे गोरो का पहरा

न शाह है न वज़ीर, अब फिरगी हैं मुख्तार[27]

सिपाहो-मुल्क[28], रैयत[29] से है न आगाही[30]
वज़ीर हैं, पे न समझें मरातिबे-शाही[31]
जो खर्च देखिये, सो खर्च है वह सब वाही
चले जो आगे तो क्या मरातिबो-माही[32]

कि दाम मे है गिरफ़्तार खुद यह माहीदार[33]

सिपाहियो ने जो दे सूद, फी रुपये आना
किया है हर्ब[34] जो रख रख के खाना और दाना
हर एक बनिये का या के जो देखो काशाना[35]
तो यूं नज़र पडे है, कि जैसे हो अस्लिहाखाना[36]

हर एक तरह के हथियार का है इक अम्बार

वह बीबिया, जो है अशराफज़ादिया[37] हैहात
कि जिनकी इफ्फतो-इस्मत[38] की हो सके न सिफात[39]
दरो पे उनके कर्ज़ख्वाह बनिये आ दिन-रात
तलब मे ज़र[40] की सुना जाते, लाखो है सल्वात[41]

कि तू का कहना था शोहर का जिनको तेग का वार

२२ जन्नत को शरमाने वाला २३. अधिकता, २४ इंग्लैंड की तरह, २५ जगह, २६ अन्त पुर, रनिवास, २७ मालिक, २८. फ़ौज और देश, २९ प्रजा, ३० जानकारी, ३१ बादशाह का रुत्बा, ३२ बादशाहो के जुलूस के निशान, ३३ इज्ज़त वाले, ३४ युद्ध, ३५ घर, ३६. हथियारो का गोदाम, ३७ शरीफ़ खान्दान की लडकिया, ३८ सतीत्व, ३९ तारीफ़, ४०. सोना, ४१ गालिया।

करे हैं बनिये की दो-चार दिन यह जब मिन्नत
तब एक दिन करे है, जिस देने की हिम्मत
सो इतनी जिससे न हो दफ़अ[४२] भूक की शिद्दत[४३]
न पहुंचे आका से हर्गिज गुलाम की नौबत
जो बीवी खाये तो बादी रहे है मुह को पसार

वकील बख़्शी से कहता है जब सिपाह का हाल
कि अब तो दीजिये तन्ख़्वाह, यह है तीसरा साल
सवार, पियादो की फाको से जिन्दगी है वबाल[४४]
तो बख़्शी देता है कहकर बस इसको, अच्छा टाल
हैं अहलकार, सो ऐसे हैं वह ख़ुदाईख़्वार[४५]

जो इस ज़माने मे हैं अमीर इब्ने-अमीर[४६]
सो वह तलाशे-मईशत[४७] मे हो गये हैं फकीर
कुछ इस कदर हुई हालत है उनकी यहा तगईर[४८]
नही है सोने को घर मे, अब एक कुहना हसीर[४९]
कि जिनको मसनदे-दीबा[५०] पे ख़्वाब था दुश्वार

जो जानशी[५१] था हुआ बादे आसिफुद्दौला
कि खुश थे जिस पे सब, अदना[५२] से ता आला[५३]
नमक हरामो का होवे ख़ुदा करे कि बुरा
दिया था कैद मे ज़ालिम की उसको, आह फसा
निकल गया पे वह मर्दानगी से बस एक बार

४२ दूर, ४३. तीव्रता, ४४ विपत्ति, दैवी कष्ट, ४५ अपमानित, ४६ धनवानो के पुत्र, ४७ आजीविका की खोज, ४८ बदली हुई, ४९ पुरानी चटाई, ५० मखमल की सेज, ५१ उत्तराधिकारी, ५२ गरीब, ५३ श्रेष्ठ ।

वह यानी सफ्ह-ए-आलम[५४] पे जिसका, हैगा नाम
लिखा वज़ीरअली खा बहादुर उसका नाम
रहा तो चन्दे, पे कुछ कर गया ऐसा काम
कि यादगार रहेगा वह, ता व रोज़े कयाम[५५]

नही तजल्ली[५६] को हक की ही शेख है, कुछ तकरार

हुआ था बैठने से उसके जितना खुश आलम[५७]
हुआ है उठने का उसके अब आह इतना गम
उसी का रहता है बस, बागे-दहर[५८] मे मातम[५९]
कि यक व यक यह किया है क्या फलक[६०] ने सितम[६१]

कि मुज़महिल[६२] हो वह गुल, जो हो रौनके-गुलज़ार[६३]

'कमाल' अपनी तो बस आरज़ू है मुदाम[६४]
कि चैन से रहे आलम, व किशवरे-आराम[६५]
यही है विर्दे-ज़बा[६६] अपनी, सुब्ह से ता शाम
कि होवे मसनदे-सरवत[६७] पे अब उसी का कयाम

जो हो करीम बइम्दादे-हैदरे-कर्रार[६८]

(इक्तिवास)

५४ समार-भर मे, ५५ आखिर दिन तक, कयामत तक, ५६ प्रकाश, ५७ ससार, ५८ दुनिया का बाग़, ५९ शोक, ६० आकाश, ६१. अत्याचार, ६२ उदास, ६३ उपवन की शोभा, ६४. सतत, सदा, ६५ आराम की दुनिया में, ६६ ज़बान का जाप, ६७ राजसिंहासन, ६८ हज़रतअली की मदद से।

† बन्द नम्बर ५८, ५९, ६० और ६१ मे वज़ीरअली खा की तारीफ की गयी है अगर्चे ख़वास इनसे नाला थे मगर वह अपनी शुजाअत और सख़ावत की वजह से सिपाह और अवाम मे बहुत मक़बूल था और लोगो को उसकी बेदख़ली का बहुत दुख हुआ था। कई शाइरो ने उसकी माज़ूली की तारीख़ों में उन लोगो की सख़्त मज़म्मत की थी जो इस सूरते हाल के ज़िम्मेदार थे। मसलन तफज़्ज़ुल हुसैन खा, हसन रज़ा खा, महाराजा टकैत राय, अलमास अली खा, और बहू बेगम यानी आसिफुद्दौला की वालदा। तारीख़े-अवध जिल्द, दोम, सफ्हा २७५।
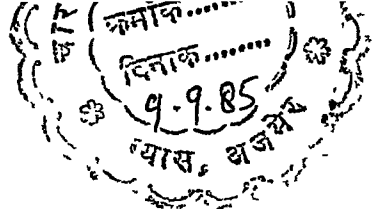
शहर-आशोब

गुलाम हमदानी 'मुस्हफी'

कहती है उसे खल्के-जहा[1] सब शहे-आलम
शाही जो कुछ उसकी है सो आलम पे अया है

अतराफ[2] मे दिल्ली के यह लठमारो का है शोर
जो आये है बाहर से वह बशिकस्ता[3] दहा है

और पडते हैं रातो को जो नित शहर मे डाके
बाशिन्दा जो वा का है बफरियादो-फुगा[4] है

बेदाद[5] से नाइब की यह है अहवाल[6] वहा का
हर रोज नया काफला पूरब को रवां है

दो चार तलगे जो खड़े रहते हैं उनसे
बस किले के नीचे ही टुक टुक अम्नो-अमा[7] है

आता है नजर जू दिले-उश्शाक[8] शिकस्ता
इस शहर मे जो कस्र-फला[9] इब्ने-फला[10] है

रोता हुआ गुजरे है जो कोई अब्र का टुकडा
अहवाले-गरीबां ही पे वह अश्कफशा है

इस शहर के बाशिन्दो से जाकर कोई पूछे
जुज़ खूने-जिगर कुछ भी गिज़ाए-दिलो-जा[11] है

१ ससार के जनसाधरण, २. आसपास, ३ पराजित मुख, ४. फरियाद करता हुआ, ५. जुल्म, अत्याचार, ६ हाल, ७ शान्ति, ८ प्रेमियो का दिल, ९ अमुक महल, १० अमुक बेटा, ११ दिल और जान का आहार ।

मिलता है वसद रज उन्हे रिज्क[१२] कमो-वेश
और चाहे फरागत, सो फरागत तो कहा है

अहवाले-मलातीन[१३] की लिखू क्या मैं खरावी
यानी कि महे-ईद[१४] अव उनको लवे-ना है

फाको की जिवस[१५] मार है वेचारो के ऊपर
जो माह कि आता है वह माहे-रमजा है

गल जाये जवा मेरी करूं हज्व[१६] गर उनकी
यह तग मआशी[१७] का सलाती की वया है

अय मुस्हफी इसका करू मजकूर[१८] कहा तक
है साफ तो यह गुलशने-देहली मे खिज़ा है

(इक्तिवास)

दर वयाने-इंक़िलावे-ज़माना

शेख गुलाम अली रासिख़

अव इस वाग का कुछ अजव[१] रंग है
कफस[२] से भी तारीक[३] है, तग है

अजव तरह की कुछ चली है हवा
नही है किसू का कोई आशना[४]

१२ भोजन, अन्न, १३ सुल्तानो का हाल, १४. ईद का चांद, १५ वस कि, १६ अपमान,
१७ दरिद्रता, १८. जिक्र ।

दर वयाने-इंकिलावे-जमाना

१ विचित्र, २ पिंजरा, ३ अंधेरा, ४ परिचित ।

हसद[५] बुग्ज़ है, कीना है या निफाक[६]
कि वह दोस्ती है न वह इत्तिफाक[७]

कोई इस चमन मे तवगर[८] नही
कोई गुंचा सा, साहबे - ज़र[९] नही

हर इक तगदस्ती का है पायमाल[१०]
सभी अपने अपने गिरफ्तारे - हाल

हुए बादशाह और वज़ीर अब फकीर
नही मिलती भीक उनको, थे जो अमीर

जो कस्र[११] और ऐवान[१२] से थे बहरावर
है अब खान ए - अनकबूत[१३] उनका घर

थी मतबख[१४] पे जिनके हर इक की नजर
खिलाते थे भूको को हल्वाए - तर[१५]

सो अ़ू बेजरी[१६] से हुए है तबाह[१७]
कि वे साइले - नाने-खुश्क[१८] अब है वाह

जो उरियानो[१९] को बख्शते थे रिदा[२०]
है उरियानी[२१] अब उनके तन की कबा[२२]

मुअत्तल[२३] है हर कोई बेकार है
फकत मुफ्लिसी[२४] बर सरे कार[२५] है

गदाई[२६] का कासा लिए दर ब दर
हैं आवारा अखावे - फजलो - हुनर[२७]

५. ईर्ष्या, ६. फूट, ७ मेलजोल, ८ धनवान, ९ मालदार, १० नष्ट, मारा हुआ, ११ महल, १२. प्रासाद, १३ मकडी का जाला, १४ भोजनालय, १५ तर माल, १६ निर्धनता, १७ बरबाद, १८ सूखी रोटी के भिखारी, १९ नगो को, २० चादर, २१ नग्नता, २२. पोशाक, वस्त्र, २३. आलसी, २४. दरिद्रता, २५. काम मे लगा हुआ, २६. फकीरी, २७ कलाकार।

मशायख़[२८] जो थी इज़्ज़ो - ताज़ीम[२९] हैं
दिल उनके भी सदमा कशे वीम[३०] हैं

गये सारे दरूदो - वज़ाइफ़[३१] को भूल
किया ऐसा फ़िक्रे - शिकम[३२] ने मलूल[३३]

लबों पर उन्हूं के अगर कीजे गौर
वजुज़ नानो - हल्वा[३४] नही ज़िक्र और

जो हैं शाइरे - कामिले - नामदार[३५]
है उनका वले वक्र[३६] और इक्तिदार[३७]

कनाअत[३८] मे उनकी न आया खलल
नजर मे किसू की नही मुब्तज़ल[३९]

उन्हे गैरते - शाइरी है ज़िवस[४०]
नही हैं दराज़ उनका दस्ते - हवस[४१]

है अब तक यह ज़ुमरा दुरे - वेवहा[४२]
पर इनका शनासा न कोई रहा

हुए कामिल इस फन मे जो दोस्ता
यह है वक्रो - इज़्ज़त[४३] का उनके वया

न वे जिन पे है तुहमते - शाइरी[४४]
कहा वे कहा दौलते - शाइरी

गदा तबअ,[४५] दू हिम्मतो - नासज़ा[४६]
हरीसो - शिकम वन्दा - ओ - वेहया[४७]

२८ दर्शक, २९ इज्जत के योग्य, ३० भयभीत, डरे हुए, ३१ दरूद और वजीफे, ३२ पेट की चिता, ३३ दुखी, ३४ रोटी और हलवा, ३५ नामवर शाइर, ३६ गुरूर, ३७ शासन, ३८ सतोष, ३९ नीच, ४०. वस कि, ४१ लोलुपता का हाथ, ४२. अनमोल मोती जैसे लोगों का समूह, ४३ सम्मान, ४४ शाइरी का इल्ज़ाम, ४५ भिखारी के स्वभाव का, ४६ कायर और दुष्ट, ४७ लोभी, पेट का गुलाम और निलज्ज ।

नही शाइरी का उन्हे रंग ढंग
कि हैं शाइरो की मजालिस के नंग[४८]

हैं अकसर यही दरमिया आजकल
कोई फिरका[४९] इतना नही मुब्तज़ल[५०]

वकालत का बाज़ार भी सर्द है
वकील अब जो है वह बडा मर्द है

यह पेशा था आगे बहुत खुशनुमा
वकीलो की क्या बध रही थी हवा

कहां अब वकालत हो रौनक पज़ीर
मुवक्किल ही सब हो गये हैं फकीर

तबाबत[५१] मे भी कुछ नही अब हुसूल[५२]
अतिब्बा[५३] हैं इस अहद मे सब मलूल[५४]

हर इक को मर्ज़, मुफ्लिसी का है आज
तबीब अब बेचारे करें क्या इलाज

सिपाही की मिट्टी भी अब है खराब
कि तेगा[५५] हुआ नौकरी का तो बाब

हैं इफ्लास[५६] से ऐसे अदोहगी[५७]
कि मिट्टी का घोडा मुयस्सर[५८] नही

न शमशीर पास उनके है, ने सिपर[५९]
नही रखते कब्ज़े मे एक मुश्ते-ज़र[६०]

४८ इज्ज़त, ४९ सम्प्रदाय, ५० नीच, ५१ हिकमत, ५२ प्राप्ति, ५३ इलाज करने वाला (तबीब का बहुवचन), ५४ दुखी, ५५ तलवार, ५६. दरिद्रता, ५७. पीड़ा, ५८. प्राप्त, ५९ दाल, ६० मुट्ठी-भर सोना।

कहा की कमा, हो रहे हैं तबाह
अगर तीर है तो फक्त तीरे-आह

ग़रज़ क्या कहूं अहले-आलम का हाल
अजब कुछ है चर्ख़[६१] की चाल ढाल

क्या क्या हो, बेमहरिए-आस्मा[६२]
है अहले-ज़मी उसके हाथो बजा

सभो पर है आराम का हल्का तग
बुरे हैं बहुत उस सितमगर के ढग

जब आता है यह बरसरे-इंकिलाब
तो हो जाये है कारे-आलम ख़राब[६३]

रुख़्सत अय अहले-वतन

वाजिद अली शाह अख्तर

शबे-अदोह[१] मे रो रो के बसर करते है
दिन को किस रजो-तरद्दुद[२] मे गुज़र करते है
नाला-ओ-आह[३] गरज़ आठ पहर करते हैं
दरो-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
रुख़्सत अय अहले-वतन ! हम नो सफर करते हैं

६१ आसमान, ६२ आकाश की निर्दयता, ६३ संसार का कामकाज।

रुख़्सत अय अहले-वतन

यह वाजिद अली शाह की एक ग़ैर-मतबूआ नज़्म है जो मुमताज़ हुसैन साहब जौनपुर के पास महफ़ूज़ है। इस नज़्म में ग्यारह बन्द हैं जिनमें से सात बन्द यहा दिये जा रहे हैं।

१ पीड़ा की रात, २. शोर और चिन्ता, ३ आर्तनाद।

दोस्तो शाद[४] रहो तुम को खुदा को सौपा
कैसर बाग जो है उसको सबा[५] को सौंपा
हमने अपने दिले - नाज़ुक को जफा को सौपा
दरो-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
रुख्सत अय अहले-वतन ! हम तो सफर करते है

शिकवा किससे करू या दोस्त ने मारा मुझको
जुज़ खुदा के नही अब कोई सहारा मुझको
नजर आता नही बिन जाये गुजारा मुझको
दरो - दीवार पे हसरत से नजर करते हैं
रुख्सत अय अहले-वतन ! हम तो सफर करते हैं

गर्दिशे-चर्ख[६] ने यह बात भी सुनवाई है
अपने मालिक को, यह नौकर कहे सौदाई है
अब तो दरपेश[७] हमे वादिया - पैमाई[८] है
दरो-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
रुख्सत अय अहले-वतन ! हम तो सफर करते हैं

किस से फरियाद करू है यही रिक़्क़त[९] का मकाम
कैसा कैसा मिरा अस्बाब[१०] हुआ है नीलाम
मेरे जाने से हर इक घर मे पडा है कुहराम[११]
दरो - दीवार पे हसरत से नजर करते हैं
रुख्सत अय अहले-वतन ! हम तो सफर करते है

रज जो है उसे अब अय दिले-पुरदर्द[१२] उठा
ताजियाखानो तलक का मिरा अस्बाब लुटा
फस्ले-गर्मी मे तास्सुफ[१३] ! मिरा घर तक है छुटा
दरो - दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
रुख्सत अय अहले-वतन ! हम तो सफ़र करते हैं

४. खुश, ५. हवा, ६ आकाश की गर्दिश, ७ सामने, ८. जगल मे भटकने वाला, ९ रुदन, १० सामान, ११. कोलाहल, १२. दर्द-भरा दिल, १३ खेद ।

सारे अब शहर से होता है यह अख्तर रुख्सत
आगे बस अब नही कहने की है मुझको फुर्सत
हो न बरबाद मिरे मुल्क की यारब खिल्कत[१४]
दरो - दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं
रुख्सत अय अहले-वतन ! हम तो सफर करते हैं

हुज़्ने-अख़्तर

वाजिदअली शाह अख़्तर

कोई रज ज़िन्दा[१] मे ऐसा नही
जो इस बेसरो - पा[२] को पहुचा नही

दिले - ज़ार हर्गिज़ संभलता नही
वह कोहे - गरा[३] है कि टलता नही

हर इक सम्त[४] पहरा हर इक सम्त यास
रफीको - मुलाज़िम[५] मे खौफो-हिरास[६]

१४. जनता।

हुज्ने-अख्तर

यह अशआर मसनवी हुज्ने-अख्तर से लिये गये हैं जो वाजिदअली शाह ने अपने क़ैद के जमाने में तस्नीफ की थी।

१ जेलखाना, २ बिना सिर-पैर, ३. बड़ा पहाड़, ४ दिशा, ५ दोस्त और नौकर, ६ भय।

कभी सर पे रखता था मैं कज कुलाह[७]
अवध का कभी मैं भी था बादशाह

मुलाज़िम मिरे थे कभी सौ हज़ार
मिरे हुक्म मे थे पियादा, सवार

हुए कैद इस तरह हम बेगुनाह
असीरो[८] मे हू, नाम है बादशाह

मर्सियः-ए-लखनऊ

मिर्जा मुहम्मद रजा बर्क

कल के मज़कूर यह हैं, अपने भी अफसाने थे
रश्के - फिर्दौसे-बरी,[१] शहर के मैखाने थे
थालिया हीरो की थी, लालो के पैमाने थे
माहो - खुर्शीद[२] रुखे - शम्अ के परवाने थे

सब हवा ख्वाहे - सुलेमान कहा करते थे
रात दिन परियो के झुर्मुट मे रहा करते थे

कहकहे उडते थे, जमघट थे परीज़ादो के
मेले हर रोज़ हुआ करते थे, आजादो के
शोर सुनते थे न हर्गिज कभी फरियादो के
कभी आगाह न थे नाम से बेदादो[३] के

क्या कहे किस से कहे हाय वह सुहबत[४] क्या थी
राजा इन्दर के अखाड़े की हकीक़त क्या थी

७. टेढ़ी टोपी, ८ कैदी, बदी।

मर्सिय -ए-लखनऊ

१ जन्नत को शर्माने वाले, २ चाद और सूरज, ३. जुल्म, अत्याचार ४ सगति।

हर तरफ फूलो के अम्बार रहा करते थे
गुलफशा, गुलशने-रुखसार रहा करते थे
फूल, खारे-सरे-दीवार रहा करते थे
सामने मित्र के बाजार रहा करते थे

शहर मे अपने गुलाम आके जहा बिकते थे
खोटे दामो को भी युसुफ न वहा बिकते थे

बोतलो इत्र लुढाते थे, लगाना कैसा
हमनशी आप से आते थे, बुलाना कैसा
बात सच पेश न जाती थी, बहाना कैसा
तीर मिज़गानो[५] के खाते थे, निशाना कैसा

एक से एक को, मुत्लक[६] न खबर होती थी
इन्ही चुहलो, इन्ही जलसो मे बसर होती थी

अपना होली मे अजब रंग हुआ करता था
अर्स ए-रुए-ज़मी तग हुआ करता था
हौज़ो मे, नहरो मे, सब रग हुआ करता था
सैर से स्वागो की दिल दग हुआ करता था

चेहरो पे मोतियो की राख मली जाती थी
देख के जोगिनो को जान चली जाती थी

बग्घिया नूर की तैयार रहा करती थी
किस्मतें सोतो की बेदार रहा करती थी
आखें मस्ती मे भी हुशियार रहा करती थी
कोठिया बाग की गुलज़ार रहा करती थी

सैरें रहती थी, दिले-तंग के बहलाने को
रोज हर सुबह को जाते थे हवा खाने को

५ भृकुटी, भवें, ६ बिल्कुल।

सक्के[7] क्योडे से छिडकते थे हमारी सडकें
आखो से झाडती थी बादे - बहारी[8] सडकें
गैरते - गुलशने - फिर्दौस थी सारी सडकें
रहती है पेशे - नजर, हाय वह प्यारी सडकें

लखनऊ की इन्ही गलियो मे फिरा करते थे
गश मे आ आ के तमाशाई गिरा करते थे

बेडे हम छोड़ते थे, गोमती पर भादों मे
जलसे रहते थे शबो - रोज़ परीजादो मे
मश्क[9] करते थे फने - इश्क[10] की उस्तादो मे
शब गुजरती थी हमे जुल्फ के आजादो मे

बेफिरगी महल, उन रोजो मे आराम न था
रात दिन सैर सपाटे के सिवा काम न था

जानते थे कि इसी तरह गुज़र जायेगी
चमने - इश्क मे हर्गिज़ न खिज़ां आयेगी
आरजू नख्ले-मुहब्बत[11] से समर पायेगी
यह न समझे थे कजा रग नया लायेगी

"हैफ[12] दरचश्म जदन[13] सोहबते-यार आखिर शुद[14]
रूए-गुल सैर न दीदम - ओ - बहार आखिर शुद"

अब भी आ जायें जो वह,[15] फिर वही सूरत हो जाये
वही हसिया, वही चुहलें, वही इशरत हो जाये
रज सब दूर रहे, रूह को राहत हो जाये
फिर वही शान हो अपनी वही शौकत हो जाये

फिर वही सैरें करें फिर वही आबादी हो
फिर वही नाच वही रग वही शादी हो

७ भिश्ती, ८ वसत की हवा, ९ अभ्यास, १० प्रेम-कला, ११ प्रेम का वृक्ष, १२ आश्चर्य, १३ पलक झपकते ही, १४ समाप्त, १५ वालिए-अवध वाजिदअली शाह की तरफ इशारा है।

कोई इस रंजे-गम अंदोह[16] की तदबीर[17] नहीं
जीते जी उनसे मिले, अपनी यह तकदीर नहीं
दौर अपना हो, यह दौरे - फलके - पीर[18] नहीं
दिल में ताकत न रही, आह में तासीर[19] नहीं

किसने आराम तहे-चर्खे - कुहन[20] पाया है
रोज़े - अव्वल से इसी तरह चला आया है

बर्क़ की मसनवी के यह बन्द 'ज़ल्व-ए-ग़िज़ब' से लिये गये हैं। लखनऊ की तबाही और वाजिदअली शाह की माज़ूली इसका मौज़ू है। बर्क़ का इन्तिक़ाल सन् १८५७ में हुआ था।

१६ शोर, १७ इलाज, १८ बूढ़े आकाश का दौर, १९ असर, २० पुराने आकाश के नीचे।

दूसरा अध्याय

जंगे-आज़ादी और देहली-ए-मरहूम

नौहः-ए-ग़म[1]

बहादुरशाह ज़फर

क्या पूछते हो कजरविए-चर्खे-चम्बरी[2]
है इस सितमशिग्रार[3] का शेवा सितमगरी
करता है ख्वारतर[4] उन्हे जिनको है बर्तरी[5]
इसके मिजाज[6] मे है यह क्या सिफला पर्वरी[7]

खाये है गोश्त ज़ाग,[8] फकत इस्तख्वा[9] हुमा[10]
क्या मुसिफी है जाग कहा और कहा हुमा

बिलग्रक्स[11] है जमाने मे जितने है कारोबार
शेवा किया है उलटा जमाने ने इख्तियार[12]
है मौसमे-बहार खिजा, और खिजा बहार
आई नजर अजब रविशे-बागे-रोजगार[13]

जो नख्ले-पुर समर[14] है उठा सकते सर नही
सरकश[15] हैं वह दरख्त कि जिनमे समर नही

बादे-सबा[16] उडाती चमन मे है सर पे खाक
मलते हैं दम ब दम कफे-अफसोस[17] बर्गे-ताक[18]
गुचे[19] हैं दिल गिरफ्ता,[20] गुलो के जिगर हैं चाक
करती हैं बुलबुलें यही फरियादे-दर्दनाक

१ शोकगीत, २. आकाश का टेढापन, ३ अत्याचारी, ४ अपमानित, ५. श्रेष्ठता, ६ स्वभाव, ७ कमीनो को वढावा देना, ८. कौवा, ९ हड्डिया, १० एक कल्पित पक्षी—जिसके सिर पर बैठ जाता है वह बादशाह हो जाता है। यह केवल हड्डिया खाता है। ११ विपरीत, १२ धारण, १३ रोजगार के बाग का चलन, १४. फलो से लदे वृक्ष, १५. बागी, १६ प्रात - समीर, १७. दुख से हाथ मलना, १८ अगूर की बेल के पत्ते, १९ कलिया, २०. दुखी।

शादाब हैफ[21] खार हो, गुल पायमाल[22] हों
गुलशन हो ख्वार, नख्ले-मुगीला[23] निहाल हो

नजदीक अपने आपको जो खींचते हैं दूर
देखा तो साफ फ़ह्म[24] मे इनकी है कुछ कुसूर
वरना जो बासफा[25] हैं, खिरदमन्द,[26] ज़ी शऊर[27]
क्या दख्ल उनको आवे कभी नख्वतो-गुरूर[28]

रखते गुबारे-कीना[29] से वह सीना साफ हैं
हर नेको-बद से सूरते-आईना साफ हैं

जायें निकल फलक के अहाते से हम कहा
होवेगा सर पे चर्ख भी जावेंगे हम जहा
कोई बला है खान-ए-ज़िन्दा[30] यह आस्मा
छुटना मुहाल इससे है, जब तक है तन मे जा

जो आ गया इस महले-तीरा रग[31] मे
कैदे-हयात[32] से है वह कैदे-फिरग[33] मे

यह गुम्बदे-फलक[34] है अजब तरह का कफस[35]
ताकत नही है नाले की भी जिसमे इक नफस[36]
जुम्बिश हो एक पर की तो पर टूट जायें दस
रह जाये दिल की दिल मे न किस तरह हवस

क्या ताइरे-असीर[37] वह परवाज़ कर सके
जिसमे न इतना दम हो कि आवाज़ कर सके

२१ आश्चर्य, २२. दलित, २३ बबूल का झाड, २४ बुद्धि, २५ पवित्र, २६ बुद्धिमान, २७ ज्ञानी, २८ घमड, २९ द्वेष का मैल, ३० जेलखाना, ३१. अंधकारपूर्ण महल, ३२ जीवन-बंधन, ३३ अंग्रेजों की क़ैद, ३४ आकाश का गुम्बद, ३५ पिंजरा, ३६ साम, ३७ बंधा हुआ पक्षी ।

क्या क्या जहान मे हुए शाहाने-जी करम[३८]
किस किस तरह से रखते थे साथ अपने वह चशम
आखिर गये जहान से तन्हा सूए-अदम[३९]
दारा कहा, कहा है सिकन्दर, कहा है जम

कोई न यां रहा है न कोई यहां रहे
कुछ अय ज़फर रहे तो निकोई यहा रहे

बयाने-ग़म

बहादुरशाह जफर

गयी यक ब यक जो हवा पलट नही दिल को मेरे करार है
करूं इस सितम[१] का मैं क्या बया, मिरा गम से सीना फिगार[२] है

यह रिआया-ए-हिन्द तबाह हुई कहो क्या-क्या इन पे जफा हुई
जिसे देखा हाकिमे-वक्त[३] ने, कहा यह भी काबिले-दार[४] है

यह किसी ने जुल्म भी है सुना कि दी फासी लोगो को बेगुनह
वले कल्मागोइयो[५] की सिम्त से अभी उनके दिल मे गुबार[६] है

न था शहर देहली, यह था चमन, कहो किस तरह का था या अमन
जो खिताब था वह मिटा दिया, फकत अब तो उजडा दयार है

यही तग हाल जो सब का है, यह करिश्मा[७] कुदरते रब का है
जो बहार थी सो खिज़ा हुई जो खिज़ा थी अब वह बहार है

३८. दयालु बादशाह, ३९ परलोक की तरफ।

बयाने-ग़म

१. अत्याचार, २ विकृत, ३ अधिकारी वर्ग, ४ फासी पर लटकाने के क़ाबिल, ५ कलमा पढने वाले—मुसलमान, ६. मैल ७. चमत्कार।

शबो-रोज़ फूल मे जो तुले, कहो खारे-गम को वह क्या सहे
मिले तौक कैद मे जब उन्हे, कहा गुल के बदले यह हार है

मची जा[८] वह मातमे-सख्त[९] है, कहो कैसी गर्दिशे-वख्त[१०] है
न वह ताज है न वह तख्त है, न वह शाह है न दयार है

न वबाल तन पे है सर मिरा नही जान जाने का डर ज़रा
कटे गम ही निकले जो दम मिरा, मुझे अपनी ज़िन्दगी बार है

फ़त्हे-अफ़वाजे-शर्क़[१]

मुहम्मद हुसैन आजाद

कू मुल्के-सुलेमानो-कुजा हुक्मे-सिकन्दर[२]
शाहाने - ऊलिलअज़्मो - सलातीने -जहादार[३]

कू सतवने-हज्जाजो-कुजा सौलते-चगेज़[४]
कू खाने-हलाकू-ओ-कुजा नादिरे-खूख्वार[५]

यह शौकतो-हश्मत[६] है न वह हुक्म न हासिल
किस जा है जहा और कहा हैं वह जहादार

होता है अभी कुछ से कुछ इक चश्मे-जदन[७] मे
हा दीद -ए-दिल खोल दे अय साहबे-अबसार[८]

८ प्रगट, ९ शोक, विलाप, १० भाग्य-चक्र ।

फत्हे-अफवाजे-शर्क

१ पूर्वी सेनाओ की विजय, २ सिकन्दर की आज्ञा, ३ ऊचे इरादे रखने वाले सम्राट और ससार मे रखवाले सुल्तान, ४ कहा है हज्जाज का जुल्म और कहा है चगेज की शानो-शौकत, ५ कहा है हलाकू खान और कहा है खूख्वार नादिरशाह, ६ शान-शौकत, ७ आख झपकते ही, ८ दूरदर्शी ।

है कल का अभी जिक्र कि जो कौमे-नसारा[९]
थी साहबे-इकवालो-जहा वख्शो-जहादार[१०]

थे साहबे-इल्मो-हुनरो-हिकमतो-फितरत[११]
थे साहबे - जाहो - हशमो - लश्करे-जर्रार[१२]

अल्लाह ही अल्लाह है जिस वक्त कि निकले
आफाक मे तेगे-गजब[१३] हज्रते-कहहार[१४]

सब जौहरे-अक्ल[१५] उनके रहे ताक पे रक्खे
सब नाखुने-तदबीरो-खिरद[१६] हो गये बेकार

काम आये न इल्मो-हुनरो-हिकमतो-फितरत[१७]
पूरब के तलंगों ने लिया सब को वही मार

यह सानिहा[१८] वह है कि न देखा न सुना था
है गर्दिशे-गर्दूं भी अजब गर्दिशे-दव्वार[१९]

नैरंग[२०] पे गौर इसके जो कीजैं तो अया है
हर शोबद -ए-ताजा[२१] मे सद बाजिए-ऐयार[२२]

या दीद.ए-इब्रत[२३] को जरा खोल तो गाफिल
हैं बन्द यहा अहले-जबा के लबो-गुफ्तार[२४]

क्या कहिए कि दम मारने की जाए नही है
हैरा है सब आईना सिफत पुश्त ब दीवार[२५]

हुक्कामे-नसारा[२६] का बदी दानिशो-बीनिश[२७]
मिट जाये निशां खल्क मे इस तरह से यक बार

९. ईसाई कौम, १० दुनिया पर शासन करने वाली, ११ ज्ञान, कला, राजनीति और प्रकृति को समझने वाले, १२ प्रतापी, साहसी और योद्धा, १३ तलवार, १४ अल्लाह, बडा दयालु, १५. बुद्धि के जौहर, १६ वुद्धि, १७ ज्ञान, कला, प्रकृति, १८ घटना, १९. चक्र, २०. इन्द्रजाल, माया, २१. चमत्कार, २२ धूर्त, २३ शिक्षा देने वाली आख, २४. होंठ और वातचीत, २५. दीवार से पीठ लगाये हुए, २६ ईसाई शासक, २७ बुद्धि और दृष्टि।

दाग़े-हिज्रां[1]

मिर्जा असदुल्ला खा 'गालिब'

वस्कि फआले मायुरीद[2] है आज
हर सुलह-शोर[3] इगलिस्ता का

घर से वाजार मे निकलते हुए
ज़हरा[4] होता है आव[5] इसा का

चौक जिसको कहे वह मक्तल[6] है
घर वना है नमूना ज़िन्दा[7] का

शहरे-देहली है जर्रा जर्र-ए-खाक
तिश्न-ए-खू[8] है हर मुसलमा का

कोई वा से न आ सके या तक
आदमी वां न जा सके या का

मैंने माना कि मिल गये फिर क्या
वही रोना तनो-दिलो-जां का

गाह जल कर किया किये शिकवा
सोज़िशे - दाग हाए - पिन्हा[9] का

गाह रोकर कहा किये वाहम[10]
माजरा दीद हाए-गिरिया[11] का

इस तरह के विसाल[12] से गालिब
क्या मिटे दिल से दाग हिज्रा[13] का

यह अशआर ग़ालिब ने अलाउद्दीन अहमद खा को सन् १८५८ मे एक ख़त मे लिखकर भेजे थे जो वाद मे दीवान में शामिल कर लिये गये।

१ विरह का दाग़, २ जो चाहे वह कर सकने वाला, ३ सिपाही, ४ पित्ताशय, ५ पानी, ६ वधस्थल, ७ जेलखाना, ८ खून का प्यासा, ९ छुपे हुए दागो की जलन, १०. परस्पर, ११ अश्रुयुक्त आखो की कहानी, १२ मिलन, १३ विरह।

फ़ुग़ाने-देहली

मुहम्मद सदरुद्दीन खा 'आजुर्दा'

आफत इस शहर मे किले की बदौलत आई
वाली के आमाल[1] से दिल्ली की भी शामत आई
रोजे-मौऊद[2] से पहले ही कयामत आई
काले मेरठ से यह क्या आये कि आफत आई

गोश जद[3] था जो फसानो से, वह आंखो देखा
जो सुना करते थे कानो से, वह आखो देखा

जिनको दुनिया मे किसी से भी सरोकार न था
अहल ना अहल से कुछ खुलत[4] इन्हे ज़िन्हार[5] न था
इनकी ख़िल्वत से कोई वाकिफो-हमराज़ न था
आदमी क्या है फरिश्ते का भी वा बार न था

वह गली कूचो मे फिरते हैं परेशा, दर दर
खाक भी मिलती नही इनको कि डालें सर पर

ज़ेवर अल्मास[6] का भी जिन से न पहना जाता
भारी झूमर भी कभी सर पे न रक्खा जाता
गाच का जिनसे दुपट्टा न संभाला जाता
लाख हिकमत से उढाते न उढाया जाता

सर पे वह बोझ लिये चार तरफ फिरते हैं
दो कदम चलते हैं मुश्किल से, तो फिर गिरते हैं

१. कर्म, २ निश्चित दिन, ३ सुना था, ४ प्रेम, दोस्ती, ५ हरगिज़, ६ हीरक।

ऐशो-इशरत[७] के सिवा जिनको न था कुछ भी याद
लुट गये कुछ न रहा, हो गये बिल्कुल बरबाद
टुकडे होता है जिगर सुन के यह इनकी फरियाद
फिर भी देखेंगे इलाही कभू देहली आबाद

कब तलक दागे-दिल एक इक को दिखलायें हम
काश हो जाये जमी शक[८] तो समा जायें हम

रोज़ वहशत[९] मुझे सहरा की तरफ लाती है
सर है और जोशे-जुनू,[१०] सग[११] है और छाती है
टुकडे होता है जिगर जी ही पे बन जाती है
मुस्तफा खा की मुलाकात जो याद आती है

क्योकि आजर्दा निकल जाये न सौदाई हो
कत्ल इस तरह से बजुर्म जो सहबाई हो

मरसियः-ए-देहली

जहीरुद्दीन जहीर 'देहलवी'

बल बे देहली-ओ-ज़हे शौकतो-शाने-देहली
ला मका बन गया इक एक मकाने-देहली

मिल गयी खाक मे सब शौकतो-शाने-देहली
न रहा नाम को भी नामो-निशाने-देहली

अय फलक ! अपने गरीबा मे मुह डाल ज़रा
हाए यह जुल्मो-सितम और किसाने-देहली

७ भोग-विलास, ८ फट जाये, ९ घबराहट, १० पागलपन, उन्माद, ११ पत्थर ।

जमजमे[1] भूल गये नग्मा तराज़ाने-चमन
है हर इक नौहागरो - मरसियाख्वाने[2]-देहली

रह गये कहने को कुछ कुछ हैं फसाने बाकी
अब न देहली ही रही और न जबाने-देहली

फलके-पीर[3] ने मिट्टी मे मिलाया सब को
फिरते हैं खाक बसर पीरो-जवाने-देहली

चर्खे-बदबी यह गजब है न उन्हे देख सका
चन्द इशखास थे बाकी जो निशाने-देहली

रात दिन गिरिया है और सग है और सीना है
और ज़हीरे-जिगर अफगारो-बयाने-देहली

१. गीत २. शोकगीत गानेवाला ३. बूढा आकाश ।

हंगामः-ए-दारो-गीर†

'ज़हीर' देहलवी

निहाले-गुलशने-इकबाल[1] पायमाल[2] हुए
गुले-रियाज़े-खिलाफत[3] लहू मे लाल हुए
यह क्या कमाल हुए और क्या ज़वाल[4] हुए
कमाल को भी न पहुचे थे जो ज़वाल हुए

जो इत्र गुल का न मलते मिले वह मिट्टी मे
जो फर्शे-गुल पे न चलते, मिले वह मिट्टी मे

जहां की तिश्नः-ए-खू तेग[5] आबदार हुई
सिनाने-नेज़ा[6] हर इक सीने से दो चार हुई
रसन[7] हर एक बशर के गले का हार हुई
हर एक सम्त से फरियादे-गीरो-दार[8] हुई

हर एक दश्ते-बला[9] मे कुशा कुशा पहुंचा
जहा की खाक थी जिस जिस की वह वहा पहुचा

हर एक शहर का पीरो-जवान कत्ल हुआ
हर एक कबीला-ओ-खानदान कत्ल हुआ
हर एक अहले-ज़बान खुश बयान कत्ल हुआ
गरज़ खुलासा यह है इक जहान कत्ल हुआ

घरो से खीच के कुश्तो[10] के कुश्ते डाले हैं
न गोर है, न कफन है, न रोने वाले हैं

† मिर्ज़ा इलाही बख्श शाहज़ादे की निशानदही पर तकरीबन तीस शाहज़ादे, जिनमे बादशाह के बेटे, पोते, नवासे और दामाद शामिल थे, गिरफ्तार किये गये। बैरूने-देहली दरवाज़ा लाकर उन्हें क़त्ल किया गया, बेटों के सर बादशाह बहादुरशाह ज़फर को भेजे गये।

१ प्रताप के उपवन का पौधा, २ कष्ट, ३ खिलाफत के फूल, ४ पतन, ५ खून की प्यासी तलवार, ६ बर्छी, ७ फासी, ८ क़त्ल के खिलाफ फरियाद, ९ विपत्तियों का मैदान १०. कत्ल किये हुए।

इंक़िलाबे-देहली

मिर्जा कुर्बान अली बेग सालिक

यह इंकिलाब है या है कयामते-सुगरा[1]
कोई नही है कि जिसके रहे हो होश बजा
हुई है आदमी की शक्ल शहर मे अका[2]
बना है हू का मकां बस हर इक गली कूचा

हुए है लोग यहा के कहा कहा आबाद
हर एक गाव बना है मगर जहा आबाद[3]

समझ के अपना ठिकाना गये जहा हम लोग
ज़लील[4] या से जियादा हुए वहा हम लोग
बने हैं ताईरे-गुमगश्ता[5] आशिया हम लोग
फिरे हैं अम्न के तालिब[6] कहा कहा हम लोग

जमीन हो गयी दुश्मन न पाई जाए-सबात[7]
ठहर सका न किसी जाए अपना पाए-सबात[8]

किसी के लब[9] पे है नाला,[10] किसी की चश्म[11] है तर
किसी का चाक गरीबा है और कोई मुज्तर[12]
किसी का हाथ है दिल पर, कोई है थामे जिगर
ग़रज़ कि रज से खाली नही है कोई बशर[13]

बजाए ज़मज़मा[14] हर जाए शेवने-गम[15] है
महले-ऐश था या अब सराए-मातम है

१. छोटा प्रलय, २ दुष्प्राप्य, ३ दिल्ली, ४ अपमानित, ५ भटके हुए पक्षी, ६. इच्छुक, ७ स्थायित्व का स्थान, ८ दृढता का पाव, ६ होठ, १०. आर्तनाद, ११ आख, १२ व्याकुल, १३ व्यक्ति, १४ गीत, १५ शोकालाप ।

लिखू मैं पर्दानशीनो का हाल क्या, है है
बयान मुझ से हो क्योकर यह माजरा है है
न आई जिनकी कभी दूर तक सदा है है
निकल के घर से चली हैं प्यादा पा है है

कभी न गुस्से मे भी जामे से जो वाहर हो
गजब है यह कि वह यू वेरिदा-ओ-चादर[१६]हो

वह जिनकी तवा[१७] आसूदगी[१८] पे माइल है
प्यादा क्योकि चलें, नाका[१९] है न महमिल[२०] है
उठायें एक कदम भी अगर तो मुश्किल है
कदम कहे कि ठहर जाओ यह ही मजिल है

सरो पे वोझ है, गठरी है, लडखड़ाते हैं
वस अपने जी की तरह वैठ वैठ जाते हैं

नौहः-ए-देहली

मुहम्मद अली तिश्ना

अजीव कूच-ए-रश्के-जिना[१] था देहली का
विहिश्त कहते हैं जिस को मका था देहली का
दिमाग वरसरे-हफ्त आस्मा[२] था देहली का
खिताव[3] खित्त-ए-हिन्दोस्ता था देहली का

गजव है इसको कोई शादमा[४] न देख सका
जमी न देख सकी, आस्मा न देख सका

१६ विना चादर, १७ स्वभाव, १८ तृप्ति, १९ ऊटनी, २० ऊट का होदा।

नौह-ए-देहली

१ स्वर्ग को शरमाने वाली गलिया, २ सातवें आसमान पर, ३ उपाधि, ४ खुश।

वह तख्ते - सल्तनतो - बारगाहे - सुल्तानी[५]
कि जिसमे बैठते आके ज़िल्ले - सुबहानी
परों से सर पे हुमा[६] करता था मगसरानी[७]
वजा इस ग्रौज पे दावः-ए-सुलेमानी

हर एक कस्र[८] को दावा था ताके-किसरा[९] का
दिमाग अर्श पे था किल-ए-मुअल्ला का

किसी जमाने मे ऐसा था या का तख्तनशी
खिराज देते थे सब बादशाहे-रूए-जमी[१०]
खता-ओ-मुल्के-खुतन सब थे इसके जेरे-नगी[११]
तमाम कापते थे इससे, चीन और माची

दयारे-हिन्द था मशहूरे - खल्क,[१२] नाम इसका
चराग रोम से जलता था ता ब शाम इसका

जुहल[१३] की आख पडी, इत्तिफाक[१४] से नागाह[१५]
तमाम हो गया ताराज[१६] मुल्को-माल और जाह
कि इस से हो गये बदतर गरीब शहशाह
रैयत इनकी हुई इनसे भी ज्यादा तबाह

वह साहूकार, न था जिस की साख मे बट्टा
अब उस के नाम पे लगता है लाख मे बट्टा

रही न जिसे-मुहब्बत[१७] की अब खरीदारी
जो यूसुफ़ आयें, न हो तो भी गर्मबाज़ारी
उठाये कौन हसीनो की नाज़बरदारी
लगाये दिल कोई, ऐसी है किस को जा भारी

बकौले-शख्स अजब मुल्के-हुस्न बस्ती है
कि दिल सी चीज यहा कौडियो को सस्ती है

५ बादशाहो की पेशी, ६ एक कल्पित पक्षी, ७ मक्खी उडाना, ८ महल, ९ ईरान के एक बादशाह का महल, १० धरती के बादशाह, ११ अधीन, १२ जगत प्रसिद्ध, १३ शनि ग्रह, १४ सयोग १५ अचानक, १६ नष्ट, १७ प्रेम की जिंस ।

किसी का दिल नही इस दर्द मे ठिकाने से
रहा न गाने से शौक और न बजाने से
गरज़ न गैर से मतलव, न है वेगाने से
वफा-ओ-महर तलक उठ गयी ज़माने से

कहा से लायें वह पहली-सी अब अदा माशूक
इसी सबब से हैं मशहूर वेवफा माशूक

कोई फकीर जो कौडी दुकान मांगे है
तो इस से कहते हैं क्या तू हर आन मागे है
तेरी तरह से यहा सव जहान मागे है
चल अपनी राह ले, क्या हम से दान मागे है

जो माल वढता ही जाता था, घट गया विल्कुल
दुकानदारो का तवका उलट गया विल्कुल

कोई कहे कि "तपे-गम[१८] की वस्कि शिद्दत[१९] है"
तो यू कहे कि "हमे आप ही हरारत है
चढा हुआ है वुखार आजकल यह नौवत है
तुम अपना काम करो जाओ तुमको सेहत है"

मरीज़ जाके करे क्या कि तान करते हैं
तवीव अपना मर्ज़ खुद वयान करते हैं

यह शेर कहते है और लोगो को सुनाते हैं
वह वैठे रहते हैं, आते हैं और न जाते है
जो कद्रदा नहीं अपना किसी को पाते हैं
तो दिल ही दिल मे वह खूने-जिगर को खाते हैं

गज़ल का ज़िक्र न चर्चा किसी यगाने से
मज़ाके-शेरो-सुखन उठ गया ज़माने से

१८ ग़म की आग, १९ तीव्रता ।

देहली-ओ-लखनऊ

हकीम आग़ाजान ऐश

हो गये वीरान देहली-ओ-दयारे-लखनऊ
अब कहा वह लुत्फे-देहली-ओ-बहारे-लखनऊ

था हुस्ने-ख़ाशाके-देहली[1] गैरते-सद लालाज़ार[2]
रश्के-सद गुलज़ार[3] था एक एक ख़ारे-लखनऊ[4]

सो फलक ने यूं किया देहली को तो पामाले-जौर[5]
और किया वक़्फे-जफा[6] हर बर्गो-बारे-लखनऊ[7]

गम मे देहली के गुलो के तो गरीबा चाक हैं
और सोसन है चमन मे सोगवारे - लखनऊ

टुकडे होता है जिगर देहली के सदमे सुनके ऐश
और दिल फटता है सुन कर हाले-ज़ारे-लखनऊ

१ दिल्ली के कूडे-करकट का सौंदर्य, २ उपवन, ३ उपवन को शरमाने वाला, ४ लखनऊ का काटा, ५ अत्याचार से नष्ट, ६ बेवफाई के लिए सुरक्षित, ७ लखनऊ का पत्ता और फल।

मसाइबे-क़ैद

मुनीर शिकोहाबादी

फर्रुखाबाद[1] और याराने-शफीक[2]
छुट गये सब गर्दिशे-तकदीर से

आये बादा मे मुकैयद[3] होके हम
सौ तरह की जिल्लतो-तहकीर[4] से

जिस कदर अहबाबे-खालिस[5] थे वहा
दर गुजर करते न थे तदबीर[6] से

पर कहूं क्या काविशे-अहले-नफाक[7]
थे वह खूरेजी[8] मे बढके तीर से

बादा के जिन्दा[9] मे लाखो सितम
सहते थे हम गर्दिशे-तकदीर[10] से

कोठरी गर्मी मे दोजख से फुजू[11]
दस्तो-पा[12] बदतर थे आतशगीर[13] से

था बिछौना टाट, कम्बल ओढना
गर्म तर पश्मीन-ए-कश्मीर से

मेहनत-ओ-मजदूरी-ओ-तकलीफ-ओ-रंज
था ज्यादा हैत-ए-तहरीर[14] से

१ एक शहर, २ मेहरबान दोस्त, ३ कैद, ४ अपमान, ५ सच्चे मित्र, ६ उपाय, ७ दुश्म[illegible] की कोशिश, ८ रक्तपात, ९ कैदखाना, १० भाग्य-चक्र, ११ अधिक, १२ हाथ-पा[illegible] १३ विस्फोटक, १४. लेखनी ।

इस जहन्नुम के मुवक्किल[१५] सब के सब
दुश्मनी रखते थे बेतक्सीर[१६] से

कातिल अशराफो-अहले-इल्म[१७] थे
एज पहुंचाते थे हर तदबीर से

फिर इलाहाबाद मे भिजवा दिया
जुल्म से तल्बीस[१८] से, तज़्वीर[१९] से

नगी तल्वारें खिची थी गिर्दो-पेश[२०]
नोकें सगीनो की बदतर तीर से

जो इलाहाबाद मे गुजरे सितम
हैं फुज़ू[२१] तकरीर से, तहरीर से

फिर हुए कलकत्ते को पैदल रवा
गिरते पडते पाव की जंजीर से

हथकडी हाथो मे बेडी पाव मे
नातवा[२२] तर कैस की तस्वीर से

बेहवासो - बेलिबासो - बेदयार
दिल गिरफ्ता जौरे-चर्खे-पीर[२३] से

सूए-मश्रिक[२४] लाये मग्रिब[२५] से मुझे
थी गरज़ तकदीर को तशहीर[२६] से

काले पानी मे जो पहुचे, यक ब यक
कट गयी कैदे-सितम तकदीर से

१५. आसामी, १६. निरपराध, १७. शरीफ पढ़े-लिखे, १८. छल, कपट, १९ धोखा, २०. इधर-उधर, २१. अधिक, २२ दुर्बल, २३. बूढे आकाश का अत्याचार, २४. पूर्व की ओर, २५ पश्चिम, २६ प्रसिद्धि ।

दाग़े-ग़म

मुनीर शिकोहाबादी*

दिल तो पज़मुर्दा[1] है, दागे-गम गुलिस्ता हो तो क्या
आखें रोती हैं, दहाने-जख्म[2] खन्दा[3] हो तो क्या

हो गये बरबाद शाहाने - सुनेमा मज़िलत[4]
अब बलाए हो तो क्या, दुनिया मे परिया हो तो क्या

पड गये पत्थर जवाहरपोशो पर अय आस्मा
कौड़ियो के मोल अब लाले-बदख्शा[5] हो तो क्या

मस्जिदे टूटी पडी है, सूमेआ[6] वीरान है
यादे-हक मे एक दो दिल हाए सोज़ा[7] हो तो क्या

जां ब लब[8] है गम से उस्तादाने - फने - नज्मो - नसर
मुतमइं[9] इस अहद मे दस बीस नादा हो तो क्या

मुनइमो-फैयाज[10] है मुहताज नाने - खुश्क[11] के
खाकरोबो[12] को मुयस्सर[13] ख्वाने-अल्वा[14] हो तो क्या

पेशवायाने - रहे - दी[15], डर से है उज्लतगुज़ी[16]
गज[17] के मानिन्द वीरानो मे पिन्हा[18] हो तो क्या

* मुनीर शिकोहाबादी का दीवान नायाब है। दीवान का एक नुस्खा अलबत्ता रामपुर ट्रस्ट लाइब्रेरी मे मौजूद है।

१. उदास, २ घाव का मुह, ३ मुस्कुराता हुआ, ४ प्रतिष्ठा, ५ बदख्शा (एक शहर) के लाल, ६ खानकाह (सूफियो के रहने का घर), ७ जलते हुए दिल, ८ ओठों पर प्राण, ९ सतुष्ट, १० धनाढ्य और उदार, ११ सूखी रोटी का इच्छुक, १२ झाड़ू देने वाला, १३ प्राप्त, १४ तरह-तरह के खाने, १५ धार्मिक मार्ग-दर्शक, १६ एकातवासी, १७ खजाना, १८. गुप्त।

नौहागर[19] हैं काज़ियानो - मुफ्तियानो - अहले
चन्द नामुसिफ[21], पनाहे-अहले-दौरा[22] हो

रोइये किस किस मजे को याद करके अ
ज़ख्म दिल पर सैंकडो, खाली नमकदा हों

यह गज़ल है हस्बे-हाले-दहर[23] मिस्ले क़त
सुस्त बैते सूरते-ख्वाबे-परेशा[25] हो तं

मरसियः-ए-देहली[1]

मिर्जा दाग

फलकजमी - ओ - मलायक[2] जनाव थी दि
बिहिश्त-ओ-खुल्द[3] में भी इतिखाव[4] थी दि
जवाव काहे को था लाजवाव थी दि
मगर खयाल से देखा तो ख्वाव थी दि

पडी है आखे वहा जो जगह थी
खबर नही कि इसे खा गयी

१६ शोकगीत गाने वाले, २० न्यायी, मुफ्ती, काजी. २१. अन्यायी, २२
लोगो की शरण मे, २३ दुनिया की दशा के अनुकूल, २४. लगाता
२५ विखरे हुए सपनो की तरह के शेर।

फलक ने कहरो-गज़ब[५] ताक ताक कर डाला
तमाम पर्द.ए-नामूस[६] चाक कर डाला
किया यक एक जहां को हलाक[७] कर डाला
गरज़ कि लाख का घर उसने खाक कर डाला

जली हैं धूप मे शक्लें जो माहताब[८] की थी
खिची हैं काटो मे जो पत्तिया गुलाब की थी

लहू के चश्मे[९] हैं चश्मे-पुर आब[१०] की सूरत
शिकस्ता[११] कास ए-सर[१२] हैं, हुबाब[१३] की सूरत
लुटे हैं घर, दिले खाना खराब की सूरत
कहा यह हश्र[१४] मे तौबा इताब[१५] की सूरत

जबाने-तेग[१६] से पुर्सिश है दादख्वाहो[१७] की
रसन[१८] है, तौक है, गर्दन है बेगुनाहो की

जमी के हाल पे अब आस्मान रोता है
हर इक फिराके-मकी[१९] मे मकान रोता है
कि तिफ्लो,[२०] औरतो, पीरो,[२१] जवान रोता है
गरज यहा के लिए इक जहान रोता है

जो कहिये जोशिशे-तूफा[२२] कही नही जाती
यहा तो नूह की कश्ती भी डूब ही जाती

वरगे-बूए-गुल,[२३] अहले-चमन, चमन से चले
गरीब छोड के अपना वतन वतन से चले
न पूछो जिन्दो को बेचारे किस चलन से चले
कयामत आई कि मुर्दे निकल कफन से चले

मकामे-अम्न[२४] जो ढूढा तो राह भी न मिली
यह कहर था कि खुदा की पनाह[२५] भी न मिली

५ प्रकोप, ६ लज्जा का पर्दा, ७ क़त्ल, ८ चन्द्रमा, ९ स्रोत, १०. अश्रु-भरी आख, ११ टूटा हुआ, १२ सर का प्याला, १३. बुलबुला, १४ प्रलय, १५ क्रोध, प्रकोप, १६ तलवार की जबान, १७ वादी, मुद्दई, १८. रस्सी, १९ मकान मे रहने वालो का विरह, २० बच्चा, २१. बूढे, २२ तूफान का आवेग, २३ फूल की सुगध की तरह, २४ शांति का स्थान, २५ शरण।

बना है खाले-सियह,[२६] रंग महजमालो[२७] का
दुता हुआ है कदे-रास्त[२८] नौनिहालो का
जो जोर आहो का लब पर तो शोर नालो का
अजीब हाल दिगरगू है दिल्ली वालो का

कोई मुराद जो चाही हुसूल[२९] भी न हुई
दुआए-मर्ग[३०] जो मागी कुबूल भी न हुई

पै मुहासिबा[३१] पुर्सिश है नुक्तादानो[३२] की
तलाश बहरे-सियासत है खुश जबानो की
जो नौकरी है तो अब यह है नौजवानो की
कि हुक्म आम है भरती हो कैदखानो की

यह अहले-सैफो-कलम[33] का हो जबकि हाले-तबाह
कमाल क्यो न फिरे दर-ब-दर कमाल-तबाह[३४]

गजब है बख्त बद[३५] ऐसे हमारे हो जायें
कि हैं जो लालो-गुहर,[३६] संगपारे[३७] हो जायें
जो दाने चाहे तो, खिर्मन[३८] शरारे[३९] हो जायें
जो पानी मागे तो दरिया किनारे हो जायें

पियें जो आबे-बका[४०] भी तो जहर हो जाये
जो चाहे रहमते-बारी[४१] तो कहर[४२] हो जाये

२६ काला तिल, २७ सुन्दरिया, २८ सीधा कद, २९ प्राप्त, ३० मरने की दुआ, ३१. हिसाब लेने के लिए, ३२ मर्मज्ञ, ३३ तलवार और कलम वाले, ३४ पूर्ण रूप से बरबाद, ३५. दुर्भाग्य ३६ लाल और मोती, ३७ पत्थर के टुकडे, ३८ खलियान, ३९ अंगारे, ४० अमृत, ४१ खुदा की रहमत, ४२ प्रकोप।

मरसियः-ए-देहली

मीर मेहदी मजरूह

ज़िक्र वरबादिए-देहली का सुनाकर हमदम
नेश्तर[1] ज़ख्मे-कुहन[2] पर न लगाना हर्गिज़

आवे-रफ्ता[3] नही फिर वहर मे फिरकर आता
देहली आवाद हो यह ध्यान न लाना हर्गिज

वह तो वाकी ही नही जिनसे कि देहली थी मुराद
धोका अव नाम पे देहली के न खाना हर्गिज़

गेती अफरोज[4] अगर हज़रते-नैयर रहते
इतना तारीक[5] न होता यह ज़माना हर्गिज

अव तो यह शहर है इक कालिवे-वेजा[6] हमदम
कुछ यहा रहने की खुशिया न मनाना हर्गिज़

दरे-मैखाना हुआ वन्द, सदा हो यह वलन्द
या हरीफाने-कदह ख्वार[7] न आना हर्गिज

रही याराने-गुज़श्ता[8] की कहानी वाकी
यह तो भूला है, न भूलेगा फसाना हर्गिज

१. चाकू, २ पुराना घाव, ३ प्रवाहित जल, ४ धरती को चमकाने वाले, ५ अंधकारमय, ६ निर्जीव शरीर, ७ पीने वालो के दुश्मन, ८ पुराने दोस्त, दोस्त जो गुज़र गये ।

देहली-ए-मरहूम

ख्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली

तज़किरा देहलि-ए-मरहूम का अय दोस्त न छेड़
न सुना जायेगा हम से यह फसाना हर्गिज

दास्ता गुल की खिज़ा[१] मे न सुना अय बुलबुल
हसते हसते हमे ज़ालिम न रुलाना हर्गिज़

ढूंढता है दिले-शोरीदा[२] वहाने मुतरिब[३]
दर्द अंगेज गज़ल कोई न गाना हर्गिज़

सुहबतें अगली मुसव्विर हमे याद आयेंगी
कोई दिलचस्प मुरक्का[४] न दिखाना हर्गिज़

लेके दाग आयेगा सीने पे बहुत अय सैयाह
देख इस शहर के खंडरो मे न जाना हर्गिज

चप्पे चप्पे पे है या गौहरे-यकता[५] तहे-खाक[६]
दफ्न होगा कही इतना न खजाना हर्गिज

मिट गये तेरे मिटाने के निशा भी अब तो
अय फलक[७] इससे ज्यादा न मिटाना हर्गिज़

हमको गर तूने रुलाया तो रुलाया अय चर्ख[८]
हमपे गैरो को तू जालिम न हसाना हर्गिज

१ पतझड़, २ परेशान दिल, ३ गायक, ४ चित्र, ५ बहुमूल्य मोती, ६ खाक के नीचे, ७. आकाश, ८ आकाश ।

कभी अय इल्मो-हुनर[९] घर था तुम्हारा दिल्ली
हम को भूले हो तो घर भूल न जाना हर्गिज़

शाइरी मर चुकी अब ज़िन्दा न होगी यारो
याद कर कर के इसे जी न कुढ़ाना हर्गिज़

ग़ालिब-ओ-शेफ़्ता - ओ-नैयर-ओ - आज़ुर्दा- ओ- ज़ौक़
अब दिखायेगा यह शक्लें न ज़माना हर्गिज़

मोमिन-ओ-अलवी-ओ-सहबाई-ओ-ममनून के बाद
शेर का नाम न लेगा कोई दाना[१०] हर्गिज़

कर दिया मर के यगानो ने यगाना[११] हमको
वरना यां कोई न था हम मे यगाना हर्गिज़

दाग़ो-मजरूह को सुन लो कि फिर इस गुलशन मे
न सुनेगा कोई बुलबुल का तराना हर्गिज़

रात आख़िर हुई और बज़्म हुई ज़ेरो ज़बर[१२]
अब न देखोगे कभी लुत्फ़े-शबाना[१३] हर्गिज़

बज़्मे-मातम[१४] तो नही बज़्मे-सुख़न[१५] है हाली
या मुनासिब नही रो रो के रुलाना हर्गिज़

९. ज्ञान और कला, १० समझदार, ११ यकता, अद्वितीय, १२. अस्त-व्यस्त, १३. रात का आनन्द, १४ शोक सभा, १५ अदबी महफ़िल।

तीसरा अध्याय

(पहला भाग)

हुब्बे-वतन और एहसासे-ग़ुलामी
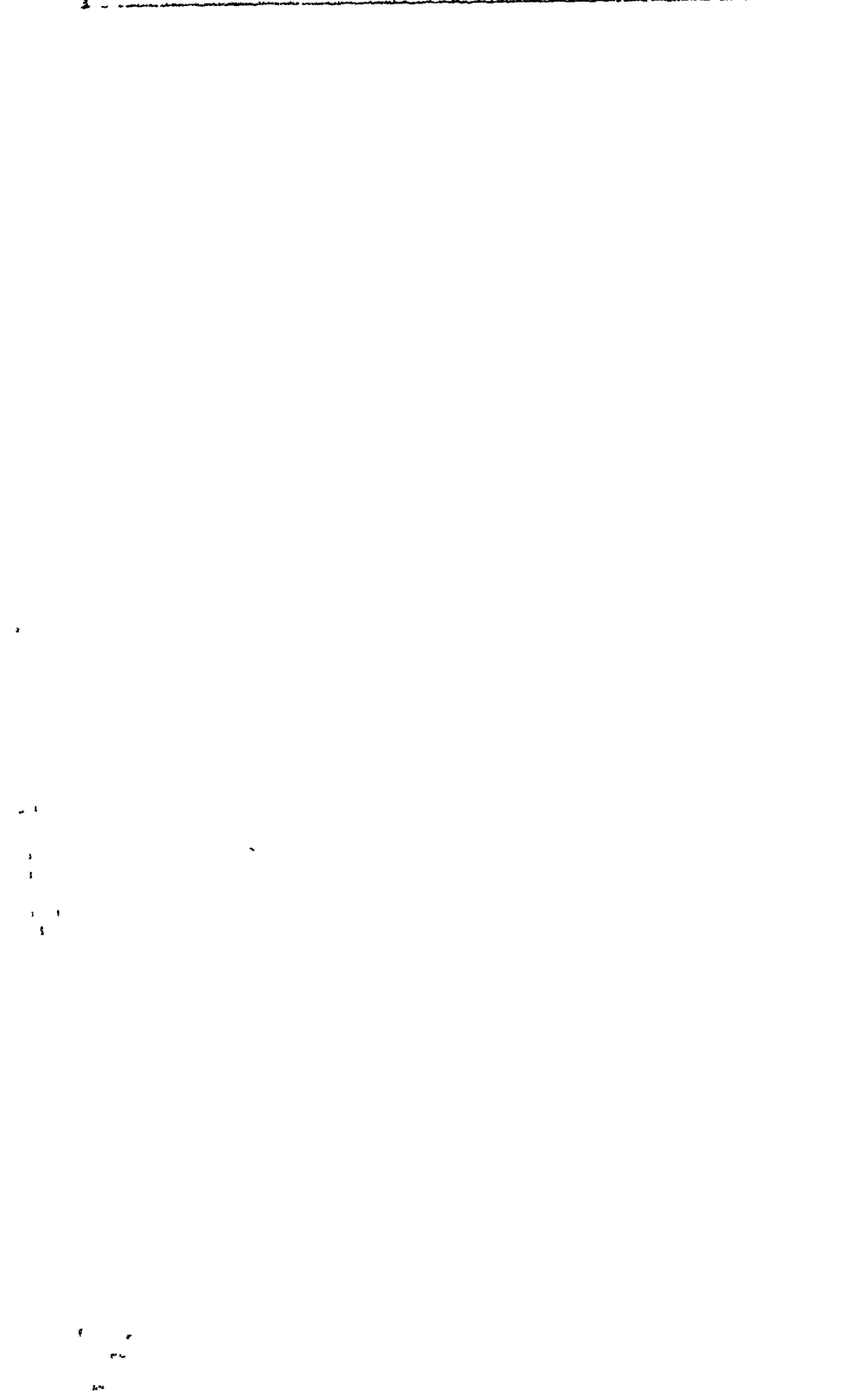
हुब्बे वतन[1]

मुहम्मद हुसैन आजाद

अय आफ़्ताबे-सुब्हे-वतन[2]! तू किधर है आज
तू है किधर कि कुछ नही आता नजर है आज

तुझ बिन जहां है आखो मे अधेर हो रहा
और इंतिजामे-दिल[3] जबर-ओ-जेर[4] हो रहा

तुझ बिन सब अहले-दर्द[5] है दिले-मुर्दा[6] हो रहे
और दिल के शौक सीनो मे अफसुर्दा[7] हो रहे

ठडे है क्यो दिलो मे तिरे जोश हो गये
क्यो सब तिरे चराग हैं खामोश हो गये

हुब्बे-वतन की जिस[8] का है कहतसाल[9] क्यो
हैरा हूँ आजकल पडा है इसका काल क्यो

कुछ हो गया ज़माने का उलटा चलन यहा
हुब्बुल वतन के बदले है बुगजुल वतन[10] यहा

बिन तेरे मुल्के-हिन्द के घर बेचराग हैं
जलते एवज[11] चराग के सीनो मे दाग है

कब तक शबे-सियाह[12] मे आलम तबाह[13] हो
अय आफ्ताब[14] इधर भी करम[15] की निगाह हो

१ देश प्रेम, २ देश के प्रभात के सूर्य, ३. दिल की व्यवस्था, ४. ऊपर-नीचे, अस्तव्यस्त, ५. दर्द उठाने वाले, ६ उदास, मुरदा दिल, ७ उदासीन, ८ अनाज, वस्तु, ९ अकाल, १०. देश से द्वेष रखने वाले, ११, बदले, १२ अधेरी रात, काली रात १३ बरबाद, १४ सूर्य, १५ दया।

आलम[१६] से ताकि तीरा दिली[१७] दूर हो तमाम[१८]
और हिन्द तेरे नूर[१९] से मामूर[२०] हो मुदाम[२१]

उल्फत[२२] से गर्म सबके दिल हो सर्द हो वहम[२३]
और जोकि हमवतन हो वह हमदर्द हो वहम

लवरेज़े - जोशे - हुब्बे - वतन[२४] सब के जाम हो
सरशारे-ज़ौक-ओ-शौक[२५], दिले-खास-ओ-आम हो[२६]

हुब्बे-वतन

ख़्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली

अय वतन ! अय मिरे बिहिश्ते-बरी[१]
क्या हुए तेरे आस्मानो - ज़मी
रात और दिन का वह समा न रहा
वह ज़मी और वह आस्मा न रहा
सच बता तू सभी को भाता है ?
याकि मुझसे ही तेरा नाता है
मैं ही करता हूँ तुझपे जा निसार[२]
याकि दुनिया है तेरी आशिकेज़ार[३]
क्या ज़माने को तू अजीज़[४] नहीं ?
अय वतन ! तू तो ऐसी चीज़ नही
जिन्नो-इसान की हयात[५] है तू
मुर्गो-माही[६] की कायनात[७] है तू

१६ ससार, १७ दिल का मैल, दिल का अंधेरा, १८ खत्म, १९ प्रकाश, २० परिपूर्ण, २१ हमेशा, २२ प्रेम, २३. परस्पर, २४ देश-प्रेम के जोश से परिपूर्ण, २५ जौक शौक से परिपूर्ण, २६ सब के दिल।

हुब्बे-वतन

१ स्वर्ग, २. न्योछावर, ३ प्रेमी, ४ प्रिय, ५ जीवन, ६ मछली, ७ ब्रह्माण्ड।

है नबातात[८] का नमू[९] तुझसे
रूख[१०] तुझ बिन हरे नही होते
सब को होता है तुझसे नश्वो-नुमा[११]
सब को भाती है तेरी आबो-हवा[१२]
तेरी इक मुश्ते-खाक[१३] के बदले
न लू हर्गिज़ अगर बिहिश्त[१४] मिले
जान जब तक न हो बदन से जुदा
कोई दुश्मन न हो वतन से जुदा

बैठे बेफिक्र क्या हो हमवतनो!
उठो अहले-वतन के दोस्त बनो
तुम अगर चाहते हो मुल्क की खैर[१५]
न किसी हमवतन को समझो गैर
हो मुसलमान इसमे या हिन्दू
बौद्ध मजहब हो या कि हो ब्रहमू
सब को मीठी निगाह से देखो
समझो आखो की पुतलिया सबको
मुल्क हैं इत्तिफाक[१६] से आज़ाद
शहर हैं इत्तिफाक से आज़ाद
हिन्द मे इत्तिफाक होता अगर
खाते गैरो की ठोकरें क्योकर
कौम जब इत्तिफाक खो बैठी
अपनी पूजी से हाथ धो बैठी
एक का एक हो गया बदख्वाह[१७]
लगी गैरो की तुम पे पड़ने निगाह
फिर गये भाइयो से जब भाई
जो न आनी थी वह बला आई

८. वनस्पति ९ विकास, १० चेहरा, ११ प्रकटन, बढवार, १२. जलवायु, १३ मुट्ठी भर धूल, १४. स्वर्ग, १५. कुशल, १६. एकता, १७ बुरा चाहने वाला।

पाव इकबाल[१८] के उखडने लगे
मुल्क पर सबके हाथ पडने लगे
कभी तूरानियो ने घर लूटा
कभी दुर्रानियो ने ज़र[१९] लूटा
कभी नादिर ने कत्ले-आम किया
कभी महमूद ने गुलाम किया।
सबसे आखिर मे ले गयी बाज़ी
एक शाइस्ता[२०] कौम मग्रिब[२१] की
मुल्क रौंदे गये है पैरो से
चैन किस को मिला है गैरो[२२] से

छोडो अफसुर्दगी[२३] को जोश मे आओ
बस बहुत सोये, उठो होश मे आओ
काफले तुमसे बढ गये कोसो
रहे जाते हो सब से पीछे क्यो
काफलो से अगर मिला चाहो
मुल्क और कौम का भला चाहो
गर रहा चाहते हो इज़्ज़त से
भाइयो को निकालो ज़िल्लत[२४] से
कौम का मुब्तजल[२५] है जो इसा
बेहकीकत है गर्चे है सुल्ता
कौम दुनिया मे जिसकी हो मुम्ताज़[२६]
है फकीरी मे भी वह बाएजाज[२७]
इज़्ज़ते-कौम चाहते हो अगर
जाके फैलाओ उनमे इल्मो-हुनर[२८]
ज़ात का फख्र और नस्ब का गुरूर
उठ गये अब जहा से यह दस्तूर
अब न सैयद का इफ्तिखार[२९] सही
न बरहमन को शूद्र पर तर्जीह[३०]

१८ प्रताप १९ सोना, २० सभ्य, सुशील, २१ पश्चिम, २२ दुश्मन, पराये, २३ उदासीनता २४ अपमान, २५. नीच, अधम, २६ श्रेष्ठ, २७ विलक्षण, २८ ज्ञान और शिल्प, २९ गर्व, ३० श्रेष्ठता।

कौम की इज्ज़त अब हुनर से है
इल्म से याकि सीमो-जर[31] से है
कोई दिन मे वह दौर आयेगा
बेहुनर भीख तक न पायेगा
न रहेगे सदा यही दिन रात
याद रखना हमारी आज की बात

गर नही सुनते कौल हाली का
फिर न कहना कि कोई कहता था

आज़ादी की क़द्र

ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली

एक हिन्दी ने कहा हासिल है आज़ादी जिन्हे
कद्रदा उनसे बहुत बढकर है आज़ादी के हम

हम कि गैरो के सदा महकूम[1] रहते आये हैं
कद्र आज़ादी की जितनी हमको हो उतनी है कम

आफियत[2] की कद्र होती है मुसीबत मे सिवा[3]
बेनवा[4] को है जियादा कद्रे-दीनार-ओ-दिरम[5]

तारिफिल अशियाए-बिल अज़दाद[6] है कौले-हकीम
देगा कैदी से जियादा कौन आज़ादी पे दम

सुन के इक आजाद ने यह लाफ[7] चुपके से कहा
है सुकर[8] मोरी के कीडे के लिए बागे-इरम[9]

३१ सोना-चादी।

आजादी की क़द्र

१ गुलाम, २ शाति, कुशलता, ३ अधिक, ४ दरिद्र, ५ रुपये-पैसे की कद्र, ६ चीजें प्रतिकूलता से पहचानी जाती हैं, ७ ताना, व्यग, ८ नर्क, दोजख, ९ स्वर्ग का बाग।

इंग्लिस्तान की आज़ादी और हिन्दुस्तान की ग़ुलामी

ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली

कहते है आजाद हो जाता है जब लेता है सास
या गुलाम आकर, करामत है यह इग्लिस्तान की

इसकी सरहद मे गुलामो ने जो है रक्खा कदम
और कटकर पाव से इक इक के वेडी गिर पडी

कल्वे-माहीयत[1] मे इग्लिस्तान है गर कीमिया[2]
कम नही कुछ कल्वे-माहीयत मे हिन्दुस्तान भी

आन कर आजाद, या आजाद रह सकता नही
वह रहे होकर गुलाम, उसकी हवा जिनको लगी

अच्छा ज़माना आने वाला है

इस्माईल मेरठी

तनेगा मसर्रत[1] का अब शामियाना
वजेगा महव्वत का नक्कारखाना
हिमायत का गायेंगे मिलकर तराना
करो सब्र आता है अच्छा जमाना

१ परिवर्तन, २ रसायन।

१ खुशी।

न हम रौशनी दिन की देखेंगे लेकिन
चमक अपनी दिखलायेंगे अब भले दिन
रुकेगा न आलम तरक्की किये बिन
करो सब्र आता है अच्छा जमाना

हर इक तोप सच की मददगार होगी
खयालात की तेज तल्वार होगी
इसी पर फकत जीत और हार होगी
करो सब्र आता है अच्छा जमाना

जबाने-कलम[२] सैफ[३] पर होगी गालिब
दबेंगे न ताकत से फिर हक के तालिब[४]
कि महकूमे-हक होगा दुनिया का तालिब
करो सब्र आता है अच्छा जमाना

ज़माना नसब को न पूछेगा है क्या
मगर वस्फे-ज़ाती[५] का डंका बजेगा
इसी को बडा सबसे मानेगी दुनिया
करो सब्र आता है अच्छा जमाना

लडाई को इसान समझेंगे डायन
तफाखुर[६] पे होगी न कौमो मे अनबन
मशीखत[७] की खातिर उड़ेगी न गर्दन
करो सब्र आता है अच्छा ज़माना

अकीदो[८] की मिट जायेगी जब रकावत[९]
मज़ाहिब[१०] को होगी तअस्सुब[११] से फुर्सत
मगर इनकी बढ जायेगी और ताकत
करो सब्र आता है अच्छा ज़माना

करें सब मदद एक की एक मिलकर
यही बात वाजिब[१२] है हर मर्दो-ज़न[१३] पर
लगे हाथ सबका तो उठ जाये छप्पर
करो सब्र आता है अच्छा ज़माना

२. कलम की ज़बान, ३ तलवार, ४ सत्य पर मरने वाले, ५ निजी गुण, ६ अभिमान, गर्व, ७. श्रेष्ठता, गुरुत्व, ८ विश्वास, ९. दुश्मनी, १०. धर्म (वहुवचन), ११ सकीर्णता, १२. उचित, १३ नरनारी।

कोराना अंग्रेज़परस्ती[1]

इस्माईल मेरठी

रहा वह जरगा[2] जिसे चर गयी है अंग्रेजी
सो वा खुदा की जरूरत न अम्बिया[3] दरकार

वह आख मीच के वरखुद गलत वने ऐसे
कि एशिया की हर इक चीज़ पर पडी धितकार

जो पोशिशों[4] मे है पोशिश तो पस दरीदा[5] कोट
सवारियो मे सवारी तो दुम कटा रहवार[6]

जो अर्दली मे है कुत्ता तो हाथ मे इक वेत
बजाते जाते है सीटी सुलग रहा है सिगार

वह अपने आप को समझे हुए है जटलमैन
और अपनी कौम के लोगो को जानते है गवार

न कुछ अदव है न अख्लाक,[7] ने खुदातरसी[8]
गये हैं इनके खयालात सव समन्दर पार

वह अपने जोम[9] मे लिव्रल हैं या रेडिकल हैं
मगर हैं कौम के हक मे वसूरते-अगियार[10]

न इण्डियन में रहे वह न वह वने इंग्लिश
न इनको चर्च मे आनर न मस्जिदो मे वार

न कोई इल्म न सिफत न कुछ हुनर न कमाल
तमाम कौम के सर पर सवार है अदवार[11]

१ अधी अंग्रेज-भक्ति, २ समूह, ३ नवी, ४. वस्त्र, ५ फटा हुआ, ६, घोडा, ७ नैतिक[illegible]
८. दया, ९ घमण्ड, १० दुश्मन के रूप में, ११. दुर्दशा, दुर्भाग्य ।

जल्वः-ए-देहली दरबार*

अकबर इलाहाबादी

सर मे शौक का सौदा देखा
देहली को हमने भी जा देखा
जो कुछ देखा अच्छा देखा
क्या वतलायें क्या-क्या देखा

जमुनाजी के पाट को देखा
अच्छे सुधरे घाट को देखा
सबसे ऊंचे लाट को देखा
हज़रत डियुक कनाट को देखा

पलटन और रिसाले देखे
गोरे देखे काले देखे
सगीनें और भाले देखे
बैंड बजाने वाले देखे

खेमो[1] का इक जंगल देखा
इस जंगल में मंगल देखा
बरमहा और वरगल देखा
इज्ज़तख्वाहो[2] का दगल देखा

कुछ चेहरो पर मर्दी देखी
कुछ चेहरो पर ज़र्दी देखी
अच्छी खासी सर्दी देखी
दिल ने जो हालत कर दी देखी

अच्छे अच्छो को भटका देखा
भीड़ मे खाते झटका देखा

*पहली जनवरी सन् १९०१ को एडवर्ड हफ्तम के जश्ने-ताजपोशी के सिलसिले मे यह दरबार हुआ था। जश्न मे एडवर्ड ने शिरकत नही की थी। उनके नुमाइन्दे के तौर पर ड्यूक आफ कनाट शरीक हुए थे।

१. तम्बू, २. मान चाहने वाले।

मुह को अगर्चे लटका देखा
दिल दरबार से अटका देखा

हाथी देखे भारी भरकम
उनका चलना कम कम थम थम

ज़र्री[3] झूलें, नूर[4] का आलम
मीलो तक वह चम चम चम चम

सुर्खी सड़क पर कुटती देखी
सास भी भीड़ मे घुटती देखी

आतिशबाज़ी छुटती देखी
मुफ्त की दौलत लुटती देखी

एक का हिस्सा मन-ओ-सलवा[5]
एक का हिस्सा थोडा हल्वा

एक का हिस्सा भीड़ और बल्वा
मेरा हिस्सा दूर का जल्वा

औज[6] ब्रिटिश राज का देखा
परतौ[7] तख्त-ओ-ताज का देखा

रगे-ज़माना आज का देखा
रुख़ कर्ज़न महराज का देखा

पहुंचे फाद के सात समन्दर
तहत मे उनके लाखो बन्दर

हिक्मत-ओ-दानिश इनके अन्दर
अपनी जगह हर एक सिकन्दर

औजे-बख्त मुलाकी[8] उनका
चर्खे-हफ्त तवाकी[9] उनका

महफिल उनकी साकी उनका
आखें मेरी बाकी उनका

३ सुनहरी, ४ प्रकाश, ५ स्वर्ग का भोजन, ६ उत्थान, ७ प्रतिबिम्ब, ८. मुलाकात करने वाला, ९ सात परत का आसमान।

ब्रिटिश राज

अकबर इलाहाबादी

बहुत ही उमदा है अय हमनशी ब्रिटिश राज
कि हर तरह के जवाबित[1] भी हैं उसूल भी हैं

जो चाहे खोल ले दरवाज-ए-अदालत को
कि तेल पेच मे है ढीली इसकी चूल भी है

निगाह करते हैं हाकिम वहुत तअम्मुक[2] से
तुम्हारी अर्ज मे गो कुछ जियादा तूल[3] भी है

जगह भी मिलती है कौसिल मे आनरेवुल की
जो इल्तमास[4] हो उमदा तो वह कबूल[5] भी है

तरह तरह के वना लो लिबासे-रगारग
अलावा रूई के, रेशम भी और वूल भी है

चमक दमक की वह चीज़े हैं हर तरफ फैली
कि महवे-दीद[6] है खातिर[7] अगर मलूल[8] भी है

अधेरी रात मे जगल मे है अयां[9] इजन
कि जिसको देख के हैरान चश्मे-गोल[10] भी है

शिगुफ्ता[11] पार्क है हर सम्त रहरवो[12] के लिए
नजर नवाज है पत्ती, हसीन फूल भी है

जव इतनी नेमतें मौजूद है यहा अकबर
तो हर्ज क्या है अगर एक डैमफूल भी है

नोट · अंग्रेजी राज पर एक तजिया नज्म का हैसियत है ।

१. जाब्ते, २ चिन्तन, ध्यान, ३ लम्बाई, ४ प्रार्थना, अनुरोध, ५. स्वीकार, ६ देखने मे लीन, ७. दिल, ८. उदास, ९ प्रकट, १० प्रेत की आख, ११ ताजा, १२ मुसाफिर, राहगीर ।

देहली दरबार†

अकबर इलाहाबादी

देख आये हम भी दो दिन रह के देहली की बहार
हुक्मे-हाकिम से हुआ था इज्तमाए-इतिशार[1]

आदमी और जानवर और घर मुज़य्यन[2] और मशीन
फूल और सब्ज़ा, चमक और रोशनी, रेल और तार

कैरोसिन और बर्क[3] और पेट्रोलियम और तारपीन
मोटर, ऐरोप्लेन, और जमघटे और इक्तिदार[4]

मश्रिकी पतलून मे थी खिदमत गुज़ारी की उमग
मग़्रिबी[5] शक्लो से शाने-खुद पसन्दी आशकार[6]

शौकत-ओ-इकबाल[7] के मर्कज़[8] हुज़ूरे इम्परर[9]
ज़ीनत-ओ-दौलत[10] की देवी इम्परस आली तबार[11]

बहरे - हस्ती[12] ले रहा था बेदरेग अंगडाइया
टेम्ज़ की अम्वाज[13] जमना से हुई थी हमकनार

इन्क़िलाबे-दहर के रगीन नक्शे पेश थे
थी पै अहले-बसीरत[14] बागे-इब्रत[15] मे बहार

जर्रे वीरानो से उठे थे तमाशा देखने
चश्मे-हैरत[16] बन गयी थी गर्दिशे-लैलो-नहार[17]

† यह दरबार १९११ मे जार्ज पजुम के जश्ने-ताजपोशी के मौके पर हुआ था जिसमें खुद जार्ज और उसकी मलिका मेरी ने शिरकत की थी।

१ व्याकुलता का जमघट, २. मुसज्जित, ३. बिजली, ४. आधिपत्य, ५ पश्चिमी, ६ प्रकट, ७ शान-शौकत, ८ केन्द्र, ९. सम्राट, १० शोभा और सम्पत्ति, ११ श्रेष्ठ कुल की सम्राज्ञी, १२ हस्ती का समुद्र, १३. मौजें, १४. समझदार लोग, १५ शिक्षा का बाग़, १६. आश्चर्य की आख, १७ सुबह-शाम का चक्र।

मस्लिहत आमेज[18] हर तर्जो-तरीके-इंतिज़ाम[19]
हिक्मत आगी हर अदाए-हाकिमाने-नामदार

जामे से बाहर निगाहे-नाज फातेहाने-हिन्द[20]
हदे-कानूनी के अन्दर आनरेबुलो की कतार

खर्च का टोटल दिलो मे चुटकिया लेता हुआ
फ़िक्रे-ज़ाती मे ख़याले-कौम गायब फिलमजार

दावतें, इनाम, स्वीचें, कवाअद,[21] फौज, कैम्प
इज्जतें, ख़ुशिया, उमीदें, एहतियाते,[22] एतबार[23]

पेश रौ[24] शाही थी, फिर हिज़ हाईनिस, फिर अहले-जाह
बाद इसके शेख साहब उनके पीछे ख़ाकसार

शुआ-ए-उमीद

डा० मुहम्मद इकबाल

सूरज ने दिया अपनी शुआओ को यह पैगाम
दुनिया है अजब चीज कभी सुबह कभी शाम
मुद्दत से तुम आवारा हो पहनाए-फजा[1] मे
बढती ही चली जाती है बेमहरिए-ऐयाम[2]
ने रेत के ज़र्रों पे चमकने मे है राहत[3]
ने मिस्ले-सबा[4] तौफे-गुलो-लाला[5] मे आराम

फिर मेरे तजल्ली कद ए-दिल[6] सें समा जाओ
छोडो चमनिस्तानो-बयाबानो-दरो-बाम

१८ शिक्षाप्रद, १९ व्यवस्था का नियम, २० भारत के विजेताओ की गर्व-भरी निगाह, २१ परेड, २२ सावधानी, २३ विश्वास, २४ आगे-आगे।

शुआ-ए-उमीद

१ वातावरण, शून्य का विस्तार, २ जमाने की निर्दयता, ३ सुख, ४. प्रात-समीर की भांति, ५. फूलो का चक्र, ६ दिल का तजल्ली घर।

आफाक[७] के हर गोशे से उठती हैं शुआए[८]
बिछड़े हुए खुर्शीद[९] से होती है हमआगोश[१०]
इक शोर है मग्रिब[११] मे उजाला नही मुम्किन
अफरंग मशीनो के धुए से है सियहपोश[१२]
मश्रिक[१३] नही गो लज्जते-नज़ारा[१४] से महरूम[१५]
लेकिन सिफते - आलमे - लाहूत[१६] है खामोश

फिर हमको इसी सीन.ए-रौशन में छुपा ले
अय महरे-जहा ताव,[१७] न कर हमको फरामोश[१८]

इक शोख किरन, शोख मिसाले-निगाहे-हूर[१९]
आराम से फारिग सिफते-जौहरे-सीमाव[२०]
बोली कि मुझे रुख्सते-तनवीर[२१] अता हो
जब तक न हो मश्रिक का हर इक जर्रा जहाताव[२२]
छोड़ूगी न मैं हिन्द की तारीक फज़ा[२३] को
जब तक न उठे ख्वाब से मर्दाने-गरा ख्वाब[२४]
खावर[२५] की उमीदो का यही खाक है मर्कज[२६]
इकबाल के अश्को से यही खाक है सैराव[२७]
चश्मे-मह-ओ-परवीं[२८] है इसी खाक से रौशन
यह खाक कि है जिसका हज़फरेज़ा[२९] दुरे-नाव[३०]
इस खाक से उठे हैं वह गव्वासे-मआनी[३१]
जिनके लिए हर बहरे-पुर-आशोव[३२] है पायाव[३३]
जिस साज़ के नग्मो से हरारत[३४] थी दिलो मे
महफिल वही साज़ है बेगानाए - मिज़्राव[३५]
बुतखाने के दरवाज़े पे सोता है बिरहमन
तकदीर को रोता है मुसलमा तहे-महराव[३६]

मश्रिक से हो बेज़ार न मग्रिब से हज़र[३७] कर
फितरत का तकाज़ा है कि हर शव को सहर कर

७ ससार क्षितिज (ब० व०), ८ किरणें, ६ सूरज, १० आलिगन मे लेना, ११ पश्चिम, १२ काले, १३ पूर्व १४, दृश्य का आनन्द, १५ वचित, १६ शून्य, १७ ससार को प्रकाशमान करने वाला सूरज, १८ भूलना, १६ अप्सरा की निगाह, २० पारे के जौहर की तरह, २१ चमक की रुख्सत, २२ ससार को प्रकाश देने वाला, २३ अधकारमय वातावरण, २४ निद्राग्रस्त मर्द, २५ पूर्व, २६ केन्द्र, २७ तृप्त, हरा-भरा, २८ परवीन और चन्द्रमा की आख, २६ कण, ३० मोती, ३१ अर्थ के मोती निकालने वाले, ३२ तूफान से पूर्ण समुद्र, ३३ उथला, ३४. गर्मी, ३५ मिज़्राव से अपरिचित, ३६ मेहराव के नीचे, ३७. परहेज ।

(दूसरा भाग)

मुसलमानों में अंग्रेज़-दुश्मनी का जज़्बा

शहर आशोबे-इस्लाम*

शिबली नोमानी

हुकूमत पर जवाल[1] आया तो फिर नामो-निशा कब तक
चरागे-कुश्त:-ए-महफिल[2] से उट्ठेगा धुआँ कब तक

कबाए-सल्तनत[3] के गर फलक[4] ने कर दिये पुर्जे[5]
फजाए-आस्मानी से उडेंगी धज्जिया कब तक

मराकश जा चुका, फारस गया, अब देखना यह है
कि जीता है यह टर्की का मरीजे-सख्त जा कव तक

यह सैलाबे-बला बल्कान से जो बढता आता है
इसे रोकेगा मज़लूमो की आहो का धुआँ कब तक

यह वह है, नालः-ए-मजलूम[6] की लै जिनको भाती है
यह राग उनको सुनायेगा यतीमे-नातवा[7] कव तक

कोई पूछे कि अय तहजीबे-इसानी के उस्तादो !
यह जुल्म आराइया ताके, यह हश्र अगेजिया कव तक

यह माना तुमको तल्वारो की तेजी आजमानी है
हमारी गर्दनो पर होगा इसका इम्तिहा कव तक

* यह नज्म मौलाना शिवली ने लखनऊ के एक आम जलसे में, जो टर्की की फराहमिए-चन्दा के लिए हुआ था, पढी, खुद भी रोये और दूसरो को भी रुलाया—मालूम होता था कि यह भी लखनऊ की कोई मातमी मज्लिस हो।(हयाते-शिवली, पृष्ठ ५६२)

१ पतन, २ महफिल मे वुझने वाला चराग, ३ हुकूमत का लिवास ४ आकाश, ५ टुकड़े-टुकडे, ६. पीडित का आर्तनाद, ७ अनाथ, दुर्वल।

निगारिस्ताने-खूं[८] की सैर गर तुमने नही देखी
तो हम दिखलायें तुमको ज़ख्म हाए-खू चकां[९] कव तक

यह माना गर्मिए-महफिल के सामा चाहिएं तुमको
दिखायें हम तुम्हे हगाम-ए-श्राह-ओ-फुगा[१०] कव तक

यह माना किस्सः-ए-गम से तुम्हारा दिल वहलता है
सुनायें तुमको अपने दर्दे-दिल की दास्तां कव तक

यह माना तुमको शिकवा है फलक से खुश्कसाली[११] का
हम अपने खून से सीचें तुम्हारी खेतिया कव तक

उरूसे-वख्त[१२] की खातिर तुम्हे दरकार है अफशा[१३]
हमारे जर्रं हाए-खाक होगे जर फशा[१४] कव तक

कहाँ तक लोगे हमसे इंतिकामे-फतहे-अय्यूवी[१५]
दिखाओगे हमे जगे-सलीवी[१६]का समा कव तक

समझकर यह कि धुदले से निशाने-रफ्तगा[१७] हम हैं
मिटाओगे हमारा इस तरह नामो-निशा कव तक

ज़वाले-दौलते उस्मा[१८] ज़वाले-शरओ-मिल्लत[१९] है
अजीजो फिक्रे-फर्ज़न्द-ओ-अयाल-ओ-खानमा[२०] कव तक

खुदारा तुम यह समझे भी कि यह तैयारिया क्या हैं
न समझे अव तो फिर समझोगे तुम यह चीस्ता[२१] कव तक

परस्ताराने-खाके-कावा[२२] दुनिया से अगर उट्ठे
तो फिर यह एहतरामे-सज्दागाहे-कुदसिया[२३] कव तक

८ खून की चित्रशाला, ९ खून मे डूबे हुए जख्म, १० आर्तनाद का हगामा, ११. सूखा, १२ भाग्य की दुल्हन, १३ चमक, सिंदूर, १४ सोना विखेरने वाले, १५ अय्यूवी विजय का वदला (ईसाइयों और मुसलमानो के वीच हुई लडाई मे मुसलमानो की जीत), १६ ईसाइयत के लिए लडी जाने वाली जगें, १७ गुजरने वालो के चिह्न, १८ तुर्कों की दौलत का पतन, १९ धार्मिक नियमो का पतन, २० घर, औलाद और वेटे की चिन्ता, २१ पहेली, २२ कावे की धूल के परस्तार, २३ उस जगह का आदर जहा फरिश्ते सज्दा करते हों ।

बिखरते जाते हैं शीराजः-ए-औराके-इस्लामी[२४]
चलेंगी तुन्द बादे-कुफ्र[२५] की यह आधियां कब तक

कही उड़कर यह दामाने-हरम[२६] को भी न छू आये
गुबारे-कुफ्र[२७] की यह बेमुहाबा शोखियां कब तक

हरम की सम्त भी सद अफगनो[२८] की जब निगाहे है
तो फिर समझो कि मुर्गाने-हरम[२९] का आशियां कब तक

जो हिज्रत करके भी जायें तो शिबली अब कहा जायें
कि अम्नो - अमाने - शामो - नजदो - कीरवां कब तक

हज़रत रिसालत मआब में

डा० मुहम्मद इकबाल

गरां[१] जो मुझपे यह हगाम-ए-ज़माना[२] हुआ
जहां से बान्ध के रख्ते-सफर रवाना हुआ

कैदे-शामो-सहर[३] मे बसर तो की लेकिन
निज़ामे-कुहन-ए-आलम[४] से आशना न हुआ

फरिश्ते बज्मे-रिसालत[५] मे ले गये मुझको
हुजूरे-आय-ए-एहमत[६] मे ले गये मुझको

२४ इस्लामी औराक का शीराजा, २५ कुफ्र की तीव्र हवा, २६. हरम का दामन, २७ कुफ्र का गुबार, २८ सैकड़ो आफगन, २९ हरम के पक्षी।

हजरत रिसालत मआब में

१. कठिन, महगा, २ जमाने का हगामा, ३ सुबह-शाम की कैद, ४. प्राचीन ससार का विधान, ५ हजरत मुहम्मद सलअम के सामने, ६ रसूल अल्लाह के हुजूर मे।

कहा हुजूर ने अय अन्दलीबे-बागे-हिजाज़[७] ।
कली कली है तिरी गर्मिए-नवा[८] से गुदाज़

हमेशा सरखुशे-जामे-विला[९] है दिल तेरा
फुतादगी[१०] है तिरी गैरते-सजूद-ओ-नियाज़[११]

उडा जो पस्तिए-दुनिया[१२] से तो सरे गर्दू[१३]
सिखाई तुझको मालाइक[१४] ने रफअते-परवाज़[१५]

निकल के बागे-जहा से बरंगे-बू आया
हमारे वास्ते क्या तोहफा लेके तू आया

हुजूर! दहर मे आसूदगी[१६] नही मिलती
तलाश जिसकी है वह ज़िन्दगी नही मिलती

हजार लाला-ओ-गुल हैं रियाज़े-हस्ती[१७] मे
वफा की जिसमे हो बू वह कली नही मिलती

मगर मैं नज्र[१८] को इक आबगीना[१९] लाया हूँ
जो चीज़ इसमे है जन्नत मे भी नही मिलती

झलकती है तिरी उम्मत[२०] की आबरू इसमे
तरबलस के शहीदो का है लहू इसमे

७ हिजाज़ के बाग के बुलबुल, ८. आवाज़ की गर्मी, ९ मुहब्बत के जाम से मसरूर, १० पतन, ११. सजदों और श्रद्धा की लज्जा, १२. दुनिया की गहराई, १३. आकाश पर, १४ फरिश्ते, १५ उडान की ऊँचाई, १६. सन्तोष, १७ अस्तित्व का बाग़, १८ भेंट, १९. शीशे का जाम, २० अनुयायी ।

बेदारिए-इस्लाम

हसरत मोहानी

कब्जे-ए-यसरब[1] का सौदा दुश्मनो के सर मे है
अब तो इंसाफ़ इस सितम का दस्ते-पैगम्बर[2] मे है

जौरे-योरुप[3] है बिना[4] बेदारिए-इस्लाम[5] की
खैर है दरअस्ल यह बा आकि शक्ले-शर[6] मे है

खातिरे-अफसुर्दा[7] मे बाकी है अब तकयादे-इश्क
गर्मिए-आतिश[8] हनोज़[9] इस मुश्ते-खाकस्तर[10] मे है

किल्लते-अफवाजे-टर्की[11] पर न हो इटली दिलेर[12]
एक है सौ के लिए काफी जो इस लश्कर मे है

अब खुदा चाहे तो हसरत जल्द होता है बलन्द
रायते-हुर्रियत-ओ-हक[13] जो कफ़े अनवर[14] मे है

१ मक्के मदीने पर अधिकार करने की धुन, २. पैगम्बर के हाथ, ३ यूरोप के अत्याचार, ४ कारण, ५ इस्लाम की जाग्रति, ६ बदी की सूरत में, ७. दुखी दिल, ८. आग की गर्मी, ९ अभी तक, १० मुट्ठी भर खाक, ११. तुर्की की फौजो की कमी, १२. बहादुर, १३ आजादी और सत्य का झण्डा, १४. अनवर के हाथ मे।

तक़ाज़ाए-ग़ैरत

हसरत मोहानी

गज़ब है कि पाबन्दे-अग़ियार[1] होकर
मुसल्मा रह जाये यू ख़्वार[2] होकर

समझते हैं सब अहले-मग़्रि[3] की चालें
मगर फिर भी बैठे हैं बेकार होकर

तकाज़ाए-ग़ैरत[4] यही है अज़ीज़ो
कि हम भी रहे इनसे बेज़ार होकर

अभी हमको समझे नही अहले-मग़्रिब
बता दो इन्हें गर्म पैकार[5] होकर

फरेब-ओ-दगा के मुकाबले में तुम भी
निकल आओ बेरहम ख़ूख़्वार होकर

कही सुलह-ओ-नर्मी[6] से रह जाये देखो
न यह उक्द-ए-जंग[7] दुश्वार होकर

वह हमको समझते हैं अहमक जो हसरत
वफा के हैं तालिब दिल आज़ार होकर

१ ग़ैरो के पाबन्द, २ अपमानित, ३ पश्चिमी लोग (अंग्रेज), ४. आत्मसम्मान का तकाज़ा, ५ युद्ध करके, ६ समझौता और विनम्रता, ७ युद्ध की समस्या।

चल बल्क़ान चल

सैयद हाशमी फ़रीदाबादी

ता ब कै रुख़ जर्द[1] आँखें खूचका[2], दिल मुजमहिल[3]
ता ब कै साजे-जुनू[4] मुश्ताके-आहगे-अमल[5]
दाव'-ए-ईमान रखता है तो अय मोमिन निकल
शम्मा गैरत[6] का है गर बाकी तो चल बल्कान चल

जान से लाखो गुनी महगी है तेरी आबरू
हो फना, गर है बकाए जाविदा[7] की आरजू
सोगवारी हाए-जाहिर[8] की न कर तल्कीन[9] तू
शम्मा गैरत का है गर बाकी तो चल बल्कान चल

छोड दे बेरूह लोगो के लिए यह एतिदाल[10]
मौत हासिल कर कि जो इस जिन्दगी का है मआल[11]
मुश्किलें किसकी? कहा की रोक और कैसा मआल
लुत्फ मरने का अगर चाहे तो चल, बल्कान चल

ता कुजा यकसा रवी[12] अब सुन पयामे-इंकिलाब
छोड़ बेरंगी सुकू की, हो रहीने-इज्तिराब[13]
वह भी क्या मरना की खुद फितरत तुझे दे दे जवाब
लुत्फ मरने का अगर चाहे तो चल बल्कान चल

१ पीला चेहरा, २ खून टपकाती हुई आखें, ३. उदास दिल, ४ उन्माद का वाद्य, ५ अमल और आवाज का इच्छुक, ६ थोड़ी-सी गैरत, ७. अस्तित्व की अमरता, ८ प्रत्यक्ष शोक, ९ उपदेश, १० समता, सतुलन, ११ हासिल, प्राप्ति, १२ एक जैसा बहना, १३ बेचैन।

कारफ़र्माई

हाशमी 'फरीदावादी'

वहुत समझा किया मैं सब्रो-खामोशी को दानाई[1]
वहुत कहता रहा कुछ न कर सकने को शकीवाई[2]

वहुत दिन ज़िल्लतों[3] को मस्लिहत[4] जाना किया लेकिन
वस अव अय हमनशी ! मेरी तवीअत जोश पर आई

मिरे हर सास से इक इंकिलावे-हुर्रियत[5] उट्ठा
मिरे इक एक रोए ने हमीयत[6] की कसम खाई

व यक हेजाने-खू[7] पारा हुआ मल्वूसे-नामर्दी[8]
मुझे खुद एतमादी[9] ने पिन्हाया ताजे-दाराई[10]

वस अव मैं अपने मुल्के-नफ़्स[11] का सुल्ताने-मुतलक[12] हूँ
वस अव है आज से आगाज़ मेरी कारफर्माई

१. वुद्धिमानी, २. मन्तोप, ३. अपमान, ४ दूरदर्शिता, ५ आज़ादी का इंकिलाव, ६ लज्जा, गैरत, ७. खून का हेजान, ८ नामर्दी से सना हुआ, ९ आत्मविश्वास, १० दारा का ताज, ११. सासों का देश, १२ निरकुश सम्राट ।

इंक़िलाबे-चर्ख़े-गर्दू[1]

शिबली नोमानी

तुम्हारा दर्दे-दिल समझेंगे क्या हिन्दोस्ता वाले
कि तुमने वह मज़ालिम हाए-गोनागो[2] भी देखे है

यतीमो[3] के सुने हैं नाला हाए जा गुज़ा[4] तुमने
ज़माने-बेनवा[5] के चेहर-ए-महज़ू[6] भी देखे हैं

घरो को लूटने के बाद ज़िन्दो को जला देना
बलादे-मग़्रिबी[7] के यह नये कानू भी देखे है

मुसलमानो के कत्ले-आम और तुर्को की बरबादी
नताइज[8] हाए-उमीद ग्लैड स्टोन भी देखे हैं

तुम्ही ने गाज़ियो[9] के जिस्म पर टाके लगाये है
शहीदाने-वतन के जामः-ए-पुर[10] ख़ू भी देखे है

तुम्हारी चश्मे-इब्रतगीर[11] ख़ुद हमसे यह कहती है
कि हमने वह मसाइब हाए-गोनागू[12] भी देखे हैं

लहू की चादरें देखी हैं रुख़्सारे-शहीदा[13] पर
ज़मी पर पारा हाए-सीन.-ए-पुरख़ू[14] भी देखे है

निगार आराईया[15] देखी हैं चश्मे-गौहर अफशां[16] की
शहीदाने-वफा के आरिज़े-गुलगू[17] भी देखे हैं

१. आकाश-चक्र की क्राति, २ विभिन्न प्रकार के अत्याचार, ३ अनाथ, ४. जानलेवा आर्त-नाद, ५. दरिद्र ज़माना, ६ बीमार, दुखी चेहरे, ७. पश्चिम के शहर, ८ नतीजे, ९ धर्म-योद्धा, १०. खून मे डूबे हुए कपडे, ११. सबक देने वाली आख, १२. विभिन्न प्रकार की मुसीबतें, १३. शहीदो के चेहरो पर, १४ खून मे डूबे हुए दिल के टुकडे, १५ सजावट, १६ मोती जैसी चमक वाली आखें, १७ फूल जैसे कपोल ।

तुम्ही से कुछ पता मिलता है शैदायाने-मिल्लत[१८] का
कि तुमने शाहिदे-इस्लाम के मफ़्तू भी देखे हैं

जुनूने-जोशे-इस्लामी कोई समझा तो तुम समझे
कि तुमने लैल-ए-इस्लाम के मजनू भी देखे हैं

सहारा है अगर उम्मीद का अब भी कोई बाकी
तो तुमने वह रमूज़े-कूवते-मकनू[१९] भी देखे हैं

अजब क्या है यह बेडा गर्क होकर फिर उछल आये
कि हमने इंक़िलाबे-चर्खे-गर्दू[२०] यूं भी देखे है

दुआए-कुहना साला[२१] है अगर मकबूले-यज़दानी[२२]
तो अब दस्ते-दुआ[२३] है और यह शिबलीए-नोमानी

१८ धर्म पर मरने वाले, १९ गुप्त शक्ति के रहस्य, २० आसमान का इंकिलाब, २१. पुरानी दुआ, २२ खुदा स्वीकार करे, २३ दुआ के लिए उठे हुए हाथ।

नोट . महम्मद अली मरहूम की कोशिशों से बल्कान की लडाई मे हिन्दुस्तान से एक तिब्बी वफ्द भेजा गया था जिसके रहबर डाक्टर मुख्तार अहमद अंसारी मरहूम थे। इस वफ्द के सारे इखराजात हिन्दुस्तान के मुसलमानो ने बरदाश्त किये। जग खत्म होने पर जब यह वफ्द हिन्दुस्तान वापस आया तो शिबली ने अपने जज्बाते-मुहब्बत का इजहार एक नज्म मे किया। ऊपर के अशआर इसी नज्म मे लिये गये हैं।

मारकः-ए-कानपूर

शिबली नोमानी

कल मुझको चन्द लाश-ए-बेजा[1] नजर पड़े
देखा करीब जाके तो जख्मो से चूर हैं

कुछ तिफ्ले-खुर्द साल[2] है जो चुप हैं खुद मगर
बचपन यह कह रहा है कि हम बेकुसूर हैं

आये थे इसलिए कि बनाये खुदा का घर
नीन्द आ गयी है मुतजिरे-नफखे-सूर[3] है

कुछ नौजवा है बेखबरे-नश-ए-शबाब[4]
जाहिर मे गर्चे साहबे-अक्लो-शऊर[5] हैं

उठता हुआ शबाब यह कहता है बेदरेग
मुजरिम कोई नही है मगर हम जरूर है

सीने पे हमने रोक लिए बर्छियो के वार
अज बस कि मस्ते-बाद.-ए-नाजो-गुरूर[6] है

हम अपना काट के रख देते हैं जो सर
लज्जत शनासे-जौके-दिले-नासुबूर[7] है

कुछ पीरे-कुहना साल[8] हैं दिलदाद-ए-फना[9]
जो खाको-खू[10] मे भी हम्मातन गर्के-नूर[11] है

पूछा जो मैंने कौन हो तुम? आई यह सदा
हम कुश्तगाने-मारक-ए-कानपूर[12] है

१ निर्जीव लाशें, २ बच्चे, ३ सुर फूकने की प्रतीक्षा मे, ४ यौवन के नशे से बेखबर, ५ समझदार, ६ गर्व के नशे मे मस्त, ७ आतुर दिल के जौक को पहचानने का आनन्द, ८. बूढ़े, ९ नाश के चाहने वाले, १०. खाक और खून, ११. प्रकाश मे डूबे हुए, १२ कानपुर के मारके मे क़त्ल होने वाले।

हम हैं मज़लूम

शिवली नोमानी

हम गरीबो को न पहले था न अब है इंकार
कि हर इक शहर मे है आपके इसाफ की धूम

यह भी तस्लीम[1] है हमको कि यह जो कुछ भी हुआ
इसमे मलहूज[2] रहे अदल[3] के आदावो-रसूम[4]

आप कानून की हद से न वढे यक सरे-मू[5]
फैर का हुक्म दिया आपने जव वहरे-हुजूम[6]

यह हकीकत[7] भी मगर काविले-इंकार नही
कि वयक चश्मे-ज़दन[8] मौत को था इज़्ने अमूम[9]

गोलिया खा के जो गिरते थे जवानाने-हुसैन[10]
सव यह कहते थे कयामत है कि झड़ते हैं नुजूम[11]

गोलियो के थे निशा मम्वरो-महराव पे भी
वसकि दरकार है मस्जिद के लिए नक्शो-रसूम

जावजा खून से मस्जिद है निगारी[12] अव तक
यह वह सनअत[13] है कि ताहश्त[14] न होगी मादूम[15]

पा व ज़ंजीर[16] थे मुज़रिम भी तमाशाई भी
और पुलिस को यह था उज्र कि "हम हैं महकूम"

वाकिआ[17] यह है गरज़ कोई न माने न सही
आप जालिम नही जिन्हार,[18] पे हम हैं मजलूम[19]

---

१ स्वीकार, २ लिहाज रखा गया, ३. इसाफ, ४. रीति-रिवाज, ५. वाल वरावर, ६ जन-समूह पर, ७ सत्य, ८ आख झपकते ही, ९ आम निमत्रण, १०. हुसैन के जवान, ११ तारे, १२ चित्रित, १३. उद्योग, कला, १४. प्रलय तक, १५ धुधली, १६ जजीर से बधे हुए, १७ सच्चाई, १८ हरगिज, १९ पीड़ित, जिस पर जुल्म किया जाये।

चौथा अध्याय

(पहला भाग)

(१९१४ से १९२१ तक)

पहली जंगे-अज़ीम और उसके नताइज
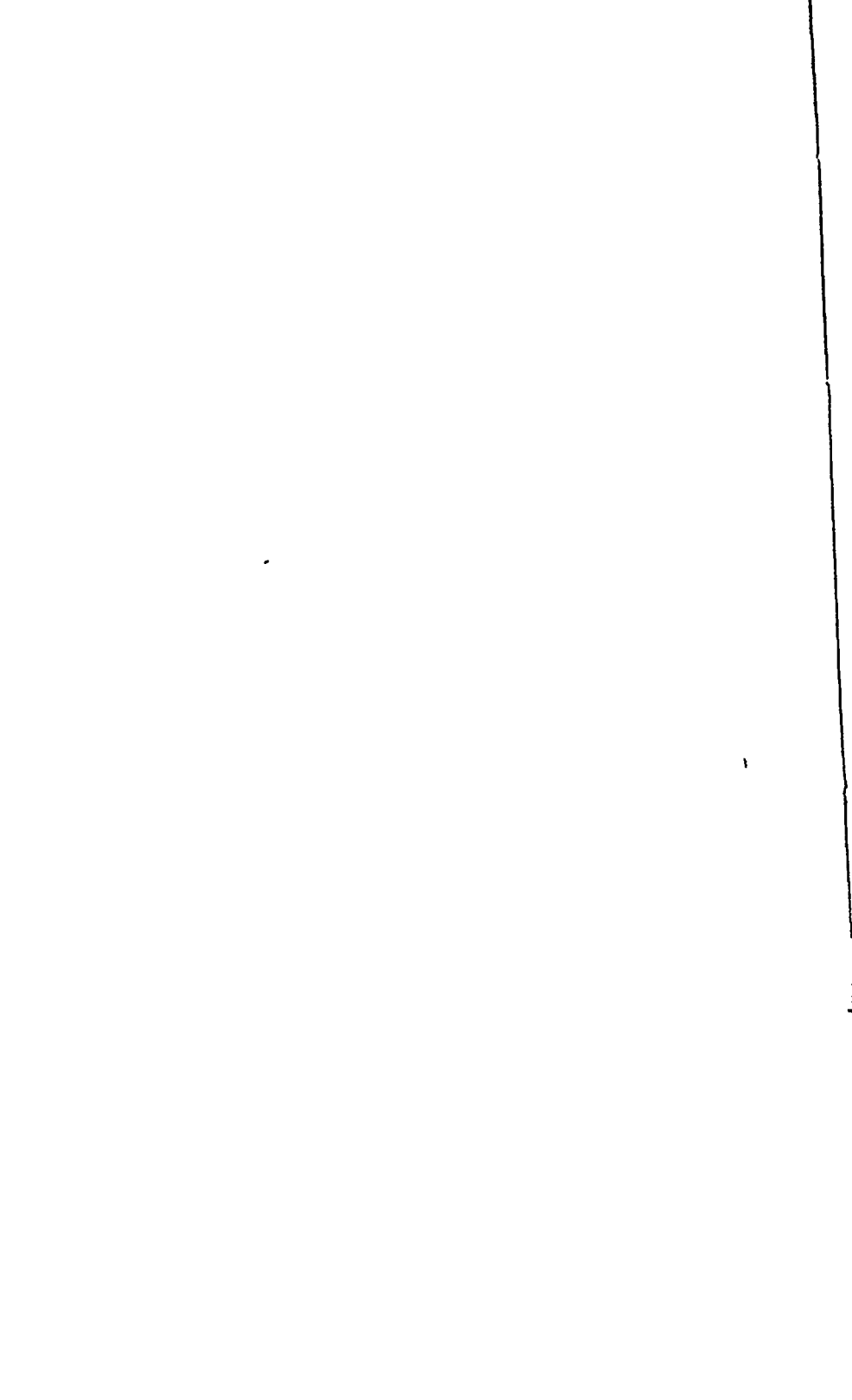
जंगे-यूरोप और हिन्दुस्तानी*

शिबली नोमानी

इक जर्मनी ने मुझसे कहा अजरहे गुरूर[1]
आसा नही है फत्ह[2] तो दुश्वार[3] भी नही

बरतानिया की फौज है दस लाख से भी कम
और इस पे लुत्फ[4] यह है कि तैयार भी नही

बाकी रहा फरास तो वह रिन्दे - लमयजल[5]
आईं शनासे - शीवः-ए-पैकार[6] भी नही

मैंने कहा गलत है तिरा दावए-गुरूर[7]
दीवाना तू नही है तो हुशियार भी नही

हम लोग अहले-हिन्द[8] है जर्मन से दस गुने
तुझको तमीजे अन्दक-ओ-बिसियार[9] भी नही

सुनता रहा वह गौर से मेरा कलाम और
फिर वह कहा जो लायके-इज्हार[10] भी नही

"इस सादगी पे कौन न मर जाये अय खुदा
लडते है और हाथ मे तलवार भी नही"

*इस नज्म पर शिवली के नाम गिरफ्तारी का वारट जारी हो चुका था लेकिन उस पर अमल होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई।

१ घमण्ड से, २ विजय, ३ कठिन, ४ मजा, ५. अनश्वर मदिरापायी, ६ लडने के ढग से परिचित, ७ घमण्डी दावा, ८ भारतवासी, ९ कम और ज्यादा, १० प्रकट करने योग्य।

आवाज़-ए-क़ौम

ब्रजनारायण चकबस्त

यह खाके-हिन्द[1] से पैदा हैं जोश के आसार[2]
हिमालया से उठे जैसे अब्रे-दरियाबार[3]
लहू रगो मे दिखाता है बर्क[4] की रफ्तार
हुई है खाक[5] के पर्दे मे हड्डिया बेदार[6]

जमी से अर्श[7] तलक शोर होमरूल का है
शबाब[8] कौम का है, जोर होमरूल का है

निगाहे-शौक[9] है इस रग की तमाशाई[10]
है जिससे शेख-ओ-बिरहमन पे बेखुदी छाई
हर एक गाम पे करते हुए जबी साई[11]
चले है बहरे-जियारत[12] वफा के सौदाई

वतन के ऐश का बुत[13] बेनकाब निकला है
नये उफक[14] पे नया आफताब[15] निकला है

यह आरजू[16] है कि मेहर-ओ-वफा[17] से काम रहे
वतन के बाग मे अपना ही इंतिज़ाम रहे
गुलो की फिक्र मे गुलची[18] न सुब्हो-शाम रहे
न कोई मुर्गे-खुशइल्हा[19] असीरे-दाम[20] रहे

सरीरे-शाह[21] का इकबाल[22] हो बहारे-चमन
रहे चमन का मुहाफिज[23] यह ताजदारे-चमन

१ भारत की धूल, २ लक्षण ३ दरिया बरसाने वाला बादल, ४ बिजली, ५ धूल, ६ जाग्रत, ७ आकाश, ८ यौवन, ९ शौक की दृष्टि, १० तमाशा देखने वाला, ११. माथा घिसना, १२ दर्शन के लिए, १३ मूर्ति, १४. क्षितिज, १५ सूर्य, १६. अभिलाषा, १७. दया और प्रेम-निर्वाह, १८ फूल तोडने वाला, १९ गायक पक्षी, २० जाल मे बन्द, २१. राजसिंहासन, २२ प्रताप, २३ रक्षक ।

है आजकल की हवा मे वफा की बरबादी
सुने जो कोई तो सारा चमन है फ़रियादी
कफस[२४] मे बन्द है जो आशिया[२५] के थे आदी
उडी हर एक बाग से बू होके रंगे-आजादी

हवाए-शौक[२६] मे गुचे[२७] बिकस नही सकते
हमारे फूल भी चाहे तो हस नही सकते

जो आजकल है मुहब्बत वतन की आलमगीर[२८]
यही गुनाह, यही जुर्म है, यही तकसीर[२९]
जबा है बन्द, कलम को पिनहाई है जजीर
बयाने-दर्द[३०] की बाकी नही कोई तदबीर[३१]

है दिल मे दर्द, मगर ताकते-कलाम[३२] नही
लगे है जख्म, तड़पने का इंतिजाम नही

रहा है रात की सुहबत[३३] मे क्या मजा बाकी
निगाहे-शौक को है दौरे-नौ[३४] की मुश्ताकी[३५]
नयी शराब, नया दौर और नया साकी
मैए-सुरूर[३६] मे दैर-ओ-हरम[३७] की नाचाकी[३८]

यही किसी का हरम हो किसी का दैर रहे
यह मैकदा रहे आबाद खुम[३९] की खैर[४०] रहे

जो दिल से कौम के निकली है वह दुआ है यही
था जिस पे नाज[४१] मसीहा को वह सदा है यही
दिलो को मस्त जो करती है वह हवा है यही
गरीब हिन्द के आज़ार[४२] की दवा है यही

न चैन आयेगा बे होमरूल पाये हुए
फकीर कौम के बैठे हैं लौ लगाये हुए

२४. पिंजरा, २५ घोसला, २६. इच्छित हवा, २७ कलिया, २८ विश्वव्यापी, २९ अपराध, न्यूनता, ३० दर्द का बयान, ३१. उपाय, ३२ बोलने की शक्ति, ३३. सगति, ३४ नया जमाना, ३५ जिज्ञासा, ३६ नशीली मदिरा, ३७. मन्दिर-मस्जिद, ३८ दुश्मनी, ३९ प्याला, ४०. कुशल, ४१. गर्व, ४२. बीमारी ।

वतन का र

ब्रजनारायण चक

जमीने-हिन्द के रुतबे[1] मे
यह होमरूल की उम्मीद
मिसेज बेसेन्ट ने इस आरज
फकीर कौम के हैं और य

तवल फुजूल है
न लें बिहिश्त भी

वतनपरस्त[3] शहीदो की
हम अपनी आख का सुरम
गरीब मा के लिए दर्द
यही पयामे-वफा[4] कौम

तलब फुजूल है
न लें विहिश्त

पिनहाने वाले अगर वे
खुशी से कैद के गोशे[5] को
जो सन्तरी दरेज़िन्दा[6] के
यह राग गाके उन्हे नी

तलब फुजूल है
न लें विहिश्त

ज़बा को बन्द किया है यह गाफिलो[७] को है नाज
जरा रगो मे लहू का यही देख ले अन्दाज
रहेगा जान के हमराह दिल का सोज-ओ-गुदाज[८]
चिता से आयेगी मरने के बाद यह आवाज़

तलब फुज़ूल है काटे की फूल के बदले
न लें बिहिश्त भी हम होमरूल के बदले

यही पयाम है कोयल का बाग के अन्दर
इसी हवा मे है गगा का ज़ोर आठ पहर
हिलाले-ईद[९] ने दी है यही दिलो को खबर
पुकारता है हिमाला से अब्र[१०] उठ-उठ कर

तलब फुज़ूल है काटे की फूल के बदले
न लें बिहिश्त भी हम होमरूल के बदले

मांटेग्यू रिफ़ार्म

हसरत मोहानी

किस दर्जा फरेब[१] से है ममलू[२]
तजवीज़े - रिफार्मे - माटेग्यू[3]

मशहूरे - ज़माना[४] हैं मुसल्लम
दस्तूर[५] के हस्बे-ज़ेल[६] पहलू

कानून पे इख्तियारे - कामिल[७]
अम्माल पे ज़ोर,[८] जर पे काबू[९]

७. नासमझ, ८ जलन, ९ ईद का चाद, १०. बादल।

मांटेग्यू रिफ़ार्म

१ धोखा, २ उदास, ३ माटेग्यू सुधार का प्रस्ताव, ४ जगत-प्रसिद्ध, ५ विधान, ६ निम्न-लिखित, ७ सम्पूर्ण अधिकार, ८ बल, ९ अधिकार।

इनमे से न हो जब एक की भी
गुलहाए रिफार्म[१०] मे कही बू

कागज़ के समझिये फूल इनको
जिनमे नही नाम को भी खुशबू

मद्रास के डाक्टर का यह कौल
किस दर्जा है दिलपज़ीर-ओ-नेकू[११]

मकसूद[१२] है सिर्फ यह कि ता जंग[१३]
हम सब रहे सिर्फे-ई "तगापू"[१४]

अय हिन्दीए-सादा दिल,[१५] खबरदार!
हरगिज़ न चले तुझपे यह जादू

मज़ालिमे-पंजाब[१]

जफर अली खा

मैंने अमृतसर मे इक दिन अपने ख्वाजा से कहा
पेट के बल रेग लीजे बन्दापर्वर आप भी

एक तह मास की ता फरबही[२] पर जाये चढ
खाइये हर रोज़ सुब्हो-शाम हंटर आप भी

नाक से कुछ दिन ज़मी पर खीचते रहिये लकीर
फेरिये कूची सफेदी की बदन पर आप भी

बाद-मग़्रिब[३] जाइये मस्जिद को और इस जुर्म मे
पीठ पर खिचवाइये चाबुक से मसतर[४] आप भी

१० सुधार के फूल, ११ आकर्षक और नेक, १२ उद्देश्य, १३ युद्ध तक, १४ भाग-दौड में व्यस्त, १५ सीधे-सादे भारतीय।

मज़ालिमे-पंजाब

१. पंजाब के अत्याचार, २ मुटापा, ३ मग़्रिब के बाद (सूर्यास्त के बाद), ४ रेखाएं।

चलिये सोलह मील दिन मे हापते और कापते
पाव मे कुछ रोज़ डाले रहिये चक्कर आप भी

बसिये जाकर जेल मे और खाइये अरहर की दाल
मेहमा रहिये जरा सरकार के घर आप भी

फिर यह कहिये मारशल ला हश्र[५] तक कायम रहे
वरना होगे मुनकिरे-जनरल ओडायर[६] आप भी

शोलः-ए-फ़ानूसे-हिन्द[१]

जफर अली खां

जिन्दावाद अय इकिलाब ! अय शोलः-ए-फानूसे-हिन्द
गरमिया जिसकी फरोगे-मशअले-जा[२] हो गई

बस्तियो पर छा रही थी मौत की तारीकिया[३]
तूने सूर अपना जो फूका महशरिस्ता[४] हो गई

जिन बलाओ[५] से घिरे रहते थे सुब्हो-शाम हम
तेरे आते ही वह अगरेजो की दरबा हो गई

जितनी बूदे थी शहीदाने-वतन के खून की
कस्रे-आजादी[६] की आराइश[७] का सामा हो गई

मरहबा ! अय नौ गिरफ्ताराने-बदादे-फिरंग[८]
जिनकी जंजीरें खरोश अफजाए-जिन्दा[९] हो गई

जिन्दगी उनकी है, दिन उनका है, दुनिया उनकी है
जिनकी जाने कौम की इज्जत पे कुर्बा हो गई

५ प्रलय, ६ जनरल ओडायर से इकार करने वाले ।

शोल-ए-फानूसे-हिन्द

१ हिन्द के फानूस की ज्वाला, २ प्राणो की मशाल का प्रकाश, ३ अधकार, ४ प्रलय का मैदान, ५. विपत्ति, ६. स्वतन्त्रता का महल, ७ सजावट, ८. अग्रेजो की प्रशसा मे रत, ९ जेल का कोलाहल बढाने वाली ।

शिकवः-ए-सैयाद[1]

(हादसा-ए-जलियान वाला बाग से मुतास्सिर होकर)

त्रिलोकचन्द महरूम

मौसमे-गुल[2] मे जो रह रह के चमन याद आये
हमनवा[3]! लब[4] पे न क्यो शिकव-ए-सैयाद आये
फिर सूए-कुजे-कफस[5] नकहते-बरबाद[6] आये
आये फिर बूए गुबारे-दिले-नाशाद[7] आये

आतिशे - हसरते - गुलगश्त[8] सिवा[9] होती है
उजडे गुलशन की भी क्या खूब हवा होती है

यादे - अय्यामे - बहारा[10] कि चमन था हम थे
बागबा बरसरे - की[11] हमसे न था, बेगम थे
रू नुमा[12] शाम-ओ-सहर ऐश-ओ-तरब[13] पैहम[14] थे
अपने जलसे भी कभी गैरते-जश्ने-जम[15] थे

मस्ते - सहबाए - मसर्रत[16] थे कि आज़ाद थे हम
उडते फिरते थे हर इक सिम्त कि दिलशाद[17] थे हम

था मकी[18] मैं, मगर अय वाए मुकद्दर[19] सैयाद
दुश्मने - मेहर[20] जफा पेशा,[21] सितमगर सैयाद
आ गया दामे - बला[22] दोशपे[23] लेकर सैयाद
हो गया बहरे-चमन[24] फितन ए-महशर[25] सैयाद

नग़म ए - बुलबुले - शैदा[26] से फकत लाग न थी
कौन सा बर्ग[27] वह था जिसके लिए आग न थी

१ बहेलिया की शिकायत, २ बसत, ३ साथी, ४ होठ, ५ पिंजरे के कुज की तरफ, ६ गध जो नष्ट हो गयी, ७ दुखी दिल के मैल की गध, ८ फूलो की सैर की लालसा की आग, ६ अधिक, १० बसन्त के दिनो की याद, ११ द्वेष रखने वाला, १२ मार्गदर्शक, १३ भोग-विलास, १४ लगातार, १५ सम्राट जम के जश्न के समान, १६ खुशी की मदिरा मे मस्त, १७ खुश १८ रहनेवाला, १६ भाग्य, २० दया का शत्रु, २१ अत्याचारी, २२ विपत्तियो का जाल, २३ कधे पर, २४ उपवन मे, २५ प्रलय का फित्ना, २६. बुलबुल का गीत, २७ पत्ता।

खलिशे-खार[२८] जिन्हे ज़ीस्त[२९] से कर देती तग
उन पे खाली किये सफ्फाक[३०] ने भर भर के तफग[३१]
आज़मा डाले हज़ारो सितम-ओ-जौर[३२] के ढंग
जा सनानी[३३] मे ताम्मुल,[३४] न तवक्कुफ,[३५] न दरंग[३६]

मौत से बचके जो अन्दोहे कफस[३७] सहते है
अब वह यू नालाकशे-जौर-ओ-जफा[३८] रहते हैं

वदले तूने यह लिये हमसे भला किस दिन के
ज़िबह कर डाले हैं मुर्गाने-चमन[३९] गिन गिन के
आशियानो[४०] के उड़ाये हैं सितमगर ! तिनके
अब तिरी कैदे-मुसीबत मे मकी[४१] हैं जिनके[४२]

वेखताओ पे यह गुस्सा, यह इताब,[४३] अय ज़ालिम !
कभी देना है खुदा को भी जवाब अय ज़ालिम

सर्वे शमशाद को वेमेहर उखाड़ा तूने
जरे-गुल[४४] दामने-गुलज़ार से झाडा तूने
सब्जा बेगाना था, उसको भी लताडा तूने
नक़्शःए-हुस्ने-चमन[४५] आह ! बिगाड़ा तूने

दिल तिरे सीने मे था पासे-वफा से खाली
तेरे जज़्बात[४६] थे एहसासे-वफा[४७] से खाली

२८ काटो की चुभन, २९. जीवन, ३० निर्दयी, ३१ बदूक, ३२. अत्याचार, ३३ जान लेना, ३४ झिझक, ३५. विलम्ब, ३६ विलम्ब, ३७ पिंजरे का दुख, ३८ अत्याचार पर आर्त्तनाद करते हुए, ३९. उपवन के पक्षी, ४०. घोसला, ४१ निवासी, ४२. मिसरे मे कोई गलती है, ४३ क्रोध, ४४ फूल का सोना, ४५ उपवन के सौंदर्य का नक्शा, ४६ भावनाए, ४७ प्रेम-निर्वाह की भावना ।

जल उठा फूल से क्यो ? दागे-तपा[४८] था कोई ?
खार[४९] खटका तेरी नजरो मे सना[५०] था कोई ?
कज हुआ सर्व से क्यो ? गैर चमा था कोई ?
लपका साये पे अवस[५१] इसमे निहा[५२] था कोई ?

खफ्कां[५३] था यह तिरा जिसने डराया तुझको
साय ए - शाखे - गुल[५४] अफई[५५] नज़र आया तुझको

हाय वह सहने - चमन सुहवते - याराने - चमन[५६]
शाहिदे - बज़्मे - तरब[५७] वह गुले - खदाने - चमन[५८]
और वह लाला कि था शमए - शबिस्ताने - चमन[५९]
हो गया दाग दिले - खान ए - वीराने - चमन[६०]

ता सहर गाते थे जिस बाग मे गाने वाले
अब उठा करते है रातो को वही से नाले[६१]

हुक्म तेरा है कि फरियाद न होने पाये
कोई बुलबुल कही आज़ाद न होने पाये
दहर मे शुहरते - बेदाद[६२] न होने पाये
और मश्हूर यह रूदाद[६३] न होने पाये

"न तडपने की इजाज़त है न फरियाद की है
घुट के मर जाऊं यह मरज़ी मिरे सैयाद की है"

४८ तडपता हुआ दाग, ४९ काटा, ५० तीर की नोक, ५१ व्यर्थ, ५२ छुपा हुआ, ५३ दिल धडकने का रोग, ५४ फूल की डाली का साया, ५५ साप,. ५६ उपवन के साथियो की सगति, ५७ ऐश की महफिल की गवाह, ५८ मुस्कुराते हुए फूल, ५९ उपवन के शयनागार की शमा, ६० उपवन की वीरानी का दिल, ६१ आर्त्तनाद, ६२ अत्याचार की प्रसिद्धि, ६३ कहानी ।

जलियान वाला बाग़

डा० मुहम्मद इकबाल

हर जायरे-चमन[1] से यह कहती है खाके-बाग[2]
गाफिल न रह जहान मे गर्दूं[3] की चाल से
सीचा गया है खूने-शहीदां से इसका तुख्म[4]
तू आसुओं का बुख्ल[5] न कर इस निहाल[6] से

इंक़िलाबे-ज़माना

अकबर इलाहाबादी

जब यास[1] हुई तो आहो ने सीने से निकलना छोड़ दिया
अब खुश्क मिजाज[2] आखें भी हुई दिल ने भी मचलना छोड़ दिया

नावकफिगनी[3] से जालिम की जंगल मे है इक सन्नाटा सा
मुर्गाने-खुशइल्हा[4] हो गये चुप आहू[5] ने उछलना छोड़ दिया

१. उपवन में घूमने वाला, २ उपवन की धूल, ३. आकाश, ४ बीज, ५ कजूसी, ६ पौधा।

इंकिलाबे-जमाना

१. निराशा, २. शुष्क स्वभाव, ३. तीर छोड़ना, ४. मधुरकंठ पक्षी, ५. हिरन, मृग।

क्यो किब्र-ओ-गुरूर[६] इस दौर पे है क्यो दोस्त फलक[७] को समझा है
गर्दिश से यह अपनी बाज़ आया या रंग बदलना छोड दिया

बदली वह हवा गुज़रा वह समा वह राह नही वह लोग नही
तफरीह[८] कहा और सैर कुजा घर से भी निकलना छोड दिया

वह सोज़ो-गुदाज़[९] इस महफिल मे बाकी न रहा अधेर हुआ
परवानो ने जलना छोड दिया शमओ ने पिघलना छोड दिया

हर काम पे चन्द आखें निगरा[१०] हर मोड पे इक लैसेंस तलब
इस पार्क मे आखिर अकबर मैंने तो टहलना छोड दिया

क्या दीन[११] को कूव्वत[१२] दें यह जवा जब हौसला अफजा[१३] कोई नही
क्या होश सभालें यह लडके खुद उसने सभलना छोड़ दिया

अल्लाह की राह अब तक है खुली आसारो-निशा[१४] सब कायम हैं
अल्लाह के बन्दो ने लेकिन इस राह पे चलना छोड दिया

जब सर मे हवाए-ताअत[१५] थी सरसब्ज शजर[१६] उम्मीद का था
जब सरसरे-इसया[१७] चलने लगी इस पेड़ ने फलना छोड दिया

६ घमंड, ७ आकाश, ८ मनोरजन, ९ मीठी चुभन, १० नज़र रखने वाली, ११ मज़हब, धर्म, १२ शक्ति, १३ हिम्मत वढाने वाला, १४ निशान, चिह्न, १५ आज्ञा मानने की शक्ति, १६ वृक्ष, १७ पाप की आधी।

रद्दे-सहर[1]

मुहम्मद अली जौहर

ताकते-परवाज[2] ही जब खो चुके
फिर हुआ क्या गर हुए भी पर खुले

चाक कर सीने को पहलू चीर डाल
यू ही कुछ हाले-दिले-मुज्तर[3] खुले

लो वह आ पहुचा जुनू[4] का काफला
पाव जख्मी, खाक मुह पर सर खुले

अब तो कश्ती के मुआफिक[5] है हवा
नाखुदा[6] क्या देर है लगर खुले

यह नज़रबन्दी* तो निकली रद्दे-सहर
दीद-हाए-होश[7] अब जाकर खुले

फ़ैज़[8] से तेरे ही अय कैदे-फिरंग[9]
बाल-ओ-पर निकले कफस[10] के दर खुले

जीते जी तो कुछ न दिखलाया मगर
मर के जौहर आपके जौहर खुले

१. जादू का तोड, २ उडने की शक्ति, ३ व्याकुल दिल का हाल, ४ उन्माद, ५ अनुकूल, ६ नाविक, ७ चेतना की आखें, ८ उदारता, ९ अग्रेज की कैद, १०. पिंजरा।

* मौलाना जौहर की पहली नज़रबन्दी सन् १९१५ से १९१७

तस्वीरे-दर्द

डा० मुहम्मद इकवाल

१

नही मिन्नतकशे-तावे-शुनीदन[1] दास्ता मेरी
खमोशी गुफ्तुगू है वेजवानी है ज़वां मेरी

यह दस्तूरे-ज़वांवन्दी[2] है कैसा तेरी महफिल मे
यहा तो वात करने को तरस्ती है ज़वां मेरी

टपक ग्रय शमग्र ग्रासू वन के परवाने की ग्राखो से
सरापा[3] दर्द हूं हसरत भरी है दास्ता मेरी

इलाही फिर मजा क्या है यहा दुनिया मे रहने का
हयाते जाविदा[4] मेरी न मर्गे-नागहा[5] मेरी

मिरा रोना नही रोना है यह सारे गुलिस्तां का
वह गुल हूं मैं कि हर इक गुल की है गोया खिज़ां[6] मेरी

२

रुलाता है तिरा नजारा[7] ग्रय हिन्दोस्तां ! मुझको
कि इब्रतखेज़[8] है तेरा फसाना सव फसानो मे

निशाने-वर्गे-गुल[9] तक भी न छोडा वाग मे गुलची
तिरी किस्मत से रज़्म ग्राराइया[10] हैं वागवानो मे

छुपाकर ग्रास्ती मे विजलिया रक्खी हैं गर्दू[11] ने
ग्रनादिल[12] वाग के गाफिल[13] न वैठें ग्राशियानो[14] मे

१ सुनने की शक्ति की प्रार्थी, २ ज़वान वन्द करने का नियम, ३ साक्षात्, सर से पैर तक, ४. शाश्वत जीवन, ५ आकस्मिक मृत्यु, ६ पतझड, ७ दृश्य, ८. शिक्षाप्रद, ९ फूल की पत्ती का निशान, १० युद्ध, ११. आकाश, १२ वुलवुलें, १३ वेहोश, निश्चिन्त १४. घोसला ।

वतन की फिक्र कर नादां ! मुसीबत आने वाली है
तिरी बरबादियो के मश्वरे हैं आसमानो मे

जरा देख इसको जो कुछ हो रहा है होने वाला है
धरा क्या है भला अहदे-कुहन[15] की दास्तानो मे

न समझोगे तो मिट जाओगे अय हिन्दोस्ता वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानो मे

३

हुवैदा[16] आज अपने जख्मे-पिन्हा[17] करके छोडूगा
लहू रो रो के महफिल को गुलिस्ता करके छोडूंगा

जलाना है मुझे हर शम्अे-दिल[18] को सोजे-पिन्हा[19] से
तिरी तारीक[20] रातो को चरागा करके छोडूगा

मगर गुचो की सूरत हो दिले-दर्द आशना[21] पैदा
चमन मे मुश्ते-खाक[22] अपनी परेशा करके छोडूगा

पिरोना एक ही तस्बीह[23] मे है इन बिखरे दानो को
जो मुश्किल है तो इस मुश्किल को आसा करके छोडूगा

४

तिरा नज्जारा ही अय बुलहवस[24] ! मकसद नही इसका
बनाया है किसी ने कुछ समझकर चश्मे-आदम[25] को

शजर[26] है फिरका आराई,[27] तअस्सुब है समर[28] इसका
यह वह फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को

फिरा करते नही मजरूहे-उल्फत[29] फिक्रे-दरमा[30] मे
यह जख्मी आप कर लेते हैं पैदा अपने मरहम को

१५ अतीत, १६ प्रकट, १७ छुपे हुए घाव, १८ दिल का दिया, १९ गुप्त जलन, २०. अधेरी, २१ दर्द समझने वाला दिल, २२ मुट्ठी-भर धूल, २३. माला, २४. लोलुप, २५ इसान की आख, २६. वृक्ष, २७ साम्प्रदायिकता, २८ फल, २९ प्रेम के घायल, ३०. इलाज की चिन्ता ।

५

वयावाने-मुहव्वत[31] दश्ते-गुर्वत[32] भी वतन भी है
यह वीराना क़फस[33] भी, आशियाना[34] भी, चमन भी है

मुहव्वत ही वह मंजिल है कि मंजिल भी है सहरा भी
जरस[35] भी, कारवा भी, राहवर भी, राहजन[36] भी है

मरज़[37] कहते हैं सब इसको यह है लेकिन मरज़ ऐसा
छुपा इसमे इलाजे-गर्दिशे-चर्खे-कुहन[38] भी है

उजाडा है तमीज़े-मिल्लत-ओ-आई[39] ने कौमो को
मिरे अहले-वतन के दिल मे कुछ फिक्रे-वतन भी है ?

सुकूत आमेज़[40] तूले-दास्ताने-दर्द[41] है वरना
ज़वा भी है हमारे मुह मे और तावे-सुखन[42] भी है

३१ प्रेम का जगल, ३२. विदेश, ३३ पिजरा, ३४. घोसला, ३५ घटा (जो कारवा के आगे वजाया जाता है), ३६ चोर, ३७. वीमारी, ३८ वूढे आकाश के चक्र का इलाज, ३९ धर्म और समाज का अन्तर, ४० शान, ४१ दर्द की कहानी का विस्तार, ४२. वोलने की शक्ति।

अंग्रेज़ी ज़िहन[1] की तेज़ी

अहमक फफुदवी

किस तरह बपा हो हंगामे,[2] आपस मे हो क्योकर खूरेजी[3]
है खत्म इन्ही स्कीमो मे अंग्रेजी जिहन की सब तेज़ी

यह कत्ल-ओ-खू यह जंग-ओ-जदल, यह जौर-ओ-सितम[4] यह बुग्ज़ो-हसद[5]
बाकी ही रहेगे मुल्क मे सब, बाकी है अगर राज अंग्रेज़ी

गुलज़ारे-वतन इक बंजर है या खाक है अब या सरसर[6] है
क्या फूल यहा और कैसे फल, क्या शादाबी[7] क्या ज़रखेज़ी[8]

हरसू है बपा हंगामःए-खू[9] हर सिम्त है ढेर इक लाशो का
ओडायर - ओ - डायर के दम से, कायम है निशाने - चंगेज़ी

शुद्धी है कही, तबलीग कही, नाकूस[10] कही, तकबीर[11] कही
यह बीच न हो तो मुश्किल है, दम भर के लिए राज अंग्रेजी

१ बुद्धि, २ उपद्रव, ३ रक्तपात, ४ अत्याचार, ५ ईर्ष्या, द्वेष, ६ आंधी, ७ लहलहा-हट, सुसिक्त, ८ उपजाऊपन, ९ खूनी उपद्रव, १० शख, ११ अज़ान।

अहदे-फ़िरंग[1]

अहमक फफूदवी

हमनशी इसकी तफासील[2] मे है तूल[3] वहुत
वर्कतें[4] अपने मे रखता है जो कुछ अहदे-फिरंग

खैर से एक सदी भी नही गुजरी अव तक
मिल गया खाक मे सव मुल्क के इकवाल[5] का रग

अव न दौलत के वह चश्मे[6] हैं न सतवत[7] के निशां
हर तरफ कहत[8] है हर सिम्त है इफलास[9] से जग

अव न मर्दानगी-ओ-अज्म[10] न वह जोश-ओ-खरोश
न वह हिम्मत न शुजाअत[11] न वह जुरअत[12] न उमंग

न इरादो मे वलन्दी[13] न खयालात[14] वसी[15]
सग-ओ-रोवाह[16] हैं अव, थे जो कभी शेर-ओ-पलंग

न वह पहली सी मुहव्वत न वह अगला सा खुलूस[17]
न विरहमन मे वह अन्दाज़, न वह शेख मे ढंग

क्या रवादारी-ओ-हमदर्दी-ओ-इखलास[18] का ज़िक्र
देखिये जिसको नज़र आता है गोया वह निहग[19]

ईद आती है तो लाती है कयामत[20] सर पर
होली आती है तो वरसाती खिश्त[21] और संग[22]

१. अंग्रेजी शासनकाल, २ विवरण, ३ विस्तार, ४ विभूति, ५ प्रताप, ६ स्रोत, ७. दवदवा, ८ अकाल, ९. दरिद्रता, १० इरादा, ११ वहादुरी, १२. साहस, १३ ऊंचाई, १४ विचार, १५ उच्च, १६. कुत्ते और लोमड़ी, १७ निष्ठा, १८ निष्ठा, १९ मगरमच्छ, २० प्रलय, २१ ईंट, २२. पत्थर।

न दसहरे मे वह रौनक न मुहर्रम मे वह शान
बर्छिया मीनो मे पिन्हा[23] हैं निगाहो मे खदग[24]

इक हगामः-ए-महशर[25] है बपा चार तरफ
गर्म है मारकः-ए-दश्नः-ओ-शमशीर-ओ-तुफंग[26]

हैं जडे फितना-ओ-तफरीक[27] की इतनी मज़बूत
कोई खोदे तो वह पाताल मे दे जाके सुरग

वादिए-सुलह[28] का तै होना है इक अमरे-मुहाल[29]
अहले तदबीर[30] के भी पांव है इस राह मे लग[31]

मिट गये आश्ती-ओ-अमन-ओ-अमा[32] के नक्शे
खा गया शीशः-ए-दिल को हसद-ओ-बुग्ज[33] का ज़ग

हर तरफ फैली है बेगैरती-ओ-वेशर्मी
फिर रही है नये फैशन की दुल्हन नग-घडग

पाई ढील इस कदर आज़ादी और खुद्दारी[34] ने
कट गई गैरत-ओ-नामूस-ओ-हमीयत[35] की पतग

अब हैं बेबाकी-ओ-उरियानी[36] के मानी नेचर
दौरे-तहज़ीब[37] ने बिल्कुल ही वदल दी फरहग[38]

अव न आखो मे हया है न दिलो मे एहसास
डाल दी है दिल-ओ-दीदा ने अजब रग मे भग

इक तरफ फक्र-ओ-फलाकत[39] के हैं अशदर[40] सर पर
इक तरफ खोले हैं मुह जौरे-हुकूमत[41] के नहंग[42]

२३. छुपी हुई, २४ बाण, तीर, २५ प्रलय का कोलाहल, २६ बन्दूक, २७ अदावत, लडाई, २८ समझौते की वादी, २९ कठिन काम, ३० उपाय ढूढने वाले, ३१ लगडे, ३२ मित्रता और शाति, ३३ ईर्ष्या और द्वेष, ३४ स्वाभिमान, ३५ लज्जा, नाम और इज्जत, ३६. नग्नता, ३७ सभ्यता का युग, ३८ बुद्धि, ३९ भूख और दरिद्रता, ४० अजगर, ४१. हुकूमत के ज़ुल्म, ४२ मगरमच्छ।

आज दुनिया मे नही कोई वजुज़ यास[४३] अपना
हमदम-ओ-हमनफस-ओ-हमकदम-ओ-हमआहग[४४]

या यह हालत थी कि दुनिया मे कोई मुल्क न था
मनअत-ओ-हिर्फत-ओ-ईजाद[४५] मे अपना पासंग

या यह आलम है कि जापान अगर रहम न खाये
अपनी मैयत को कफन के भी है मिलने मे दरग[४६]

अब वहा नौहःए-मातम[४७] है कि आवाजे-फुगा[४८]
गोशपरवर[४९] थे जहा साज़-ओ-दफ-ओ-नग्म.ए-चंग[५०]

फाकामस्ती ने कुछ इस दर्जा किया नशा हिरन
न रहा ताक[५१] मे वह कैफ न मै मे वह तरग

खा गया वहरे-तफक्कुर[५२] मे अदव भी गोता
फाका-ओ-गुरसगी[५३] ने किया वह काफिया तग

या यह नक्शा था कि रुए-ज़मी[५४] पर ज़िन्हार[५५]
न तो अपना सा जरी[५६] और न अपना सा दवंग[५७]

या यह सूरत है कि अगियार[५८] तो हैं फिर अगियार
आप ही अपनी निगाहो मे हम मूजिबे-नग[५९]

वढती ही जा रही हैं अवतरिया[६०] रोज़ व रोज़
चर्ख की तफरिका साज़ी[६१] के हैं क्या क्या नैरग[६२]

इस कदर पस्ती-ओ-अदवार[६३] के होते हुए भी
मुखलिसी के नज़र आते नही हमको कोई ढग

४३ निराशा, ४४ एक स्वर, ४५ उद्योग, कला और अन्वेपण, ४६ विलम्व, देर, ४७. शोक का गीत, ४८ फ़रियाद की आवाज़, ४९. कानो को मुख देने वाले, ५०. चग का गीत, ५१ अगूर, ५२. चिन्ताओ का मागर, ५३ फ़ाका और भूख, ५४ धरती पर, ५५ हरगिज़, ५६ साहसी, ५७ निर्भय, ५८ गैर, दुश्मन, ५९ लज्जा का कारण, ६० अस्तव्यस्तता, ६१ साम्प्रदायिकता, ६२ इन्द्रजाल, ६३ गिरावट और दुर्दशा।

फिर भी एहसास नही है हमे इसका अफसोस
याद रक्खो कि यह जुमले हैं नकूशे-अरजग[६४]

सर खुजाने की भी इक दिन न इजाजत होगी
हैं मुसल्लत[६५] जो सरो पर यही बरकाते-फिरग[६६]

६४. तस्वीरो की किताब के नक्श, ६५. छाया हुआ, ६६. अग्रेज़ी शासन की बरकतें ।

(दूसरा भाग)

तहरीके-ख़िलाफ़त और तर्के-मवालात

दावते-अमल

जफर अली खा

अगर तुमको हक[1] से है कुछ लगाव
तो बातिल[2] के आगे न गर्दन झुकाओ
हुकूमत को तुमने लिया आज़मा
अब अपने मुकद्दर[3] को भी आज़माओ
हो तुम जिसके जर्रे[4] वह है खाके-हिन्द
छुपे है जो इसमे वह जौहर दिखाओ
फलक[5] पर मह-ओ-महर[6] पड जायें मान्द
ज़मी पर इस अन्दाज से जगमगाओ
हिमाला भी आ जाये गर राह मे
तो ठुकराके आगे से उसको हटाओ
करे तुमसे गगा भी गर बेरुखी
पलटकर उलट दो तुम उसका बहाव
ज़माने मे रौशन करो नामे - हिन्द
हर इकलीम[7] मे इसका सिक्का चलाओ
हर इक मुल्क का हाथ मे लेके दिल
हर इक कौम से अपनी इज़्ज़त कराओ
पसीना गिरे हिन्दुओ का जहां
वहा तुम मुसलमानो का खू वहाओ
ज़मी हो जब इस खून से लाला़ज़ार[8]
तो उस पर बिसाते-उखूत[9] बिछाओ
पुराना हुआ दफ्तरी इक्तिदार[10]
समझ लो अब इसका भी है चलचलावो
किसी रोज़ खुद गर्क[11] हो जायेगी
बहुत बह चुकी है यह कागज की नाव

१ सत्य, खुदा, २ झूठ, ३ भाग्य, ४ कण, ५. आकाश, ६ चाद-सूरज, ७ महाद्वीप, ८ उपवन, ९ बराबरी की बिसात, १० शासन, आधिपत्य, ११ डूब जायेगी।

एलाने-जंग

जफर अली खां

गांधी ने आज जंग का एलान कर दिया
बातिल[१] से हक[२] को दस्त-ओ-गरीबान[३] कर दिया

सर रख दिया रज़ाए-ख़ुदा[४] की हरीम[५] पर
ख़जर को फिर हवालःए-शैतान कर दिया

हिन्दोस्ता मे इक नयी रूह फूक कर
आजादि-ए-हयात[६] का सामान कर दिया

दुश्मन मे और दोस्त मे होने लगी तमीज़[७]
कितना बडा यह मुल्क पे एहसान कर दिया

देकर वतन को तर्के-मुवालात[८] का सबक[९]
मिल्लत[१०] की मुश्किलात[११] को आसान कर दिया

शेख़ और बिरहमन मे बढाया वह इत्तिहाद[१२]
गोया उन्हे दो कालिब-ओ-यकजान कर दिया

औराके-जब्र-ओ-जौर-ओ-जफा[१३] को बिखेर के
शीराज़ा सल्तनत[१४] का परेशान कर दिया

जुल्म - ओ - सितम की नाव डुबोने के वास्ते
कतरे को आखो आखो मे तूफान कर दिया

तन मन किया निसार खिलाफत के नाम पर
सब कुछ ख़ुदा के नाम पर कुर्बान कर दिया

पर्वरदिगार ने कि वह है आदमी शनास[१५]
गाधी को भी यह मरतबा[१६] पहचान कर दिया

१ झूठ, २ सच, ३ लडा दिया, ४ ईश्वरेच्छा, ५ काबे की चारदीवारी, ६ जीवन की आज़ादी, ७ अन्तर, फ़र्क़, ८ असहयोग आन्दोलन, ९ पाठ, १० समाज, मज़हब, ११ कठिनाइया, १२ एकता, १३ अत्याचार और जुल्म के पन्ने, १४ शासन, राज्य १५ मानव और पारखी, १६ दर्जा, रुतबा, स्थान ।

इंक़िलाब

जफर अली खा

गर हमारी तरह तुम भी गैर के महकूम[1] हो
फिर जरा तुमको भी कद्रे-आफियत[2] मालूम हो

जुल्म को इंसाफ कह लेना तो आसा है मगर
कायल इस मतिक[3] के हम जब हो कि तुम मजलूम[4] हो

वक्त आ पहुचा कि बरपा हो नया इक इकिलाव
और यह नज्मे-जिन्दगी[5] बारे-दिगर[6] मजूम[7] हो

वक्त आ पहुचा कि हो तकसीम[8] कौमो की नयी
इक नयी दुनिया हो और इसका नया मकसूम[9] हो

वक्त आ पहुचा कि हो नाबूद[10] तहज़ीबे-जदीद[11]
हस्त-ओ-बूद[12] इसका वुजूदे-नुक्तःए-मौहूम[13] हो

वक्त आ पहुचा कि मेहनत का मिले बन्दो को अज्र[14]
साअत[15] आ पहुची कि जो खादिम है वो मख्दूम[16] हो

१ दास, २ कुशलता, ३ तर्क, ४ पीडित, ५ जीवन का विधान, ६ औरो का बोझ, ७. कविता-बद्ध, ८. बटवारा, ९ भाग्य, १० नष्ट ११. आधुनिक सभ्यता, १२ नफा-नुक़सान, १३. मिटते हुए बिन्दु का अस्तित्व, १४. इनाम, सिला, १५ घडी, १६ मालिक ।

जौरे-ग़ुलामाने वक़्त[1]

हसरत मोहानी

रस्मे-जफा[2] कामियाव देखिये कव तक रहे
हुव्वे-वतन[3] मस्ते-ख्वाव[4] देखिये कव तक रहे

दिल पे रहा मुद्दतो गलव ए-यास-ओ-हिरास[5]
कवज़.-ए-हज्म-ओ-हिजाव[6] देखिये कव तक रहे

ता व कुजा[7] हो दराज़[8] सिलसिलाहाए-फरेव[9]
ज़व्त[10] की लोगो मे ताव[11] देखिये कव तक रहे

पर्दःए - इस्लाह[12] मे कोशिशे तखरीव[13] का
खल्के-खुदा[14] पर अज़ाव[15] देखिये कव तक रहे

नाम से कानून के होते है क्या-क्या सितम
जब्र व जेरे-नकाव[16] देखिये कव तक रहे

दौलते - हिन्दोस्ता कवजःए - अगियार[17] मे
वेग्रदद-ओ-वेहिसाव[18] देखिये कव तक रहे

है तो कुछ उखडा हुआ वज्मे-हरीफा[19] का रग
अव यह शराव-ओ-कवाव देखिये तव तक रहे

हसरते-आज़ाद पर जौरे-गुलामाने-वक्त[20]
अज़रहे-वुग्ज़ - ओ - इताव[21] देखिये कव तक रहे

१ वक्त के गुलामो का अत्याचार, २. धोका देने की रस्म, ३ देशभक्ति, ४ नीदग्रस्त, ५ 'निराशा का अधिकार, ६ दूरदर्शिता ओर शर्म का कब्ज़ा, ७. कव तक, ८. लम्वे, ९ धोके के सिलसिले, १० सहनशीलता, ११ शक्ति, १२ सुधार का पर्दा, १३ विनाश, १४ अल्लाह के वन्दे, १५ विपत्तिया, १६ नकाव के अन्दर, १७. ग़ैरो के कब्ज़े मे, १८ अनगिनत, १९ दुश्मन की वज्म, २० वक्त के गुलामो का अत्याचार, २१ द्वेष ओर क्रोध ।

दावते-अमल

मीर गुलाम भीक नैरंग

तुझे अय बुलबुले रगी नवा सूझी है गाने की
मगर मुझको पडी है फिक्र तेरे आशियाने की

यह तेरे आड़े तिरछे चार तिनके शाखे-गुलबन पर
कभी से बिजलिया हैं फ़िक्र मे इनके जलाने की

यह गुलची, बागबा, सैयाद, यह तेरे करम फरमा[1]
लिये बैठे है दिल मे हसरतें तेरे मिटाने की

सभाले अपने पर पुर्जे तिरे सब हमसफीरो[2] ने
हर इक ने फिक्र की है अपने अपने आशियाने की

मगर इक तू ही गाफिल है, मआले-कारे-गुलशन[3] से
तिरे हिस्से मे आईं गफलतें सारे जमाने की

पुराने-बर्ग-ओ-गुल[4] सब छाटे जायेंगे खयाबा[5] से
लगी है बागबा को धुन नया गुलशन बनाने की

नये पौदे, नये बूटे, नये गुलबन, नये तख्ते
नयी शर्तें बनेगी अब चमन मे आने जाने की

कफस भी दाम[6] भी मिकराज[7] भी बिल्कुल नये होगे
नयी तर्कीब होगी तुझको फन्दे मे फसाने की

१. दयालु, मेहरबान, २. मित्र, सखा, ३ गुलशन के काम का नतीजा, ४ फूल और पत्ते, ५. चमन, ६ जाल, ७. कैंची।

अगर गुलशन मे रहना है बदल ले तू भी ढंग अपना
ममाअत[८] अब नही होगी किसी हीले बहाने की

न बायस्ती तिरा दरबाग साज़े-आशिया कर्दन[९]
वो करदी ज़िन्दगी बायद बहुक्मे-बागवां कर्दन[१०]

समझ ले हमनफस जो कुछ कहा मैंने इशारो मे
सुनाई है तुझे तेरी कहानी इस्तआरो[११] मे

नयी हालत है दुनिया की, निराला रगे-हस्ती है
नये गुल खिल रहे हैं गुलशनो मे लालाज़ारो मे

जहा कल खार-ओ-खस[१२] थे वह जगह अब सहने-बुस्ता[१३] है
मुबद्दल[१४] हो गया है सहने-बुस्ता खारजारो[१५] मे

मगर तेरी वही आदत, वही हालत वही धुन है
न वह महफिल न वह साकी, मगर तू है खुमारो[१६] मे

हर इक किश्ते-अमल[१७] शादाब[१८] है फैज़े-तमद्दुन[१९] से
चमन तेरा ही कुम्हलाया गया है इन बहारो मे

न समझे अब भी जो कोई वह समझे अपनी खुशफहमी
ज़माना कह चुका सब कुछ, किनायो मे इशारो मे,

नये हालात को देख और सभल गर ज़िन्दा रहना है
नही तो खुद को ज़िन्दा गाड़ना होगा हज़ारो मे

गज़ब है आज तेरी गफलतें रुस्वाए-आलम[२०] हो
समझते थे तुझे हमचश्म कल तक होशियारो मे

खुदा ही हाफिज़-ओ-नासिर[२१] है तेरी कौमे-बेकस[२२] का
शुमार[२३] इसका है मुद्दत से हवादिस[२४] के शिकारो मे

८ सुनवाई, ६–१ . इस बाग़ मे तुझे आशियाना नही बनाना चाहिये, जहा ज़िन्दगी बागवान के हुक्म पर गुज़ारनी पड़े, ११ रूपक, लक्षण, १२ घास-फूस और काटे, १३. बाग़ का आगन, १४ परिवर्तित, १५ काटो का बाग़, १६ मदिरालस मे रत, १७. अमल की खेती, १८ हरी-भरी, तृप्त, १६ सभ्यता की दया, २० ससार में बदनाम, २१ सरक्षक, सहायक, २२ दुर्बल राष्ट्र, २३ गिनती, २४. दुर्घटनाए ।

काम करना है यही

मुहम्मद अली जौहर

खाक जीना है अगर मौत से डरना है यही
हवसे-जीस्त[1] हो इस दर्जा तो मरना है यही

कुलजुमे-इश्क[2] मे है नफा-ओ-सलामत[3] दोनो
इसमे डूबे भी तो क्या पार उतरना है यही

और किस वजआ[4] की जोया[5] हैं उरुसाने-बिहिश्त[6]
है कफन सुर्ख, शहीदो का सवरना है यही

हद है पस्ती[7] की कि पस्ती को बलन्दी[8] जाना
अब भी एहसास हो इसका तो उभरना है यही

हो न मायूस[9] कि है फतह[10] की तकरीबे-शिकस्त[11]
कल्बे-मोमिन[12] का मिरी जान निखरना है यही

नक्दे-जा[13] नज्र करो सोचते क्यो हो 'जौहर'
काम करने का यही है, तुम्हे करना है यही

१ जीवन का लोभ, २ प्रेम का दरिया, ३ लाभ और कुशल, ४. वेशभूषा, ५. जिज्ञासु, ६ स्वर्ग का दुल्हनें, ७ पतन, गिरावट ८ ऊंचाई, ९ निराश, १०. विजय, ११. हार का समारोह, १२ ईमान वाले का दिल, १३ जीवन ।

चश्मे-ख़ूनाबा बार[1]

मुहम्मद ग्रली जौहर

सीना हमारा फिगार[2] देखिये कब तक रहे
चश्म[3] यह खूनाबा बार[4] देखिये कब तक रहे

हक[5] की कुमक[6] एक दिन ग्रा ही रहेगी वले
गर्द[7] मे पिन्हा[8] सवार देखिये कब तक रहे

यू तो है हर सू ग्रया[9] ग्रामदे-फस्ले-खिजा[10]
जौर-ग्रो-जफा[11] की बहार देखिये कब तक रहे

रौनके-देहली पे रश्क था कभी जन्नत को भी
यू ही यह उजडा दयार देखिये कब तक रहे

जोर[12] का पहले ही दिन नश्शा हरन हो गया
जोम[13] का बाकी खुमार[14] देखिये कब तक रहे

१ खून के ग्रासू बहाने वाली ग्राख, २ घायल, ३ ग्राख, ४ खून बहाने वाली, ५. सत्य, ६ मदद, सहायता, ७ धून मे, ८ छुपी हुई, ९ प्रकट, १० पतझड का ग्रागमन, ११ ग्रत्याचार, १२ जुल्म, १३ घमड, १४. मदिरालस ।

आशियां बरबाद

मुहम्मद अली जौहर

हैं यह अन्दाज़ ज़माने के
और ही ढग हैं सताने के

घर छुटा यू कि छोडने वाले
थे न हम उसके आस्ताने[1] के

एक इक करके सबके सब तिनके
किये बरबाद आशियाने के

कुछ दिनो घूमता मुकद्दर था
साथ साथ अपने आब-ओ-दाने[2] के

देखिये अब यह गर्दिशे-तकदीर[3]
कही आने के हैं न जाने के

पूछते क्या हो बद-ओ-बाश[4] का हाल
हम है बाशिन्दे[5] जेलखाने के

१ चौखट, २ अन्न-जल, ३ भाग्यचक्र, ४ रहन-सहन, ५ निवासी।

ख़ूगरे-सितम[१]

मुहम्मद अली जौहर

न उड जायें कही कैदी कफस[२] के
जरा पर बाधना सैयाद[३] कस के

निशाने-आशिया[४] क्या ज़िस चमन मे
लगे हो ढेर हर सू खार-ओ-खस[५] के

मिले इक खुम[६] तो मैखाने से साकी
कि हम छूटे हुए है दो बरस के

गरा[७] हो अब्र तो, शायद सैरे-गुल[८] भी
कुछ ऐसे हो गये खूगर[९] कफस के

मिली है कैद आज़ादी की खातिर
न पड जायें कही दोनो के चस्के

चमन तो हमने खुद छोड़ा है गुलची[१०]
गिले[११] फिर क्या करे कैद-ओ-कफस[१२] के

१ अत्याचार का आदी, २ पिंजरा, ३ बहेलिया, ४ घोसले का निशान, ५ घास और काटें, ६ प्याला, ७ महगा, कठिन, ८ चमन की सैर, ९ आदी, १० फूल चुनने वाला, ११. शिकायत, १२ कैद और पिंजरा।

बेदारिए-हिन्द[1]

लाला लालचन्द फलक

मुबारक हिन्द की बेदार[2] किस्मत होती जाती है
नुमाया[3] हिन्दियो मे अब उखूवत[4] होती जाती है

जगाया है हमे शबनम[5] ने छीटे मुह पे दे दे कर
दिलो से अब हमारे दूर गफलत[6] होती जाती है

शुआए[7] आन पहुची हिन्द मे महरे-तरक्की[8] की
रफूचक्कर हमारे घर से जुल्मत[9] होती जाती है

समझ लो मुश्किलें सब दूर अपनी होने वाली है
कि माइल[10] कौम पर अपनी तबीअत होती जाती है

उठा गफलत का पर्दा अपने दिल से बाद मुद्दत[11] के
नुमायां मुल्क की अब हम में उल्फत[12] होती जाती है

तरक्की पर है इन रोज़ो 'फलक' परचार देसी का
पराये देश की चीज़ो से नफरत होती जाती है

१. भारत की जागृति, २ जाग्रत, ३ प्रकट, ४. भाईचारा, ५ ओस, ६ बेहोशी, ७ किरणें, ८. उन्नति का सूर्य, ९. अधकार, १० आकृष्ट, ११ लम्बा समय, १२ प्रेम ।

वक़्ते-वेदारी[1]

मुहम्मद हुसैन महवी लखनवी

हमारी वेज़वानी[2] हिम्मत अफजाए-सितम[3] ठहरी
कि चुप रहने पे भी मिलता है अब इल्ज़ामे-गद्दारी[4]
शहीदो का तडपना लोटना देखा नही जाता
मगर ममनूअ[5] है इस दौर मे इज़्हारे-गमख्वारी[6]
हुकूमत हम पे हो सकती है दिल पर हो नही सकती
कोई रोके तो क्योकर चश्मे-दिल[7] की गिरया-ओ-जारी[8]
मिटायें अपनी हस्ती को कहा तक कोई घुट घुट कर
नही है सब्र की अब ताव[9] अय आईने-खुद्दारी[10]
कहा तक कोई खामोशी से दुनिया के सितम[11] झेले
कहा तक कोई देखे जाये अपनी जिल्लत-ओ-ख्वारी[12]
यह जीना भी कोई जीना है अय जोयाए-असाइश[13]
बस अब ख्वावे-गरा[14] से चौंक है यह वक्ते-वेदारी
तिरी वरवादिया देखी नही जाती है अब हमसे
खुदा के वास्ते उठ और हो आज़ाद इस गम से

१ जागने का समय, २. खामोशी, ३ अत्याचार को बढावा देना, ४ गद्दारी का आरोप, ५. निषिद्ध ६ सान्त्वना का इज़हार, ७ दिल की आख, ८. रोना-पीटना, ९. शक्ति, १० आत्म-सम्मान या विधान, ११ अत्याचार, १२. अपमान, १३ आराम के इच्छुक, १४ घोर निद्रा।

शुक्रियः-ए-यूरोप

आगा हश्र कश्मीरी

अय ज़मीने-यूरप, अय मिकराज़े-पैराहन नवाज़[1]
अय हरीफ़े-एशिया,[2] अय शोलः-ए-ख़िर्मन नवाज[3]

चारासाजी[4] तेरी बुनियाद-अफगने-काशाना[5] है
तेरे दम से आज दुनिया एक मातमख़ाना[6] है

अश्के-हसरतजा[7] से चश्मे-हुर्रियत[8] नमनाक[9] है
खूंचका[10] रूदादे-अकवामे-गरीबा चाक[11] है

सिर्फ तसनीफे-सितम[12] है फल्सफादानी[13] तिरी
आदमीयत सोज़[14] है तहज़ीबे-हैवानी[15] तिरी

अज्मते-देरीना[16] नाला[17] है तिरे बरताव से
धुल गया हुस्ने-कदामत[18] खून के छिड़काव से

जल्वागाहे-शौकते-मश्रिक[19] को सूना कर दिया
जन्नते-दुनिया को दोजख़ का नमूना कर दिया

१ वस्त्रो को मान देने वाली कैंची (व्यग), २ एशिया का प्रतिद्वन्द्वी, ३ खलियान की सेवा करने वाली ज्वाला, ४ उपचार, इलाज, ५ घर की बुनियाद उखाड फेंकने वाली, ६ शोक-गृह, ७. निराशा के अश्रु, ८ स्वतन्त्रता की आख, ९ भीगी हुई, १० खून मे डूबी हुई, ११ कटे गरीबान वाली कौमो की कहानी, १२ अत्याचार लेखन, १३ दार्शनिकता, १४. मानवता को जनाने वाली, १५. पाशविक सभ्यता, १६ प्राचीन महानता, १७ नाखुश, असतुष्ट, १८ रूढिवाद का सौंदर्य, १९. पूर्व की शान की जल्वागाह ।

उठ रहा है शोरे-ग़म[20] ख़ाकस्तरे-पामाल[21] में
कह रहा है एशिया रोकर ज़बाने-हाल से

बर मज़ारे-मा ग़रीबां ने चराग़े ने गुले[22]
ने परे परवाना सोज़द ने सदाए-बुलबुले

गर्चे[23] इक दुनिया का दिल तेरी तरफ़ से ख़ून है
उम्मते-ख़ैरुलबरा[24] लेकिन तिरी ममनून[25] है

चोट खाकर भर गया दिल लज़्ज़ते-ईसार[26] से
जल्वे जागे शीश-ए-शिकस्ता[27] की झंकार से

यक ब यक ख़ूने-तने-बेजां में हैजां[28] आ गया
क़तरा दरिया बन गया, दरिया में तूफ़ां आ गया

चौंक उठी रूहे उख़ूवत,[29] एक दिल-ख़स्ता[30] हुए
पत्तियां गुल बन गईं, गुल मिलके गुलदस्ता हुए

हो गईं बिखरी हुई ईंटें बहम[31] तामीर[32] की
मिल गईं हर इक कड़ी टूटी हुई ज़ंजीर की

अज करम बपज़ीर यारब जोशे-बेअन्दाज़ारा
ता क़यामत ज़िन्दादार ई ज़िन्दगी-ए ताज़ा रा[33]

२० शोक का कोलाहल, २१ बरबाद लोगों की धूल, २२ ग़रीब की क़ब्र पर न फूल हैं न चराग़, न जले हुए परवाने के पर हैं और न बुलबुल की सदा, २३ यद्यपि, २४ हज़रत मुहम्मद की उम्मत, २५ आभारी, २६ त्याग का आनन्द, २७ टूटा हुआ जाम, २८ जोश, २९ भ्रातृत्व का जोश, ३० दुखे हुए दिलवाले, ३१ एक, ३२ निर्माण, ३३ अय ख़ुदा! हमारे जोशो-ख़रोश को प्रेम की निगाह से देखना। क़यामत तक हमारी ज़िन्दगी को ताज़ा रखना।

बन जाये निशेमन[1] तो

इकबाल अहमद सुहेल

माना कि कफस[2] मे है वहुत चैन मुयस्सर[3]
ने वर्कें-चमन[4] सोज न सैयादे-सितमगर[5]
है ज़ीस्त[6] गुलामी की मगर मौत से बदतर
कावू मे रहे अपने पर-ओ-वाल तो क्या डर

बन जाये निशेमन तो कोई आग लगा दे

गायेंगे हम आज़ादि-ए-गुलशन का तराना
बेकार है अय वर्कें-बला[7] हमको डराना
काफी है बहुत वुसअते-सहराए-जमाना[8]
हम और कहीं ढूंढ़ निकालेंगे ठिकाना

बन जाये निशेमन तो कोई आग लगा दे

जा इस वतने-ख्वाजा-ओ-जयपाल[9] पे सदके[10]
दिल इस चमने हशमत-ओ-इजलाल[11] पे सदके
सर मरहदे-आज़ादी-ओ-इकवाल[12] पे सदके
कर देंगे इसे अपने पर-ओ-बाल पे सदके

बन जाये निशेमन तो कोई आग लगा दे

१ घोसला, २ पिंजरा, ३ प्राप्त, ४ चमन को जला देने वाली बिजली, ५ अत्याचारी सैयाद, ६ जीवन, ७ बिजली, ८ समय के मैदान का विस्तार, ६ जयपाल और ख्वाजा का का देश, १० न्यौछावर, ११ तेज और प्रताप का चमन, १२ आजादी और प्रताप का वध-स्थल ।

माना कि निशेमन से है बिजली की अदावत[13]
माना कि मिरी सई[14] का अंजाम[15] है हसरत[16]
फिर भी मिरी कोशिश नही जाने की अकारत[17]
बाजू तो है इस मश्क[18] से आ जायेगी ताकत

बन जाये निशेमन तो कोई आग लगा दे

है मारिका[19] हरचंद 'सुहेल' अहले-जफा[20] से
जावाज़े-वतन[21] डरते है कब अहले-जफा से
हटने को नही मज़िले-तस्लीम-ओ-रजा[22] से
जो कुछ भी गुजरनी है गुज़र जाये बला से

बन जाये निशेमन तो कोई आग लगा दे

१३ दुश्मनी, १४ कोशिश, १५ नतीजा, १६ निराशा, १७, व्यर्थ, १८ अभ्यास, १९ युद्ध, मुकाबला, २० बेवफ़ा लोग, २१ वतन पर जान देने वाले, २२ स्वीकृति की मज़िल।

नाल:-ए-अन्दलीब[1]

महमूद इसराईली

ज़ख्मे-दिल[2] को अब नमकपाशी[3] की लज्जत[4] चाहिये
फिक्रे-मरहम[5] हो चुकी, फिक्रे-तबीबा[6] हो चुकी

जाद-ए-मक्सद पे चलता है तो उठ हिम्मत दिखा
दस्ते-हसरत[8] मल चुका और चश्मे-गिरियां[9] हो चुकी

वहशत आबादे-जुनू[10] भी दीद.ए-बीना[11] से देख
फिक्रे-दामा[12] हो चुकी, फिक्रे-गरीबा[13] हो चुकी

अब मिसाले-गुल[14] जरा तू भी तो हो सीनाफिगार[15]
अय फ़िदाए-रंगो-बू[16] सैरे-गुलिस्ता हो चुकी

इंकिलाब आया, नये सैयारे[17] अब गर्दिश मे हैं
अपनी आंखें खोल, वह रफ्तारे-दौरा[18] हो चुकी

अब तू अपनी दास्ताने-सुब्हे-महशर[19] भी सुना
खत्म वह गैरो की इशरत की शबिस्ता[20] हो चुकी

खूने-दिल से आबियारी[21] कर जो दिल मे दर्द है
मर्दे-मैदाने-शुजाअत[22] बन अगर तू मर्द है

गैरते-अफलाक[23] फिर यह गुलसितां हो जायेगा
इसका जर्रा जर्रा[24] महरे-जौ-फशा[25] हो जायेगा

१. बुलबुल का आर्तनाद, २. दिल का जख्म, ३ नमक छिडकना, ४. स्वाद, ५. मरहम की चिन्ता, ६ चिकित्सको की चिन्ता, ७ उद्देश्य का मार्ग, ८ निराशा के हाथ, ९. अश्रुभरी आखें, १० उन्माद की व्याकुल बस्ती, ११ समझदार की आखें, १२. दामन की चिन्ता, १३. गरेबान की चिन्ता, १४ फूल की तरह, १५ फटी हुई छाती, १६. रग और सुगंध पर मरने वाले, १७. नक्षत्र, १८ समय की गति, १९. महशर के प्रभात की कहानी, २०. विलास का शयनागार, २१. सिंचाई, २२ बहादुरी के मैदान का मर्द, २३ आकाश को शरमाने वाला, २४. कण-कण, २५. प्रकाशमान सूर्य ।

मुर्दा दिल फिर आतिशे-गुल[२६] से हर
माइले-ज़ौके-अमल[२८] पीर-ओ-जवा[२९]

ज़ुल्मते-दिल[३०] नूरे-हक[३१] से फिर फना[३
दौरे-बातिल[३३] चश्मे-आलम[३४] से निहा[३

हुर्रियत[३६] इंसान की मट्टी मे डा
जज्वःए-हुब्बे-वतन[३७] घर घर अया[३८

यह सितम[३९] के तीर तर्कश मे पड़े
फिर तवाना[४०] दस्तगीरे-नातवां[४१]

दौरे-गेती[४२] से अया है औज-ओ-पस्ती[४
हर कमाले-रा ज़वाल हर ज़वाले

मायःदारे-ऐश[४६] होगे आज जो कु
साहबे-इकबाल[४८] होगे आज जो उस

अब हुकूमत के लिए उनको बुल
आज जो वर्गश्ता-किस्मत[५०] गैर की

वक़्ते-बेदारी[५२] है अय हिन्दोस्ता
देख नेमत-हा-ए-गूनागू[५३] तिरी कि

हुस्ने-मशा[५४] तू भी चुन ले अपने दा
सैकडो गुलहाए मकसद[५५] गुलशने-कु

महर[५६] पुरतनवीर[५७] बनकर चर्खे-मश्रिक
तेरी ज़ुल्मत[५८] से हज़ारो हस्तिया

२६ फूल का आग, २७ गर्मी, २८ अमल की ओर आकृष्ट, २
का अंधेरा, ३१ सत्य का प्रकाश, ३२. नष्ट, ३३. झूठ का
३५. विलीन, ओझल, ३६. आज़ादी, ३७. देशभक्ति की भाव
४० शक्तिशाली, ४१ कमज़ोर, ४२ धरती का चक्र, ४३ उत्थ

तेरी हस्ती गर्दिशे-दौरां[६०] से मिट सकती नही
कुछ अनासिर[६१] गैरफानी[६२] भी तिरी फितरत[६३] मे है

दस्ते-कुदरत[६४] कारफर्मा[६५] है तिरी तदबीर[६६] मे
मुन्हमिक[६७] हो आने वाले दौर की तासीर[६८] मे

पैग़ामे-अमल[१]

साग़र निज़ामी

उठ अय मश्रिक[२] और अपने हक्के-फितरत[३] की हिफाजत[४] कर
जो आज़ादी तिरा मकसूम[५] है उसकी हिमायत[६] कर

फ़ज़ा पर गौर कर हर चीज को हासिल है आज़ादी
बलन्द[७] अपनी नजर, अपनी तबीअत, अपनी फितरत[८] कर

हिला दे जौर - ओ - इस्तबदाद[९] की सगीन बुनियादें
गुलामी के बुतो को गुर्ज़े-हुर्रियत[१०] से गारत[११] कर

अगर बेदार बख्ती[१२] की सनद लेनी है दुनिया मे
तसाहुल[१३] को मिटा और इंसिदादे-ख्वाबे-गफ्लत[१४] कर

गुलामी मुस्तकिल[१५] लानत[१६] है और तौहीने-इंसां[१७] है
गुलामी से रिहा हो और आज़ादो मे शिरकत कर

६०. समय का चक्र, ६१ तत्त्व, ६२. नश्वर, ६३. प्रकृति, ६४. प्रकृति का हाथ, ६५. लगा हुआ, ६६. उपाय, ६७. डूबा हुआ, ६८. निर्माण।

पैग़ामे-अमल

१. अमल का सन्देश, २. पूर्व, ३ प्राकृतिक अधिकार, ४ रक्षा, ५. भाग्य, ६ समर्थक, ७ ऊंची, ८ प्रकृति, स्वभाव, ९. अत्याचार, १०. आजादी का हथियार, ११. कष्ट, १२. भाग्य जागना, १३. आलस्य, १४ बेहोशी की नींद का उन्मूलन, १५. स्थायी, १६. धिक्कार, १७. मानव का अपमान।

तिरा मज़हब भी देता है तुझे तालीमे -- आज़ादी
अगर दावाए-मज़हब है तो मज़हब की इताअत[१८] कर

तिरी कुर्बानियां ज़िन्हार[१९] ज़ाया[२०] जा नही सकती
मगर पैदा दिले-बेकैफ[२१] मे कैफे-शहादत[२२] कर

जो मुस्तक़्विल[२३] मे फ़िक्रे-एहतिमामे-सुर्ख़रूई[२४] है
तो अपने खून से रंगी बयाज़े-मुल्क-ओ-मिल्लत[२५] कर

क़दम हैं, चन्द बाकी हदे-मंज़िल तक पहुंचने में
अभी कुछ और कोशिश कर, अभी कुछ और हिम्मत कर

करीब ऐवाने-आज़ादी है क्यो मायूस[२६] होता है
तबस्सुम[२७] कामियाबी का मुझे महसूस[२८] होता है

तरानःए-जिहाद[१]

एहसान दानिश

मुजाहिदीने-सफशिकन,[२] बढे चलो, बढे चलो

रविश रविश, चमन चमन, बढे चलो, बढ़े चलो
जबल जबल,[३] दिमन दिमन[४], बढे चलो, बढे चलो
बिकुश बिकुश,[५] बिज़न बिज़न,[६] बढे चलो, बढे चलो

मुजाहिदीने - सफशिकन, बढे चलो, बढे चलो

१८ आज्ञाकारिता, १६ कदापि, हरगिज, २०. व्यर्थ, २१. नीरस, २२ शहादत का नशा, २३. भविष्य, २४ सफलता के आयोजन की चिन्ता, २५ देश और समाज की बयाज, २६ निराश, २७ मुस्कान, २८. अनुभव।

तरान.ए-जिहाद

१. धर्मयुद्ध का गीत, २. सफ़ तोड़ने वाले, ३ पहाड, ४. घूरा, ५. मारो-मारो, ६. मारो-मारो।

ज़मीन रश्के-आस्मा[७] तुम्हारी अंजुमन[८] से है
रगे-जहां मे खू रवा[९] तुम्हारे बाकपन से है
रहे तुम्हारा बाकपन, बढे चलो, बढे चलो
मुजाहिदीने - सफशिकन, बढे चलो, बढे चलो

कदम उठाओ इस तरह ज़मी का दिल दहल उठे
वह नाराहाए-गर्म हो कि रगे-चर्ख़[१०] जल उठे
यह नाज़िशे-कमाले-फन,[११] बढे चलो, बढे चलो
मुजाहिदीने - सफशिकन, बढ़े चलो, बढे चलो

डरा जो मौत से नही वह शादकामे-ज़िन्दगी[१२]
डरो न मौत से कि मौत है दवामे-ज़िन्दगी[१३]
है दिल की ज़िन्दगी लगन, बढे चलो, बढे चलो
मुजाहिदीने सफशिकन, बढे चलो, बढे चलो

फ़ज़ा खिलाफ है तो हो, शिकोह[१४] से अलम[१५] उठे
है धडकनो की जो रविश उसी तरह कदम उठे
खुशी खुशी, मगन मगन, बढे चलो, बढ़े चलो
मुजाहिदीने - सफशिकन, बढ़े चलो, बढे चलो

जो राह मे पहाड़ हो तो बेदरेग[१६] उखाड़ दो
उठाओ इस तरह निशां फलक के दिल मे गाड दो
है खेल दार और रसन,[१७] बढे चलो, बढे चलो
मुजाहिदीने - सफ़शिकन, बढे चलो, बढे चलो

वफा का अहद[१८] बांध कर वफा से खेलते हुए
लहू मे तैरते हुए, फज़ा से खेलते हुए
दिलावराने - तेगज़न,[१९] बढे चलो, बढे चलो
मुजाहिदीने - सफशिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

बलन्द बर्छिया करो वह रहमते-खुदा[२०] झुकी
वह ज़िन्दगी का दर खुला वह सर के बल कज़ा[२१] झुकी
सियासख्वाने-जुलमनन,[२२] वढ़े चलो, बढ़े चलो
मुजाहिदीने - सफशिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

७. आस्मां जिस पर रश्क करे, ८ गोष्ठी, ९. प्रवाहित, १०. आकाश का रग, ११ कला का कमाल, १२ खुश, १३ जीवन की नित्यता, १४ शान, १५ झंडा, १६ निर्भय, बेझिझक, १७ फासी का फन्दा, १८ प्रेम-निर्वाह का युग, १९ तलवार चलाने वाले बहादुरो, २०. खुदा की रहमत, २१. मौत, २२ खुदा के एहसान की तारीफ़ करने वालो ।

पांचवां अध्याय

(सन् १९२१ से १९३५ तक)

(पहला भाग)

सिविल नाफ़रमानी की तहरीक और नया क़ानून

मुक़ाबमिते मज्हूल[1]

त्रिलोकचन्द महरूम

यह नही है शाने-वफ़ा[2] सनम कि करें बजोश[3] मुक़ाबला
तिरी सख़्तियों[4] से करेंगे हम बख़ुदा[5] ख़मोश मुक़ाबला

तिरे पायमाले-सितम[6] हैं गो[7] मगर उनमे ताब-ओ-तवां[8] नही
शब-ओ-रोज़[9] करते हैं मौत से तिरे सरफ़रोश[10] मुक़ाबला

तू जो ख़ूं[11] हुआ है तो क्या हुआ कि दमे-अख़ीर[12] तलक किया
गमे-बेहिसाब[13] से तूने अय दिले-सब्रकोश[14] मुक़ाबला

जो अदा है तेग़ बकफ़[15] है वह, जो सुख़न[16] है ख़ंजरे-जांसिता[17]
तिरी फ़ौजे-नाज़[18] से ता कुजा[19], करें चश्म-ओ-गोश[20] मुक़ाबला

गयी जान हसरते-दीद[21] मे, मगर उफ़ न आयी ज़बान पर
'तिलक' इसको कहते हैं ज़ब्ते-ग़म[22] यह है बेख़रोश[23] मुक़ाबला

१. अज्ञात विरोध, २ वफा की शान, ३. जोश के साथ, ४ अत्याचार, ५ खुदा की कसम ६. अत्याचार से पीड़ित, ७ यद्यपि, ८. शक्ति, ९ दिन-रात, १०. बहादुर, ११ कत्ल, १२. अन्त समय तक, १३ असीम दुख, १४ सब्र करने वाला दिल, १५ तलवार हाथ में लिये हुए, १६ कथन, बोल, १७ जान लेने वाला खंजर, १८ नाज की फौज, गर्व की सेना १९. कब तक, २०. आखें और कान, २१. दर्शनाभिलाषा, २२. शोक सहन करना, २३ शान्त, बिना शोरगुल ।

स्वदेशी तहरीक

त्रिलोकचन्द महरूम

वतन के दर्दे-निहा[१] की दवा स्वदेशी है
गरीब कौम की हाजत रवा[२] स्वदेशी है

तमाम दहर[३] की रूहे-रवा[४] है यह तहरीक[५]
शरीके हुस्ने-अमल[६] जा ब जा स्वदेशी है

करारे-खातिरे--आशुफता[७] है फजा[८] इसकी
निशाने - मज़िले • सिदको-सफा[९] स्वदेशी है

वतन से जिनको महब्बत नही वह क्या जानें
कि चीज़ कौन विदेशी है क्या स्वदेशी है

इसी के साये मे पाता है परवरिश[१०] इकबाल[११]
मिसाले - सायः-ए - बाले - हुमा[१२] स्वदेशी है

इसी ने खाक को सोना बना दिया अक्सर
जहां मे गर है कोई कीमिया[१३] स्वदेशी है

फना[१४] के हाथ मे है जाने-नातवाने-वतन[१५]
बका[१६] जो चाहो तो राज़े-बका[१७] स्वदेशी है

हो अपने मुल्क की चीजो से क्यों हमे नफरत
हर एक कौम का जब मुद्दआ[१८] स्वदेशी है

१ छुपा हुमा दर्द, २. जरूरत पूरी करने वाली, ३. दुनिया, ४. प्राणवायु, ५. आन्दोल
६. व्यावहारिकता, ७. बेकरार दिल का करार, ८ वातावरण, ९ पवित्रता और सत्य
मंजिल का निशान, १० पालन-पोषण, ११. प्रताप, १२ हुमा (एक काल्पनिक पक्षी)
बाल के साये की तरह (कहते हैं कि यह पक्षी जिसके सर पर बैठ जाये, वह बादश
बन जाता है), १३ रसायन, १४. मृत्यु, १५ दुर्बल देश के प्राण, १६. अनश्वर
१७ अनश्वरता का रहस्य, १८. उद्देश्य ।

स्वराज

जफरअली खां

है कल की अभी बात कि ये हिन्द के सरताज
देते थे तुम्हें आके सलातीने-जमन[1] बाज

या रंग ज़माने ने यहाँ बदला है कि तुम को
दुनिया की हर एक कौम समझती है ज़लील[2] आज

दामाने-निगह[3] जिसकी फजा[4] के लिए था तंग
वह बाग हुआ देखते ही देखते ताराज[5]

जब तक रहे तुम दस्तनिगर[6] अपने खुदा के
होने न दिया उसने तुम्हे गैर का मुहताज[7]

जो हो गये उसके वह हुआ उनका निगहवा[8]
उसकी है जिन्हे शर्म, है उनकी भी उसे लाज

मिट जाओ मगर हक[9] को न मिटते हुए देखो
सीखो यह रविश[10] गर तुम्हे लेना ही है स्वराज

१ दुनिया के सम्राट, २. अपमानित, ३ निगाह का दामन, ४ वातावरण, ५, बरबाद, ६. दया के पात्र, ७. आश्रित, ८ रक्षक, ९ सच्चाई, १०. ढग, आचरण।

सायमन कमीशन

ज़फ़रअली खां

सायमन साहब के इस्तकबाल[1] का वक्त आ गया
जाग अय लाहौर अपने फर्ज़[2] को पहचान कर

उनके रस्ते मे कई आखें बिछायी जा चुकी
तू भी अय खूने-जिगर[3] छिडकाव का सामान कर

चैन खुद लेगे न लेने देंगे उनको एक दम
घर से अय पजावियो निकलो यह दिल मे ठान कर

रेल से उतरे तो काली झडिया हो सामने
जिनके अन्दर तुम खड़े हो सीना अपना तान कर

तुझको अय पंजाब गर कुछ भी है पासे-आबरू[4]
अपनी इस इज्जत पर अपनी जान को कुर्बान कर

तालिबुलइल्मो के खूने-गर्म[5] के खौलाव से
जोशे-आज़ादी का बरपा आतिशीं[6] तूफान कर

नौजवानो को पिला जामे-शराबे-ज़िन्दगी[7]
मुश्किलें रिन्दाने-दुर्द आशाम[8] की आसान कर

हर कदम पर हो कमीशन का मुकम्मल बाईकाट
तूल-ओ-अर्जे-मुल्क[9] मे डके की चोट एलान कर

१. स्वागत, २. धर्म, कर्तव्य, ३ जिगर का खून, ४. इज्जत का खयाल, ५. गर्म रक्त, ६. आग का, ७ जीवन-मदिरा का जाम, ८. तलछट पीने वाले रिन्द, ९ देश भर में।

सायमन कमीशन

जोश मलीहाबादी

सहर होते ही मख्मूरे-शबाना[1]
कहा यू चश्मे-साकी[2] ने फसाना
कि अय ज़िन्दानिए-दैर-ओ-हरम[3] चौंक
ज़मी से ता फलक[4] है आस्ताना
तुझे रस्मो से क्या हो रस्तगारी[5]
तिरा ईमान तो है काफिराना[6]
तिरा सैदे-ज़ुबूने[7] बज्मे-हस्ती[8]
वराए-लामका[9] है आशियाना
तुझे क़तरे[10] का है अपने पे धोका
तू इक दरिया है ना पैदाकराना[11]
कहां तक यह सुकूते-बेनवाई[12]
कहा तक यह जमूदे-आमियाना[13]
तुझे है मौत का डर, मौत क्या है
हकीकी[14] ज़िन्दगानी का बहाना
हमेशा से है ज़द मे बिजलियो की
शिकस्ता खातरी[15] का आशियाना[16]
कही है धूप से नादान बदतर[17]
गुलामी की घटा का शामियाना
जहा मे कुछ न रह जायेगा बाकी
मगर हा एक मर्दो का फसाना
जगाया है अगर सीने मे दिल को
तो बन तीरे-हवादिस[18] का निशाना

१ रात के खुमार से पूर्ण, २ साकी की आख, ३. मदिर और काबे के कैदी, ४ आकाश, ५ मुक्ति, ६ काफिर जैसा विधर्मी, ७ निकृष्ट शिकार, ८. दुनिया, ९. शून्य से परे, १० बूद, ११ जिसका किनारा नही है, १२ मौन स्थिरता, १३ आम स्थिरता, १४ वास्तविक, १५ टूटा हुआ दिल, १६. घोसला, १७. निकृष्ट, १८ घटनाओ के तीर।

लगी है घात में मुद्दत से तेरी
फिरंगी की निगाहे-जादुग्राना[१९]
ग्रदू[२०] तेरी गिरफ्तारी की खातिर
मुहैया[२१] कर रहा है आब-ओ-दाना[२२]
अगर जीना है आजादी से तुझको
सुना दुश्मन को बढ कर यह तराना
"बिरौ इनदाम बर मुर्गे-दिगर नेह
कि उंकारा बलन्द अस्त आशियाना"[२३]

सर मैलकम हेली के मल्फ़ूज़ात[१]

जफरग्रली खां

जनाबे-हज़रते-हेली को यह गम खाये जाता है
न कर दे सर नगू[२] मश्रिक़[३] कहीं मग्रिब[४] के परचम[५] को
छिड़ी आजादिए-हिन्दोस्ता की बहस कौंसिल मे
तो जाहिर यू किया हज़रत ने अपने इस छुपे गम को
हमारी भी वही गायत[६] है जो मक़सद[७] तुम्हारा है
खुदा वह दिन करे गदू[८] के तारे बनके तुम चमको
अलमबरदार[९] हैं अंग्रेज इस तहज़ीब[१०] के जिसने
दिया है दरसे-आजादी[११] तमाम अकवामे-आलम[१२] को

१९ जादू कर देने वाली, २० दुश्मन २१ उपलब्ध, २२ अन्नजल, २३ यह जाल किसी दूसरी चिड़िया के लिए बिछा, उका (अका) का घोसला बहुत ऊंची डाल पर है।

सर मैलकम हेली के मल्फ़ूज़ात

१. प्रवचन, उपदेश, २ नीचा, ३ पूर्व, ४. पश्चिम, ५ झंडा, ६. इच्छा, ७. उद्देश्य, ८. आकाश, ९. प्रतिनिधि, १० सभ्यता, ११. आजादी का मंत्र, १२ संसार के राष्ट्र।

हुकूमत आज तुमको सौंप कर हो जायें हम रुख्सत
मगर अंदेशा[13] इसमे है फकत इस बात का हमको
हमारे बाद कौन इस हाथ की शोखी को रोकेगा
जो बेकल है तो लाकर डाल दे गगा मे ज़मजम[14] को
मुसलमा हिन्दुओ को एक हमले मे मिटा देंगे
उड़ा ले जायेगा यह आफताब[15] आते ही शबनम[16] को
किसी ने काश यह तकरीर[17] सुनकर कह दिया होता
कि दे सकते नही हो तुम अब इनफिकरो[18] से दम हम को
मुसलमां भोले-भाले और हिन्दू सीधे-सादे हो
नही अहमक[19] मगर ऐसे कि समझें अंगबी[20] सम[21] को
निपटते आये हैं आपस मे और अब भी निपट लेंगे
अगर तुम बनके सालिस[22] बीच मे इनके न आ धमको

फूल बरसाओ

त्रिलोकचन्द महरूम

जिन सरफराज़ो[1] की रूहे आज हैं अफलाक[2] पर
मौत खुद हैरा थी जिनकी जुरअते-बेबाक[3] पर
नक्श[4] जिनके नाम है अब तक दिले-गमनाक[5] पर
रहमते-एज़द[6] हो दायम[7] उनकी जाने-पाक पर
फूल बरसाओ शहीदाने-वतन[8] की खाक पर

१३ डर १४. एक कुए का नाम, १५ सूर्य, १६ ओस, १७ भाषण, १८. वाक्य, १६. मूर्ख, २० शहद, मधु, २१ विष, ज़हर, २२ मध्यस्थ, पच।

फूल बरसाओ

१ उन्नत मस्तक, २ आकाश, ३ निस्सकोच साहस, ४ अंकित, ५. शोकग्रस्त दिल ६. खुदा की रहमत। ७. निरतर, लगातार, नित्य, ८. देश पर शहीद होने वाले।

फूल बरसाओ कि फूलो मे है खुशबूए-वफा[9]
थी सिरिश्ते-पाक[10] उनकी आशिके-जूए-वफा[11]
मौत पर उनकी, गये जो रूए-दर-रूए-वफा[12]
क्यो न हों अहले-वतन[13] के अश्के-खू[14] जूए-वफा[15]
फूल बरसाओ शहीदाने-वतन की खाक पर

थे वह फ़ख्रे-आदमीयत[16] इफ्तिखारे-जिन्दगी[17]
थे वह इसा तुर्र.ए-ताजे-वकारे-जिन्दगी[18]
उनके दम से था चमन यह खारज़ारे-ज़िन्दगी[19]
था नफस[20] उनका नसीमे-खुशगवारे-जिन्दगी[21]
फूल बरसाओ शहीदाने-वतन की खाक पर

चश्मे-ज़ाहिरबी[22] समझती है कि बस वह मर गये
दर हकीकत[23] मौत को फानी[24] वह साबित[25] कर गये
जो वतन के वास्ते कटवा के अपने सर गये
खू से अपने रग तस्वीरे-वफा[26] मे भर गये
फूल बरसाओ शहीदाने-वफा की खाक पर

देख लेना खूने-नाहक[27] रग इक दिन लायेगा
खुद गरज[28] ज़ालिम किये पर अपने खुद पछतायेगा
राह पर दौरे-ज़मा[29] आखिर कभी तो आयेगा
आस्मा इस खाक की तकदीर को चमकायेगा
फूल बरसाओ शहीदाने-वतन की खाक पर

९ वफा की सुगध, १० पवित्र प्रकृति, स्वभाव, ११. वफा खोजने वाला प्रेमी, १२ वफा की आखो मे आखें डाल कर, १३ देशवासी, १४. खून के आसू, १५ वफा की नदी, १६ मानवता का गर्व, १७ जीवन का गर्व, सम्मान, १८. जीवन का प्रताप और मुकुट, १९ काटों की वादी २०. सांस, २१ जीवन की सुहानी सुगध, २२ प्रत्यक्ष देखने वाली आख, २३ वास्तव में, २४ नश्वर, २५ सिद्ध, २६ प्रेम-निर्वाह का चित्र, २७. अनुचित वध, २८ स्वार्थी, २९ समय का चक्र ।

हिन्दी नौजवानों से

त्रिलोकचंद महरूम

मुहब्बत को मसर्रत[1] को सुरूरे-शादमानी[2] को
तनउम[3] को तमव्वुल[4] को तऐयुश[5] को जवानी को
वजाहत[6] को अमारत[7] को वकारे-खादानी[8] को
तन आसानी[9] की ख्वाहिश[10] को नशाते-जिंदगानी[11] को
वतन पर कर दिया कुर्बा[12] जवाहरलाल नेहरू ने

जवाहरलाल नेहरू भी जवा है और जवा तू भी
जवा है और उम्मीदे-मादरे-हिन्दोस्ता[13] तू भी
इसी उजडे चमन का एक है सर्वे-रवा[14] तू भी
जवानाने-वतन[15] के साथ है वक्फे-खिजा[16] तू भी
कि सारे बाग को झुलसा दिया है विस भरी बू ने

तू मुस्लिम है कि हिन्दू है गरज[17] इससे नही मुझको
मुहब्बत है वतन से तुझको इतना है यकी[18] मुझको
तिरी हालत न हो हसरतफजा यासआफरी[19] मुझको
अगर मिल जाये कुछ इसका जवाबे-दिलनशी[20] मुझको
किया है क्या वतन के वास्ते अय नौजवा तूने

वतन जिसका हो पावंदे-अलम[21] वह शादमा[22] क्यों हो
कफस[23] हो आशिया[24] जिसका वह बुलबुल नग्माख्वा[25] क्यो हो

१ खुशी, २ उल्लास का नशा, ३ सोता हुआ, ४ मालदार होना, ५ भोग-विलास, ६ प्रतिष्ठा, ७ धनाढ्यता, ८ खादानी प्रतिष्ठा, ९ आराम, १० इच्छा, ११ जीवन-सुख, १२ न्योछावर, १३ भारत माता की आशा, १४ प्रवाहित सरो का पेड, १५ देश के युवक, १६ पतझड के लिए समर्पित, १७ मतलव, १८ विश्वास, १९ निराशाप्रद, २० दिल मे बैठ जाने वाला जवाब। २१ गम का पाबद, २२ खुश, २३ पिंजरा, २४ घोसला, २५ गीत गाना।

गुलामो का वतन तेरा वतन अय नौजवा क्यो हो
जहा आज़ाद है, हिन्दोस्ता नगे-जहा[२६] क्यो हो
मिटाने की इसे क्यो ठान ली चर्खे जफा जू[२७] ने

हमीयत[२८] का तकाज़ा है कि हो कुछ इंसिदाद[२९] इसका
खुद आराई[३०] तन आसानी[३१] से उक्दा[३२] वा[३३] नही होगा
स्वदेशी, सादगी, पाकीज़गी[३४] पर अमल पैरा हो
जवांमर्दी वतन की हो रही है आज क्यो रुस्वा[३५]
इसे रुस्वा किया आराइशे रुख्सार-ओ-गेसू[३६] ने

बारदोली

रविश सिद्दीकी

अज़्मते-जल्वागहे[१] सिदको-सफा[२] क्या कहिये
शिद्दते - जज्ब ए - तस्लीम - ओ - रज़ा[३] क्या कहिये
दूर तक सिलसिलःए - अहले - वफा[४] क्या कहिये
मज़िले - काफिल[५] - ए - मकसदे - हस्ती[६] है तू
सरफरोशो की बसायी हुई बस्ती है तू

नौनिहालों[७] को शुजाअत[८] का धनी देख लिया
जोश पर वलवलःए - कोहकनी[९] देख लिया
मरहबा[१०] जज्ब ए-हुब्बुल वतनी[११] देख लिया

२६ ससार मे बदनाम, २७ निर्दयी आकाश, २८ आत्मसम्मान, २९ निराकरण, अवरोध, ३०. शृगार, ३१ आराम, ३२ ग्रथि, ३३ खुलना, ३४. पवित्रता, ३५ बदनाम, ३६. कपोल और लटो की सजावट।

बारदोली

१ दर्शनस्थल की महानता, २ सत्य और पवित्रता, ३ स्वीकृति की भावना की तीव्रता, ४. वफ़ादारो का सिलसिला, ५ काफिले की मज़िल, ६ अस्तित्व का उपदेश, ७. नये पौधे, ८ बहादुरी, ९ कोहकन जैसा जोश, १० वाह, धन्य, ११ देशभक्ति की भावना।

नातवां[१२] ताक़ते-अगियार[१३] से टकराते हैं
तेरे बच्चे रसन - ओ - दार[१४] से टकराते हैं

वह बहादुर, यह फिदाई,[१५] यह रज़ाकार[१६] किसान
यह ऊलिलअज़्म,[१७] यह जांबाज़,[१८] यह खुद्दार[१९] किसान
तेरी इज़्ज़त के निगहबान-ओ-निगहदार[२०] किसान
लडखडाते हैं न आलाम[२१] से घबराते हैं
मुस्कुराते हुए बढते ही चले जाते हैं

ज़ुल्म-ओ-बेदाद[२२] की शिद्दत[२३] है मगर फिर खुश हैं
जोशे-तूफाने-शकावत[२४] है मगर फिर खुश हैं
हर मुसीबत पे मुसीबत है मगर फिर खुश हैं
जानते हैं कि भलाई से भला होता है
सब्र वालो का मददगार खुदा होता है

घर जो लुट जाये तो अबरू[२५] पे शिकन क्यों आये
कैद में लब पे कोई तल्ख सुखन[२६] क्यो आये
न रुकें अश्क[२७] तो फिर यादे-वतन क्यो आये
यही शेवा[२८] है सदाकत[२९] के परस्तारो[३०] का
शुक्र[३१] हर हाल मे मज़हब है रज़ाकारो[३२] का

कुछ नही है तो न हो हा दिले-बेदार[३३] तो है
हाथ खाली है तो क्या सब्र[३४] की तलवार तो है
हुस्ने-किरदार[३५] से खम[३६] ज़ुल्म की दीवार तो है
हैं निहत्ते मगर उम्मीदे-ज़फर[३७] रखते हैं
यह जरी अदम तशद्दुद[३८] की सिपर[३९] रखते हैं

१२. दुर्बल, १३ दुश्मन, १४. फासी, १५. कुरबान होने वाले, १६ स्वयसेवक, १७ पक्का इरादा रखने वाले, १८. बहादुर, १९ स्वाभिमानी, २०. पहरेदार, २१ दुख, २२ अत्याचार, २३ तीव्रता, २४ निर्दयता के तूफान का जोश, २५ भौं, भृकुटि, २६ बात, कलाम, २७ आसू, २८ आचरण, २९ सच्चाई, ३० पूजा करने वाले, ३१ सतोष, ३२. स्वयसेवक, ३३ जागता हुआ दिल, ३४ सतोष, ढाढ़स, ३५ चरित्र का सौंदर्य, ३६ झुकी हुई, ३७ सफलता की आशा, ३८ अहिंसा, ३९. ढाल ।

हौसला पस्त हो मगरूर[४०] सितमगारो[४१] का
बोलबाला हो सदाकत[४२] के परस्तारो[४३] का
इब्रतअंगेज़[४४] हो अंजाम[४५] जफाकारो[४६] का
हक तआला[४७] तुझे इस जग मे मसूर[४८] करे
अर्ज़े-गुजरात[४९] से गैरों के कदम दूर करे

आसारे-इंक़िलाब[१]

जोश मलीहाबादी

कसम इस दिल की, चसका है जिसे सहबापरस्ती[२] का
यह दिल पहचानता है जो मिज़ाज अशियाए-हस्ती[३] का

कसम इन तेज़ किरनो की कि हगामे-कदहनौशी[४]
सुना करते हैं जो रातो को बहर-ओ-बर[५] की सरगोशी[६]

कसम उस रूह की, खू[७] है जिसे फितरतपरस्ती[८] की
गिना करती है रातो को जो ज़र्बे[९] कल्बे-हस्ती[१०] की

कसम उस ज़ौक[११] की हावी[१२] है जो आसारे-कुदरत[१३] पर
ज़मीरे-कायनात[१४] आईना है जिसकी लताफत[१५] पर

कसम उस हिस की जो पहचान के तेवर हवाओं के
सुनाती है खबर तूफान की तूफान से पहले

४० घमडी, ४१ अत्याचारी, ४२ सच, ४३ पुजारी, ४४ शिक्षाप्रद, ४५ नतीजा, ४६ बेवफा, ४७ खुदा, ४८ विजेता, ४९ गुजरात की धरती।

आसारे-इंकिलाब

१ क्रांति के लक्षण २ मदिरा-पान, ३ वुजूद, ४. मदिरापान के हगामे, ५ धरती और समुद्र, ६ कानाफूसी, ७ आदत, ८ प्रकृति की पूजा, ९. चोटें, १० वुजूद का दिल, ११ अभिलाषा, रुचि, १२ छाया हुआ, १३ प्रकृति के आसार, १४. ब्रह्माड का अत करण, १५ कोमलता।

कसम उस नूर की कश्ती जो इन आखो की खेता है
जो नक्शे-पा[16] के अंदर अज्मे-रहरव[17] देख लेता है

कसम उस फिक्र[18] की, सौगद उस तखइले-मोहकम[19] की
जो सुनती है सदाएं जुम्बिशे-मिज़गाने-आलम[20] की

कसम उस रूह की जो अर्श[21] को रिफअत[22] सिखाती है
कि रातो को मिरे कानो मे यह आवाज़ आती है

"उठो वह सुबह का गुर्फा[23] खुला ज़ंजीरे-शब[24] टूटी
वह देखो पौ फटी, गुचे खिले, पहली किरन फूटी

उठो, चौको, बढो मुह हाथ धो, आखो को मल डालो
हवाए - इंकिलाब आने को है हिन्दोस्ता वालो"

शिकस्ते-ज़िंदां का ख़्वाब[1]

जोश मलीहाबादी

क्या हिन्द का ज़िंदा[2] काप रहा है, गूज रही हैं तकबीरें[3]
उक्ताये हैं शायद कुछ कैदी और तोड रहे है ज़जीरें

दीवारो के नीचे आ आ कर यू जमा हुए हैं जिन्दानी[4]
सीनो मे तलातुम[5] बिजली की, आखो मे झलकती शमशीरें[6]

.६ पाव के निशान, १७ पथिका का इरादा, १८ चितन, १६ दृढ विचार, २० ससार ी पलको की झपक, २१ आकाश, २२. ऊचाई, २३. झरोखा, २४ रात की शृखला ।

शिकस्ते-ज़िदां का ख्वाब

। जेल टूटने का स्वप्न, २ जेलखाना, ३. 'अल्ला हु अकबर' का नारा, ४. कैदी, ५ जोश, ़फान, ६ तलवारें ।

भूको की नज़र मे बिजली है तोपो के दहाने ठढे हैं
तकदीर के लब को जुम्बिश है दम तोड रही है तदबीरें[7]

आखो मे गदा[8] की सुर्खी है, बेनूर है चेहरा सुलतां[9] का
तखरीब[10] ने परचम[11] खोला है, सजदे मे पड़ी हैं तामीरें[12]

क्या उनको खबर थी जेर-ओ-ज़बर[13] रखते थे जो रूहे-मिल्लत[14] को
उबलेंगे ज़मी से मारे-सियह[15] बरसेंगी फ़लक से शमशीरे

क्या उनको खबर थी सीनो से जो खून चुराया करते थे
इक रोज़ इसी बेरगी से झलकेंगी हजारो तस्वीरें

क्या उनको खबर थी होठो पर जो कुफ़्ल[16] लगाया करते थे
इक रोज़ इसी खामोशी से टपकेंगी दहकती तकरीरें

सभलो कि वह ज़िन्दा गूज उठा, झपटो कि वह कैदी छूट गये
उट्ठो कि वह बैठी दीवारें, दौडो कि वह टूटी जजीरें

आज़ादी

हफीज जालधरी

शेरो को आज़ादी है आज़ादी के पाबद रहे
जिसको चाहें चीरें फाडें खायें पियें आनंद रहें

शाही[1] को आज़ादी है आज़ादी से परवाज़ करे
नन्ही मुन्नी चिड़ियो पर जब चाहे मश्के-नाज़[2] करे

७ उपाय, ८ गरीब, दरिद्र, ९ सम्राट्, १०. विनाश, ११ झडा, १२ निर्माण, १३. ऊपर नीचे, १४. धर्म की आत्मा, १५ काले साप, १६ ताला ।

आज़ादी

१. बाज, २. गर्व का अभ्यास, ।

सांपो को आज़ादी है हर बस्ते घर मे बसने की
इनके सर मे जहर भी है और आदत भी है डसने की

पानी मे आज़ादी है घड़ियालो और नहंगो[3] को
जैसे चाहे पालें पोसें अपनी तुद[4] उमगो को

इंसा ने भी शोखी सीखी वहशत के इन रगो से
शेरो, सापो, शाहीनो, घडियालो और नहंगो से

इसान भी कुछ शेर है बाकी भेडो की आबादी है
भेडें सब पाबंद है लेकिन शेरो को आजादी है

शेर के आगे भेड़े क्या है इक मनभाता खाजा है
बाकी सारी दुनिया परजा शेर अकेला राजा है

भेड़ें लातादाद हैं लेकिन सबको जान के लाले हैं
इनको यह तालीम मिली है भेडिये ताकत वाले हैं

मास भी खायें खाल भी नोचें हरदम लागू जानों के
भेडें काटें दौरे-गुलामी बल पर गल्लाबानो के

भेडियो से गोया कायम अमन है इस आबादी का
भेड़ें जब तक शेर न बन लें नाम न लें आजादी का

इसानो मे साप बहुत हैं कातिल भी जहरीले भी
इनसे बचना मुश्किल है, आज़ाद भी है फुर्तीले भी

साप तो बनना मुश्किल है इस खस्लत[5] से माजूर[6] हैं हम
मतर जानने वालो की मुहताजी पर मजबूर हैं हम

३ मगरमच्छ, ४ तेज, तीव्र, ५. आदत, ६ मजबूर, असमर्थ।

शाही भी हैं चिडिया भी हैं इंसानो की वस्ती मे
वह नाज़ा[7] अपनी रिफअत[8] पर यह नाला[9] अपनी पस्ती[10] मे

शाही[11] को तादीब[12] करो या चिडियो को शाहीन करो
यू इस वागे-आलम मे आज़ादी की तलकीन[13] करो

वहरे-जहा[14] मे ज़ाहिर-ओ-पिनहा[15] इंसानी घडियाल भी हैं
तालिवे-जानओजिस्म[16] भी हैं शैदाए-जान-ओ-माल[17] भी हैं

यह इंसानी हस्ती को सोने की मछली जानते हैं
मछली मे भी जान है लेकिन ज़ालिम कव गर्दानते है

सरमाये का जिक्र करो मजदूरो की इनको फिक्र नही
मुख्तारी[18] पर मरते हैं मजबूरो की इनको फिक्र नही

आज यह किसका मुह है आये मुह सरमायादारो के
इनके मुह मे दात नही फल हैं खूनी तलवारो के

खा जाने का कौनसा गुर है जो इन सबको याद नही
जब तक इनको आज़ादी है कोई भी आज़ाद नही

ज़र का वदा अक्ल-ओ-खिरद[19] पर जितना चाहे नाज़ करे
ज़ैरे-ज़मी धस जाये या वालाए-फलक परवाज़[20] करे

इसकी आज़ादी की वाते सारी झूठी वातें हैं
मजदूरो को मजबूरो को खा जाने की घातें हैं

जब तक चोरो-राहज़नो[21] का डर दुनिया पर गालिव[22] है
पहले मुझसे वात करे जो आज़ादी का तालिव है

गर्वित, ८ ऊचाई, ६ रोता हुआ, १० गिरावट, ११ वाज, १२ अदव सिखाओ,
उपदेश, १४ ससार रूपी समुद्र, १५ प्रत्यक्ष और छुपे हुए, १६. शरीर और प्राण
इच्छुक, १७ जानोमाल पर मरने वाले, १८ आज़ादी, १९. वुद्धि और विवेक, २० उड़ान,
. डाकू, लुटेरा, २२ छाया हुआ ।

नवा-ए-जरस

जमील मजहरी

बढे चलो, बढे चलो, बढे चलो, बढे चलो

बिरादराने-नौजवा,[१] गुरूरे-कारवा[२] हो तुम
जहाने-पीर[३] के लिए शबाबे-जाविदा[४] हो तुम
तुम्हारे हौसले जवां, बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

उठाये सर बढे चलो, तने हुए गुरूर[५] से
तुम्हारे काफले की शान देखती है दूर से
हिमालया की चोटिया, बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

सलामे - मौजे - गग[६] लो, मुजाहिदाने हुर्रियत[७]
हैं गुलफशा[८] बिहिश्त[९] से पयम्बराने-हुर्रियत[१०]
खुला है अर्स ए-जहा,[११] बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

खराबे-बादःए खुदी,[१२] मैं अमल[१३] पिये हुए
अलम बदोश-ओ-सफ ब सफ[१४] कुलाह कज[१५] किये हुए
मिसाले-बहरे-बेकरा,[१६] बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

१ नवयुवक भाइयो, २ कारवा के गर्व, ३ बूढा ससार, ४ शाश्वत यौवन, ५ गर्व, ६ गगा की मौज का सलाम, ७ आजादी के सैनिक, ८ फूल बरसाता हुआ, ९ स्वर्ग, १० आजादी के पैगम्बर, ११ ससार की धरती, १२ खुदी की शराब का वीराना, १३ अमल की शराब, १४ कधे पर झडा और कतार-अदर-कतार, १५ टोपी, तिरछी, १६. असीम समुद्र की तरह ।

बढ़े हुए हो हौसले, चढ़ी हुई हो आस्ती
बदल दो सूरते-जहां उलट दो सफह.ए-ज़मी
पलट दो दौरे-आस्मा,[१७] बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने - नौजवा, बढ़े चलो, बढ़े चलो

कसम तुम्हारे अज़्म[१८] की, फिदा तुम्हारी शान के
बढ़ाके हाथ तोड लो सितारे आस्मान के
झुका दो शाखें-कहकशा,[१९] बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने - नौजवा, बढ़े चलो, बढ़े चलो

बिनाए-कुहना[२०] तोड दो, बनाओ इक जहाने-नौ
जहाने-नौ, जहाने-नौ पे सकफे-आस्माने-नौ[२१]
नये मकी नये मका, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने - नौजवा, बढ़े चलो, बढ़े चलो

न हो सवाले-ईं-ओ-आ, न हो तमीज़े-बहरोबर[२२]
अबस[२३] है खौफे-तीरगी,[२४] सितारे छुप गये अगर
चमक रही हैं बिजलिया, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने - नौजवां, बढ़े चलो, बढ़े चलो

बुझे न शम अे-दिल कही हवा है तेज़ बाग की
अगर अंधेरी रात है, बढ़ा दो लौ चराग की
गरज रही हैं आंधिया, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने - नौजवा बढ़े चलो, बढ़े चलो

रुके न पाए-जुस्तुजू[२५] बिछे हैं खार[२६] राह मे
झुके न परचम-ओ-अलम,[२७] खडे है दार[२८] राह मे
मिसाले - गर्दे - कारवां,[२९] बढ़े चलो, बढ़े चलो
बिरादराने - नौजवा, बढ़े चलो, बढ़े चलो

१७. आकाश का चक्र, १८. इरादा, संकल्प, १९ आकाश-गंगा की डाली, २० पुरानी बुनियाद, २१ नये आकाश की छत, २२ धरती और समुद्र का अंतर, २३. व्यर्थ, २४. अंधकार का भय, २५ जिज्ञासा के कदम, २६. कांटे, २७. झंडे, २८ फांसी, २९. कारवा की धूल की तरह।

जनावे-खिज्र[30] पीर[31] हैं, लकीर के फ़कीर हैं
कमां के साथ क्यो रहे वह हौसले जो तीर है
चो तीरे-जस्ता अज़ कमा,[32] बढे चलो; बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

जो अक़्ल राह रोक दे तो उसका साथ छोड़ दो
जो मज़हब आके टोक दे तो उसकी कैद तोड़ दो
हवा की तरह सर गरा,[33] बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

खिले है फूल ज़ख्म के, अजल[34] गले का हार है
लहू से सुर्ख है कफन यह मुज़्द ए-बहार[35] है
निसारे-तेगे-खू फशा,[36] बढे चलो, बढ़े चलो
बिरादराने-नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

दराए-कारवा[37] हूं मैं दराए-कारवा सुनो
मुखद्दराते-फाकाकश[38] की दुख भरी जबां सुनो
सुनो पयामे-बेकसा,[39] बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने-नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

गरीब लाल कौम के बिलख रहे हैं भूक से
खुदा का अर्श[40] हिल रहा है मामता की हूक से
गिरे न सर पे आस्मा, बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवां बढ़े चलो, बढे चलो

सरो से बाध के कफन, बढ़े चलो, बढे चलो
उमीदे-मादरे-वतन,[41] बढे चलो, बढे चलो
दुआएं दे रही है मा, बढे चलो, बढे चलो
बिरादराने - नौजवा, बढे चलो, बढे चलो

३० एक कल्पित पैगम्बर जो मार्गदर्शक कहलाते हैं, ३१ बूढे, ३२ धनुप से निकले हुए तीर की तरह, ३३ रुष्ट, नाराज, ३४ मौत, ३५ बहार की खुशखबरी, ३६. खून टपकाती हुई तलवार पर न्योछावर, ३७. कारवा की घंटी की आवाज, ३८. फाका करने वाली महिलाएं, ३९. निर्बलों का सदेश, ४०. आकाश, ४१ भारतमाता की आशा ।

जो राह मे ठहर गये, नही मुकामे-पेश-पस[४२]
जो हमसफर बिछड गये तो छेडो नाल ए-जरस[४३]
सुनो जमील की फुगा वढ़े चलो, वढे चलो
विरादराने-नौजवा, वढे चलो, वढे चलो

मुहिव्वाने-वतन का नारा

आनद नारायण मुल्ला

शहीदे-जौरे-गुलची[१] हैं असीर-ओ-खस्तातन[२] हम है
हमारा जुर्म इतना है हवा ख्वाहे-चमन[३] हम है

सताने को सता ले आज जालिम जितना जी चाहे
मगर इतना कहे देते हैं फर्दा - ए - वतन[४] हम है

हमारे ही लहू की वू सवा ले जायगी किनआ[५]
मिलेगा जिसमे यूसुफ का पता वह पैरहन हम हैं

हमे यह फख्र हासिल है पयामे-नूर लाये हैं
जमी पहले पहल चूमी है जिसने वह किरन हम हैं

सुलायेगी हमे खाके-वतन आगोश मे अपनी
न फिक्रे-गोर[६] है हमको न मुहताजे कफन हम है

४२ आगे-पीछे की जगह, ४३ घटे का आर्तनाद ।

मुहिव्वाने-वतन का नारा

१ गुलचीं के अत्याचार से शहीद, २ दुर्बल और गिरफ्तार, ३ चमन की हवा खाने वाले, ४ देश का आने वाला कल, ५ एक कुआ, जिसमे हजरत यूसुफ कैद थे, ६ कब्र की चिंता ।

बना लेंगे तिरे ज़िदा[7] को भी हम ग़ैरते-महफ़िल[8]
लिये अपनी निगाहो में जमाले अजुमन[9] हम हैं

नही तेशा[10] तो सर टकराके जूए-शीर[11] लायेंगे
बयाबाने-जुनू मे जानशीने-कोहकन[12] हम हैं

ज़माना कर रहा है कोशिशें हमको मिटाने की
हिला पाता नही जिसको वह बुनियादे-कुहन[13] हम हैं

न दौलत है न सर्वत[14] है न ओहदा है न ताकत है
मगर कुछ बात है हममे कि जाने-अजुमन हम हैं

तिरे ख़ंजर से अपने दिल की ताकत आज़माना है
मुहब्बत एक अपनी है तिरा सारा ज़माना है

फिदाए-मुल्क होना हासिले-किस्मत समझते हैं
वतन पर जान देने ही को हम जन्नत समझते हैं

कुछ ऐसे आ गये हैं तग हम कुजे-असीरी[15] से
कि अब इससे तो बेहतर गोशःए-तुरबत[16] समझते हैं

हमारे शौक की वारफ्तगी[17] है दीद[18] के काबिल
पहुचती है अगर ईजा[19] उसे राहत[20] समझते हैं

निगाहे-कहर[21] की मुश्ताक[22] हैं दिल की तमन्नाए
खते-चीने-जबी[23] ही को खते-किस्मत[24] समझते हैं

वतन का ज़र्रा-ज़र्रा हमको अपनी जा से प्यारा है
न हम मज़हब समझते है न हम मिल्लत समझते हैं

हयाते-आरजी[25] सदके[26] हयाते-जाविदानी[27] पर
फना[28] होना ही अब इक ज़ीस्त[29] की सूरत समझते हैं

७ जेलखाना, ८ महफ़िल का सम्मान, ९ महफ़िल, १० कुदाल, ११ दूध की नदी, १२ कोहकन के उत्तराधिकारी, १३ पुरानी बुनियाद, १४ धन-दौलत, समृद्धि, १५ कैद का कुज, १६ कब्र का कोना, १७ सज्ञाहीनता, बेहोशी, १८ देखना, १९. कष्ट, २० सुख, २१ प्रकोप की दृष्टि, २२ इच्छुक, २३. ललाट की झुरिया, २४. भाग्य-रेखा, २५. अस्थायी जीवन, २६ न्योछावर, २७ अनश्वर जीवन, २८ नष्ट, २९ जीवन ।

हमें मालूम है अच्छी तरह तावे-खफा[३०] तेरी
मगर इससे सिवा अपनी हदे-उल्फत समझते हैं

गम-ओ-गुस्सा दिखाना इक दलीले-नातवानी[३१] है
जो हंस कर चोट खाती है उसे ताकत समझते हैं

गुलामी और आजादी बस इतना जानते हैं हम
न हम दोजख समझते हैं न हम जन्नत समझते हैं

दिखाना है कि लड़ते हैं जहा मे बावफा क्योकर
निकलती है जबां से जख्म खाकर मरहबा क्योकर

पैग़ामे-वतन

आज़ाद अंसारी

अय मुअज्जिज[१] तबक ए-हुक्काम[२] रस
अय गरोहे-कामगार-ओ-कामरस
अय हुकूमत की नज़र मे लायको
अय वफाकेशी मे सब पर फाइको[३]
अय उसूले-ज़रकशी[४] पर आमिलो[५]
अय हुसूले मुनफअत[६] मे कामिलो[७]
अय खुशामद के गुरो से वाकिफो[८]
अय गुलामी के गुरो से वाकिफो

३० नाराजगी की सीमा, ३१ कमजोरी की दलील।

पैग़ामे-वतन

१ प्रतिष्ठित, २ अधिकारी वर्ग, ३ आगे निकल जाने वाले, ४ पैसा कमाने का उसूल, ५ अमल करने वाले, ६ लाभ, ७ कुशल, माहिर, ८ परिचित।

अय अजानिब से वफा पर मायलो
अय वतन की मुखलिसी के हायलो[9]
अय खलासी की लगन के दुश्मनो
अय खुद अपने ही वतन के दुश्मनो
अय बिदेसी जाल से नावाकिफो
अय खुद अपने हाल से नावाकिफो
अय हमारे दुश्मनो के दोस्तो
अय हमारे गोश्तो अय पोस्तो[10]

मैंने यह माना कि तुम लायक भी हो
फर्द भी, मुम्ताज़[11] भी फाइक[12] भी हो
तुम खिताबो से भी सरफराज़ हो
मुक्तदिर ओहदो पे भी मुमताज़ हो
तुम किसी से माल मे भी कम नही
औज या इकबाल[13] मे भी कम नही
मुल्क के साहब वकारो[14] मे भी हो
सल्तनत के दोस्तदारो मे भी हो
मूरिदे-अल्ताफे-सरकारी[15] भी हो
आलःए-कारे-सितमगारी[16] भी हो
इख्तियाराते-सितम रानी[17] भी है
फौजदारी भी हैं दीवानी भी हैं
इस तरफ तकदीरे-सीम-ओ-ज़रफशा[18]
उस तरफ साहब बहादुर मेहरबा
ठीक है जो-जो उमगें दिल मे हैं
खूबिए-किस्मत से पाचो घी मे हैं
लेकिन इक तश्वीश इक उलझन मे हूं
क्या इजाजत है कि इतना पूछ लू

९ बाधको, १० हड्डी, ११ श्रेष्ठ, १२ प्रधान १३ प्रताप, १४ प्रतिष्ठा, १५ सरकार की दया के पात्र, १६ अत्याचार मे सहायक, १७ जिसके पास अत्याचार करने का हक हो, १८. सोना और चादी बरसाने वाली तकदीर।

तुम मे सौ गुन तुम मे लाखो रखरखाव
तुम सभी कुछ हो मगर यह तो बताओ
लब पे आहे-सर्द भी है या नही
दिल मे कौमी दर्द भी है या नही
कौम मुद्दत से ज़लील-ओ-ख्वार[19] है
मुल्क मुद्दत से मसायब ज़ार[20] है
इब्तला[21] पर इब्तला है और मुल्क
अजदहामे-सद बला[22] है और मुल्क
आफतें हैं और दुनियाए-वतन
शामतें हैं और अबनाए वतन[23]
जिसको देखो बद आफत का असीर[24]
जिसको पूछो बेनवा, मुफ्लिस फकीर
कोई बेकारी के गम से जा ब लब
कोई नादारी के सम[25] से जा ब लब
मुल्क का मुल्क आफतो से अधमुआ
कौम की कौम और गुलामी का जुआ
दोस्तो वह पासे-इज्जत क्या हुआ
वह सरे - एहसासे - इज्ज़त क्या हुआ
यूं न बेशर्मी की ठानी चाहिए
अब तुम्हे भी गैरत आनी चाहिए
शर्म खोकर वक्त टाला भी तो क्या
पत डुबोकर पेट पाला भी तो क्या
जीस्त का लुत्फ आबरू के साथ है
और अपनी इज्ज़त अपने हाथ है
खुदकशी करने से कुछ हासिल नही
जीते जी मरने से कुछ हासिल नही
जौरे - बातिल[26] से न डरना चाहिए
हक पे जीना हक पे मरना चाहिए

१९ अपमानित, २०. मुसीबतो मे फसा हुआ, २१ विपत्ति, मुसीबत, २२ सैकडो बलाओ जमघट, २३ देश के बेटे, २४. विपत्तिग्रस्त, २५ जहर, २६ झूठा अत्याचार ।

कौम के यारो मदद का वक्त है
मुल्क के प्यारो मदद का वक्त है
आओ कारे-नेक मे सबकत[27] करें
आओ मुल्की मुश्किलें आसा करें
आओ हर बंदे-फलाकत[28] काट दें
आओ हर गारे-हलाकत[29] पाट दें
आओ फिर ता मंजिले-मकसद[30] बढें
आओ फिर ता बामे-आजादी[31] चढे
आओ फिर मिलजुल के जानें झाड दें
आओ फिर इज्जत के झंडे गाड दें
आओ कौमी गम की शब दिन कर दिखाये
आओ नामुम्किन को मुम्किन कर दिखायें
दोस्तो आजाद ने बिल्कुल खुला
तुमको पैगामे-वतन पहुचा दिया
अब कबूल-ओ-रद[32] के तुम मुख्तार[33] हो
अपने नेक-ओ-बद[34] के तुम मुख्तार हो

दरसे-इत्तिहाद[1]

जाफर अली खा 'असर'

अब हम हैं कहां अर्बाबे-हुमम[2]
जुरअत[3] न इरादे मुस्तहकम[4]
हंगामा खुदी का बरपा है
गौगा[5] नफ्सी नफ्सी का है

२७ आगे बढ़ें, २८ दरिद्रता के बंधन, २९ कत्ल का गड्ढा, ३० गंतव्य की ओर, ३१ आजादी की छत पर, ३२. स्वीकार या अस्वीकार करना, ३३ मालिक, ३४ अच्छा-बुरा।

दरसे-इत्तिहाद

१ एकता का पाठ, २ हिम्मत वाले ३ साहस, ४ दृढ, ५. शोर।

ईसार-ओ-वफा[६] का नाम नही
मतलब से गरज फिर काम नही

उल्फत हुई रस्मे-पारीना[७]
है उसकी जगह दिल मे कीना[८]

अगलो के चलन हम भूल गये
वह रस्मे-कुहन हम भूल गये

अख्लाके-निकू[९] भी खो बैठे
इक साथ सभी को रो बैठे

आपस की रवादारी उठी
उल्फत उठी यारी उठी

बदमस्त मैए-पिंदार[१०] हुए
दौलत की तरग मे ख्वार हुए

मजहूल हुए बेकार हुए
महकूम हुए नादार हुए

ऐयार हुए मक्कार हुए
क्या थे और क्या सरकार हुए

हममे हैं निकम्मे, या खोटे
बस नाम बडा दर्शन छोटे

क्यो तग न आयें जीने से
फुर्सत ही न हो जब कीने से

मजिल की खबर है न अपनी खबर
मालूम नही जाते हैं किधर

६ त्याग और वफा, ७ प्राचीन रिवाज, ८ द्वेष, ९ उत्तम शिष्टाचार, १० अहकार की मदिरा ।

है खैर के बदले मायले - शर[11]
करते हैं वही जिसमे है ज़रर[12]

इक दूसरे के गमख्वार नही
वह चाह नही वह प्यार नही

वह युग रहा न वह प्रीत रही
बस इक नफरत की रीत रही

पस्ती उफ कैसी पस्ती है
खुद पस्ती हम पर हसती है

हम सा भी ज़बू-ओ-जार[13] न हो
मजबूर न हो नाचार न हो

अल्लाह यह कैसा वक्त पडा
है साया हमारा हमसे जुदा

क्यो हम पे न आफत टूट पडे
आपस मे जब ऐसी फूट पडे

यकजिहती[14] भी मफकूद[15] हुई
और फिक्रे-ज़िया-ओ-सूद[16] हुई

वह जज्ब की ताकत[17] सल्ब[18] हुई
तौफीके-हिदायत[19] सल्ब हुई

अब सईए-अमल[20] मशकूर नही
वह दौरे-नशात-ओ-सुरूर[21] नही

११ उपद्रव की तरफ माइल, १२ नुकसान, १३ दुबला-पतला, १४ एकता, १५ अप्राप्य, १६ लाभ-हानि, १७. शक्ति, १८ खत्म, १९ आदेश की शक्ति, २० अमल की कोशिश, २१ मस्ती और खुशी का युग।

सद हैफ हम ऐसे खोये गये
दिन डूब गया और सोये गये

समझें जो यह कलवल टूट जाये
अब से आये घर से आये

काश ऐसा कोई शाइर होता
मोजिज़[२२] न सही साहिर[२३] होता

जो लफ्ज़ो मे जादू भर देता
मुर्दो को ज़िदा कर देता

मलते हुए आखें जाग उठते
सब नीद के माते मतवाले

यू खून रगो मे रवा होता
सैलाव मे धारा गगा का

सब गर्दे-कदूरत[२४] धो जाती
नफरत अफसाना हो जाती

फिर भाई से भाई मिल जाता
वेखौफे - जुदाई मिल जाता

काश ऐसी कोई सूरत निकले
गफलत वेदारी से वदले

२२. चमत्कार दिखाने वाला, २३ जादूगर, २४ दुश्मनी का मैल ।

इस तरह यह रूठे मिल जायें
गैर इनकी वफा की कस्मे खायें

हो दूर निफाक[२५] और मेल बढे
इक बार मढे यह बेल चढे

मिल मिल के रहे सब छोटे बड़े
फिर सूखे धानो पानी पड़े

फूलो से लदी हर डाली हो
बाग अपना हो अपना माली हो

खुशवक्ती हो खुशहाली हो
ता हद्दे-नजर हरियाली हो

इक दूसरे के आड़े आयें
हो दूर दलिद्दर सुख पायें

मट्टी मे रुली अज्मत मिल जाये
फिर खोई हुई दौलत मिल जाये

तहजीब के चश्मे फिर उबलें
रस्मे टूटें आईं बदलें

वह रूप सिंगार वतन का हो
जो ताजा उरूसे-चमन का हो

सब इसके सुहाग की लाज करें
क्यो उठ रहे कल पर, आज करें

२५ दुश्मनी।

नाराए-शबाब

जोश मलीहाबादी

होशियार ! अपनी मताए-रहबरी[1] से होशियार
अय खलिश[2] नाआशना[3] पीरी-ओ-शैवे-हिरजाकार[4]

उड गया रूए-जमी ओ-आसमा से रगे-ख्वाब[5]
झिलमिलाती शमअ रुख्सत हो कि उभरा आफताब[6]

हट कि सई-ओ-अमल[7] की राह में आता हू मैं
खल्क[8] वाकिफ[9] है कि जब आता हूं छा जाता हू मैं

अय कदामत[10] ! यह खुली है सामने राहे-फरार[11]
भाग वह आया नयी तहजीब[12] का पर्वरदिगार[13]

काम है मेरा तगैयुर,[14] नाम है मेरा शबाब[15]
मेरा नारा इंकिलाब - ओ - इंकिलाब - ओ - इंकिलाब

कोई कूवत[16] राह से मुझको हटा सकती नही
कोई जर्बत[17] मेरी गर्दन को झुका सकती नही

रंग सूरज का उडाता है मिरे सीने का दाग
बादे-सरसर[18] का बदल देता है रुख मेरा चराग

संग-ओ-आहन[19] मे मिरी नजरो मे चुभ जाती है फास
आंधियो की मेरे मैदा मे उखड़ जाती है सास

१ मार्ग प्रदर्शन की दौलत, २-३ अय चुभन से अपरिचित बुढापे, ४. बकवास करने वाला बुढापा, ५ नींद का रंग, ६ सूरज, ७ अमल की कोशिश, ८ दुनिया, ९ परिचित, १०. प्राचीनता, ११ पलायन-मार्ग, १२ सभ्यता, १३ खुदा, १४ विभिन्नता, १५ यौवन, १६ शक्ति, १७ मार, वार, १८ आंधी, १९. पत्थर और लोहा ।

देखकर मेरे जुनू[20] को नाज़[21] फरमाते हुए
मौत शर्माती है मेरे सामने आते हुए

अल अमा किब्र-ओ-रिया[22] आलूदापीरी[23] अल अमा[24]
अब कडकती है तिरे सर पर जवानी की कमां[25]

हां तू ही है वह, जुनू ने जिसके टुकड़े कर दिया
सुब्ह-ओ-जुन्नार[26] की उलझन मे रिश्ता कौम का

हो जो गैरत[27] डूब मर, यह उम्र, यह दरसे-जुनू[28]
दुश्मनो की ख्वाहिशे - तकसीम[29] के सैदे - जबू[30]

यह सितम क्या अय कनीज़े-कुफ्र-ओ-ईमा[31] कर दिया
भाइयो को गाय और बाजे पे कुर्बा कर दिया

कर दिया तूले - गुलामी[32] ने तुझे कोतह खयाल[33]
झुरिया है यह तिरे मुह पर कि गद्दारी का जाल

देखती है सिर्फ अपने ही को अय धुधली निगाह
सर भड़क उठता है लेकिन है अभी तक दिल सियाह[34]

इब्ने-आदम[35] और रेंगे खाक पर ! अल्लाह रे कहर[36]
साप का इस रेंगने से आ गया है मुझमे जहर

पोपले मुह खत्म कर यह आकिबत[37] बीनी[38] का शोर
देख अब बुजदिल मिरे नाआकिबत[39] बीनी का ज़ोर

चेहरःए - इमरोज़[40] है मेरे लिए माहे - तमाम[41]
खौफे-फर्दा[42] है मिरी रंगी शरीअत[43] मे हराम

२० उन्माद, २१ गर्व, नखरा, २२. अहकार और ढोग, २३ वुढापे मे सना हुआ, २४ अल्लाह अपनी सुरक्षा में रखे, २५ धनुष, २६. तसबीह और जनेऊ, २७ लज्जा, २८ उन्माद का पाठ, २६ बटवारे की इच्छा, ३० अशुभ शिकार, ३१ कुफ्र और ईमान की दासी, ३२ लबी गुलामी, ३३ सकीर्ण विचार, ३४ काला, ३५ मानव, ३६. प्रकोप, ३७. अजाम, परिणाम, परलोक, ३८ देखना, ३६ अदूरदर्शिता, ४० आज का चेहरा, ४१. पूर्ण चद्र, ४२ कल का भय, ४३ धर्मशास्त्र ।

तैर जाती है दिले - फौलाद[४४] मे मेरी नजर
खून मेरा खदाजन[४५] रहता है मौजे-वर्क[४६] पर

और तमन्नाएं हैं तेरी सिसकिया भरती हुई
ऊघती, कुढती, विलखती, कांपती, डरती हुई

तेरी वातो से पडी जाती है कानो मे खराश
"कुफ़्र-ओ-ईमा" "कुफ्र-ओ-ईमा"[४७] ता कुजा खामोशवास[४८]

हुब्बे-इसा,[४९] जौके-हक,[५०] खौफे-खुदा कुछ भी नही
तेरा ईमा चंद वहमो के सिवा कुछ भी नही

तेरे झूठे कुफ़्र-ओ-ईमा को मिटा डालूगा मैं
हड्डिया इस कुफ्र-ओ-ईमा की चवा डालूगा मैं

वलवले[५१] मेरे वढेंगे नाज फरमाते हुए
फिर्कावदी[५२] का सरे - नापाक ठुकराते हुए

डाल दूगा तहे-नौ[५३] "अजमेर" और "परयाग" मे
झोक दूगा कुफ्र-ओ-ईमा को दहकती आग मे

एक दीने-नौ[५४] की लिखूगा किताबे - जरफशा[५५]
सब्त[५६] होगा जिसकी जर्री जिल्द पर "हिन्दोस्ता"

इस नये मजहव पे सारे तफरिके[५७] वारूगा मैं
तुझ पे फिर गर्दन हिलाकर कहकहे मारूगा मैं

फिर उठूगा अब्र[५८] के मानिंद वल खाता हुआ
घूमता, घिरता, गरजता, गूजता, गाता हुआ

४४ फ़ौलाद का दिल, ४५ मुस्कुराता हुआ, ४६ विजली की मौज, ४७ धर्म और अध
४८. चुप वैठना, ४९ मानव-प्रेम, ५० सत्य-प्रेम, ५१ जोश, ५२ साम्प्रदायिकता, ५३ न
माधारशिला, ५४. नया धर्म, ५५ सोना विखेरती हुई, ५६ अंकित, ५७ भेदभाव, ५८ वाद

वलवलो से बर्क[५९] के मानिंद लहराया हुआ
मौत के साये मे रहकर, मौत पर छाया हुआ

खून मे लिथडी बिसाते - कुफ्र - ओ - दीं[६०] उलटे हुए
फख्र से सीने को ताने, आस्ती उलटे हुए

कौसर - ओ - गंगा को इक मर्कज़[६१] पे लाऊ तो सही
इक नया संगम जमाने मे बनाऊ तो सही

नाक़ूसे-बेदारी[१]

एहसान दानिश

होशियार अय हिन्द, अय गफलतशिआरो[२] के दयार[३]
नाला बर लब[४] हैं तिरे उलझे हुए लैल-ओ-नहार[५]

अब तिरे सर मे तरक्की का जुनू[६] बाकी नही
अब तिरे इंसाफ की नब्ज़ो[७] मे खू बाकी नही

साया है अब्रे तअत्तुल[८] का तिरी तज़ीम[९] पर
चल गया तखरीब[१०] का अफसू[११] तिरी तालीम पर

पीसते है दात सन्नाटे तरानो पर तिरे
खारज़ारो की नजर है गुलिस्तानो पर तिरे

शाह राहो[१२] पर भयानक खामुशी[१३] छाने को है
खून हर ज़र्रे की आखो मे उबल आने को है

५९ बिजली, ६०. कुफ्र और दीन की बिसात, ६१ केंद्र।

नाक़ूसे-बेदारी

१ जागृति का शख, २ अचेतन लोक, ३ घर, ४ होठो पर आर्तनाद, ५ रात-दिन, ६ उन्माद, ७ नाडी, ८ गत्यवरोध, ९ सगठन, १० विनाश, ११ जादू, १२ राजमार्ग, १३ सन्नाटा।

आ गया खुर्शीद[१४] सर पर खोल आखें बेखबर
अपनी गफलत गैर की बेदारियो पर कर नजर

नाखुदा[१५] तेरे नहगाने-अजल[१६] है सरवसर
अपनी गर्काबी[१७] से पहले उनके बेड़े गर्क कर

जिस कदर है पेशवायाने-तमद्दुन[१८] फितना ख[१९]
तेरे दरमा[२०] के लिए इकसीर है उनका लहू

जिनकी ख्वाहिश है कि बुझ जाये उखूवत[२१] का चराग
पीस दे घोडो की टापो के तले उनके दिमाग

दिल का कीना रात भर बेताव रखता है उन्हे
दीदःए-दौलत तलव बेताव रखता है उन्हे

शौके-सुल्तानी[२२] वना देता है उनको हरजाकार[२३]
उनके मज़हब का न उनकी दोस्ती का एतवार

बेकसी मज़दूर की जुरअत[२४] दिलाती है उन्हे
आसुओ की शवनमी मे नीद आती है उन्हे

यह वह मोहसिन[२५] हैं जो कर देते है कौमो को हलाक[२६]
इनके दम से हर शराफत का गरीवा चाक चाक

मोर्चे यह किब्र-ओ नखवत[२७] के उड़ाकर फेंक दे
दमदमे[२८] उनकी सियासत के उडाकर फेंक दे

१४ सूरज, १५ नाविक, १६ मौत, १७ डूबना, १८ सभ्यता के नेता, १९ उपद्रव की आदत वाले, २० इलाज, २१. बराबरी, २२ राजपाट का शौक, २३ मिथ्याकारी, २४ साहस, २५ एहसान करने वाला, २६ कत्ल, २७ अहकार, २८ फरेब ।

हयात[1]

अली जव्वाद जैदी

गुनूदगी[2] है कज़ा[3] की निगाहे-दुनिया मे
झलक हयात की शहरो मे है न सहरा मे
नसीमे-सुब्ह[4] की रफ्तार मे गरानी[5] है
दिलो का दर्द भरा है खरोशे-दरिया[6] मे
फ़ज़ाए-काबा-ओ-मस्जिद[7] खिज़ा[8] से बोझल है
सुकूते-मर्ग[9] है बुतखाना - ओ - कलीसा मे
इधर है मौत की ज़ुल्मत[10] उधर मुसाफिर ने
किया है अज्मे-सफर[11] ज़ीस्त[12] की तमन्ना मे
हयाते-गुमशुदा[13] ! आखिर तिरा मका है
तिरा मका है जहा वह हसी जहा है

जो तू नहीं है तो हर सम्त इक उदासी है
है दिल मे शौक का तूफा निगाह प्यासी है
तलाशे-ज़ीस्त मे सर मारते हैं दीवाने
हर एक सम्त अजब खौफ-ओ-बदहवासी है
बहुत अज़ीम बनाया फलक को मज़हब ने
मगर वहा भी तो कुछ ऐसी ही फज़ा सी है
गरज़ हवाओ मे सुनता हू बस यही हर दम
कि ज़िंदगी ही का मसला यहा असासी[14] है
सुना है अर्श भी है महवे-गुफ
मलायका[16] भी है मसरूफे जुस

१ ज़िंदगी, २ वेहोशी, ३ मौत, ४ प्रात समीर, ५ भारीपन, ६ द
... ९ मौत की खामोशी, १०

यह वही[१८] उतरी है मुल्ला के पाक सीने पर
"सुकू हराम है लानत है ऐसे जीने पर"
यह कौन हज़रते-मुल्ला, वही जो कहते थे
"रखो न पाव कभी जिदगी के सीने पर"
कि जीस्त वद:ए-मुस्लिम को गर्क करती है
"विठाके भूक के हिर्स आफ़री[१९] सफीने[२०] पर"
नज़र विरहमन ओ-राहिव की कल थी तालिवे-रूह
जमी है आज मगर जिस्म के पसीने पर
हयात तेरी बुज़ुर्गी का वोलवाला है
मिरे मका के सिवा हर तरफ उजाला है

यहा तू कहती हुई आ कि मैं "उमग मे हू"
जरा यह गीत भी गा दे कि "शौके-जग मे हू"
यह कह दे कान मे सोयी हुई तमन्ना के
कि "होशियार हो मैं आज फिर तरग मे हूं
सुना दे ज़ुल्म-ओ-तअद्दी[२१] के कोहसारो को
कि मैं शरारे-निहफ्ता[२२] दिमागे-सग[२३] मे हू
जरा वसीअ वना दे कि दम उलझता है
कई सदी से गिरफ्तार सहने-तग मे हूं
निज़ामे-नौ[२४] से वदल कर निज़ामे-देरीना[२५]
मिटा दे सफह:ए-दिल[२६] दिल से पयामे-देरीना[२७]

तुलूअ[२८] हो कि अधेरा है मेरी मज़िल मे
वुझी हुई है हर इक शमअ मेरी महफिल मे
जो तू मिले तो वदल दू हवा ज़माने की
कई वरस से है यह आरज़ू मिरे दिल की

१८ खुदा का हुक्म, १९ लोभी, २० नाव, २१ अत्याचार और अन्याय, २२ गुप्त चिंगारी, २३ पत्थर का दिमाग, २४ नया निज़ाम, २५ पुराना निज़ाम, २६ दिल का पृष्ठ, २७ पुराना सदेश, २८ उदय ।

चमक मे जिसकी तडपती हो इशरते-जावेद[२६]
तुझे बनाऊं मैं वह शमशीर[३०] दस्ते-कातिल मे[३१]
भंवर मे डूबने वालो को भी सहारा दू
तुझे उमीद बनाकर कनारे-साहिल मे
कभी मिरी रगे-जा मे नजर से फसद[३२] तो कर
कभी ज़रा मिरी बज्मे-अमल का कस्द[३३] तो कर

नकाब रुख से उलट दे दिखा दे हुस्ने-कमाल
तिरा उरुज[३४] हो सतही[३५] रकाबतो[३६] का जवाल[३७]
तिरे निजाम मे दैर-ओ-हरम[३८] की कैद कहा ?
यह सारी जग-हराम और एक जंग-हलाल
यह जंग वह है कि इसान सर उठायेगा
हयात-ओ-मौत की दो ताकतो मे होगी जदाल[३९]
उरूसे-जीस्त[४०] के हिज्रा नसीब[४१] आशिक को
ज़माना देगा नवेदे-खुशी,[४२] पयामे-विसाल[४३]
बहुत ही जल्द वह साअत[४४] भी आने वाली है
कि तेरे रुख पे नमू[४५] की हसीन लाली है

२९ शाश्वत ऐश्वर्य, ३० तलवार, ३१ कातिल का हाथ, ३२ रग खोलना, ३३ इरादा, ३४ उत्थान, ३५ छिछला, ३६ दुश्मनी, ३७ पतन, ३८ मदिर-मस्जिद, ३९ जग, ४० ज़िदगी की दुल्हन, ४१ जिसके भाग्य मे विरह लिखा हो, ४२ खुशी का निमंत्रण, ४३ मिलन का सदेश, ४४ घडी, पल, ४५ विकास ।

(दूसरा भाग)

अवामी बेदारी की लहर

नग्मःए - वेदारिए - जम्हूर[१८] है सामाने ऐश
किस्सःए-ख्वाव आवर इस्कदरो-जम कव तलक[१९]

आफ्तावे-ताज़ा पैदा वत्ने-गेती[२०] से हुआ
आस्मा डूवे हुए तारों का मातम कव तलक

तोड डाली फितरते-इसा ने जंजीरें तमाम
दूरिए-जन्नत से रोती चश्मे-आदम कव तलक

वागवाने-चाराफरमा[२१] से यह कहती है वहार
ज़ख्मे-गुल के वास्ते तदवीरे-मरहम कव तलक

कर्मके-नादा[२२] तवाफे - शमअ[२३] से आज़ाद हो
अपनी फितरत के तजल्लीजार मे आवाद हो

अल अर्ज़ो लिल्लाह[१]

डा. मुहम्मद इकवाल

पालता है वीज को मिट्टी की तारीकी[२] मे कौन ?
कौन दरियाओ की मौजो से उठाता है सहाव[३] ?

कौन लाया खीचकर पच्छिम से वादे-साजगार[४] ?
खाक यह किसकी है ? किसका है यह नूरे-आफ्ताव[५] ?

किसने भर दी मोतियों से खोशःए-गदुम[६] की जेव ?
मौसमों को किसने सिखलायी है खूए-इकिलाव[७] ?

देह खुदाया,[८] यह जमी तेरी नही तेरी नही
तेरे आवा की नही, तेरी नही मेरी नही

१८. गणतन्त्र की जागृति का गीत, १९ सिकदर और जमशेद की वह कहानिया कव तक, जिनसे नींद आ जाये, २० धरती का पेट, २१ इलाज करने वाला वाग़वान, २२ नादान कीडे, २३. शमा की परिक्रमा।

अल अर्ज़ो लिल्लाह

१. सारी धरती अल्लाह की है २. अधकार, ३. वादल, ४ अनुकूल हवा, ५. सूर्य का प्रकाश, ६ गेहू की वाली, ७ इक़िलाव की आदत, ८ अय देहात के मालिक (ज़मीदार)।

सल्तनत

डा. मुहम्मद इकबाल

आ बताऊ तुझको रम्ज़े-आय ए-इन्न लमलूक[1]
सल्तनते-इकवामे-गालिव[2] की है इक जादूगरी

ख्वाव[3] से वेदार होता है ज़रा महकूम[4] अगर
फिर सुला देती है इसको हुक्मरां[5] की साहिरी[6]

जादुए-महमूद[7] की तासीर[8] से चश्मे-अयाज़[9]
देखती है हल्कःए-गर्दन मे साज़े-दिलवरी[10]

खूने इस्राईल आ जाता है आखिर जोश मे
तोड देता है कोई मूसा तिलिस्मे-सामरी[11]

सरवरी[12] ज़ेबा[13] फकत उस ज़ाते-वेहम्ता[14] को है
हुक्मरा[15] है इक वही बाकी बुताने-आज़री[16]

अज़ गुलामी फितरते-आज़ाद रा रुसवा मकुन[17]
ता तराशी ख्वाजई अज बरहमन काफिर तरी[18]

है वही साज़े-कुहन[19] मग्रिब का जमहूरी निज़ाम
जिसके पर्दों मे नही गैर अज़ नवाए-कैसरी[20]

देवे-इस्तिब्दाद[21] जम्हूरी कवा[22] मे पाये कोव[23]
तू समझता है यह आज़ादी की है नीलम परी

१. कुरान की एक आयत की तरफ इशारा है जिसमे वादशाहो का ज़िक्र है, २ शक्तिशाली राष्ट्रों की सल्तनत, ३. नीद, ४ दास, गुलाम, ५ शासक, ६ जादूगरी, ७ महमूद का जादू, ८. प्रभाव, ९ अयाज की आख (अयाज महमूद गजनवी का गुलाम था), १०. दिलवरी का साज, ११ मिस्र के पुराने जादूगरो का जादू, १२ सरदारी, १३. शोभा, १४ वह हस्ती जिसका कोई मुकाबिल न हो, १५ शासक, १६ आजर के वुत, १७ गुलामी से अपनी आज़ाद प्रकृति को गदा न कर, १८ अगर तू अपने लिए मालिक वनाता रहता है तो ब्राह्मण काफिर नही है तू काफिर है, १९. पुराना साज २०. शाही आवाज़, २१ अत्याचार का राक्षस, २२. लम्बा चोगा, २३. चोट ।

मज्लिसे-आईन-ओ-इसलाह-ओ-रिआयत-ओ-हुक़ूक[२४]
तिब्बे-मग्रिक[२५] मे मज़े मीठे, असर ख्वाब आवरी[२६]

गर्मिए - गुफ्तारे - आज़ाए - मजालिस[२७] अलअमां
यह भी इक सरमायादारो की है जगे-ज़रगरी[२८]

इस सरावे-रग-ओ-बू[२९] को गुलसितां समझा है तू
आह अय नादां कफस को आशिया समझा है तू

लेनिन

(खुदा के हुज़ूर में)

डा. मुहम्मद इक़बाल

अय अफस-ओ-आफाक[१] मे पैदा तिरे आयात[२]
हक यह है कि है ज़िन्दा-ओ-पाइदा तिरी ज़ात

मैं कैसे समझता कि तू है या कि नही है
हरदम मुतगैयर[३] थे खिरद[४] के नज़रियात[५]

महरम[६] नही फितरत के सरोदे-अज़ली[७] से
वीनाए-क्वाकव[८] हो कि दानाए-नवातात[९]

२४ अधिकार, जनता, सुधार, विधान की मजलिस, २५ पूर्व का आयुर्वेद, २६ : असेम्बलियो मे गरम-गरम बातें करना, २८ सरमायादारी का युद्ध, २९ रग की मरीचिका।

लेनिन

१. जीव और दिशाए, २ निशानियां, ३. बदलते हुए, ४ बुद्धि, ५ दृष्टिकोण, ७ आदिकाल का गीत, ८ देखने वाले नक्षत्र, ९ समझदार वनस्पति।

आज आंख ने देखा तो वह आलम-हुआ साबित
मैं जिसको समझता था कलीसा[10] के खुराफात[11]

हम वदे-शव-ओ-रोज[12] मे जकडे हुए वदे
तू खालिके-असार-ओ-निगारिंदए - आनात[13]

इक वात अगर मुझको इजाजत हो तो पूछू
हल कर न सके जिसको हकीमो के मकालात[14]

जब तक मैं जिया खेमःए-अफलाक[15] के नीचे
काटे की तरह दिल मे खटकती रही यह बात

गुफ्तार[16] के असलूब[17] पे कावू नही रहता
जब रूह के अदर मुतलातुम[18] हो खयालात

वह कौन-सा आदम है कि तू जिसका है मावूद[19] ?
वह आदमे-खाकी कि जो है ज़ेरे-समावात[20] ?

मश्रिक के खुदावद सफेदाने - फिरंगी
मग्रिव के खुदावद दरखशंदए - फलिज्जात[21]

यूरुप मे बहुत रौशनिए - इल्म - ओ - हुनर है
हक यह है कि बेचश्मए-हैवा[22] है यह जुल्मात[23]

रानाई - ए - तामीर[24] मे, रौनक मे, सफ़ा[25] में
गिरजो से कही बढके हैं वैको के इमारात

ज़ाहिर मे तिजारत है हकीकत मे जुआ है
सूद एक का लाखो के लिए मर्गे-मफाजात[26]

१० गिरजाघर, ११ वक्वासें, १२ दिन-रात, १३ समय और युग का सृष्टा और क्षणो का लिखने वाला, १४ निवंध, लेख, १५. आकाश का तम्बू, १६ वातचीत, १७ ढग, तरीका, १८. जोश मारते हुए, १९ खुदा, २० वरावरी के नीचे, २१ अष्टधातुओ की चमक, २२ अमृत के स्रोत के विना, २३ अधेरे (अमृत का स्रोत अधेरे में वहता है), २४. निर्माण की शोभा, २५ पवित्रता, २६ आकस्मिक मृत्यु।

यह इल्म, यह हिकमत, यह तदव्वुर[२७] यह हुकूमत
पीते हैं लहू, देते हैं तालीमे - मसावात[२८]

बेकारी-ओ-उरियानी-ओ-मैख्वारी - ओ-इफलास
क्या कम हैं फिरगी मदनियत[२९] के फुतूहात[३०]

वह कौम जो फैज़ाने-समावी[३१] से हो महरूम
हद इसके कमालात की है वर्क-ओ-बुखारात[३२]

है दिल के लिए मौत मशीनो की हुकूमत
एहसास-ओ-मुरव्वत को कुचल देते है आलात[३३]

आसार तो कुछ कुछ नज़र आते है कि आखिर
तदवीर को तकदीर के शातिर ने किया मात

मैखाने की बुनियाद मे आया है तजलजुल[३४]
बैठे हैं इसी फिक्र मे पीराने - खराबात[३५]

चेहरो पे जो सुर्खी नज़र आती है सरे-शाम
या गाज़ा है या सागर-ओ-मीना की करामात

वह कादिर-ओ-आदिल[३६] है मगर तेरे जहा मे
हैं तल्ख बहुत बन्दए - मजदूर के औकात

कब डूबेगा सरमायापरस्ती का सफीना
दुनिया है तिरी मुतज़रे-रोजे-मकाफात[३७]

२७ सोच-विचार, २८ बराबरी की शिक्षा, २९. शहरियत, नागरिकता, ३० विजय, ३१ बराबरी का लाभ, ३२. बिजली और भाप ३३. यत्र, ३४. भूकम्प, ३५ मदिरालय के बुजुर्ग, ३६ शक्तिशाली और न्यायी, ३७. बदले के दिन की प्रतीक्षक।

फ़रमाने-ख़ुदा

(फ़रिश्तों से)

डा. मुहम्मद इकबाल

उठो, मिरी दुनिया के गरीबो को जगा दो
काखे-उमरा[१] के दर-ओ-दीवार हिला दो

गर्माओ गरीबो का लहू सोज़े-यकी[२] से
कंजश्के-फरोमाया[३] को शाही[४] से लडा दो

सुल्तानिए-जम्हूर[५] का आता है ज़माना
जो नक्शे-कुहन[६] तुमको नज़र आये मिटा दो

जिस खेत से दहका[७] को मुयस्सर[८] नही रोज़ी
उस खेत के हर खोशःए - गदुम[९] को जला दो

क्यो खालिक-ओ-मखलूक[१०] मे हाइल[११] रहे पर्दे
पीराने-कलीसा[१२] को कलीसा से उठा दो

हकरा बसुजूदी, सनमारा ब तवाफी[१३]
बेहतर है चरागे-हरम-ओ-दैर बुझा दो

मैं नाखुश-ओ-बेज़ार हू मरमर की सिलों से
मेरे लिए मिट्टी का हरम और बना दो

तहज़ीबे-नवी[१४] कारगहे-शीशागरा[१५] है
आदाबे-जुनू[१६] शाइरे-मश्रिक को सिखा दो

१ अमीरो के महल २ विश्वास की गर्मी, ३. तुच्छ गौरैया, ४ बाज, ५. गणतन्त्र, ६ पुराने चिह्न, ७ किसान, ८ प्राप्त, ९ गेहू की वाली, १० खुदा और वदे, ११. वाधक, १२ मदिर की पुरानी मूर्तिया, १३ खुदा को सजदा और मूर्तियो की परिक्रमा, १४. आधुनिक सभ्यता, १५. शीशागरो की, १६. उन्माद के आदाव।

ज़वाले-जहांबानी[1]

जोश मलीहाबादी

जहावानी दहकती आग है गिरती हुई बिजली
हमेशा इसने दुनिया मे किया दौरे-सिहन[2] पैदा

न हो चीने-जफा[3] जब तक जबीने-शहरे-यारी[4] पर
नही होता कुलाहे-खुसरवी[5] मे बाकपन पैदा

उमीद इससे न रख नादान, मुर्गाने-खुश इलहा[6] की
हमेशा जिस बयाबा से हुए ज़ाग-ओ-ज़गन[7] पैदा

तिरा, अय हामिए-ताज-ओ-इल्म[8], क्या यह अकीदा[9] है ?
कि हो मकती है नाफ़े-गर्ग[10] से मुश्केखुतन[11] पैदा

समझता है कि वह हक[12] बात की तलखी[13] को सह लेगा ?
खुशामद से भी जिस माथे पे हो अकसर शिकन पैदा

सुन अय गाफिल कि ता रोज़े-कयामत[14] नस्ले-शाही[15] से
न होगा बज्मे-इंसानी[16] का सदरे-अजुमन[17] पैदा

उठायेगा कहा तक जूतिया सरमायादारी की
जो गैरत[18] हो तो बुनियादें हिला दे शहरयारी[19] की

तने-नाजुक[20] पे तेरे रहम[21] आता है मुझे लेकिन
न दू दावत तुझे किस तरह कूवत आजमाने[22] की

१ बादशाहत का पतन, २ तकलीफों का दौर, ३ जफा के शल, ४. बादशाहत का ललाट, ५ बादशाह की टोपी, राजमुकुट, ६ मधुर-कठ पक्षी, ७ चील और कौवे, ८ ताज और शान के समर्थक, ९. विश्वास, १० भेडिये की नाभि, ११ कस्तूरी, १२ सच, १३ कटुता, १४ क़यामत के दिन तक, १५ शाही खानदान, १६ इसान की बज्म, १७ अध्यक्ष, १८ लज्जा, १९ बादशाहत, २० कोमल शरीर, २१, दया, २२ शक्ति की परीक्षा।

तुझे अय काश ! शाइर की तरह महसूस[२३] हो सकता
नज़र पडती है तुझ पर किस हिकारत[२४] से ज़माने की

अज़ल[२५] से नौए-इंसानी[२६] के हक़ मे तौके-लानत[२७] है
किसी हमजिंस की चौखट पे आदत सर झुकाने की

न हो मगरूर[२८] अगर माइल ब नर्मी[२९] भी हो सुल्तानी[३०]
कि यह भी एक सूरत है तुझे गाफिल[३१] बनाने की

गये वह दिन कि तू ज़िदा[३२] मे जब आसू बहाता था
जरूरत है कफस[३३] पर अब तुझे बिजली गिराने की

गये वह दिन कि तू महरूमिए-किस्मत[३४] पे रोता था
ज़रूरत है तुझे अब आफतो[३५] पर मुस्कुराने की

तडप, पैहम तड़प, इतना तडप बर्के-तवां[३६] बन जा
खुदारा अय ज़मीने-बेहकीकत[३७] आस्मा बन जा

किसान

जोश मलीहाबादी

तिफ्ले - बारा,[१] ताजदारे - खाक,[२] अमीरे - बोस्ता[३]
माहिरे - आईने - कुदरत,[४] नाजिमे - बज्मे - जहा[५]

नाजिमे - गुल,[६] पासबाने - रंग- ओ - बू,[७] गुलशन पनाह[८]
नाज़परवर[९] लहलहाती खेतियो का बादशाह

२३ अनुभव, २४ अपमान, २५. आदिकाल, २६ मानव जाति, २७ धिक्कार का हार, २८. घमडी, २९ नम्रता की ओर झुका हुआ, ३०. बादशाहत, ३१ बेहोश, ३२ जेलखाना, ३३. पिंजरा, ३४ भाग्यहीनता, ३५ कठिनाइया, ३६ बिजली, ३७. तुच्छ।

किसान

१ वर्षा का बच्चा, २ खाक का ताजदार, ३ उपवन का अमीर, ४. प्रकृति के विधान का माहिर, ५. ससार की बज्म का नाजिम, ६ फूलो का प्रबधक, ७ रग और सुगध का रखवाला, ८ उपवन को शरण देनेवाला, ९. गर्वीली।

क़ल्ब[१०] पर जिसके नुमाया[११] नूरो-ज़ुल्मत[१२] का निज़ाम
मुकशिफ[13] जिसकी फरासत[१४] पर मिज़ाजे-सुब्ह-ओ-शाम[१५]

ख़ून है जिसकी जवानी का बहारे-रोज़गार[१६]
जिसके अश्को[१७] पर फरागत[१८] के तवस्सुम का मदार[१६]

जिसकी मेहनत का अरक[२०] तैयार करता है शराब
उड़के जिसका रग बन जाता है जा-पर्वर[२१] गुलाब

साज़े-दौलत[२२] को अता करती है नग्मे जिसकी आह
मागता है भीक ताबानी[२३] की जिससे रूए-शाह[२४]

सरनिगू[२५] रहती हैं जिससे कूवतें[२६] तख़रीब[२७] की
जिसके बूते पर लचकती है कमर तहज़ीब[२८] की

जिसकी मेहनत से भबकता है तनआसानी का बाग
जिसकी ज़ुल्मत[२६] की हथेली पर तमद्दुन[३०] का चराग

धूप के झुलसे हुए रुख़ पर मशक्कत[३१] का निशां
खेत से फेरे हुए मुह घर की जानिब है रवा

इस सियासी रथ के पहियो पर जमाये है नज़र
जिसमे आ जाती है तेज़ी खेतियो को रौद कर

अपनी दौलत को जिगर पर नैशे-गम[३२] खाते हुए
देखता है मुल्के-दुश्मन की तरफ जाते हुए

कतग्र[33] होती ही नही तारीकिए-हुर्मा[३४] से राह
फाकाकश बच्चो के धुदले आसुओं पर है निगाह

१० दिन, ११ प्रकट, १२ अंधकार का नूर, १३ प्रकट, १४. निपुणता, ज़हानत, १५. सुबहो-शाम का स्वभाव, १६ समय का बसत, १७. आसू, १८ निश्चितता, १६ आधार, २० पसीना, २१ जीवनदायक, २२ दौलत का साज, २३ चमक, २४ बादशाह का चेहरा, २५ नतमस्तक, २६ शक्तिया, २७ विनाश, २८ सभ्यता, २६. अधेरा, ३०. सभ्यता, ३१ परिश्रम, ३२ ग्रम का डक, ३३ कटना, ३४. निराशा का अधकार ।

फिर रहा है खूचका[35] आखो के नीचे बार बार
घर की नाउम्मीद देवी का शबावे-सोगवार[36]

सोचता जाता है किन आखो से देखा जायेगा
बेरिदा[37] बीवी का सर, बच्चो का मुह उतरा हुआ

सीम-ओ-ज़र[38] नान-ओ-नमक,[39] आब-ओ-गिजा[40] कुछ भी नही
घर मे इक खामोश मातम[41] के सिवा कुछ भी नही

एक दिल और यह हुजूमे-सोगवारी[42] हाय हाय
यह सितम अय संगदिल सरमायादारी हाय हाय

बेकसो के खून मे डूबे हुए हैं तेरे हात
क्या चबा डालेगी ओ कमबख्त सारी कायनात[43]

जुल्म और इतना कोई हद भी है इस तूफान की
बोटिया हैं तरे जबडो मे गरीब इसान की

इद्दाए - पैरविए - इब्ने - मरियम[44] और तू
देख अपनी कोहनिया जिनसे टपकता है लहू

हां संभल जा अब कि ज़हरे-अहले-दिल[45] के आब हैं
कितने तूफा तेरी कश्ती के लिए बेताब हैं

निज़ामे-नौ[1]

जोश मलीहाबादी

खेल, हा अय नौए-इंसा[2] इन सियह रातो से खेल
आज अगर तू जुल्मतो[3] मे पा ब जौला[4] है तो क्या

३५. खून टपकाता हुआ, ३६. शोकग्रस्त यौवन, ३७ बिना चादर, ३८ सोना-चादी, ३९ रोटी और नमक, ४० पानी और अन्न, ४१ शोक, ४२ गमो का जमघट, ४३. ब्रह्माड, ४४ हजरत ईसा की पैरवी का दावा, ४५ दोस्तो के दिल का जहर।

निज़ामे-नौ

१. नया निजाम, २. मानव, ३. अधकार, ४ पैर में बेड़ी लिये हुए।

मुस्कुराने के लिए बेचैन है सुब्हे-वतन[५]
और चंदे-ज़ुल्मते[६] शामे-गरीबां है तो क्या

चल चुकी है पेशवाई को नसीमे-बागे-मिस्र[७]
आज यूसुफ मुब्तिलाए-चाहे-किनआं[८] है तो क्या

अब खुला ही चाहता है परचमे-बादे-मुराद[९]
आज हस्ती का सफीना[१०] वक्फे-तूफां[११] है तो क्या

खत्म हो जायेगा कल यह नारवा[१२] पस्त ओ-वलद[१३]
आज नाहमवार[१४] सतहे-बज्मे-इमका है तो क्या

मुट्ठियो मे भर के अफशा[१५] चल चुका है इकिलाब
अब्रे-गम,[१६] जुल्फे-जहा[१७] पर बाले-जुम्बा[१८] है तो क्या

साया अफगान[१९] है हयूला[२०] बर्के-ऐवा सोज[२१] का
आज सर्फे-बागे-सुल्ता[२२] खूने-दहका[२३] है तो क्या

तुलूए-खुर्शीदे-नौ[१]

हामिदुल्ला अफसर मेरठी

अमन के मश्रिक[२] से फिर ज़ाहिर सहर होने को है
आफताबे - आफियत[३] फिर जल्वागर होने को है

अहदे - गुल आने को है फूलो की बारिश के लिए
खत्म दौरे-वर्क-ओ-बारूद-ओ-शरर[४] होने को है

जल्वागर होने को है सुब्हे-बहारे-आश्ती[५]
जुल्म से आज़ाद कुल नौए-बशर[६] होने को है

५ वतन की सुबह, ६ अधकार, ७ मिस्र के बागो की हवा, ८ किनआ के कुए मे कैद, ९ अभिलाषा की हवा का झडा, १० नाव, ११ तूफ़ान के लिए समर्पित, १२. अनुचित, १३ ऊच-नीच, १४ ऊची-नीची, १५ चमक, १६ गम का बादल, १७ ससार की जुल्फें, १८ कम्पित, १९ माया किये हुए, २० मूल तत्त्व, २१ महलों पर गिरनेवाली बिजली, २२ बादशाह का बाग़, २३ किसान का खून।

तुलूए-खुर्शीदे-नौ

१. नया सूर्योदय, २. पूर्व, ३ शाति का सूरज, ४ बिजली, बारूद और आग का युग। ५ दोस्ती के बसत का प्रात काल ६ मानव जाति।

खिज्र[७] के औसाफ[८] हर रहरव[९] को बख्शे जायेंगे
रहजनो[१०] से पाक अब हर रहगुज़र[११] होने को है

ज़ुल्मो-खुदगर्ज़ी[१२] का परचम हो रहा है सरनगू
अम्न-ओ-राहत[१३] का निशां पेशे-नज़र[१४] होने को है

जीस्त[१५] की लज़्ज़त[१६] से होगी आशना[१७] नौए-बशर[१८]
यानी हर इक तल्ख[१९] अब शहद-ओ-शकर होने को है

फर्क मिट जाने को है इंसान और इसान का
वहदते - अकवामे - आलम[२०] जल्वागर होने को है

मिल रहा है खाक मे कस्रे - रवायाते - कदीम[२१]
मतलए - खुर्शीदे - नौहर[२२] बाम-ओ-दर होने को है

नये दौर का फ़रमान

शोरिश काश्मीरी

देख कोनैन[१] का जी डूब रहा है साकी
शाखसारो[२] से लहू बहता है
खूने-अहरार[३] सफीहो[४] को रवा[५] है साकी
मुर्गज़ारो[६] से लहू रिस्ता है

दूर साहिल[७] से बहुत दूर उफक[८] से भी परे
नाव गर्काब[९] हुई जाती है
इन घटाटोप अधेरो मे शफक[१०] से भी परे
मौज गिर्दाब[११] हुई जाती है

७ मार्ग-प्रदर्शक, ८ गुण, ९ पथिक, १०. चोर, ११ रास्ता, १२ अत्याचार और स्वार्थ, १३ सुख-शाति, १४ नजर के सामने, १५ जिंदगी, १६ आनद, स्वाद, १७ परिचित, १८ मानव-जाति, १९ कटु, २० ससार के राष्ट्रो की एकता, २१ पुरानी रिवायतो का महल, २२ जहा से नया सूरज निकलता है।

नये दौर का फ़रमान

१. दोनो दुनियाए, २ डालिया, ३. स्वयंसेवको का खून, ४ क़मीनो, ५ जाइज़, ६ उपवन, ७. किनारा, ८. क्षितिज, ९ डूबना, १० लालिमा, ११ भवर।

आज तक गर्दिशे-हालात[१२] की सगीनी पर[१३]
रूहे-कोनैन[१४] भडकती ही रही
सुरमई शब मे झलकती हुई रगीनी पर
नब्ज़े-ऐयाम[१५] धडकती ही रही

बागबा रस्मे-गुलिस्ता को बदलते ही रहे
हाय अफसोस ! अज़ीज़ाने-चमन
रहनुमा जाद ए-मजिल[१६] से भटकते ही रहे
आह ! अय सफलगिए-चर्खे-कुहन[१७]

अहले-महफिल का लहू बाद ए-गुलफाम[१८] बना
जगमगाते हुए पैमानो मे
नाल ए-दर्दकशा खद ए-समसाम[१९] बना
झिलमिलाते हुए ऐवानो[२०] मे

वक्त के साथ बदलते हुए धारे की सदा
जगे-जम्हूर[२१] का उनवान[२२] बनी
टूटती शब के सहरताब सितारे की सदा
इक नये दौर का फरमान बनी

कुछ दिनो और अधेरे की फरावानी[२३] है
तिलअते-सुब्हे-दरखशा[२४] की कसम
कुछ दिनो और अज़ीज़ो पे सितमरानी है
कज कुलाहो[२५] के गरीबा की कसम

आखिर इक रोज यह दौलत का फसू[२६] टूटेगा
रगमहलो के दरीचो से लहू फूटेगा

१२ समय का चक्र, १३ गभीरता, १४ उभयलोक की आत्मा, १५ समय की नाड़ी, १६ मजिल का मार्ग, १७ बूढ़े आकाश की नीचाई, १८ फूलों के रग की शराब, १९. तलवार की हसी, २० महल, २१ गणतत्र की लडाई, २२ शीर्षक, २३. अधिकता, २४. प्रकाशमान सुबह की किरण, २५ टेढ़ी टोपी वाले, २६ जादू ।

ज़रा सब्र

शोरिश काश्मीरी

इक नये दौर की तरतीब[1] के सामां होगे
दस्ते-जम्हूर[2] मे शाहो के गरीबा होगे

बर्क[3] खुद अपनी तजल्ली की मुहाफिज़[4] होगी
फूल खुद अपनी लताफत[5] के निगहबा होगे

नग्मा-ओ-शेर[6] का सैलाब उमड आयेगा
वक्त के सहर[7] से गुचे भी गज़लख्वा होगे

नाव मजधार से बेखौफ-ओ-खतर खेलेगी
नाखुदा[8] बर्बते-तूफा[9] पे रजज़ख्वा[10] होगे

राहरव[11] अपनी मुसाफत[12] का सिला[13] मागेंगे
रहनुमा अपनी सियासत पे पशेमा[14] होगे

१ क्रम, २ गणतन्त्र के हाथ, ३ बिजली, ४ रक्षा करने वाली, ५ कोमलता, ६. शेर और सगीत, ७ जादू, ८. नाविक, ९ तूफान का वाद्य, १० युद्धगीत गाते हुए, ११ यात्री, पथिक, १२ यात्रा, १३ इनाम, १४ शर्मिंदा ।

छठा अध्याय

(सन् १९३५ से १९४६ तक)

पहला भाग

सिविल नाफ़रमानी की तहरीक
नया क़ानून
और उसके बाद

इंडिया ऐक्ट ३५

जफर अली खां

सदरे-आजम[1] की सखावत[2] मे नही हमको कलाम[3]
लेकिन उनसे पूछते हैं हम कि हमको क्या मिला

कागजी घोड़ा दिया हमको सवारी के लिए
इक खिलौना भेजकर बच्चो का दिल बहला दिया

अपने पीने के लिए शैम्पेन भर ली जाम मे
हिंद के रिंदाने-दौर आशाम[4] को ठर्रा दिया

मेवाखोरी[5] के लिए चुन्ने लगे जब गोलमेज
रख लिया खुद मग्ज[6] छिलको पर हमे टरखा दिया

आईने-जदीद[1]

अहमक फफूदवी

हिन्द के सर पर मुसल्लत[2] हो गया आईने-नौ[3]
मक्रो-इस्तिबदाद[4] की चोटी से फरमाकर नुजूल[5]

१. अध्यक्ष महोदय, २ उदारता, ३. शक, ४ शराब पीने वाले, ५ मेवाखाना, ६. बीज।

आईने-जदीद

१. नया विधान, २ थोपना, ३ नया विधान, ४ धोखा और अत्याचार, ५ उतरना।

मग्रिबी[६] कागज़तराशो[७] ने कम-ओ-वेश[८] इक सदी
सर्फ़[९] की है तब बना पाया है यह ख़ुशरंग[१०] फूल

यह वह चश्मा[११] है कि जिसके सामने आवे-फ़ुरात[१२]
अपनी ख़िस्सत[१३] अहले-हक़[१४] के वास्ते जायेगा भूल

जान बुल साहब हैं कितने शुक्रिये[१५] के मुस्तहक़[१६]
दे दिया हिन्दोस्तानी वहशियों[१७] को होम रूल

उनका फ़रमाना[१८] अगर सच है तो सच कहते हैं वह
यह वह नेमत[१९] है बहुत दुश्वार[२०] था जिसका हुसूल[२१]

है हुकूमत की यह फ़ैयाज़ी[२२] बहुत ही शानदार
इस रिआया-पर्वरी[२३] पर दग[२४] है अक्ले-गफ़ूल[२५]

उनको हैरत[२६] है कि इतनी ख़ूबियो के बावुजूद
मुल्क वाले किसलिए हैं इसके इजरा[२७] से मलूल[२८]

किसलिए धरते हैं इसके नाम से कानो पे हाथ
क्यो नही करते बिला चू-ओ-चरा[२९] इसको क़ुबूल[३०]

है कही जलसो मे पास इसके लिए लानत[३१] का वोट
है जुलूसो मे किसी जा[३२] इसके सर पे ख़ाक धूल

कोई देता है इसे तशबीह[३३] ख़ारिस्तान[३४] से
कोई कहता है इसे बागे-सियासत[३५] का बबूल

मैं यह कहता हू यह सब हगाम.ए-बहस-ओ-निज़ाअ[३६]
देखिये चश्मे-हक़ीक़त[३७] से तो है बिल्कुल फ़ुज़ूल[३८]

मुल्क वालो से हुकूमत की है यह इक दिल लगी
आज उसको हक़ भी है इसका कि है 'अप्रेल फूल'

६ पश्चिमी, ७ कागज काटने वाले, ८ कम-ज्यादा, लगभग, ९ व्यतीत, खर्च, १० सुदर
११ स्रोत, १२. फुरात का पानी, १३ कजूमी, १४ सत्य के पुजारी, १५ धन्यवा
१६. पात्र, १७ जगली, असभ्य, १८ कहना, १९. सम्पत्ति, २०. कठिन, २१ प्राप्ति
२२ उदारता, २३ प्रजा-पोषण, २४ आश्चर्यचकित, २५ निकृष्ट, २६ आश्चर्य, २७ सचा
लन, प्रारम्भ, २८ दुखी, २९ आनाकानी, ३० स्वीकार, ३१. धिक्कार, ३२. जगह
३३ उपमा, ३४ काटो का वन, ३५ राजनीति का उपवन, ३६ वैमनस्य और बहस क
हगामा, ३७ यथार्थ की आंख, ३८ व्यर्थ।

विफ़ाक़[१]

जोश मलीहाबादी

इस नौह.ए-ख़िज़ां[२] को समझना नवेदे-गुल[3]
इक बेपनाह चूक है, इक सख़्त भूल है

यह बोस्तां,[४] यह अहले-सियासत[५] की शाखे-गुल
शैता[६] के पास बाग की सूखी बबूल है

है यह नया निकाह[७] कि दूल्हा तो है ख़मोश,
काज़ी यह कह रहा है कि जी से क़ुबूल[८] है

हुशियार अहले-हिन्द कि फिर इस ज़मीन पर
गर्दू[९] से एक ताज़ा बला[१०] का नुज़ूल[११] है

कहते हैं जिसको दौलते-बेदार[१२] अहले-गर्ब[13]
वह इक मताए-कास.ए-जिंसे-फ़ुज़ूल[१४] है

नादां[१५] अकड़ रहे हैं कि हासिल[१६] हुआ विफाक[१७]
दाना[१८] समझ रहे हैं कि अप्रेल फूल है

१. एकता, २. पतझड़ का मातम, ३. फूल का निमन्त्रण, ४. उपवन, ५ राजनीतिज्ञ, ६ शैतान, ७ विवाह, ८ स्वीकार, ९ आकाश, १० विपत्ति, ११ अवतरण, १२. जाग्रत सम्पत्ति, १३ यूरोप के लोग, १४ व्यर्थ की वस्तु के पियाले की सम्पत्ति, १५ नासमझ, १६. प्राप्त, १७ एकता, १८ समझदार।

नवेदे-आज़ादि-ए-हिन्द[1]

जफर अली खा

वह दिन आने को है आजाद जब हिन्दोस्ता होगा
मुबारकबाद उसको दे रहा सारा जहा होगा

अलम[2] लहरा रहा होगा हमारा रायेसीना पर
और ऊंचा सब निशानो से हमारा यह निशा होगा

जमी वालो के सर खम[3] इसके आगे हो रहे होगे
सलामी दे रहा झुक झुक के उसको आस्मा होगा

ब्रहमन मदिरो मे अपनी पूजा कर रहे होगे
मुसलमा दे रहा अपनी मसजिद मे अजा होगा

जिन्हे दो वक्त की रोटी मुयस्सर[4] अब नही होती
बिछा उनके लिए दुनिया की हर नेमत[5] का ख्वा[6] होगा

मन-ओ-तू[7] के यह जितने खर्खशे[8] है मिट चुके होगे
नसीब[9] उस वक्त हिन्दू और मुसलमा का जवा होगा

तवाना[10] जब खुदा के फज्ल[11] से हम नातवा[12] होगे
गुरुर[13] उस वक्त अग्रेजी हुकूमत का कहा होगा

१ भारत की आजादी की शुभ सूचना, २ ध्वजा, पताका, ३ नतमस्तक, ४ प्राप्त, ५ स्वादिष्ट पदार्थ, ६ थाली, ७ मैं और तू, ८ विघ्न, बाधा, ९ भाग्य, १० शक्तिशाली, ११ दया, १२ दुर्बल, १३ घमंड।

ज़माने का चैलेंज

फ़िराक गोरखपुरी

हुस्ने - माज़ी[1] से जो लिपटा है वह सौदाई[2] है
कि बदल जाने की दुनिया ने कसम खाई है

दास्ता[3] अपनी हो तारीख[4] ने दुहराई है
हो खबर तुझको तो होती भी यही आई है

मौत सौ मर्तबा जिस राह मे त्योराई है
वहीं दर्राती हयाते - बशरी[5] आई है

राजहठ से जो प्रजाहठ कभी टकराई है
वक्त के दिल के धड़कने की सदा[6] आई है

इस तमद्दुन[7] ने खिलाये हैं गुलिस्ता[8] क्या क्या
खूने - मुफ्लिस[9] से यह सारी चमनआराई[10] है

देख बफरी हुई दुनिया को दबाने की न सोच
बाज़ आयेगी बगावत से न बाज़ आई है

इंकिलाब और किसे कहते है यह रंग तो देख
ज़िंदगी मौत को भी साथ लगा लाई है

नही खैर अब तिरी अय नज्मे - कुहन,[11] मेरी भी
कुछ न कुछ रगे - जमाना से शनासाई[12] है

१ भूतकाल का सौंदर्य, २. पागल, ३ कहानी, ४ इतिहास, ५ मानव-जीवन, ६ आवाज़, ७ सभ्यता, ८. उपवन, ९ गरीब का खून, १० उपवन की सजावट, ११ पुराना विधान, १२ जान-पहचान ।

देखना यह है वरसती है कि वरसाती है आज
दामने-वर्क[13] को लहरा के घटा छाई है

रुपया राज करे आदमी वन जाये गुलाम
ऐसी तहज़ीव[१४] तो तहज़ीव की रुस्वाई[१५] है

चंद खामोश शरारे[१६] थे हवा मे जिनको
खिर्मने - नज़्मे - कुहन[१७] देख के थर्राई है

आज खमियाज़े[१८] से सदियो की फज़ा[१९] है लर्जा[२०]
नयी दुनिया की यह आई हुई अंगड़ाई है

कैसी परछाइयां दुनिया पे पडी है जिस वक्त
मौत की ज़ुल्फे-सियह[२१] ज़ीस्त[२२] पे लहराई है

दौलत-ओ-इल्म[२३] की साज़िश[२४] है जो इंसा के खिलाफ
वक्त की रूह खवर इसकी उडा लाई है

अश्के - खूनी[२५] से है मजदूर के रगीन फ़ज़ा
यह गुलावी[२६] भी इन्ही आखो ने छलकाई है

क्यो न हो सीन.ए - मुफ्लिस[२७] से चुराया है लहू
सेठ जी खुश भी हैं, रंगत भी निखर आई है

अभी मिट्टी मे मिला आये हैं नाज़ियत[२८] को
साम्राजो की भी सुनते हैं खवर आई है

आलमे - नज़अ[२९] है आइने - शहशाही[३०] का
चारागर[३१] अव तिरी वेकार मसीहाई है

मुझमे यह जुरअते - इंकार[३२] सुन अय शेखे-ज़मा
तोड़ती ताड़ती हर हदे - यकी[३३] आई है

१३. बिजली का आंचल, १४. सभ्यता, १५ वदनामी, १६ चिगारी, १७ पुरानी व्यवस्था का खलियान, १८ पश्चाताप, १९ वातावरण, २०. कम्पायमान, २१ काली लटें, २२ जीवन, २३. धन और ज्ञान, २४ षड्यत्र, २५ खून के आंसू, २६. शराव, २७ गरीव का सीना, २८. नाज़ीवाद, २९ मौत का समय, ३० साम्राज्य का विधान, ३१. चिकित्सक, ३२. इंकार का साहस, ३३ विश्वास की सीमा।

नौजवानों से ख़िताब

शोरिश काश्मीरी

अय लश्करे-मिल्लत[1] के रज़ाकार[2] जवानो
आज़ादि-ए-कामिल[3] के तलबगार[4] जवानो

तकदीर को तदवीर[5] के बाज़ू पे झुका दो
नामूसे-वतन[6] के लिए जानो को लड़ा दो

ख़ुर्शीदे - शहशाही[7] को ढलते हुए देखू
सीने मे अज़ाइम[8] को मचलते हुए देखू

यह मुल्क हुआ जिसके तशद्दुद[9] का निशाना
अब उसकी तवाही[10] का भी आया है ज़माना

योरप की फजाओ मे कज़ा[11] जाग उठी है
अब जंग कफनचोर लुटेरो मे ठनी है

हिटलर के इरादो का बदलना नही मुम्किन
लदन के ख़ुदाओ का संभलना नही मुम्किन

उजड़े हुए बागो की वहारो को पुकारो
अफलाके - शहादत[12] के सितारो को पुकारो

कहता हूं सुनो, जोशे-जवानी को पुकारो
चलती हुई तेगो[13] की रवानी[14] को पुकारो

१ धर्म-सेना, २ स्वयसेवक, ३ पूर्ण स्वतन्त्रता, ४. इच्छुक, ५. उपाय, ६ देश का सतीत्व, ७ साम्राज्य का सूर्य, ८ सकल्प, साहस, ९. हिंसा, १० वरवादी, ११. मौत, १२. शहादत के आकाश, १३. तलवार, १४ प्रवाह।

मक्तल[१५] से उठा लाम्रो शहीदो के सरो को
आवाज़ दो आवाज तवहहाल[१६] घरो को

लेना है मुझे हिन्द की तज़लील[१७] का वदला
नामूस[१८] की बुझती हुई कदील का वदला

मश्रिक[१९] के जवानो को सभलते हुए देखू
यह हिन्द की सरकार वदलते हुए देखू

भारत माता

जमील मजहरी

माता माता प्यारी माता
वच्चे तुझ पर वारी माता
ओ माता! ओ भारत माता
तुझपे खुदा की रहमत माता
सुदरी तू हरियाली तू है
धानी आचल वाली तू है
फूल खिलायें तेरी हवाए
हुन[1] वरसायें तेरी घटाएं
शहद की नहरें दूध की धारें
गोदी मे जन्नत की वहारें
मीठे मीठे फल देती है
अन्न देती है जल देती है
कंगन और चूडी की झनाझन
शाइर के दिल की हर धडकन

१५. वधस्थल, १६ वरवाद, १७ अपमान, १८ सतीत्व, इज्ज़त, १६. पूर्व।

भारत माता

१ सोना।

नाम तिरा जपती है माता
तू कितनी प्यारी है माता
चादनी रातो के जल्वे मे
बिंद्रावन के सन्नाटे मे
जब तारो की सभा सजती है
हिरदय की वसी बजती है
आधी रात को काली कोयल
मौसम की मतवाली कोयल
फैलती है जब आम की खुशबू
गीत तिरा गाती है कू कू
जग देता है तुझको दुआए
हम तेरा गुण किस तरह न गाए
है मशहूर तिरी मेहमानी
पूरब पच्छिम तेरी कहानी
तबरेजी,[२] तूसी,[३] शीराज़ी[४]
मिस्री,[५] रोमी[६] और हिजाज़ी[७]
आर्मीनी, चीनी, जापानी
पीकर तेरा मीठा पानी
हो गये सौ जी जान से तेरे
डाल दिये गगा पर डेरे
घर को छोडा दर को छोडा
तुझसे अपना नाता जोडा
तूने उन्हे गोदी मे उठाया
पाला और परवान चढाया
तेरा घर है सबको प्यारा
सर ऊचा क्यो हो न हमारा
सबकी माता हमारी माता
प्यारी माता प्यारी माता

२ तबरेज़ के वासी, ३ तूस के वासी, ४ शीराज़ के वासी, ५ मिस्र के वासी, ६ रोम के वासी, ७ हिजाज़ के वासी।

जग माता भारत महरानी
सतवंती, धनवंती, ज्ञानी

तुझपे सलाम अय सोहनी माता
जग माता, जग मोहनी माता

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
तेरी गोद मे भाई भाई

छीटो मे तेरे बादल के
साये मे तेरे आंचल के

मस्जिद, गिर्जा और शिवाला
लका से ता कोहे-हिमाला

गगा और जमुना की रवानी
कहती है माता तेरी कहानी

अमरीका के ऐवानो में
अफ्रीका के मैदानो मे

मिस्र-ओ-अजम के बाजारो मे
यूरप के दौलतजारो मे

मुल्के-अरब की पाक फजा मे
मक्के के तपते सहरा में

तेरी सबीलें जारी माता
प्यारी माता प्यारी माता

ओ दयालू मा ओ दानी मा
सतवती मां, कल्याणी मां

आचल मे तेरे हुन बरसें
और तेरे बच्चे उनको तरसें

मन के रोगी पेट के मारे
जीते हैं गैरो के सहारे

ज़िल्लत,[८] रुस्वाई,[९] बदनामी
सौ धुतकारें एक गुलामी

८ अपमान, ९ बदनामी।

कैसी हवा पच्छिम से आई
जल गयी तेरी खेती माई

वीरानी हर सम्त[10] बरसती
उजड़ी नगरी सूनी बस्ती

क्या हुई वो मामूर[11] फज़ाए
दौलत की बहती गंगाएं

नौरतनी दरबार कहा है
परतावी तलवार कहा है

मा तेरी तकदीर है कैसी
हाथो मे ज़ंजीर है कैसी

हाथ बंधे हैं बाल खुला है
माग उजड़ी है सर नगा है

वह तैमूरी ताज कहा है
चद्र वंशी राज कहा है

मुखड़ा क्यो मैला मैला है
काजल क्यो फैला फैला है

आसू क्यो हैं जारी माता
प्यारी माता प्यारी माता

आ, हम तेरे बाल संवारें
तुझ पर अपनी जानें वारें

सीस तिरे चरणो पे नवायें
प्रीत के मीठे मंतर गायें

कौमियत[12] की कड़ियां जोड़ें
लानत[13] की ज़जीरें तोड़ें

नाम तिरा ले ले के पुकारें
सोती गैरत[14] को ललकारें

प्यारी मां मन क्यो मैला कर
सर ऊंचा कर और ऊंचा कर

१०. दिशा, ११. परिपूर्ण, १२. राष्ट्रीयता, १३. धिक्कार, १४ आत्मसम्मान।

देख अपने बच्चो का लश्कर[15]
ठाठें ले जिस तरह समदर

देख खडे हैं तेरे सिपाही
रुख[16] पे जलाले-शाहंशाही[17]

जनता उनको क्यो न दुआ दे
चितवन से जाहिर हैं इरादे

लहराता है हाथ मे जमजम
मा तेरे इकवाल[18] का परचम[19]

जब कहते हैं जय माता की
दुनिया गूज उठती है खुदा की

माता तेरे दूध की धारें
क्यो न रगों मे मौजें मारें

घर को तजे तनमन को त्यागे
नारे हैं आकाश से आगे

जीवट हैं यह जियाले हैं यह
तेरी गोद के पाले हैं यह

तेरे लिए जानो पर खेले
ले ले इनकी वलाए ले ले

यह तुझको आजाद करेंगे
घर तेरा आवाद करेंगे

मत रो अय दुखियारी माता
प्यारी माता प्यारी माता

याद है मा वह तेरा जमाना
तख्त शहाना, ताज शहाना

गिर्द तिरे भगतो की कतारें[20]
हाथो मे नंगी तलवारें

क्या हुए मा वह तेरे जियाले
टेढी तिरछी पगडी वाले

१५ सेना, फ़ौज, १६ चेहरा, १७ साम्राज्य का प्रताप, १८ प्रताप, तेज, १९, झडा.
२० पक्तिया ।

काघे जिनके तख्त के पाये
परजा पर भगवान के साये

तूफानो को झेलने वाले
मौत से अपनी खेलने वाले

नज़रें 'इस मजर[२१] की प्यासी
आखो मे हैं जगे-पलासी

याद है वह चलती तलवारें
वह झकारें वह ललकारें

सीने ताने तेरे प्यारे
जी को तोड़े जान को हारे

गूजे, गरजे, बरसे, कड़के
मर गये तेरे नाम पे लडके

गूगी दुनिया बोल रही है
धरती अब तक डोल रही है

ललकारे इस गूजते रण की
मोहन लाल और मीर मदन की

हैं अब तक बेचैन फ़जा मे
भटकी फिरती है सहरा मे

टकराती रहती हैं दिलो से
जैसे हवा उठते पौदो से

मा वह तेरी कोख के बच्चे
धुन के पक्के कौल[२२] के सच्चे

हो गये तेरी लाज पे कुर्बां[२३]
तेरे मुकद्दस[२४] ताज पे कुर्बां

अब है हमारी बारी माता
माता माता प्यारी माता

ओ माता गौतम की माता
अर्जुन और भीषम की माता

२१ दृश्य, २२ वचन, २३. न्यौछावर २४. पवित्र।

टीपू की मा, अकबर की मा
सतवती मा, बलवंती मा

शक्ती तुझसे सत तुझसे है
मत तुझसे हिम्मत तुझसे है

शोरिश[२५] दे सौदा[२६] दे सर दे
दिल का दिया फिर रौशन कर दे

दार-ओ-रसन[२७] का खेल सिखा दे
नाम पे अपने भेंट चढा दे

टीपू और पोरस पैदा कर
एक उठे तो दस पैदा कर

देस का हर सेवक हो आधी
हर बच्चा आज़ाद और गाधी

हर पुत्री हो सरोजनी माई
हर माई हो लक्ष्मी बाई

हर दिल मे इक तूफा कर दे
शोला[२८] भर दे, बिजली भर दे

जी मे अपने लगन पैदा कर
मन उजला कर तन उजला कर

जीवन दे जीवन का फल दे
शक्ती दे हिम्मत दे बल दे

ज़ंजीरें हैं भारी माता
प्यारी माता प्यारी माता
माता माता प्यारी माता
बच्चे तुझ पर वारी माता

२५ विप्लव, २६ उन्माद, २७ फासी का फन्दा, २८ ज्वाला।

वफ़ादाराने-अज़ली[1] का पैग़ाम[2] शहंशाहे-हिन्दोस्तां के नाम

जोश मलीहाबादी

ताजपोशी[3] का मुबारक दिन है अय आलम पनाह[4]
अय गरीबो के अमीर अय मुफ्लिसो के बादशाह

अय गदा पेशो[5] के सुल्ता[6] जाहिलो के ताजदार
बेज़रो[7] के शाह, दरयूज़ागरो[8] के शहरे-यार

अय रईसे-पाकदिल अय शहर यारे-नेक नाम
भूख की मारी हुई मखलूक[9] का लीजे सलाम

रास कल आई थी जैसे आपके मां बाप को
यूही रस्मे-ताजपोशी हो मुबारक आप को

दिल के दरिया नुत्क[10] की वादी मे वह सकते नही
आप की हैबत[11] से हम कुछ खुल के कह सकते नही

लेकिन इतना डरते डरते अर्ज करते हैं जरूर
हिन्द से वाकिफ किये जाते नही शायद हुजूर

आपके हिन्दोस्ता के जिस्म पर बोटी नही
तन पे इक धज्जी नही, पेट को रोटी नही

ताजपोशी ने जो दी हैं भीख मे दो रोटियां
शुक्रिया इन रोटियों का अय शहे-गर्दूं निशा[12]

१ आदिकाल से वफादार, २ सन्देश, ३ राज्याभिषेक, ४ ससार को शरण देने वाले, ५ गरीब, ६. बादशाह, ७ निर्धन, ८ भिखारी ९ जनता, सृष्टि १० ज़बान, वाणी, ११ भय, डर, १२ आकाश तक के बादशाह ।

रोटियां लेकिन जो दी हैं आपके खुद्दाम[13] ने
आ सकेंगी क्या यह कल की इश्तहा[14] के सामने

आज की दो रोटियो से चैन हम पायेंगे क्या
खा भी लें आज अगर डटकर तो कल खायेंगे क्या

सिर्फ सडको के चरागा[15] से नही चलता है काम
कुछ दिलो की रौशनी का भी किया है एहतिमाम[16]

आपके परचम[17] के नीचे है जो कौमे-नामुराद[18]
खाये जाता है इसे खुद्दामे-आली[19] का इनाद[20]

मेदा महरूमे-गिज़ा[21] है कीसा[22] है महरूमे-ज़र[23]
आपके उम्माल[24] ने लूटा है हमको इस कदर

आपके फर्के-मुबारक[25] को दिया है जिसने ताज
आज इस भारत का सर है और तेगे-एहतियाज[26]

हर जबी[27] पर है शिकन, इस कजकुलाही[28] की कसम
हर मका इक मकबरा[29] है कस्रे-शाही[30] की कसम

आपके सर पर है ताज, अय फातहे-रुए-ज़मी[31]
और हम अहले-वफा[32] के पांव मे जूती नही

हम वफाकैश[33] आपकी नजरो से भी गिर जायेंगे
आप भी हमसे खुदा की तरह क्या फिर जायेंगे

हमसे बागी किस्म के अफराद[34] कहते हैं यह बात
सिर्फ मूसा बनके फिरऔनो से मुम्किन है निजात[35]

१३ सेवक, १४ भूख, १५ रोशनी, दीपोत्सव, १६ प्रबंध, १७ झण्डा, १८ असफल राष्ट्र, १९ आपके नौकर, २० दुश्मनी, २१. अन्न से वंचित, २२ जेब, २३ धन से वंचित, २४ कर्मचारी वर्ग, २५ सिर, सर, २६ आवश्यकता की तलवार, २७ ललाट, २८ ताज का टेढापन, २९ कबर, ३० राजमहल, ३१ धरती के विजेता, ३२ वफादार लोग, ३३ वफादार, ३४. व्यक्ति, ३५ मुक्ति ।

हम तो मूसा बन नही सकते किसी तदबीर[३६] से
फिर भी खाइफ[३७] है सियासी ख्वाब की ताबीर से

नौजवां बफरे हुए हैं भूक से दिल तग हैं
जर्रे-जर्रे से अया आसारे - हर्ब - ओ - जंग[३८] है

किश्वरे-हिन्दोस्ता मे रात को हगामे-ख्वाब
करवटें रह रह के लेता है फजा मे इकिलाब

गर्म है सोजे-बगावत[३९] से जवानो का दमाग
आधिया आने को हैं अय बादशाही के चराग

हम वफादाराने-पेशी,[४०] हम गुलामाने-कुहन[४१]
कब्र जिनकी खुद चुकी तैयार है जिनका कफन

तुन्द रौ[४२] दरिया के धारे को हटा सकते नही
नौजवानो की उमंगो को दबा सकते नही

मदह[४३] अब डर डर के हम करते हैं यू सरकार की
जैसे कोई धार छूता है उपी[४४] तलवार की

आप से क्यो कर कहे, हिन्दोस्ता पुर हौल[४५] है
आपका नाम आग है और काग्रेस पिट्रोल है

वह सुरगें खुद रही हैं अल हफीज़-ओ-अलअमा[४६]
सिर्फ इगलिस्तान क्या यूरप समा जाये जहा

नौजवा करते है जब सरगोशिया[४७] पैकार[४८] की
साफ आती है सदा चलती हुई तलवार की

आपके ऐवान[४९] मे रक्सा[५०] हैं लपटें ऊद की
हिन्दियो की सास से आती है बू बारूद की

३६ उपाय, ३७ भयभीत, ३८ युद्ध के लक्षण, ३९ बगावत की गर्मी, ४० पुराने वफादार, ४१ पुराने गुलाम, ४२ तीव्रगति, ४३ प्रशसा, ४४ तेज़, ४५ भयानक, ४६ अल्लाह अपनी शरण में रखे, ४७ कानाफूसी, ४८ जग, लडाई, ४९ महल, ५०. नृत्य करती हुई।

गौर से सुन लीजिये ग्रय ख्वाज ए-ग्राली नज़ाद[५१]
ग्रापको धोके मे रख सकते नही हम खानाज़ाद[५२]

कीजिये दरमा[५३] मे उजलत[५४] वरना दिल डर जायेंगे
हाकिम ग्रपने घर चले जायेंगे हम मर जायेंगे

चौंकिए जल्दी हवाए तुन्द-ग्रो-गर्म[५५] ग्राने को है
ज़र्रा जर्रा ग्राग में तब्दील हो जाने को है

ज़िन्दगी की ललकार

फिराक गोरखपुरी

ग्राग्रो ग्रौर सब्रो-सुकू[१] की सूरतो को छीन लो
ग्राज फिर से मेरे दिल की राहतो[२] को छीन लो

कुछ इरादे भी तो चमकें क्या कज़ा[३] ग्रौर क्या कदर[४]
वतने-मुस्तक्बिल[५] से ग्रपनी किस्मतो को छीन लो

ज़िन्दगी को क्यो बना रखा है इक ज़िन्दाने-तग[६]
इस फज़ा इस बहरोबर[७] की वुसग्रतो[८] को छीन लो

देखना फिर किस तरह मिलती है वह काफिर निगाह
ख्वाब ग्रालूद[९] ग्रखडियो से गफलतो[१०] को छीन लो

देखना काशानःए-इसा[११] के बाम-ग्रो-दर[१२] की शान
ग्रहले-दुनिया ग्रास्मा की रिफग्रतो[१३] को छीन लो

५१ उच्चवश के, ५२ दासी की ग्रौलाद, ५३ इलाज, ५४ शीघ्रता, ५५ तीव्र ग्रौर गरम।

ज़िन्दगी की ललकार

१ शान्ति ग्रौर साहस, २ सुख-चैन, ३. मौत, ४ इज्ज़त, ५ भविष्य का गर्भ, ६ जेलखाना, ७ समुद्र, ८ विस्तार, ९ नींद भरी, १० नींद, बेहोशी, ११ मानव का घर, १२ दरवाज़े ग्रौर छत, १३ ऊचाइया।

वढके धावा बोल दो खुल जायेंगे गजे-निहा[१४]
वत्ने-गेती[१५] मे दफीना[१६] दौलतो को छीन लो

उसका खिचना उसका मिलना उसके वस मे क्यो रहे
हुस्न[१७] की सब दूरियो सब कुर्वतो[१८] को छीन लो

जौरे-गुलची[१९] बरतरफ आ काफलो से डर भी क्या
उनके रगो और उनकी नकहतो[२०] को छीन लो

राह खोटी कर रही है मंजिले-देरी की याद
जिन्दगी से जिन्दगी की रजअतो[२१] को छीन लो

जीते मुर्दे देर तक मुर्दों के वारिस रह चुके
इनसे अब अहले-सलफ[२२] की कुर्वतो[२३] को छीन लो

जिन्दगी और मौत से अय अहले दिल कुछ ले मरो
जिन्दगी और मौत की सब बर्कतो को छीन लो।

कर दो इक वज्मे-चरागा शामे-हिज्रा[२४] को फिराक
कारवा दर कारवा इन जुलमतो[२५] को छीन लो

बेदारि-ए-मश्रिक[१]

रविश सिद्दीकी

इकिलाव ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक[२] ! इकिलाव
वक्त आया है कि उठे रूए-गेती[3] से निकाव
इकिलाव ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक ! इकिलाव

१४ गुप्त खजाने, १५ धरती का गर्भ, १६ दफ्न की हुई, १७ सौंदर्य, १८ निकटता, १९ गुलची का अत्याचार, २० सुगध, २१ प्रत्यागमन, वापस आना, २२ पूर्वज २३ निकटता, २४ विरह की शाम, २५ अधकार।

बेदारि-ए मश्रिक

१. पूर्व की जागृति, २ पूर्व की धरती के वासियो, ३ धरती का मुख।

अय जमाले-शमए-आज़ादी[४] के परवानो ! उठो
सो चुके अय कस्रे-मिल्लत[५] के निगहवानो[६] ! उठो
वाद ए - वेदारिए - मश्रिक[७] के मस्तानो ! उठो

अव जगा भी दो वहुत कुछ सो चुका है आफ्ताव[८]
इंकिलाव ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक ! इंकिलाव

नौजवानो ! अव नशाते-कुंजे-तन्हाई[९] कहा ?
अय शुजाओ[१०] ! तुम कहा यह ऐश पैमाई[११] कहा ?
फूक दो महफिल को, वक्ते-महफिल आराई[१२] कहा

दूर फेंको सागर-ओ पैमाना[१३]-ओ - चग-ओ-रवाव[१४]
इंकिलाव ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक[१५] ! इंकिलाव

ज़िन्दगी-ताविन्दगी[१६] है रूहे-आजादी के साथ
ज़िन्दगी-पाइन्दगी[१७] है रूहे-आज़ादी के साथ
ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है रूहे-आज़ादी के साथ

ज़िन्दा रहना है तो आज़ादी से कैसा इजतिनाव[१८]
इंकिलाव ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक इंकिलाव

अव भी आखो मे तुम्हारी रगे-गफलत दीदा है
ख्वावे-मुस्तक्विल[१९] की हर तावीर नापोशीदा है
इतिज़ारे-सुवह कैसा ! सुवह खुद ख्वावीदा[२०] है

तुम ही खुद वढकर उलट दो महरे-जर्री[२१] का नकाव
इंकिलाव ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक ! इंकिलाव

वर्क हो आखो मे, दिल मे आतिशे-परवाना[२२] हो
होश भी आये तो लव पर नार ए - मस्ताना हो
खामुशी मे जुरअते-वेदार[२३] का अफसाना हो

४ आज़ादी की शमा का सौंदर्य, ५ धर्म का महल, ६ पहरेदार, ७ पूर्व की जागृति की मदिरा, ८ सूर्य, ९. एकात कुज का सुख, १० वहादुरो, ११ ऐश्वर्य, १२ महफिल सजाने का समय, १३ मधुकलश, १४ वीणा, १५ पूरव के वासी, १६ आभा, प्रकाश, १७. अनश्वरता, १८ विरक्ति, १९. भविष्य का स्वप्न, २० सोया हुआ, २१ सुनहरा सूर्य, २२ परवाने की आग, २३ जाग्रत साहस ।

जिन्दगी कब तक असीरे-एतकाफ़-ओ-एहतिसाब[२४]
इकिलाब ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक ! इंकिलाब

ज़ीस्त की क़ीमत ही क्या है पेशे मर्दाने-वफा[२५]
कोई पूछे कर्बला से राज़े-पैमाने-वफा
हा दिखा दो अय शुजाओ[२६] ! जोशे-अर्माने-वफा

बेहदूद-ओ-बेकनार - ओ - बेशुमार - ओ - बेहिसाब
इकिलाब ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक ! इकिलाब

दर्दे-मिल्लत लेके अय मिल्लत के गमख्वारो चलो
अय जवानो ! अय दिलेरो ! अय रज़ाकारो, चलो
मुन्तज़र है रहमते-यज़दा-वफादारो, चलो

यू ही खुल जाते है अकसर कस्रे-आज़ादी के बाब
इकिलाब ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक ! इंकिलाब

सुर्खिए-खूने-वफा से जिन्दगी गुलरेज़ है
गैरते - मजदूर - बर्के - खिर्मने-परवेज़ है ।
जिसका तेगा आज शोलाबार-ओ-आतिश्खेज़[२७] है ।

हा वही है कामरान-ओ-कामगार-ओ-कामियाब
इकिलाब ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक-इकिलाब

शर्म आये अपनी नाकामी पे इस्तिबदाद[२८] को
अब न सैयादी की जुरअत हो किसी सैयाद को
तेज़ कर दो शोल हाए-फितरते-आज़ाद को

बिजलियो से सीख लो राज़े सुकून-ओ-इज्तिराब[२९]
इकिलाब ! अय साकिनाने-अर्जे-मश्रिक़ ! इकिलाब

२४. निरीक्षण और गिनती की गुलाम, २५. मर्दों की वफादारी, २६ बहादुरो, २७ आग बरसाने वाला, २८ जुल्म, अत्याचार, २९ शाति और व्याकुलता ।

आस्माने-सरफरोशी के सितारो की कसम
पाकबाज़ो की कसम, शब ज़िन्दादारो की कसम
तुमको नामूसे-वतन के जानिसारो की कसम

जाग उठो, देखोगे कब तक यूँहि उमीदो के ख्वाब
इंकिलाब ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक ! इंकिलाब

जा निसाराने-वतन हैं वारिसे-दारुस्सलाम[30]
है बहुत ऊँचा वतन पर मरने वालो का मकाम
लेकिन इस मंजिल मे इकदामे-तशद्दुद[31] है हराम

तेगे-इख्लास-ओ-सदाकत[32] ही है तेगे-कामियाब
इंकिलाब ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक ! इंकिलाब

होशियार ! अय गाफिलाने-हाले-बरबादे-वतन
ढूंढती फिरती है तुमको रूहे-नाशादे-वतन[33]
गर हुआ अब भी न तुमको पासे-फरियादे-वतन

आह क्या दोगे वतन के ज़र्रे ज़र्रे को जवाब
इंकिलाब ! अय साकिनाने-अर्ज़े-मश्रिक ! इंकिलाब

ज़मीनदार और किसान*

इकबाल अहमद सुहेल

ज़ियारत[1] कल अभी मुश्किल थी जिनके आस्तानो की
वही अब जाके चौखट चूमते हैं कलबारानो[2] की

३० मलामती का घर, स्वर्ग, ३१ हिंसा का कदम, ३२. निष्ठा और सत्य की तलवार, ३३ दुखी देश की रूह।

ज़मीनदार और किसान

* पहली कांग्रेसी वज़ारत ने इस्लाहे-मज़ारिईन के लिए कई कवानीन मुरत्तिब किये, सुहेल ने इस मौज़ू पर एक मन्ज़ूम तक़रीर की थी जिसका कुछ हिस्सा यहां दिया जा रहा है।

१ दर्शन, २ हल जोतनेवाला।

जो अपने जुल्म की फरियाद कल हमसे न सुनते थे
वही अब हमको मज़लूमी सुनाते हैं किसानो की

फज़ा मामूर है जिनके सितम की दास्तानो से
भला क्या दाद दे सकते हैं बेकस बेज़बानो की

अगर राजे महाराजे भी हामी हैं रिआया के
तो बेशक बिजलिया भी पासबा है आशियानो की

महाजन दोस्ती का वह हमे इल्ज़ाम देते हैं
कोई देखे तो यह अबलाफरेबी इन सियानो की

ज़मीनें जिनकी थी पहले जमीनदार अब कहा वह हैं
हुई नज्रे-महाजन जायदाद अगले घरानो की

बहुत वह हैं जिन्होने मुल्क से गद्दारिया की है
जमीनें ली मिटाकर आबरूए खान्दानो की

खुदा की शान आज इंसाफ के तालिब है वह हमसे
सियाही तक अभी सूखी नही जिनके फसानो की

जमाअत जिनकी ब्रिटिश पहले है और इण्डियन पीछे
वह उट्ठे है हिमायत को वतन के नातवानो की

यह ब्रिटिश इण्डियन की दो रुखी तर्कीब क्या कहना
वतन से लाग भी है और लगन भी हुक्मरानो[४] की

रिआया को साये के लिए छप्पर नही मिलता
मुनक्कश[३] पर, उधर छत बन रही है फीलखानो[४] की

इधर घर मे कफन तक के लिए पैसा नही मिलता
उधर तहसील जारी हो रही है मोटरानो की

३ चित्रित, ४. हाथीघर ।

इन्ही की हमनवा है वह जमाअत भी खुदा रक्खे
फलाहे-मुल्क-ओ-मिल्लत रट है जिनके खुश बयानो की

इधर रोना कि आज़ूका[५] हमारा है ज़मीदारी
उधर शिकवा कि हसरत अब भी बाकी है किसानो की

ज़मीन अल्लाह की पैदा हुई जम्हूर[६] की खातिर
मगर दावा कि मिलकीयत यह है खुल्द आशियानों[७] की

छुपाये से यह दो रगी अदाएं छुप नही सकती
दिलो की आरज़ू कुछ है सदा कुछ खुश बयानो की

रहे इसाफ परवर नेक दिल अर्वावे-आराज़ी
उन्हें हाजत नही कुछ अब भी कानूनी वहानो की

बला से कुछ कमी आ जायेगी उनके मुहासिल[८] मे
मुसीबत कुछ तो कम हो जायेगी आशुफ्ता जानो[९] की

ज़मीदार अपने सूबे मे ज़राअत पेशा[१०] हैं लाखो
वही इनकी भी सूरत है जो हालत है किसानो की

हिमायत इनकी फर्ज़े-अव्वली[११] खुद काग्रेस का है
इन्हे परवा नहीं है आप जैसे मेहरबानो की

फरेब आराइयो का दाव इन पर चल नही सकता
हकीकत इनको सब मालूम है रगी तरानो की

भला इस शोर और हगामा आराई से क्या हासिल
हवाओ से कहीं हिलती है बुनियादें चटानो की

वह राजाओ की धमकी मे भला कब आने वाले हैं
जिन्हे मरऊब[१२] कर सकती नहीं नोकें सनानो[१३] की

५ अन्न, ६. गणतत्र, ७ स्वर्गवासी, ८ प्राप्ति, ९ दुर्बल, १० किसान, ११ प्रथम कर्तव्य, १२ आतंकित, प्रभावित, १३ तीर, बाण।

नही अच्छी यह मश्के-खिश्त बारी[14] सख्त जानो पर
खबर लीजिए कि खैरियत नही आईनाखानो की

पयामे-इकिलाबे-नौ[15] जमाना देने वाला है
बदल देगी जमी का रग गर्दिश आस्मानो की

हुसूले-हक[16] की खातिर लशकरे-जम्हूर उठा है
जिलौ मे लेके हैबतनाकिया आतशफशानो की

भला नव्वाब-ओ-राजा क्या मुकाबिल इसके आयेंगे
शहशाही मिटा कर रख दी जिसने कहरमानो की

कदम लेगी जराग्रत पर्वरी खुद सरनिगू होकर
सफें आगे बढेंगी जब वतन के नौजवानो की

मज़दूर की बांसुरी

जमील मजहरी

हमसे बाजार की रौनक[1] है, हमसे चेहरो की लाली है
जलता है हमारे दिल का दिया, दुनिया की सभा उजियाली है

दौलत[2] की सेवा करते हैं ठुकराये हुए हम दौलत के
मजदूर है हम, मजदूर हैं हम, सौतेले बेटे किस्मत के

सोने को चटाई तक भी नही हम जात के इतने हेटे है
यह सेजो पर सोने वाले शायद भगवान के बेटे हैं

१४. ईंट बरसाने का अभ्यास, १५ नये इकिलाब का सन्देश, १६ सत्य की प्राप्ति ।

मजदूर की बांसुरी

१. शोभा, २ धन-सम्पत्ति ।

वह भूखो के अनदाता हैं हक उनका है वेदाद[3] करें
हम किस दरवाज़े पर जायें किससे जाकर फरियाद करें

वाज़ारे-तमद्दुन[4] भी उनका, दुनियाए-सियासत[5] भी उनकी
मज़हब का इदारा[6] भी उनका, आदिल[7] की अदालत भी उनकी

पावन्द हमे करने के लिए सौ राहे निकाली जाती हैं
कानून वनाये जाते हैं, जंजीरें ढाली जाती हैं

फिर भी आगाज़[8] की शोख़ी मे अजाम[9] दिखाई देता है
हम चुप हैं लेकिन फितरत[10] का इसाफ दिखाई देता है

एहसासे-खुदी[11] मज़लूमो[12] का अब चौंक के करवट लेता है
जो वक्त कि आने वाला है दिल उसकी आहट लेता है

तूफान की लहरें जाग उठी सोकर अपने गहवारे[13] से
कुछ तिनके शोखी करते हैं सैलाव के सरकश धारे से

मदील[14] सरो से गिरती है और पांव से रौंदी जाती है
सीने मे घटाओ के विजली वेचैन है कौंदी जाती है

मज़र[15] की कुदूरत[16] धो देगी, धरती की प्यास बुझायेगी
मौसम के इशारे कहते है यह वदली कुछ वरसायेगी

यह अब्र[17] जो घिर कर आता है गर आज नही कल वरसेगा
सव खेत हरे हो जायेंगे जव टूट के वादल वरसेगा

३ अन्याय, अत्याचार, ४ सभ्यता का वाज़ार, ५ राजनीति की दुनिया, ६ सगठन, ७ न्यायी, ८ प्रारम्भ, ९ अन्त, १० प्रकृति, ११ अह का एहसास, १२ पीडित, १३ पालना, १४ सर पर वाधने का रूमाल, १५ दृश्य, १६. मैल, १७ वादल ।

इंक़िलाब

असारुल हक मजाज

आ रहे हैं जग के बादल वह मडलाते हुए
आग दामन मे छुपाये खून बरसाते हुए

कोहो-सहरा[1] मे ज़मी[2] से खून उबलेगा अभी
रग के बदले गुलो से खून टपकेगा अभी

बढ रहे हैं देख वह मज़दूर दर्राते हुए
इक जुनू अगेज़[3] लय मे जाने क्या गाते हुए

सरकशी[4] की तुन्द[5] आधी दम-ब-दम चढती हुई
हर तरफ यलगार[6] करती, हर तरफ बढती हुई

भूख के मारे हुए इंसा की फरियादो के साथ
फाका मस्तो के जिलौ[7] मे खाना बरबादो के साथ

खत्म हो जायेगा यह सरमायादारी का निज़ाम[8]
रग लाने को है मज़दूरो का जोशे - इतिकाम[9]

गिर पडेंगे खौफ[10] से ऐवाने-इशरत[11] के सुतू[12]
खून बन जायेगी शीशो मे शरावे-लालागू[13]

खून के दरिया नजर आयेंगे हर मैदान मे
डूब जायेंगी चटानें खून के तूफान मे

खून की ,रगीनियो मे डूब जायेगी बहार
रेगे-सहरा[14] पर नज़र आयेंगे लाखो लालाज़ार[15]

१ पहाड और जगल, २ धरती, ३ उन्मादप्रद, ४ बगावत, ५ तेज, ६ हमला, ७. पहलू, दामन, ८ व्यवस्था, ९ बदले का जोश, १०. भय, ११ ऐश्वर्य का महल, १२ खम्बे, १३. लाल रग की शराब, १४ रेगिस्तान, १५. उपवन ।

कोहसारो[१६] की तरफ से सुर्ख आधी आयेगी
जा ब जा आबादियो मे आग-सी लग जायेगी

सुर्ख होगे खून के छीटो से बाम-ओ-दर तमाम
गर्क होगे आतिशी मलबूस[१७] मे मजर तमाम

इस तरह लेगा जमाना जग का खूनी सबक
आस्मा पर खाक होगी, फर्क पर रगे-शफक[१८]

और इस रगे-शफक मे बा हजारा आबो-ताब[१९]
जगमगायेगा वतन की हुर्रियत[२०] का आफ्ताब[२१]

नौजवानों से

असारुल हक मजाज

जलाले - आतिश - ओ - बर्क-ओ - सहाब[१] पैदा कर
अजल[२] भी काप उठे वह शबाब[३] पैदा कर

तिरे खिराम[४] मे है जलजलो[५] का राज निहा[६]
हर एक गाम पे इक इकिलाब पैदा कर

सदाए - तेश ए - मजदूर[७] है तिरा नग्मा
तू सग - ओ - खिश्त[८] से चग - ओ - रबाब[९] पैदा कर

शराब खीची है सब ने गरीब के खू से
तू अब अमीर के खू से शराब पैदा कर

१६ पहाड, १७ वस्त्र, कपडे, १८ अरुणिमा, १९ चमक, प्रकाश, २० स्वतन्त्रता, २१. सूर्य ।

नौजवानो से

१ आग, बिजली और बादल का प्रताप, २. मौत, ३ यौवन, ४. मन्द गति, ५. भूकम्प, ६ छुपा हुआ, ७ मजदूर के कुदाल की आवाज, ८ ईंट और पत्थर, ९ वीणा और सितार ।

गिरा दे कस्रे - तमद्दुन[10] कि इक फरेब है यह
उठा दे रस्मे - महब्बत, अजाब[11] पैदा कर

तू इंकिलाब की आमद[12] का इंतिज़ार न कर
जो हो सके तो अभी इंकिलाब पैदा कर

साक़ी

जां निसार अख्तर

यह किसने खटखटाया आज मैखाने का दरवाज़ा
हर इक मैकश[1] यकायक बे पिये बरहम[2] उठा साकी

यह कैसा मै[3] के बदले खून छलका तेरे शीशे से
यह कैसा साज़ से इक नालःए-मातम[4] उठा साकी

हवाए-जहर आगीं[5] चल उठी शायद गुलिस्ता मे
यह पैमाने उलट साकी, यह जामे-जम उठा साकी

अगर मुम्किन हो, तू भी आज रगीं जाम के बदले
लहू के रग मे डूबा हुआ परचम[6] उठा साकी

१० सभ्यता का महल, ११ कष्ट, तकलीफ, १२ आगमन।

साकी

१. मदिरा पीनेवाला, २ क्रोधित, ३ शराब, ४. शोक का आर्तनाद, ५ विषैली हवा, ६ झण्डा।

जहाने-नौ[1]

मखदूम मोहिउद्दीन

नग्मे शरर फशा[2] हो उठा आतिशी रवाव
मिज़रावे - वेखुदी से वजा साज़े-इकिलाव
मेमारे-अहदे-नौ[3] हो तिरा दस्ते पुर शबाब
वातिल[4] की गर्दनो पे चमक जुलफिकार बन

ऐसा जहान जिसका अछूता निज़ाम हो
ऐसा जहान जिसका उखूवत[5] पयाम हो
ऐसा जहान जिसकी नयी सुव्हो - शाम हो
ऐसे जहाने - नौ का तू परवरदिगार[6] बन

मश्कि़

मखदूम मोहिउद्दीन

जेल, फाका, भीख बीमारी, नजासत[1] का मका
जिन्दगानी, हौसला, अक्लो-फरासत[2] का मसा

वहम जाईदा खुदाओ का रिवायत का गुलाम
परवरिश पाता रहा है जिसमे सदियो का जज़ाम[3]

१ नया ससार, २ आग वरसाने वाला गीत, ३ नये युग के निर्माता, ४. झूठ, ५ वरावरी, ६ खुदा।

मशिक

१ गदगी, २ वुद्धि और विवेक, ३ कोढ।

कट चुके हैं दस्त-ओ-बाज़ू जिसके उस मश्रिक को देख
रुक रही है सास सीने मे मरीज़े दिक को देख

एक नगी लाश बेगोरो-कफन ठिठरी हुई
मग़्रिबी चीलो का लुक्मा खून मे लिथड़ी हुई

एक कबरिस्तान जिसमे नौहाख्वा कोई नही
इक भटकती रूह है जिसका मका कोई नही

पैकरे-माज़ी[४] का इक बेरंग और बेरूह खोल
एक मर्गे-बेक्यामत[५] एक बेआवाज़ ढोल

इस ज़मीने-मौत पर्वरदा[६] को ढाया जायेगा
इक नयी दुनिया, नया आदम बनाया जायेगा

तसल्ली

फैज़ अहमद फैज

चन्द रोज और मिरी जान फकत चन्द ही रोज़

ज़ुल्म की छाव मे दम लेने पे मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सह लें, तडप लें, रो लें
अपने अजदाद[१] की मीरास[२] है, माज़ूर हैं हम
जिस्म पर कैद है जज्बात पे ज़जीरें हैं
फिक्र महबूस[३] है, गुफ्तार पे ताज़ीरें[४] हैं
अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं

४ भूतकाल की आकृति, ५ बिना प्रलय की मौत, ६ मौत का पोषण करने वाली धरती ।

तसल्ली

१ पूर्वज, २ दाय, रिक्थ, ३. बदी, ४ सज़ा ।

जिन्दगी क्या, किसी मुफ्लिस की क़बा[५] है जिसमे
हर घड़ी दर्द के पैवन्द सिये जाते हैं
लेकिन अब ज़ुल्म की मेयाद के दिन थोडे हैं
इक ज़रा सब्र कि फरियाद के दिन थोडे हैं

अर्सःए-दहर[६] की झुलसी हुई वीरानी मे
हमको रहना है पे यूही तो नही रहना है
अजनबी हाथो का बेनाम गरावार सितम[७]
आज सहना है हमेशा तो नही सहना है

यह तिरे हुस्न से लिपटी हुई आलाम[८] की गर्द
अपनी दोरोज़ा जवानी की शिकस्तो का शुमार
चादनी रातो का बेकार दहकता हुआ दर्द
दिल की बेसूद तडप, जिस्म की मायूस पुकार

चन्द रोज़ और मिरी जान फकत चन्द ही रोज़

अय काश

मोईन अहसन जज्वी

शग्ले-मै[१] करता, पर अय काश न होता महसूस
तल्खिए-ज़हर[२] भी तल्खिए-मैनाब[३] मे है

छेडता साज़, पर आगाह न होता अय काश
इक शरारा[४] सा भी हर जुम्बिशे-मिज़राब मे है

काश दरिया की खमोशी से न आती आवाज़
इक तलातुम सा भी हर मौजे-तहे-आब मे है

,५ पैरहन, लबा चोग़ा, ६ समय, ७ अत्याचार, ८ दुख।

अय काश

१ मदिरा पान, २ विष की कटुता, ३ शराब की तल्खी, ४ चिंगारी।

अब्रे-निसियां[५] का बुरा हो न बताता अय काश
आबरू नाम की, हर गौहरे-नायाब[६] मे है

चांदनी रातो मे यह इल्म न होता अय काश
दागे-दरयुजागरी[७] सीन.ए-महताब मे है

महफिले-ऐश मे अय काश न होता वाकिफ
किस कदर रगे-वफा फितरते-अहबाब[८] मे है

काश कहती न यह मजदूर की गुलरंग नजर
हसरते-ख्वाब[९] अभी दीद.ए-बेख्वाब[१०] मे है

काश मुफ्लिस के तबस्सुम से न चलता यह पता
कितने फाको की सकत गैरते-बेताव मे है

काश तोपो की गरज मे न सुनाई देता
जज्ब.ए-गैरते-मजलूम[११] अभी ख्वाब[१२] मे है

काश उमडे हुए अश्को से न होता जाहिर
इक कयामत-सी दिले-शाइरे-बेताब मे है

आज़ादी

अली सरदार जाफरी

पूछता है तू कि कब और किस तरह आती हूँ मैं
गोद मे नाकामियो के पर्वरिश पाती हूँ मैं

सिर्फ वह मखसूस सीने हैं मिरी आरामगाह
आरजू की तरह रह जाती है जिनमे घुट के आह

५ विस्मृति के बादल, ६. अप्राप्य मोती, ७. भीख मागने का दाग़, ८ दोस्तों का स्वभाव, ९. नीद की इच्छा, १०. उनीदी आखें, ११. अत्याचार सहने वाले के स्वाभिमान का जज्बा, १२. नीद ।

अहले-ग़म के साथ उनका दर्द-ओ-गम सहती हूं मैं
कापते होठो पे बनकर बद दुआ रहती हूं मैं

रक्स करती हूँ इशारो पर मिरे मौत-ओ-हयात[1]
देखती रहती हूँ मैं हर वक्त-नब्ज़े-कायनात[2]

खुद फरेबी बढके जब बनती है एहसासे-शऊर[3]
जब जवां होता है अहले-ज़र[4] के तेवर मे गुरूर

मुफ्लिसी[5] से करते हैं जब आदमियत को जुदा
जब लहू पीते हैं तहज़ीब-ओ-तमद्दुन[6] के खुदा

रास्ते जब बन्द होते हैं दुआओ के लिए
आदमी लडता है जब झूठे खुदाओ के लिए

ज़िन्दगी इसां की कर देता है जब इंसा हराम
जब इसे कानूने-फितरत[7] का अता होता है नाम

अहरमन[8] फिरता है जब अपना दहन[9] खोले हुए
आस्मा से मौत जब आती है पर तोले हुए

जब किसानो की निगाहो से टपकता है हिरास[10]
फूटने लगती है जब मज़दूर के ज़ख्मो से यास[11]

सब्रे-अय्यूबी[12] का जब लबरेज़ होता है सुबू[13]
सोज़े-गम[14] से खौलता है जब गुलामो का लहू

गासिबो से बढके जब करता है हक अपना सवाल
जब नज़र आता है मज़लूमो के चेहरो पर जलाल[15]

तफरिका[16] पडता है जब दुनिया मे नस्ल-ओ-रंग का
लेके मैं आती हू परचम इकिलाब-ओ-जग का

१ जीवन-मृत्यु, २ ब्रह्माण्ड की नाड़ी, ३ चेतना की अनुभूति, ४ धनवान, ५ गरीबी, दरिद्रता, ६ सभ्यता और सस्कृति, ७ कुदरत का क़ानून, ८ बुराई का खुदा (अग्निपूजकों का), ९. मुह, १० निराशा, ११. निराशा, १२. हज़रत अय्यूब का सब्र, १३ पाप का घडा, १४ ग़म की जलन, १५. तेज, प्रताप, १६ फूट।

हां मगर जब टूट जाती है हवादिस[17] की कमन्द
जब कुचल देता है हर शै को बगावत का समन्द[18]

जब निगल लेता है तूफा बढ के कश्ती नूह की
घुट के जब इसा मे रह जाती है अज़मत[19] रूह की

दूर हो जाती है जब मज़दूर के दिल की जलन
जब तबस्सुम बन के होठों पर सिमटती है थकन

जब उभरता है[20] उफक से ज़िन्दगी का आफ्ताब[21]
जब निखरता है लहू की आग में तपकर शबाब[22]

नस्ल, कौमीयत, कलीसा, सल्तनत, तहजीब, रंग
रौंद चुकती है जब इन सबको जवानी की उमग

सुबह के ज़र्री[23] तबस्सुम में अया[24] होती हू, मैं
रिफअते-अर्शे-बरी[25] से परफशा होती हूं मैं

वक़्त का तराना

अली सरदार जाफरी

काफला इंकिलाब का है रवा[1]
बज रही है खुशी की शहनाई
ज़लज़लो[2] से दहल रही है ज़मी
ले रहे हैं पहाड अंगडाई

१७ घटनाए, १८ घोडा, १६ महानता, २० क्षितिज, २१. सूर्य, २२. यौवन, २३ सुनहरा, २४ प्रकट, २५ आकाश की ऊचाई ।

वक़्त का तराना

१. गतिमान, २ भूकम्प ।

सुलग उठी है इतिकाम[3] की आग
बर्फ की चोटिया दहकती हैं
जुल्म और जब्र[4] के अंधेरे मे
सैंकड़ो बिजलियां चमकती हैं

जिनको कुचला गया है सदियो से
आज तक उनके दिल धडकते है
जिन्दगी के बुझे हुए शोले
इक नयी शान से भडकते है

फस्ल के साथ-साथ खेतो से
उग रही है बगावतो की सिपाह[5]
जगमगाती है अद्ल[6] की शमशीर[7]
मिल सकेगी न जालिमो को पनाह

कारखानो के आहनी[8] दिल से
एक सैलाब - सा उबलता है
सुर्ख परचम हवा के सीने पर
बनके रंगे-शफक[9] मचलता है

बादबा खुल गये बगावत के
बम्बई के जहाज़ियो को सलाम
जो शहंशाहियत से टकराये
ऐसे जाबाज़ गाज़ियो को सलाम

दीदनी[10] अहले-शहर का है शिकोह[11]
गोलिया रोकते है सीनो पर
लब पे नारे, निगह मे अज्मे-जिहाद[12]
हुर्रियत[13] ज़ौफिगन[14] जबीनो[15] पर

३ बदला, ४. जबरदम्नी, ५. फ़ौज, ६ न्याय, ७ तलवार, ८. लोहे के, ९ अरुणिमा, लालिमा, १० देखने योग्य, ११ शानो-शौकत, १२ धर्मयुद्ध का सकल्प, १३ आज़ादी, १४ प्रकाशमान, १५ ललाट।

हर सडक पर समन्दरो का उवाल
हर गली मे है जोशे-तूफानी
ग़र्क़[16] कर देगी बादशाही को
आदमी के लहू की तुगियानी[17]

एक सवाल

अली सरदार जाफरी

मालूम नही अक्ल की परवाज़[1] की जद मे
सरसब्ज़ उमीदो का चमन है कि नही है

लेकिन यह बता वक्त का वहता हुआ धारा
तूफानगर-ओ-कोहशिकन[2] है कि नही है

सरमाये के सिमटे हुए होठो का तवस्सुम
मज़दूर के चेहरे की थकन है कि नही है

वह - ज़ेरे उफक[3] सुब्ह की हल्की-सी सफेदी
ढलते हुए तारो का कफन है कि नही है

पेशानिए-अफलाक[4] से जो फूट रही है
उठते हुए सूरज की किरन है कि नही है

सन् १९३८

१६ डुवो देना, १७. जोश ।

एक सवाल

१. उड़ान, २ तूफान उठानेवाला और पहाड काटने वाला, ३. क्षितिज के नीचे, ४ आकाश का ललाट ।

शफ़क़े-सुर्ख़[1]

अहमद नदीम कासमी

हर नयी पौद ने इक ताज़ा सनम ढाल लिया
नित नये बुत, नये मन्दिर नये पूजा के उसूल
शख बजते रहे, जलते रहे रगी फानूस
रूह खिलती रही होता रहा इसान मलूल[2]

कस्रे-शाही[3] से गिराये गये नीलम पुखराज
सगरेजो को निगलते रहे मजबूर अवाम
खुश्क कांटो मे बदलते रहे खैरात के फूल
सूखे जबडो को जकडती रही ज़रतार[4] लगाम

हुस्न बिकता रहा ज़रबफ्त के पर्दों से उधर
इश्क सुनता रहा बजते हुए फौलाद का शोर
काफले लुटते रहे मज़िलें बेगाना रही
चाद बुझते रहे, तकते रहे महबूस[5] चकोर

हर नया दौर सद उमीद व दामा[6] आया
ज़िन्दगी खस्ता-ओ-दरमान्दा-ओ-मजबूर रही
इक शहशाह उठा इक शहशाह बढा
इसी चक्कर मे अज़ल से यह ज़मीं चूर रही

नागहा एक धुआधार दरीचा खडका
शोख़-सी शमअ बढी, लौ की ज़बा लहराती
सरसराती हुई ज़ुल्मत[7] के नशेबो से उठी
शफके - सुर्ख नयी सुबह के नग्मे गाती

१ लालिमा, २. उदास, ३. शाही महल, ४. सुनहरी, ५ बदी, ६ अपने दामन मे सैकडों उम्मीदें लिये, ७ अधकार।

इक नये दौर का परतौ[८] है उफक की लाली
इक नये हुस्न की खातिर यह हिना बन्दी है
एक ही सतह पे उतरे हैं निशेब और फराज़
अब किस इंसान को दावाए-खुदावन्दी है

इब्ने-आदम तिरी झुलसी हुई शिरियानो[९] मे
खूने-ताजा की नयी लहर है चलने वाली
यह हुकूमत है, यह कूवत है, समल और समालं
अब नये रूप मे तकदीर है ढलने वाली

नयी दुनिया

मसूद अख्तर जमाल

जज्बात ने कर्वट बदली है, एहसास ने अगडाई ली है
आजाद रवी से इसा ने तामीर नयी दुनिया की है
फितरत[१] के हसी मैखाने से, बेदारी[२] की सहबा[३] पी है

उस दुनिया के इंसानो की, हर बात पयामे-दिल[४] होगी
हर सास मे इक नग्मा होगा, हर गाम पे इक मज़िल होगी
साहिल[५] कैसा, तूफा कैसा, हर मौज वहा साहिल होगी

मगमूम[६] किसानो के चहरे, शादाव[७] वहा हो जायेंगे
राहत की फज़ा मे, गुर्वत के तूफान वहा हो जायेंगे
शोरिश[८] भी वहा मिट जायेगी, फितने[९] भी वहा सो जायेंगे

अब शेख-ओ-बिरहमन मे कोई, तफरीक[१०] न होने पायेगी
अब हूर-ओ-परी के किस्सो की तस्दीक न होने पायेगी
औहाम परस्ती[११] की दुनिया, तख्लीक[१२] न होने पायेगी

८ अक्स, ९ नाडिया।

नयी दुनिया

१ प्रकृति, २ जागृति, ३ शराब, ४ दिल का सदेश, ५ किनारा, ६ दुखी, ७ प्रसन्न, ८ बगावत, ९ उपद्रव, १० मनमुटाव, ११ भ्रम-पूजा, १२. सृष्टि।

किस्मत की हदें मिट जायेंगी, वेग्राव[13] सितारे टूटेंगे
ग्रव इल्मो-यकीं[14] के सरचश्मे,[15] ग्रागोशे-ज़मी से फूटेंगे
पावन्दे-सलासिल[16] इंसा ग्रव ज़िन्दाने-वला[17] से छूटेंगे

ग्रव तक तो जहालत मे ग्रपनी दुख दर्द वहुत झेले हमने
मज़हव की तमाशागाहो में देखे हैं वहुत मेले हमने
उकवा[18] की हवस मे ख़ूरेज़ी के खेल वहुत खेले हमने

देखी है वहुत दिन तक हमने पीराने-कलीसा[19] की घातें
हैवान सिफत सुनसुन के हुए हम शेखो-विरहमन की वातें
गुजरी हैं इन्ही के झगड़ो मे, वेकैफ जवानी की रातें

लेकिन वह ज़माना खत्म हुग्रा, ग्रव ग्रौर ज़माना है साकी
मुफ्लिस की निगाहो मे पिन्हा,[20] ग्रव कैफे-शवाना[21] है साकी
मज़दूर के होठो पर रक्सा, इशरत[22] का फसाना है साकी

दुश्मन की हिरासा[23] फौजो मे, तज़ीम[24] नही हो सकती ग्रव
यह दुनिया हिर्स[25] के वन्दो मे तक्सीम नही हो सकती ग्रव
इंसानो मे ख़ूरेज़ी[26] की, तालीम नही हो सकती ग्रव

वह ग्रहदे-कुहन[27] ग्रव खत्म हुग्रा, वह वात गयी यह दौर गया
ग्रस्रारे-मज़ाहिव[28] फाश हुए ग्राज़ार दही का तौर गया
वह ग्रहले-तसव्वुफ[29] ग्रव न रहे, वह फिक्र गयी वह गौर गया

शमशीरे-हुकूमत[30] कुन्द हुई, दामाने तवहुम[31] छूट गया
मश्रिक का तिलिस्मी रग उडा मग्रिव का फुसू[32] भी टूट गया
तहज़ीवे-हवस[33] के नश्तर से नासूरे-तमद्दुन[34] फूट गया

रफ्तारे-ज़माना तेज़ हुई, ग्रव रग वदलने वाला है
खुद जुल्म ग्रव ग्रपने पजे मे ज़ालिम को मसलने वाला है
इक मारे-सियह[35] 'फिर्ग्रौन-ग्रदा शाही'[36] को निगलने वाला है

१३ निम्नेज, १४ विश्वास ग्रौर ज्ञान, १५ स्रोत, १६ ज़जीरो से जकडा हुग्रा, १७ विपत्तियों का जेलखाना, १८ परलोक, १९ मदिर के रखवाले, २० छुपा हुग्रा, २१ रात का नशा, २२ ऐश्वर्य, २३ निराश, २४ सगठन, २५ लोभ, २६ रक्तपात, २७ प्राचीन काल, २८ धर्मों का रहस्य, २९. सूफी लोग, ३० शासन की तलवार, ३१ भ्रम का दामन, ३२ जादू, ३३. लोभी सभ्यता, ३४ सस्कृति का नासूर, ३५. काला साप, ३६ फिरग्रौन की ग्रदा रखने वाला बाज ।

अंगुश्त बदन्दा[३७] है दुनिया, मिटती ही नही है हैरानी
इस कौम को शायद रास आई, इसा के लहू की अर्ज़ानी[३८]
तदवीर है जिसकी शैतानी, जज्वात हैं जिसके हैवानी[३९]

गर्काब ज़िरह[४०] मे योरप है, अर्बावे-ख़िरद[४१] की साज़िश से
तारीक[४२] फज़ाए-आलम[४३] है अस्हाबे-दुवल[४४] की काविश से
शमशीरे-हवस[४५] मे तेजी है, तस्ख़ीरे-जहा[४६] की ख्वाहिश से

लेकिन यह दिगरगू[४७] हालत भी है राज़े-निहा मुस्तक्बिल का
पर्दे मे इन्ही तूफानो के जल्वा है अया मुस्तक्बिल का
रौशन है इसी तारीकी मे खुर्शीदे - रवा मुस्तक्बिल का

यह मौजे-हवादिस[४८] के रेले, यह बहरे-सियासत के नश्तर
डूबे हैं नवाए-तूफा मे बिखरे हैं फराज़े-साहिल पर
गर्काब जो मौजें हैं तह मे देते है उन्हे पैगामे-सफर[४९]

जागो कि नसीमे-इत्रफशा[५०] लाई है नवैदे-सुब्हे-तरब[५१]
उट्ठो कि शफक की रानाई देती है पयामे-हुस्ने-तलब
देखो कि फजाए-अम्न-ओ-अमा है रक्स वजा आहग ब लब[५२]

मज़िल वह करीब आ पहुची है बढते ही रहो बढते ही रहो
हर कोहो-दिमन[५३] के सीने पर, दरिया की तरह चढते ही रहो
मौजो से लडो, तूफा से लडो, आईने-अमल पढते ही रहो

मुद्दत से जो सोचा करते थे, अब वह भी जमाना आयेगा
हर मुश्किल अब आसा होगी, हर नक्शे-कुहन[५४] मिट जायेगा
अब कोई नया फितना हर्गिज, तस्नीफ न होने पायेगा।

३७ दातो तले अगुली लिये हुए, ३८ सस्तापन, ३९ पाशविक, ४० जिरह-वस्तर, ४१ बुद्धिमान, ४२ अधेरी, ४३ ससार का वातावरण, ४४ फरेबी, मक्कार, ४५ लालच की तलवार, ४६ विश्व-विजय, ४७ अस्त-व्यस्त, ४८ घटनाओ की मौज, ४९ यात्रा का सन्देश, ५० सुगध बिखेरती हुई हवा, ५१ खुशी के प्रभात का निमत्रण, ५२ होंठो पर आवाज, ५३ पर्वत, ५४ पुराने चिह्न।

कतरो मे रवा हैं जो लहरें अब उनकी तड़प दरिया होगी
जर्रों मे फज़ा जो पिन्हा है वुसअत[५५] मे वही सहरा होगी
इफ़लास-ज़दह[५६] मज़दूरो की, आबाद नयी दुनिया होगी

आपस मे यह ख़ूआगामी क्या, यह वक्त नही जल्लादी का
तख़रीब नुमा मज़्हब कैसा लम्हा यह नही बरबादी का
तोडो भी कफस की ज़जीरें, मौका है यही आज़ादी का

किसानों का गीत

मसूद अख्तर जमाल

यह धरती, यह जीवन सागर, यह संसार हमारा

अमृत बादल बनके उठे हैं, पर्वत से टकरायेंगे
खेतो की हरियाली बनकर, छब अपनी दिखलायेंगे
दुनिया का दुख-सुख अपना कर दुनिया पर छा जायेंगे

जर्रा जर्रा इस दुनिया का आज गगन का तारा है
यह धरती, यह जीवन सागर, यह ससार हमारा है

दुख के बधन कट जायेंगे, सुख का सदेसा आयेगा
मिट्टी अब सोना उगलेगी, बादल हुन[१] बरसायेगा
मेहनत पर है जिसका भरोसा, मेहनत का फल पायेगा

अपने ही कस बल का समन्दर वक़्त का बहता धारा है
यह धरती, यह जीवन सागर, यह संसार हमारा है

सपनो के सुन्दर आचल से आशा रूप दिखाती है
अपनी ही आवाज़ की लै पर सारी दुनिया गाती है
आज तिरगे की लहरो मे, बिजली-सी लहराती है

५५ विस्तार, ५६ दरिद्रता-ग्रस्त ।

किसानो का गीत

१ सोना ।

एक ही वार मे अब अय साथी दुश्मन से छुटकारा है
यह धरती, यह जीवन सागर, यह ससार हमारा है

सात रंग

सलाम मछली शहरी

तस्वीर वह बनाऊ कि मसहूर[१] हो सकू
ऐसे खुतूत[२] खीच कि मगरूर[३] हो सकू

इक नौजवा को शहर मे तशवीशे-रोज़गार[४]
और दूर—एक गाव मे बरसात की बहार
हाथो मे इक हसीना के टूटा हुआ सितार

दरिया से हटके, सामने छोटा-सा एक गाव
पगडण्डियो से दूर—वहा पीपलो की छाव
वह धुदली धुदली सूरतें, वह मैले मैले पाव

मौजो के रुख पे छोटी-सी किश्ती रवा दवा
दरिया के इस बहाव से मल्लाह बदगुमां[५]
साहिल के एक झोपडे मे मौत का समा[६]

कुछ लोग महवे-सैरे-चमनज़ारे-शालीमार[७]
हसता है साम्राज्य पे उल्फत का शाहकार
फाटक पे हटके, मैले फकीरो की इक कतार

सोने का माहताब[८] मिनारो के दरमिया
चादी का आफ्ताब चिनारो के दरमिया
और इक "खुदा" फज़ाई[९] नज़ारो के दरमिया

१ मस्त, २ रेखाए, ३ गर्वित, ४ आजीविका की चिंता, ५ सदेह रखने वाला, ६ दृश्य, ७ शालीमार के उपवन मे सैर-सपाटे मे रत, ८ चाद, ९ शून्य के।

ज़िन्दा[10] की एक शमग्र पर परवाने मुज़्तरिब[11]
और अपनी अपनी फिक्र मे दीवाने मुज़्तरिब
बाहर हयाते-ताज़ा के अफसाने मुज़्तरिब

सडको पे इंकिलाब की गूजी हुई सदा
कालेज के "हाल" मे हुआ दुनिया पे तबसिरा[12]
इक नौजवा के हाथ मे अखबार आज का

मौज़ूअ[13] इतने जैसे कि घबरा रहा हूं मैं
शायद कि अपनी फिक्र[14] पे खुद छा रहा हू मैं

तुलूए-इश्तिराकियत[1]

साहिर लुधियानवी

जश्न[2] बपा है कुटियाओ मे ऊचे ऐवा[3] काप रहे हैं
मज़दूरो के बिगड़े तेवर देख के सुल्ता[4] काप रहे है

जागे है इफलास[5] के मारे, उट्ठे है बेबस दुखियारे
सीनों मे तूफा का तलातुम[6], आखो मे बिजली के शरारे[7]

चौक चौक मे गली गली मे सुर्ख फरेरा लहराते हैं
मज़लूमो के बागी लशकर सैल सिफत उमडे आते हैं

शाही दरबारो के दर से फौजी पहरे खत्म हुए
ज़ाती जागीरो के हक और मुहमल[8] दावे खत्म हुए

शोर मचा है बाज़ारो मे टूट गये दर ज़िन्दानो[9] के
वापस माग रही है दुनिया गस्बशुदा[10] हक इसानो के

१० कैदखाना, ११ बेचैन, १२ टीका, १३ विषय, १४ चितन।

तुलूए-इश्तिराकियत

१ साम्यवाद का उदय, २ समारोह, ३ महल, ४ बादशाह, ५ दरिद्रता ६ जोश, ७ अगारे, ८ अर्थहीन, बेहूदा, ९ जेल, १० छीना हुआ।

रुस्वा बाज़ारी खातूनें[11] हक्के-निसाई[12] मांग रही हैं
सदियो की खामोश जबानें सहर नवाई माग रही हैं

रौंदी कुचली आवाज़ों के शोर से धरती गूंज उठी है
दुनिया के अन्याय नगर मे हक की पहली गूज उठी है

जमा हुए हैं चौराहो पर आकर भूखे और गदागर[13]
एक लपकती आधी बनकर एक भभकता शोला होकर

काधो पर सगीन कुदालें, होठो पर बेबाक तराने
दहकानो[14] के दल निकले हैं अपनी बिगडी आप बनाने

आज पुरानी तदबीरो[15] से आग के शोले थम न सकेंगे
उभरे जज्बे दब न सकेगे उखडे परचम[16] जम न सकेंगे

राजमहल के दरबानो से यह सरकश[17] तूफा न रुकेगा
चन्द किराये के तिको से सैले-बेपाया रुक न सकेगा

काप रहे हैं ज़ालिम सुल्ता टूट गये दल जब्बारो[18] के
भाग रहे हैं ज़िल्ले-इलाही,[19] मुह उतरे हैं गद्दारो के

एक नया सूरज चमका है एक अनोखी ज़ौबारी[20] है
खत्म हुई अफराद[21] की शाही, अब जम्हूर[22] की सालारी[23] है

११ महिलाए, १२ स्त्रियो का हक, १३ भिक्षुक, १४ किसान, १५ उपाय, १६ झडा, १७ बागी, १८ ज़ालिम, १९ जिस पर खुदा का साया हो, २० प्रकाश का फैलना, २१. व्यक्ति, २२ गणतन्त्र, २३ सेनापतित्व ।

(दूसरा भाग)

दूसरी जंगे-अज़ीम

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फ़रज़न्दों से ख़िताब

जोश मलीहाबादी

किस ज़बा से कह रहे हो आज अय सौदागरो
"दहर[1] मे इसानियत के नाम को ऊचा करो

जिसको सब कहते हैं हिटलर भेडिया है भेडिया
भेडिये को मार दो गोली पै अम्न-ओ-वफ़ा[2]

बागे-इसानी मे चलने ही पे है बादे-खिज़ा[3]
आदमियत ले रही है हिचकियो पर हिचकिया

हात है हिटलर का रख़्शे-खुदसरी[4] की बाग पर
तेग का पानी छिडक दो जर्मनी की आग पर"

सख़्त हैरा हू कि महफिल मे तुम्हारी और यह ज़िक्र
नौए-इसानो[5] के मुस्तक़्बिल[6] की अब करते हो फ़िक्र

जब यहा आए थे तुम सौदागरी के वास्ते
नौए-इसानी के मुस्तक़्बिल से क्या वाक़िफ़[7] न थे

हिन्दियो के जिस्म मे क्या रूहे-आज़ादी न थी
सच बताओ क्या वह इंसानो की आबादी न थी

अपने जुल्मे-बेनिहायत[8] का फसाना याद है
कंपनी का फिर वह दौरे-मुजरिमाना याद है!

१ दुनिया, २ शान्ति और स्थिरता, ३ पतझड की हवा, ४ उद्दडता का घोडा, ५ मानव-जाति, ६ भविष्य ७ परिचित, ८ असीम अत्याचार।

लूटते फिरते थे तुम जब कारवा - दर - कारवां
सर बरहना[९] फिर रही थी दौलतें-हिन्दोस्ता

दस्तकारो के अगूठे काटते फिरते थे तुम
सर्द लाशों से घरो को पाटते फिरते थे तुम

सनअतें-हिन्दोस्ता[१०] पर मौत थी छाई हुई
मौत भी कैसी, तुम्हारे हाथ की लाई हुई

अल्लाह अल्लाह किस कदर इंसाफ के तालिब हो आज
'मीर जाफर' की कसम क्या दुश्मने-हक[११] था सिराज ?

क्या अवध की बेगमो का भी सताना याद है ?
याद है झासी की रानी का ज़माना याद है ?

हिज्रत सुल्ताने-देहली[१२] का समा भी याद है ?
शेरदिल टीपू की खूनी दास्ता भी याद है ?

तीसरे फाके मे इक गिरते हुए को थामने
किसके सर लाये थे तुम शाह ज़फर के सामने

याद तो होगी वह मटिया बुर्ज की भी दास्तां
अब भी जिसकी खाक से रह रहके उठता है धुआ

तुमने कैसर बाग को देखा तो होगा बारहा
आज भी आती है जिससे हाय अख्तर की सदा

सच कहो क्या हाफज़े[१३] मे है वह ज़ुल्मे-बेपनाह[१४]
आज तक रगून मे इक कब्र है जिसकी गवाह

जिहन मे होगा यह ताज़ा हिन्दियो का दाग भी
याद तो होगा तुम्हे जलियान वाला बाग भी

९ नगे सर, १० हिन्दोस्तान का उद्योग और कला, ११ सच्चाई के दुश्मन, १२. देहली का बादशाह (बहादुरशाह ज़फर), १३. स्मरण-शक्ति, १४ असीम अत्याचार ।

पूछ लो उससे तुम्हारा नाम क्यो ताविन्दा[१५] है
डाइरे-गुर्गे-दहन[१६] आलूद अब भी ज़िन्दा है

वह भगत सिंह अब भी जिसके गम मे दिल नाशाद है
उसकी गर्दन मे जो डाला था वह फन्दा याद है ?

अहले-आज़ादी रहा करते थे किस हंजार[१७] से
पूछ लो यह कैदखानो की दरो-दीवार से

अब भी है महफूज[१८] जिस पर ततना[१९] सरकार का
आज भी गूंजी हुई है जिनमे कोडो की सदा

आज किश्ती अम्न की अम्वाज[२०] पर खेते हो क्यों
सख्त हैरा हू कि अब तुम दरसे-हक[२१] देते हो क्यो

अहले-कूवत,[२२] दामे-हक[२३] मे तो कभी आते नही
'बैंकी' इख्लाक[२४] को खतरे मे भी लाते नही

लेकिन आज इख्लाक की तल्कीन फरमाते हो तुम
हो न हो अपने मे अब कूवत[२५] नही पाते हो तुम

अहले-हक[२६] रौशन नज़र[२७] हैं, अहले-बातिल[२८] कोर[२९] हैं
यह तो है अक्वाल[३०] उन कौमो के जो कमजोर है

आज शायद मज़िले-कूवत मे तुम रहते नही
जिसकी लाठी उसकी भैंस, अब किसलिए कहते नही

क्या कहा, इंसाफ है, इंसा का फर्ज़े अव्वली[३१]
क्या फसादो-ज़ुल्म का अब तुम मे कस बाकी नही

देर से बैठे हो नख्ले-रास्ती[३२] की छांव मे
क्या खुदा नाकर्दा कुछ मोच आ गयी है पाव मे ?

१५. चमकदार, १६. भेडिये जैसे मुह वाला, १७ पद्धति, १८. सुरक्षित, १९. गुरूर, २० मौजें, २१. सच्चाई का पाठ, २२. शक्तिशाली, २३. सच्चाई का जाल, २४. सरमायादारी का शिष्टाचार, २५ कूवत, २६ सच्चाई के समर्थक, २७ दूरदर्शी, २८ झूठे, २९ अंधे, ३०. प्रथम कर्तव्य, ३१. कौल, कथन, ३२ मित्रता का वृक्ष ।

गूज टापो की न आबादी न वीराने मे है
खैर तो है अस्पे-ताजी[33] क्या शफाखाने[34] मे है ?

आजकल तो हर नज़र मे रहम का अन्दाज़ है
कुछ तबीअत क्या नसीबे-दुश्मना नासाज है ?

सास क्या उखडी कि हक के नाम पर मरने लगे
नौए-इसां की हवाख्वाही[35] का दम भरने लगे

ज़ुल्म भूले, रागिनी इंसाफ की गाने लगे
लग गयी है आग क्या घर मे कि चिल्लाने लगे

मुजरिमो के वास्ते ज़ेबा[36] नही यह शोरिशें[37]
कल यज़ीद-ओ-शिम्र थे आज बनते हो हुसैन

खैर[38] अय सौदागरो अब है तो बस इस बात मे
वक्त के फर्मान के आगे झुका दो गर्दनें

इक कहानी वक्त लिक्खेगा नये मजमून[39] की
जिसकी सुर्खी[40] को ज़रूरत है तुम्हारे खून की

वक्त का फर्मान अपना रुख बदल सकता नही
मौत टल सकती है अब फर्मान टल सकता नही

३३ शाही घोड़ा, ३४ अस्पताल, ३५ हमदर्दी, ३६ शोभा, ३७. बग़ावत, ३८. कुशलता, ३९. विषय, ४० शीर्षक ।

अंधेरी रात का मुसाफ़िर

असरारुल हक मजाज

जवानी की अधेरी रात है, ज़ुल्मत[1] का तूफा है
मिरी राहो से नूरे-माहो-अजुम[2] तक गुरेजा[3] है
खुदा सोया हुआ है, अहिरमन[4] महशर बदामा[5] है
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हू

गमो-हुर्मा[6] की युरिश[7] है, मसाइब[8] की घटाएं हैं
जुनू की फितनाखेज़ी[9] हुस्न की खूनी अदाएं हैं
बड़ी पुरज़ोर आधी है, बडी काफिर बलाएं हैं
मगर मैं अपनी मंजिल की तरफ बढता ही जाता हूं

फजा मे मौत के तारीक[10] साये थरथराते हैं
हवा के सर्द झोके कल्ब[11] पर खजर चलाते हैं
गुज़श्ता इशरतो[12] के ख्वाब आईना दिखाते हैं
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

ज़मी ची बर जबी[13] है, आस्मा तखरीब[14] पर मायल[15]
रफीकाने-सफर[16] मे कोई बिस्मिल है कोई घायल
तआकुब[17] मे लुटेरे हैं, चटानें राह मे हायल[18]
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

उफक[19] पर ज़िन्दगी के, लश्करे-ज़ुलमत[20] का डेरा है
हवादिस[21] के कयामतखेज़[22] तूफानो ने घेरा है

१. अन्धकार, २ चाद-सितारो का प्रकाश, ३ विरक्त, ४ बदी का देवता, ५. दामन मे प्रलय लिए हुए, ६ दुख और कष्ट, ७ वर्षा, ८ विपत्तियां, ६ उपद्रव करना, १०. काले, ११ अधेरे, १२ विलास, १३ अस्तव्यस्त, १४. विनाश, १५ उद्धत, १६ सफर के साथी, १७. पीछे, १८ बादल, १६ क्षितिज, २० अन्धकार की फौज, २१ घटनाए, २२ प्रलय-कारी।

जहां तक देख सकता हू अधेरा ही अंधेरा है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

चरागे-दैर[२३] फानूसे - हरम,[२४] कन्दीले - रोहबानी[२५]
यह सब हैं मुद्दतो से वेनियाज़े - नूरे - इरफानी[२६]
न नाकूसे - बिरहमन[२७] है, न आहगे-हुदी ख्वानी[२८]
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

तलातुमखेज़[२९] दरिया, आग के मैदान हायल हैं
गरजती आधियां, बफरे हुए तूफान हायल हैं
तबाही[३०] के फरिश्ते जब्र के शैतान हायल हैं
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

फज़ा मे शोला अफशा[३१] देवे-इस्तिब्दाद[३२] का खजर
सियासत की सनानें,[३३] अहले-ज़रके[३४] खूचका[३५] तेवर
फरेबे-बेखुदी देते हुए बिल्लौर के सागर
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

बदी[३६] पर बारिशे-लुत्फो-करम,[३७] नेकी पे ताज़ीरें[३८]
जवानी के हसी ख्वाबो की हैबतनाक[३९] ताबीरें
नुकीली तेज़ संगीनें है खून आशाम[४०] शमशीरें
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

हुकूमत के मज़ालिम,[४१] जग के पुरहौल[४२] नक्शे हैं
कुदालो के मकाबिल तोप, बन्दूकें हैं नेज़े है
सलासिल,[४३] ताज़ियाने,[४४] बेड़िया, फासी के तख्ते हैं
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हू

२३ मदिर का चिराग़, २४. काबे का फ़ानूस, २५ गिरजे का चिराग़, २६ ज्ञान के प्रकाश से बेनियाज़, २७ ब्राह्मण का शख, २८ हुदीख्वानी की आवाज़, २९ तूफानी, ३० विनाश, ३१ शोले बिखेरता हुआ, ३२ अत्याचार का राक्षस, ३३ तीर की नोक, ३४ धनवान, ३५ खून टपकाते हुए, ३६. बुराई, ३७ दया की वर्षा, ३८ मज़ा देना, ३९ डरावनी, ४० खून पीने वाली, ४१ अत्याचार, ४२ भयानक, ४३ ज़जीर, ४४ कोड़ा ।

उफक पर जंग का खूनी सितारा जगमगाता है
हर इक झोका हवा का मौत का पैगाम लाता है
घटा की घन गरज से कल्बे-गेती[४५] कांप जाता है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

फना[४६] के आहनी[४७] वहशत असर[४८] कदमो की आहट है
धुए की बदलियां हैं गोलियो की सनसनाहट है
अजल[४९] के कहकहे हैं ज़लज़लो की गड़गडाहट है
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हूं

अंधेरा

मखदूम मोहिउद्दीन

रात के हाथ मे इक कास.ए-दरयूज़ागरी[१]
यह चमकते हुए तारे यह दमकता हुआ चाँद
भीक के नूर मे, मागे हुए उजाले मे मगन
यही मलबूसे-उरूसी[२] है यही इनका कफन
इस अधेरे मे वह मरते हुए जिस्मो की कराह
वह अज़ाज़ील के कुत्तो की कमीगाह[3]
वह तहजीब के ज़ख्म
खन्दकें
बाढ के तार
बाढ के तारो मे उलझे हुए इंसानो के जिस्म
और इसानो के जिस्मो पे वह बैठे हुए गिध
वह तडखते हुए सर
मैयतें हाथ कटी पाव कटी

४५ धरती का दिल, ४६ मौत, ४७ लोहे का, ४८ वहशत पैदा करने वाले, ४९ मौत।

अंधेरा

१. भीख माँगने का कमडल, २ शादी का जोडा, ३ दुश्मन की घात में छुपकर बैठने की जगह ।

लाश के ढाचे के इस पार से उस पार तलक
सर्द हवा
नौहा-ओ-नाला-ओ-फरियाद कुना[४]
शब के सन्नाटे मे रोने की सदा
कभी बच्चो की कभी माओ की
चांद के तारो के मातम[५] की सदा
रात के माथे पे आजुर्दा[६] सितारो का हुजूम
सिर्फ खुर्शीदे-दरख्शा[७] के निकलने तक हैं
रात के पास अंधेरे के सिवा कुछ भी नही

जंग और इंक़िलाब

सरदार जाफरी

रक्स कर अय रूहे-आज़ादी कि रक्सां है हयात
घूमती है वक्त के महवर[१] पे सारी कायनात

जिन्दगी मीना-ओ-सागर से उबल जाने को है
कामरानी[२] के नये साचे मे ढल जाने को है

उड रहा है जुल्मो-इस्तिवदाद[३] के चेहरे से रग
छट रहा है वक्त की तल्वार के माथे से ज़ग

है फज़ाओ मे नवैदे-शादमानी[४] का सुरूर
पड रहा है इशरते-फर्दा[५] की पेशानी पे नूर

मौत हंस कर देखती है आईना तल्वार मे
ज़रपरस्ती का सफीना आ गया मंझधार मे

४ आर्तनाद करते हुए, ५ शोक, ६ उदास, ७ प्रकाशमान सूर्य ।

जग और इंकिलाव

१. धुरि, २ सफलता, ३. अत्याचर, ४. खुशी की शुभ सूचना, ५ कल का ऐश्वर्य ।

वाहमी नफरत के गोले जग की पुरहोल[६] ग्राग
पीरजन[७] सरमायादारी है कि बेवा का सुहाग

खून की बू से मशामे-ज़िन्दगी मखमूर[८] है
गोलियो की सनसनाहट से फजा मामूर है

यह है वह ज़ंजीर खद हाथो से ढाला था जिसे
यह है वह बिजली कि खुद खिर्मन[९] ने पाला था जिसे

तीर जो चुटकी मे था पैवस्त[१०] ग्रब वाज़ू मे है
ग्रास्ती मे था जो खजर ग्राज वह पहलू मे है

ग्रा गया है वक्त वह जो ग्राके टलता ही नही
ग्रपना लगर ग्राज ग्रपने से सभलता ही नही

हिल चुका है तख्ते-शाही, गिर चुका है सर से ताज
हर कदम पर डगमगाया जा रहा है साम्राज

ढल रही है ज़रगरी की रात के तारो की छाव
मुफ्लिसी फैला रही है वक्त की चादर मे पांव

इकिलाबे-दहर मे चढता हुग्रा पारा है जंग
वक्त की रफ़्तार का मुडता हुग्रा धारा है जग

हमसे ग्राज़ादो का इस दम गीत गाना खूब है
सर फिरे बागी जवानो का तराना खूब है

गम के सीने मे खुशी की ग्राग भरने दो हमे
खू भरे परचम के नीचे रक्स करने दो हमे

६. भयानक, ७. बूढी, ८ नशे मे, ९. खलियान, १० घुटता हुग्रा ।

वतन आज़ाद करने के लिए

अल्ताफ मुश्हदी

हिन्द का उजडा चमन आवाद करने के लिए
दर्द के मारे हुओ को शाद करने के लिए
इक नया अहदे-जहा आवाद करने के लिए
कस्रे-इस्तिवदाद[1] को वरवाद करने के लि
झूम कर उठो वतन आज़ाद करने के लि

सफह ए-हस्ती मे वातिल[2] को मिटाने के लिए
खिर्मने-एदा[3] पे अव विजली गिराने के लिए
अहले - ज़र[4] की वेकसी पर मुस्कुराने के लिए
यानी अर्वाहि-सलफ[5] को शाद करने के लि
झूमकर उठो वतन आज़ाद करने के लि

फिर से भडकाओ दिलो मे गैरतो की आग को
रज्म[6] की जानिव वढाओ जुरअतो[7] की वाग को
पांव के नीचे कुचल दो सीमो-ज़र[8] के नाग को
ज़िन्दगानी को सरापा शाद[9] करने के लि
झूमकर उठो वतन आज़ाद करने के लि

मस्तिए - महवाए - आज़ादी[10] मे लहराते चलो
अब्र[11] की सूरत वलन्द-ओ-पस्त[12] पर छाते चलो
कहकहो मे लैल ए - मग़्रिव[13] को शर्माते चलो
फिर दयारे-हिन्द को आवाद करने के लि
झूमकर उठो वतन आज़ाद करने के लि

१. अत्याचार का महल, २ झूठ, ३ अमानत का खलियान, ४ धनवान, ५ पूर्वजो की आ
६. युद्ध, ७ साहस, ८ सोना-चांदी, ९ पूर्णरूपेण खुश, १० आजादी की मदिरा का
११. वादल, १२. ऊँचे-नीचे, १३ पश्चिम की माशूक़ा ।

सवालिया निशान

अख्तरुल ईमान

दहका[1] संवारता है मिट्टी
चुन चुन के बिखेरता है दाने
और सोचता जा रहा है जी मे
फिर आयेगी जंग आज़माने
और दिल को टटोलता है रुककर
फिर दूर उफक़ को देखता है
कुछ रग से तीरगी मे डूबे
मजबूर उफक़ को देखता है

आखो मे लहू की बूद कापी
गिरते ही ज़मी पे खो गयी फिर
परवान चढाये थे जो पौदे
वह जल गये रात हो गयी फिर
खाली कई गोशे हो गये हैं
तन्हा तो न था, पे रह गया है
करना पड़ा नेशे-गम[2] गवारा
किस-किस का न खून बह गया है

फिर दूर उफक को देखता है
यह खेत, वुसअते-बयावां[3]
सर सब्ज़ जमी के यह फूल
यह सब्ज़ ए-नौरस्ता,[4] यह खयावां[5]
सब आग मे जल रहे हैं गोया
थम थम के पिघल रहे हैं गोया

दहका संवारता है मिट्टी
रुक-रुक के बिखेरता है दाने
और सोचता जा रहा है जी मे
फिर आयेगी जग आज़माने

१ किसान, २. ग़म का ज़हर, ३ जगल का विस्तार, ४ नयी हरियाली, ५ क्यारी।

लम्हः ए-ग़नीमत

साहिर लुधियानवी

मुस्कुरा अय जमीने तीरा-ओ-तार[1]
सर उठा, अय दबी हुई मखलूक[2]
देख वह मग्रिबी उफक[3] के करीब
आंधिया पेचो-ताब खाने लगी
और पुराने किमारखाने[4] मे
कुहना शातिर[5] बहम[6] उलझने लगे
कोई तेरी तरफ नही निगरा
यह गरांबार सर्द जजीरें
जंग खुर्दा हैं आहनी ही सही
आज मौका है टूट सकती हैं
फुर्सते-यक नफस गनीमत जान
सर उठा, अय दबी हुई मखलूक

सवेरा

जा निसार अख्तर

तारीक उफक के माथे से सदियों की सियाही छूट गयी
जुल्मात[1] का सीना चाक हुआ, लो मास भी शब की टूट गयी
लो सुब्ह की लौ भी फूट गयी

१ अन्धकारग्रस्त, २ जनता, ३. पूर्वी क्षितिज, ४ जुआखाना, ५ पुराने शतरंजबाज, ६. आपस मे।

सवेरा

१ अंधेरा।

मौजो ने कोई करवट बदली, ख्वाबीदा[2] किनारे जाग उठे
दरिया के अधेरे सीने मे सोये हुए धारे जाग उठे
तूफा के किनारे जाग उठें

जालिम का सफीना डूब गया खूनाबा[3] फशा तुगियानो में
मज़लूम की किश्ती तैर गयी इन सुर्ख-ओ-सियह तूफानो मे
सैलाब उठा अर्मानो मे

इक खू-सा बरसा दौलत के गुलपोश हसी काशानो[4] पर
इक आग-सी लपकी सहबा[5] मे डूबे हुए इशरतखानो पर
इक बर्क गिरी ऐवानो पर

सदियो के सुलगते आदम[6] का वह सोज़े-दरू[7] अफसाना हुआ
इबलीस का जादू टूट गया, यजदा[8] का फसू[9] अफसाना हुआ
वह दौरे-जुनू अफसाना हुआ

इफ्लास की बेरग आखो मे उम्मीद की लाली छाने लगी
मज़दूर के सादा माथे पर गुलरग शफक लहराने लगी
रगीन किरन बल खाने लगी

ताजो की जियाए[10] ख्वाब हुईं मेहनत की कुलाहे[11] जाग गयी
तकदीर की जुल्मत दूर हुई तारीख की राहे जाग गयी
ख्वाबीदा निगाहे जाग गयी

तखरीब[12] की चीखें डूब गयी तामीर[13] का सरगम लहराया
एहसास की दुनिया जाग उठी, जज्बात का आलम लहराया
लो ज़ीस्त का परचम लहराया

इक और नजारा जाग उठा, इक और समा बेदार हुआ
इक और ज़मी इक और फलक इक और जहा बेदार हुआ
गुलरग निशा बेदार हुआ

२ सोये हुए, ३. खून के आसू, ४ महल, ५ शराब, ६ मानव, ७ दिल की जलन, ८ नेकी का खुदा (अग्निपूजको के मतानुसार), ९. जादू, १० चमक, ११. टोपियाँ, १२ विनाश, १३. निर्माण ।
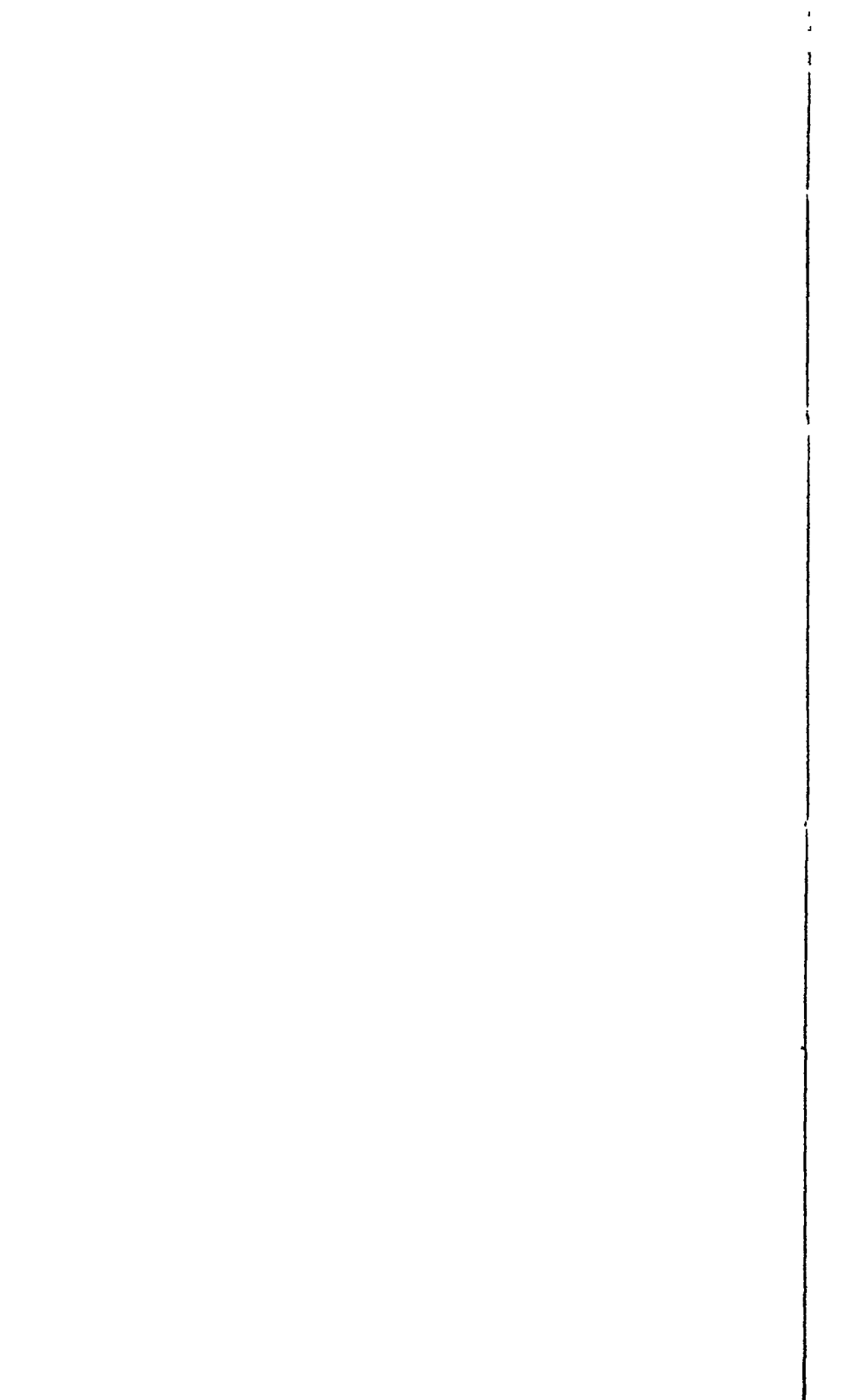
(तीसरा भाग)

अगस्त सन् १९४२ की बग़ावत और उसके बाद
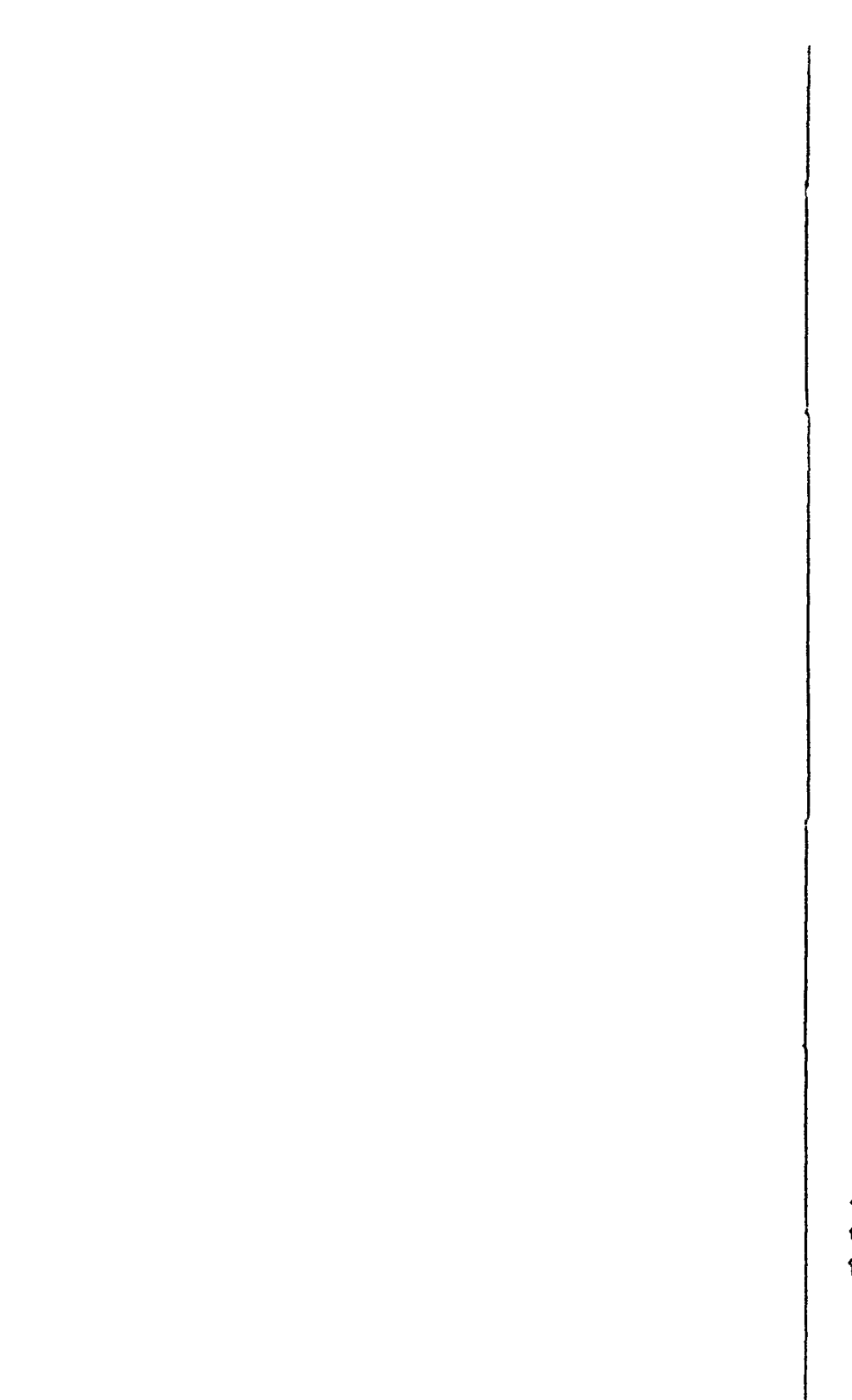
अय हमरहाने-क़ाफ़ला

जा निसार अख़्तर

आज आ पहुचे यह किस वादि-ए-ज़ुल्मत[2] मे हम
पँ ब पँ उठते नही हैं किसलिए अपने कदम

बढ गया क्या और भी मंज़िल का अपनी फासला
हमरहाने - काफला अय हमरहाने - काफला

कारवा मे आज पैदा हो चला है इतिशार[3]
अब भी क्या रहबर[4] का हम करते रहेगे इतिज़ार

क्यो न कर लें आज हम खुद रास्ते का फैसला
हमरहाने - काफला अय हमरहाने - काफला

रहज़नो[5] के हाथ से हम लुट गये तो क्या हुआ
रास्ते मे चन्द साथी छुट गये तो क्या हुआ

अब भी वही जुरअतें[6] हैं अब भी वही हौसला
हमरहाने - काफला अय हमरहाने - काफला

रोक क्या सकते हैं हमको दश्तो-दरिया[7] बहरो-बर[8]
सीन.ए - कुहसार[9] मे आओ तराशें रहगुज़र

हिम्मतो के रूबरू क्या कोई सगी मरहला[10]
हमरहाने - काफला अय हमरहाने - काफला

कुछ नही सूदो - ज़िया[11] - ओ - बेशो-कम[12] आगे बढो
लहज़ा लहज़ा लम्हा लम्हा,[13] दम ब दम आगे बढो

. काफले के साथियो, २ अधकार की वादी, ३ अस्तव्यस्तता, ४ मार्गदर्शक, ५ चोर, हिम्मत, साहस, ७ जगल और दरिया, ८. समुद्र, ९. पर्वत का सीना, १०. समस्या, १ लाभ और हानि, १२ कम-ज्यादा, १३. क्षण-क्षण ।

ज़िन्दगी में गर्म रफ्तारी[14] है ख़ुद अपना सिला[15]
हमरहाने - काफला अय हमरहाने - काफला

जुल्मतें[16] मैदां में आख़िर भागने वाली हैं अब
दफ्अतन[17] मंज़िल की राहें जागने वाली है अब

ख़त्म है अब इन अंधेरी वादियों का सिलसिला
हमरहाने - काफला अय हमरहाने - काफला

अभी नहीं

जां निसार अख़्तर

बहार है तो क्या, हराम है नशाते-गुलसिता[1]
अभी तो ख़ुद ही सीनः ए-चमन में आग है निहा[2]
यह जश्ने-गुल[3] अभी नही, यह रंगो-बू अभी नही

अभी तो परफ़शा[4] दिले-बशर[5] में गम की आग है
अभी तो वक्त के लबों[6] पे शोलाबार[7] राग है
नवाए - मुतरिबाने - ख़ुशगुलू अभी नही

अभी तो चर्खे-ज़िन्दगी[8] पे जुल्मतों[9] का दूद[10] है
अभी तो बिजलियों की ज़द पे ख़िर्मने-वजूद[11] है
नज़ारा सोज़[12] महविशों[13] की आरज़ू अभी नही

१४ तीव्र गति, १५ पुरस्कार, १६ अंधकार, १७ सहसा।

अभी नहीं

१ उपवन का सुख, २ छुपी हुई, ३ फूलों का समारोह, ४. चमकती हुई, ५ मानव-हृदय, ६ ओंठ, ७ शोले बरसाती हुई, ८ जीवन का आकाश, ९ अंधकार, १० धुआं, ११ अस्तित्व का अभिमान, १२ दृश्य को जलाने वाला, १३ सुन्दरियों।

अभी तलातुमे-हयात[१४] है कमाले-ओज[१५] पर
अभी सफीनःए-बशर[१६] है जुल्मतो की मौज पर
चरागे - माहतावो - सैरे - आवजू[१७] । अभी नही

अभी तो गैरमोतबर[१८] है शरह[१९] कायनात[२०] की
अभी तो बहस गर्म है मसाइले-हयात[२१] की
नियाज़ो-नाज़[२२] की लतीफ गुफ्तगू अभी नही

अभी तो दौरे-नौ[२३] है गर्के-शोरे-नावको-कमन्द[२४]
अभी तो जामे-अर्ज[२५] से है एक मौजे-खू[२६] बलन्द
मै-ए- कुहन[२७] अभी नही, खुमो-सुब्रू[२८] अभी नही

झुका वह फर्के-आस्मा[२९] उठी वह तेगे-बेनियाम[३०]
हम अपने मुल्को-कौम को रखेंगे क्या सदा गुलाम
जवानियो का सर्द[३१] इस कदर लहू अभी नही

क़ैदी की लाश*

अली जव्वाद जैदी

यह किसने लाश फेंक दी जवानियो की राह मे
अभी नुमूदे-ज़िन्दगी[१] बसी न थी निगाह मे
अभी दरीच ए-सहर[२] खुला न था

१४ जीवन का तूफान, १५ जोश, १६ मानव की नाव, १७ चाद का चराग और नदी की सैर, १८ अविश्वसनीय, १९ टीका, व्याख्या, २० ब्रह्माण्ड, २१ जीवन की समस्याए, २२ गर्व, २३ नया जमाना, २४ वाण और कमन्द के कोलाहल मे डूबा हुआ, २५. धरती का जाम, २६ खून की मौज, २७ पुरानी शराब, २८. सुराही और प्याला, २९ आकाश का सर, ३० विना मियान की तलवार, ३१ ठण्डा ।

कैदी की लाश

* यह नज्म महादेव देसाई की मौत से मुतास्सिर होकर लिखी गई है ।
१ जीवन का आविर्भाव, २ प्रभात की खिडकी ।

अभी फ़सूने-तीरगी[३] मिटा न था
सुकूत[४] मे जमाना था
अभी गुज़रे थे हम जवारे-रज़मगाह[५] मे
यह किसने लाश फेंक दी जवानियो की राह मे

यह ख़ौफ़े-अश्को-आह[६] था
यह शामे-गम का अक्स था, यह एक इन्तिबाह[७] था
सितमगरो के तर्कशो का तीर था
मगर बराहे-मस्लिहत[८]
अभी यह सख्त चुटकियो के बीच मे असीर[९] था
कि अब गुज़र रहे थे हम नुमाइशे-सिपाह[१०] मे
हुजूमे-अश्को-आह मे
यह किसने लाश फेंक दी जवानियो की राह मे

हमी इसे कुचल न दें अभी यही
यह रौंदने की चीज़ क्यो बने अमानते-ज़मी[११]
नही नही !
बढे चलो बढे चलो कुचल भी दो
खिज़ा का गुचा है यह लाश, हां इसे मसल भी दो
मगर यह किस की लाश थी कि बेडिया
पड़ी हैं अब भी पाव मे।
यह किसने लाश फेंक दी है अजनबी से गाव मे
सितम की धूप छाव मे
बढे चलो बढे चलो कुचल भी दो
खिज़ा का गुचा है यह लाश, हा इसे मसल भी दो
यह मौत का मुजस्समा[१२] डरा रहा है देर से
लहू मे तर बतर है सर से पाव तक
जमे हुए लहू मे है मिरे ही खून की महक

३ अंधकार का जादू, ४ मौन, ५ युद्ध का मैदान, ६ आंसू और आह का भय, ७. चेतावनी,
८ भलाई की खातिर, ९ कैद, १० फौज का प्रदर्शन, ११ जमीन की अमानत, १२. मूर्ति.

कोई अज़ीज़ तो नही
मगर कटे हुए सरो मे कुछ तमीज़ तो नही
कोई भी हो अज़ीज़ है !
कि इस जरी[13] ने जान दी है जश्ने-रज़्मगाह[14] मे
यह किसने लाश फेंक दी जवानियो की राह मे

यह दूर अपने आश्रम को छोडकर
यह अपने टूटे झोपडे से अपने मुह को मोडकर
यह ज़ुल्मो-जौर की भरी कलाइयाँ मरोडकर
निकल पडा
अधेरी रात थी मगर यह चल पडा
कोई भी हो अज़ीज़ है
कि इस जरी ने जान दी है जश्ने-रज़्मगाह मे
यह किसने लाश फेंक दी जवानियो की राह मे

कुछ देर ज़रा सो लेने दो*

शमीम किरहानी

कुछ देर ज़रा सो लेने दो
तुम जेल जिसे ले जाते हो वह दर्द का मारा है देखो
मज़लूम, अहिंसा का हामी, बेबस दुखियारा है देखो
बेचैन सा उसकी आँखो मे पिछले का सितारा है देखो
कुछ देर ज़रा सो लेने दो

---

* सन् १९४२ मे महात्मा गांधी की गिरफ्तारी सोती रात को अमल मे आई थी।

१३ बहादुर, १४ युद्ध के मैदान का समारोह।

आया है अमल की वादी से दिन भर का थ
अफकार[1] के काटो का छेडा, आलाम[2] की आ
वह जलती रेग[3] थी सहरा की, लेटा है अ
कुछ देर ज

कुछ खाक पडी है माथे पर कुछ गर्द ज
तशवीश[4] की नीली शिकनें[5] है संवलाए हु
ठडक भी नही आने पाई तल्वो के तपव
कुछ देर जर

अफलाक[6] के रुख पर आव[7] कहा गुर्बत[8] की नज
पल्को मे जो भर दे मस्त किरन आकाश पे वह
माना कि गुलाम आखो के लिए, आजाद खुशी
कुछ देर जर

जिन्दा[11] की भयानक रातो मे जो जुल्म पडे
तूफाने-सितम[12] मे, टूटी हुई किश्ती की तर
आजाद घडी की हसरत में वेख्वाव[13] सदा
कुछ देर जर

हम उसके अजीज सिपाही वह सरदार हमा
कुल हिन्द फिदा है उस पर वह कुल हिन्द का
जिस मौज को छेड़ रहे हो तुम वह आग का
कुछ देर ज

हम तुमको बताये देते हैं इक रोज व
मजलूम के होठो पर जिस दम वन्दिश की
वह शोर उठेगा हर दिल से उस शोर मे
कुछ देर ज

क़िला अहमदनगर

(जहां काग्रेसी रहनुमा नज़रबन्द थे)

कैफी आज़मी

यह बुझी सी शाम, यह सहमी हुई परछाइया
ख़ूने-दिल भी इस फज़ा मे रग भर सकता नही

आ उतर आ कापते होठो पे अय मायूस[1] आह
सक्फे-जि़न्दा[2] पर कोई परवाज कर सकता नही

झिलमिलाये मेरी पलको पर महो-ख़ुर[3] भी तो क्या
इस अंधेरे घर मे इक तारा उतर सकता नही

लूट ली ज़ुल्मत[4] ने रूए-हिन्द की ताबिन्दगी[5]
रात के काधे पे सर रखकर सितारे सो गये

वह भयानक आधिया, वह अबतरी[6] वह ख़ल्फिशार[7]
कारवा बेराह हो निकला मुसाफिर खो गये

हैं इसी ऐवाने-बेदर[8] मे यकीनन रहनुमा
आके क्यो दीवार तक नक्शे-कदम गुम हो गये

देख अय जोशे-अमल वह सकफ[9] यह दीवार है
एक रौज़न[10] खोल देना भी कोई दुश्वार है

१ निराश, २ जेल की छत, ३ चाद-सूरज, ४ अधकार, ५. आभा, चमक, ६ बुरा हाल, ७ व्याकुलता, बेचैनी, ८ बिना दरवाज़े का महल, ९ छत, १० छिद्र।

विदेसी मेहमान से

अस्रारुल हक मजाज

मुसाफिर ! भाग वक़्ते-बेकसी है
तिरे सर पर अजल[1] मडला रही है
तिरी जेबो मे हैं सोने के तोडे
यहा पर जेब खाली हो चुकी है
यह आलम हो गया है मुफ्लिसी का
कि रस्मे-मेज़बानी[2] उठ गयी है
न दे ज़ालिम फरेबे - चारासाज़ी[3]
यह बस्ती तुझसे अब तग आ चुकी है
मुनासिब है कि अपना रास्ता ले
वह कश्ती देख साहिल[4] से लगी है
घटा जो इस समन्दर से उठी है
दुरे-खुश[5] आब भी बरसा चुकी है
मगर अब इसका आलम है जुदा ही
यह बदली आग बरसाती उठी है
सितारा सुबह का बेनूर[6] है अब
दरो-दीवार पर धूप आ चुकी है
नसीमे-नर्म रौ[7] इस गुलसिता की
समूमे-दश्त पैमा[8] बन चुकी है
बगूले उठ रहे हैं बढ रहे हैं
फज़ाए - दहर मे हलचल मची है
यहा हर शाख शमशीरे-बरहना[9]
गुलो से खून की बू आ रही है

१ मृत्यु, २ अतिथि-सत्कार की रस्म, ३. इलाज का धोखा, ४ किनारा, ५. चमकदार मोती, ६. प्राभाहीन, ७ धीरे-धीरे बहने वाली हवा, ८. लू, जहरीली हवा, ९ नगी तलवार।

मुरत्तब इक नया दस्तूर होगा
बिना[10] इक दौरे-नौ[11] की पड रही है
हिली जाती है बुनियादे - कदामत[12]
जवानी होश मे आई हुई है
यहा के आस्माने-आतिशी[13] पर
बगावत की घटा मंडला रही है
यहा से एक तूफा चल रहा है
यहा से एक आधी उठ रही है

मौसम के इशारे

जमील मजहरी

मल्लाह अगर बने हो प्यारे
समझो मौसम के भी इशारे
पतवार न तोड दे तुम्हारी
हालात के तुन्दो-तेज़ धारे

सुन सुन के यह इख्तियार के राग
हिम्मत मजबूरो की बढ रही है
गो, तुमने बना बना के कानून
ज़ंजीर नयी नयी गढी है

मीज़ाने-अमल[1] मे इनके जज़्बात[2]
हरचन्द अभी तुले नही हैं

१० नीव, ११ नया युग, १२ प्राचीनता की नीव, १३ आग बरसाने वाला आकाश।

मौसम के इशारे

१ व्यावहारिकता का तराज़ू, २ भावनाएँ।

तूफान ठुमक रहा है इनमे
पानी के यह वुलवुले नही है

लगर भारी सही तुम्हारा
कश्ती लेकिन उछल रही है
मौजें न हो वेकरार क्योकर
नद्दी करवट वदल रही है

वहकी वहकी हुई हवाएं
टुकडे वादल के ला रही है
मौजो के गले मे वाहे डाले
तूफान के गीत गा रही है

मौसम आखें दिखा रहा है
मजर तेवर वदल रहे हैं
छोटे छोटे हुवाव[३] भी आज
मुह से तूफा उगल रहे हैं

यह किमने वता दिया है तुमको
वादल हैं वहार की निशानी
इन काली घटाओ पर न फूलो
वरसेगा इन्ही मे लाल पानी

मौजें कफदरदहा[४] हैं तुम पर
फितरत[५] भी वर जवी[६] है तुमसे
कश्ती वाले मचाते हैं गुल[७]
कश्ती चलती नही है तुमसे

अव खैर इसी मे है कि आओ
कश्ती को डुवो के भाग जाओ

३ वुलवुले, ४ मुह मे झाग लिये हुए (क्रोधित), ५ प्रकृति, ६ नाराज, ७ शोर।

ख़्वाबे-सहर

असरारुल हक मजाज

महर[1] सदियो से चमकता ही रहा अफ्लाक[2] पर
रात ही तारी रही इंसान के इदराक[3] पर

अक्ल के मैदान मे जुल्मत[4] का डेरा ही रहा
दिल मे तारीकी[5] दिमागो मे अँधेरा ही रहा

इक न इक मजहब की सई-ए-खाम[6] भी होती रही
अहले-दिल पर बारिशे-इल्हाम भी होती रही

आस्मानो से फरिश्ते भी उतरते ही रहे
नेक बन्दे भी खुदा के काम करते ही रहे

इब्ने-मरियम[7] भी उठे मूसीए-इम्रा[8] भी उठे
रामो-गौतम भी उठे फिरऔनो-हामा भी उठे

अहले-सैफ[9] उठते रहे अहले-किताब आते रहे
ईं जनाब उठते रहे और आ जनाब आते रहे

हुक्मरा[10] दिल पर रहे सदियो तलक अस्नाम[11] भी
अब्रे-रहमत[12] बनके छाया दहर[13] पर इस्लाम भी

मस्जिदो मे मौलवी खुतबे सुनाते ही रहे
मन्दिरो मे बिरहमन अशलोक गाते ही रहे

१. सूरज, २. आकाश, ३ विवेक, ४ अन्धकार, ५ अधेरा, ६ अधूरी कोशिश, ७ हजरत ईसा, ८ हजरत मूसा, ९ तलवार के धनी, १० शासक, ११ मूर्तियाँ, १२ रहमत का बादल, १३ ससार।

आदमी मिन्नत कशे - अरबावे - इरफा[१४] ही रहा
दर्द - इंसानी मगर महरूमे - दर्मा[१५] ही रहा

इक न इक दर पर जबीने - शौक[१६] घिसती ही रही
आदमीयत जुल्म की चक्की मे पिसती ही रही

रहबरी जारी रही पैगम्बरी जारी रही
दीन के पर्दे मे जगे - जरगरी[१७] जारी रही

अहले - बातिन[१८] इल्म से सीनो को गर्माते रहे
जुहल[१९] के तारीक[२०] साये हाथ फैलाते रहे

यह मुसलसल आफतें, यह यूरिशें,[२१] यह कत्ले - आम
आदमी कब तक रहे औहामे - बातिल[२२] का गुलाम

जिहने - इंसानी[२३] है अब औहाम[२४] के ज़ुल्मात[२५] मे
जिन्दगी की सख्त तूफानी अंधेरी रात मे

कुछ नहीं तो कम से कम ख्वावे - सहर[२६] देखा तो है
जिस तरफ देखा न था अब तक उधर देखा तो है

गांधी-जिनाह मुलाक़ात पर

ज़ां निसार अख्तर

यह मीठे सुरो मे फिर किसने जीवन का मधुर नग्मा गाया
सोया हुआ दीपक चौंक पडा इक मस्त सा शोला लहराया
फिर रात ने दामन खीच लिया फिर सुवह ने आंचल सरकाया

१४ ज्ञानी लोगो की मिन्नत करता हुआ, १५ इलाज से वंचित, १६ प्रेम भरा ललाट, १७ सरमायादारी की जग, १८ ज्ञानी, १९ मूर्खता, २० अंधेरे, २१ आक्रमण, २२ झूठे भ्रम, २३ मानव मस्तिष्क, २४. भ्रम, २५. सागर, २६ सुवह का ख्वाब।

आशा के मनोहर फूल खिले, हिरदय का कवल भी मुस्काया
यह मीठे सुरो मे फिर किसने जीवन का मधुर नग्मा गाया

फिर आज वतन की देवी के माथे पे दमकता है तारा
फिर आज अंधेरी राहो मे हर सिम्त हुआ है उजियारा
जीवन के उफक[1] से बह निकला अनवार[2] का इक चंचल धारा
हर ज़र्रे मे ज्योती जाग उठी, टूटा हुआ जैसे महपारा[3]
फिर आज वतन की देवी के माथे पे दमकता है तारा

बिछडे हुए साथी मुद्दत के लो आज गले फिर मिलते हैं
लो फिर से बहारें लौट आईं, लो फूल दुबारा खिलते हैं
अब तक जो गरीबा चाक रहे वह आज गरीबा सिलते हैं
फिर प्रेम भरे जयकारो से गर्दू[4] के कगारे हिलते हैं
बिछडे हुए साथी मुद्दत के लो आज गले फिर मिलते हैं

वह वक्त भी कोई दूर नही वह वक़्त भी अब आ जायेगा
इक शमअ नयी जल जायेगी इक रूप नया छा जायेगा
किरनो का झलकता इक सागर, इस खाक पे लहरा जायेगा
धरती के दमकते मुखडे से ख़ुर्शीद[5] भी शरमा जायेगा
बिछुड़े हुए साथी मुद्दत के लो आज गले फिर मिलते हैं

किरन

(गाधी-जिनाह मुलाकात)

कैफी आजमी

मुतमईं[1] कोई नफस[2] अय दिले-रजूर[3] नही
अब अलग बैठ के जी लेने का मक्दूर[4] नही

१ क्षितिज, २. प्रकाश, ३. चाद का टुकड़ा, ४ आकाश, ५ सूरज ।

किरन

१ सन्तुष्ट, २ सास, ३ दुखी दिल, ४ शक्ति ।

तजर्बो ने वह लगाये हैं दिलो मे चर्के
रूठे मिल जायें गले आज तो कुछ दूर नही
जिन्दगी सुलह पे मजबूर हुई जाती है

रुख सम आलूद[५] हवाओ का बदलने सा लगा
शौक पज़मुर्दा[६] अनासिर[७] मे मचलने सा लगा
किसने यह साज़े उखूवत[८] पे अलापा दीपक
इक दिया रात के आगोश[९] मे जलने सा लगा
तीरगी[१०] रात की काफूर हुई जाती है

ख़ार[११] क्या चीज़ हैं दो दोस्त जो मिलना चाहे
सोज़े-रफ्तार[१२] से लौ देने लगी हैं राहें
वक्त ने सीनःए-एहसास[१३] मे ले ली चुटकी
डाल दी गर्म तकाज़ो ने गले मे बाहें
आखिरी शर्त भी मजूर हुई जाती है

मिल गयी उठके निगाहे जो निगहबानो की
नब्ज़[१४] उभर आई सिसकते हुए अर्मानो की
नाखुदा[१५] जोड के सर बैठने वाले हैं इधर
और उधर सास उखड़ने लगी तूफानो की
मौज कश्ती[१६] के तले चूर हुई जाती है

५ अगस्त सन् १९४४

५ ज़हरीली, ६ उदास, ७ तत्व, ८ बराबरी का साज, ९ गोद १० अन्धकार, ११ कांटा, १२ गति की जलन, १३ एहसास का सीना, १४ नाडी, १५ नाविक, १६ नाव।

समन्दर पार के फरिश्ताहाए-रहमत से

(वज़ारती मिशन सन् १९४६ की वापसी पर)

अहमद नदीम क़ासमी

अज़ाबे-जा[1] था अगर मुम्लिकत[2] का इस्तकलाल[3]
तो क्या जरूर कि हगामाहाए - गुफ्तो - शुनीद[4]
मुअल्लिमीने-सियासत,[5] तकल्लुफात[6] हैं यह
कि खुदशनास[7] है इंसानियत का दौरे - जदीद[8]

न जाने कब से यह तिफ्लाना[9] खेल जारी है
तुम्हारी उक्दा कुशाई,[10] हमारी महरूमी[11]
मज़ाक पर उतर आती है जब शहशाही[12]
तो अपने आपको पहचानती है महकूमी[13]

तुम्हारे ज़िह्न[14] की यह मूशिगाफिया[15] ही तो हैं
कि हुर्रियत[16] की खरीदो-फरोख्त[17] है दुश्वार[18]
ख़िज़ां[19] के बाद यकीनन बहार आती है
नही है आदते-फितरत[20] को मस्लिहत[21] दरकार

मुअर्रिखो[22] से कहो, खून मे डुबोयें कलम
बदल चुका है इरादे मे इज्तिराब[23] अपना
खिजा रहे कि बहार आये, हरचे बादाबाद
अब इक जकन्द[24] का है मुन्तज़िर[25] शबाब अपना

१ शारीरिक यातना, २ देश, ३ स्वागत, ४ कहने-सुनने के हगामे, ५. राजनीति के उस्ताद, ६ शिष्टाचार, ७ स्वय को पहचानने वाला, ८ नयाा युग, ९ बच्चों का खेल, १० गाँठ खोलना, ११. हीनता, वचितता, १२ बादशाहत, १३ दासता, गुलामी, १४ बुद्धि, १५ बाल की खाल निकालना, १६ आजादी, १७ क्रय-विक्रय, १८ कठिन, १९ पतझड, २० प्रकृति का स्वभाव, २१. भलाई, २२ इतिहासकार, २३ व्याकुलता, २४ छलाग, २५ प्रतीक्षक, इतज़ार ।

पाकिस्तान चाहने वालो से

शमीम किरहानी

हमको बतलाओ तो क्या मतलब है पाकिस्तान का
जिस जगह इस वक्त मुस्लिम हैं, नजिस[1] है क्या वह जा[2]

नेशे-तुहमत[3] से तिरे, चिश्ती[4] का सीना चाक है
जल्द बतला क्या जमी अजमेर की नापाक है

कुफ्र की वादी मे ईमा का नगीना खो गया
हाए क्या खाके-नजिस[5] मे शाहे-मीना सो गया

दीन का मखदूम जो कलियर की आबादी मे है
आह उसका आस्ताना क्या नजिस वादी मे है

हैं इमामो के जो रौज़े लखनऊ की खाक पर
बन गये क्या तौबा तौबा खित्त ए-नापाक[6] पर

बात यह कैसी कही तूने कि दिल ने आह की
क्या जमी ताहिर[7] नही दरगाहे-नूरुल्लाह की

आह उस पाकीज़ा गगा को नजिस कहता है तू
जिसके पानी से किया मुस्लिम शहीदो ने वज़ू

नामे-पाकिस्ता न ले गर तुझको पासे-दीन[8] है
यह गुज़श्ता[9] नस्ले-मुस्लिम[10] की बडी तौहीन[11] है

टुकडे टुकडे कर नही सकते वतन को अहले-दिल
किस तरह ताराज[12] देखेंगे चमन को अहले-दिल

१ अपवित्र, २ जगह, ३ झूठे आरोप का जहर, ४ ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, ५ अपवित्र धूल, ६ अपवित्र धरती, ७ पवित्र, ८ धर्म का ख्याल, ९ गुज़री हुई, १० मुसलमानो की नस्ल, ११. अपमान, १२. नष्ट।

क्या यह मतलब है कि हम महरूमे-आज़ादी[13] रहे
मुकसिम[14] होकर अरब की तरह फरयादी रहे

टुकडे-टुकडे होके मुस्लिम खस्तादिल हो जायेगा
नख्ले-जमीअत[15] सरासर, मुज्महिल[16] हो जायेगा

मंज़िल क़रीबतर है

सीमाब अकबराबादी

अय अहले-कारवा क्या तुमको भी यह खबर है? मंजिल करीबतर है
है खत्म जाद ए-शब[1] और आमदे-सहर[2] है—मंजिल करीबतर है

अल्लाह रे वह जज्बा[3] जो कामियाब निकला
जादा शनास[4] निकला, मकसद मआव[5] निकला
बेदार कुन मआले-तजदीदे-ख्वाब[6] निकला
लो मश्रिके-तलब[7] से वह आफताब[8] निकला
वह आफताब जिसमे उम्मीद जल्वागर[9] है—मंजिल करीबतर है

जो शोरिशे-तमाम[10] महफिल बनी हुई है
हर गुफ्तगू का जुज्वे-हासिल बनी हुई है
लाहल[11] जो एक फिक्रे-बातिल[12] बनी हुई है
सदियो से जो हदीसे-मुश्किल[13] बनी हुई है
वह दास्ताने-मजिल फिलजुमला[14] मुख्तसर[15] है—मंजिल करीबतर है

१३ आज़ादी से वंचित, १४. टुकडे-टुकडे, १५. जनसमूह का वृक्ष, १६. उदास।

मंजिल करीबतर है

१ रात का मार्ग, २ प्रात काल का आगमन, ३ भावना, ४ मार्ग पहचानने वाला, ५ उद्देश्य की पूर्ति करने वाला, ६ नये सपने देखने का असर, ७. तलब का क्षितिज, ८ सूरज, ९ जल्वा दिखाती हुई, १० राजक्रांति, गदर, ११ जो हल न हो सके, १२ झूठी चिंता, १३ कठिनाई की हदीस, १४. सब मिलाकर, १५ सक्षिप्त।

अय अहले-कारवां हो तुम पर सलाम मेरा
आसूदगी[16] मुबारक है ख़त्म काम मेरा
हूं रहनुमाए-मंज़िल,[17] शाइर है नाम मेरा
लाया है ता ब मंज़िल तुमको पयाम मेरा
पहले जो हमसफ़र था अब हासिले-सफ़र है—मंज़िल क़रीबतर है

आज़ादी

फ़िराक़ गोरखपुरी

मिरी सदा[1] है गुले-शमए-शामे-आज़ादी[2]
सुना रहा हूं दिलों को पयामे-आज़ादी[3]

लहू वतन के शहीदों का रंग लाया है
उछल रहा है ज़माने में नामे-आज़ादी

मुझे बक़ा[4] की ज़रूरत नहीं कि फ़ानी[5] हूं
मिरी फ़ना से है पैदा दवामे-आज़ादी[6]

जो राज करते हैं जम्हूरियत[7] के पर्दे में
उन्हें भी है सरो-सौदाए-ख़ामे-आज़ादी[8]

बनायेंगे नयी दुनिया किसान और मज़दूर
यही सजायेंगे दीवाने-आमे-आज़ादी[9]

फ़ज़ा में जलते दिलों से धुआं सा उठता है
अरे यह सुब्हे गुलामी! यह शामे आज़ादी

१६. सम्पन्नता, १७. मार्ग-प्रदर्शक।

आज़ादी

१. आवाज़, २ आज़ादी की शाम की शमा का फूल, ३. आज़ादी का संदेश, ४ अमरता, ५. नश्वर, ६. आज़ादी की नित्यता, ७. गणतन्त्र, ८ आज़ादी का झूठा उन्माद, ९ आज़ादी का दीवाने-आम।

यह महरी-माह[१०] यह तारे यह बामे-हफ़्त अफ्लाक[११]
बहुत बलन्द है इनसे मुकामे-आज़ादी

फ़ज़ाए-शामो-सहर[१२] मे शफक झलकती है
कि जाम मे है मै लालाफामे-आज़ादी[१३]

सियाह खानः-ए- दुनिया[१४] की ज़ुल्मतें[१५] हैं दोरग
निहा[१६] है सुब्हे-असीरी[१७] मे शामे-आज़ादी

सुकू का नाम न ले, है वह कैदे-बेमेयाद[१८]
है पै ब पै हरकत मे कयामे-आजादी

यह कारवा हैं पस्मान्दगाने-मज़िल[१९] के
कि रहरवो[२०] मे यही हैं इमामे - आज़ादी[२१]

दिलो मे अहले-ज़मी के है नीव इसकी मगर
कसूरे-खुल्द[२२] से ऊंचा है बामे-आजादी[२३]

वहां भी खाक नशीनो ने झडे गाड दिये
मिला न अहले-दुवल[२४] को मकामे-आज़ादी

हमारे ज़ोर से जंजीरे-तीरगी[२५] टूटी
हमारा सोज़[२६] है माहे-तमामे-आज़ादी[२७]

तरन्नुमे-सहरी[२८] दे रहा है जो छुपकर
हरीफे-सुबहे-वतन[२९] है यह शामे-आज़ादी

हमारे सीने मे शोले भडक रहे हैं फिराक
हमारी सास से रौशन है नामे-आज़ादी

१०. चाद-सूरज, ११ सातवें आसमान की छत, १२ सुबह-शाम का वातावरण, १३ आज़ादी की लाल रग की शराब, १४ दुनिया का काला घर, १५ अधकार, १६ छुपा हुआ, १७ कैद की सुबह, १८ असीम कैद, १९ मज़िल से पिछडे हुए, २० पथिक, २१ आज़ादी का नेता, २२. स्वर्ग का महल, २३. आज़ादी की छत, २४ मक्कार, २५ अधकार की ज़जीर, २६ जलन, २७ आज़ादी का पूर्ण चद्र, २८ सुबह का राग, २९ वतन की सुबह की प्रतिद्वद्वी।

आज़ादि-ए-वतन

मखदूम मोहिउद्दीन

कहो हिन्दोस्ता की जय
कहो हिन्दोस्ता की जय

कसम है खून से सींचे हुए रगी गुलिस्ता की
कसम है खूने-दहका[1] की, कसम खूने-शहीदा[2] की

यह मुम्किन है कि दुनिया के समन्दर खुश्क[3] हो जायें
यह मुम्किन है कि दरिया बहते बहते थक के सो जायें

जलाना छोड़ दें दोजख[4] के अगारे यह मुम्किन है
रवानी[5] तर्क[6] कर दें बर्क[7] के तारे यह मुम्किन है

ज़मीने-पाक[8] अब नापाकियो को ढो नही सकती
वतन की शमग्रे-आज़ादी[9] कभी गुल हो नही सकती

कहो हिन्दोस्ता की जय
कहो हिन्दोस्ता की जय

वह हिन्दी नौजवानो यानी अलम बरदारे-आज़ादी[10]
वतन का पास्बा, वह तेगे-जौहरदारे-आज़ादी[11]

वह पाकीज़ा शरारा[12] बिजलियो ने जिसको धोया है
वह अगारा कि जिसमे ज़ीस्त[13] ने खुद को समोया है

वह शमग्रे-ज़िन्दगानी आंधियो ने जिसको पाला है
इक ऐसी नाव तूफानो ने खुद जिसको सभाला है

१ किसान का खून, २ शहीदो का खून, ३ सूखे, ४ नर्क, ५ प्रवाह, ६ त्यागना, ७ बिजली, ८ पवित्र धरती, ९ आज़ादी का चिराग़, १०. आज़ादी का झडा उठाने वाले, ११. आज़ादी की तेज धार तलवार, १२ चिगारी, १३ ज़िन्दगी ।

वह ठोकर जिससे गेती[१४] लर्ज़ा बर अन्दाम[१५] रहती है
वह धारा जिसके सीने पर अमल की नाव बहती है

छुपी खामोश आहे शोरे-महशर[१६] बनके निकली हैं
दबी चिंगारियां खुर्शीदे-खावर बनके निकली हैं

बदल दी नौजवाने-हिन्द ने तकदीर जिन्दा[१७] की
मुजाहिद की नज़र से कट गयी ज़ंजीर जिन्दां की

कहो हिन्दोस्तां की जय
कहो हिन्दोस्तां की जय

बोल

फैज अहमद फैज

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल, जबां अब तक तेरी है

तेरा सुतवां जिस्म है तेरा
बोल कि जां अब तक तेरी है

देख कि आहनगर[१] की दुकां[२] मे
तुन्द[३] हैं शोले सुर्ख़ है आहन[४]

खुलने लगे कुफ्लों[५] के दहाने[६]
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन

१४ धरती, १५ कंपित, १६ प्रलय का कोलाहल, १७ कैदखाना।

ढोल

१ आहों का शहर, २ दुकान, ३, तेज़, तीव्र, ४ लोहा, ५ ताला, ६ मुह।

बोल यह थोडा वक्त बहुत है
जिस्मो-ज़बा की मौत से पहले

बोल कि सच जिन्दा है अब तक
बोल जो कुछ कहना हो कहले

क़हते-बंगाल[1]

(दूसरी जगे-अज़ीम के मौके पर)

तिलोकचन्द महरूम

गुलामी मे नही है इनसे बचने का कोई चारा[2]
यह लड़ते हैं जहा से और हम पर बोझ है सारा
बजाने के लिए अपनी जहागीरी का नक़्क़ारा
हमारी खाल खिचवाते है, देखो तो यह नज्जारा
ब ज़ाहिर[3] हैं करमपर्वर,[4] ब बातिन[5] हैं सितमआरा[6]

यह अपनी ज़ात की खातिर हैं सबकी जान के दुश्मन
हैं खू आशाम[7] हर हैवान के, इंसान के दुश्मन
कभी हैं चीन के दुश्मन कभी ईरान के दुश्मन
हमारे दोस्त भी कब हैं जो हैं जापान के दुश्मन
उसे बन्दूक से मारा तो हमको भूख से मारा

१. बगाल का अकाल, २ इलाज, ३. प्रत्यक्ष रूप में, ४. दयालु, ५ पीठ पीछे, ६ अत्याचारी, ७. खून पीने वाला।

क़हते-बंगाल

जिगर मुरादाबादी

बगाल कि मैं शामो-सहर देख रहा हू
हरचन्द कि हूँ दूर मगर देख रहा हू

इफ्लास[1] की मारी हुई, मखलूक[2] सरे-राह[3]
बेगोरो-कफन[4] खाक बसर देख रहा हू

बच्चो का तडपना वह बिलखना वह सिसकना
मां-बाप की मायूस[5] नज़र देख रहा हू

इसान के होते हुए इंसान का यह हश्र[6]
देखा नही जाता है मगर देख रहा हूं

रहमत[7] का चमकने को है फिर नैयरे-ताबा[8]
होने को है इस शब की सहर देख रहा हूँ

खामोश निगाहो मे उमड़ते हुए जज़्बात[9]
जज़्बात मे तूफाने-शरर[10] देख रहा हू

वेदारिए-एहसास[11] है हर सिम्त[12] नुमाया[13]
बेताबिए-अरबाबे-नज़र[14] देख रहा हू

अंजामे-सितम[15] अब कोई देखे कि न देखे
मैं साफ इन आखों से मगर देख रहा हूं

१ दरिद्रता, २ जनता, ३. रास्ते पर, ४ जिन्हें कफन और कब्र नसीब न हुआ, ५ निराश, ६ अंजाम, स्थिति, ७, दया, ८ प्रकाशमान सूर्य, ९ भावनाएं, १० आग का तूफ़ान, ११ जागृति, १२ दिशा, १३ प्रकट, १४ दृष्टि वालो की बेताबी, १५ अत्याचार का नतीजा।

सैयाद ने लूटा था ग्रनादिल[16] का नशेमन[17]
सैयाद का जलते हुए घर देख रहा हू

इक तेग की जुम्बिश[18] सी नजर आती है मुझको
इक हाथ पसे-पर्दःए-दर[19] देख रहा हू

क़हते-कलकत्ता

आनन्द नारायण मुल्ला

अर्जे-बगाल[1] का नाजो का वह पाला हुआ शहर
शाहे-खावर[2] की शुआओ[3] का उजाला हुआ शहर
चश्म ए-मुश्क-ओ-गुल-ओ - ऊद[4] मे पाला हुआ शहर
रौज ए-खुल्द[5] के साचे मे वह ढाला हुआ शहर

आज सुनसान उसी शहर की हर बस्ती है
अर्सःए-जग[6] से भी मौत वहा सस्ती है

जग की मौत मे इक हुस्ने-मुकाफात[7] तो है
एक यकसानियते-सदमा-ओ-आफात[8] तो है
झोपडी मे जो है महलो मे वही रात तो है
गम की तक्सीम[9] मे इक रगे-मसावात[10] तो है

इसमे कुछ तफर्कःए-मुफ्लिसो-ज़रदार[11] नही
एक गोली किसी फिर्के[12] की तरफदार नही

है मगर कहर[13] यह बेमौत बुलायी हुई मौत
नातवानो[14] पे तवानाओ[15] की लायी हुई मौत

१६ बुलबुल, १७. घोंसला, १८ तलवार, १९ पर्दे के पीछे।

कहते-कलकत्ता

१ बगाल की धरती, २ पूर्व का बादशाह (सूर्य), ३ किरणें, ४ फूल, कस्तूरी और ऊद के स्रोत, ५ स्वर्ग का रौजा, ६ युद्ध का मैदान, ७ बदले का सौंदर्य, ८ विपत्ति और शोक की एकरूपता, ९ बटवारा, १० बराबरी का रग, ११ धनवान और गरीब का फर्क १२ सम्प्रदाय, १३ प्रकोप, १४. दुर्बल, १५ शक्तिशाली।

शहनशीनो से ज़मीनो पे गिराई हुई मौत
चोर बाजार के सिक्को की चलाई हुई मौत

कत्ल कर दे किसी बेकस[१६] को हलाकू जैसे
लूट ले खान:ए-बेवा[१७] कोई डाकू जैसे

आज बंगाल मे जारी है यह फर्माने-अजल[१८]
गोशे गोशे मे है इक गोरे-गरीबाने-अजल[१९]
काफला राम का है और राहे-बयाबाने-अजल[२०]
फाकामस्ती का फसाना है व उन्वाने अजल[२१]

तीराबख्ती[२२] की हर इक सिम्त जहादारी[२३] है
सिपहे-यास[२४] है और भूक की सालारी[२५] है

मुह से निकली हुई वह सुर्ख ज़बा खून से तर
काले जौशन[२६] वह सपोलो[२७] के, सियह बाज़ू पर
पहने गूधे हुए इक हार मे कुछ कास ए-सर[२८]
खडग इक हाथ मे, इक हाथ मे खू का सागर[२९]

रक्स करती हुई लाशो पे भवानी आई
आज फिर जोश पे काली की जवानी आई

आज गन्दुम की बहा अर्श[३०] के खोशो से सिवा
ताजे-शाही के चमकते हुए हीरो से सिवा
हर्फे-कुर्आं से सिवा, वेद के शब्दो से सिवा
मा की नजरो मे भरी गोद के फूलो से सिवा

ख्वाहिशे-अव्वले-इसा[३१] के मुकाबिल सब हेच[३२]
अक्लो-दी हेच, निजा-ए-हक-ओ-बातिल सब हेच

खाके-बगाल मे अब भी है वही हरियाली
अब भी घिर घिर के बरसती है घटाए काली

१६ दुर्बल १७ विधवा का घर, १८ मौत का फरमान, १९ गरीब की कब्र, २० मौत के जगल का मार्ग, २१ मौत का शीर्पक, २२ दुर्भाग्य, २३ राज्य, २४. निराशा की फौज, २५ भूख जिसकी सेनापति हो, २६ बाजू पर बाँधने का ज़ेवर, २७ साप का बच्चा, २८. सोर के कमडल, २९ प्याला, ३०. आकाश, ३१ मानव की प्रथम इच्छा, ३२ तुच्छ।

क्या कयामत है, वही जिसने यह खेती पाली
उसके हिस्से मे नही एक भी सूखी वाली

वह हुकूमत की जरूरत कि ठिकाना ही नही
और बेचारे किसा के लिए दाना ही नही

हाजते-फौज[33] मुसल्लम मगर अन्दाज के साथ
जंग बरहक मगर आईने-जहासाज के साथ
नग्म-ए-फत्ह[34] तो है खुल्क[35] की आवाज के साथ
नकि उखडे हुए अनफास[36] की परवाज[37] के साथ

जीत धोका है अगर जीत की सूरत है यहा
तीन हर्फ[38] इसपे अगर फतह की कीमत है यही

एक सवाल

अख्तरुल ईमान

जमी के तारीक[1] गहरे सीने मे फेंक दो इसका जिस्मे-खाकी[2]
यह सीमगू नर्म नर्म किरनें
जो माहो-अजुम[3] से फूटती है
यह नीलगू आस्मा की दुनिया
यह शर्क[4] और गर्ब[5] के किनारे
यह मेवाहाए लजीजो-शीरीं[6]
यह हुस्ने बेनाम के इशारे
कभी न इसको जगा सकेंगे
जवान, दिलकश, हसीन चेहरे से छीन ली गम ने ताबनाकी[7]

३३ सेना की आवश्यकता, ३४ विजय का गीत, ३५ जनता, ३६ सास, ३७ उडान, ३८ लानत, धिक्कार।

एक सवाल

१ अन्धकारमय, २. मिट्टी का शरीर, ३. चाद-तारे, ४ पूर्व, ५. पश्चिम, ६ स्वादिष्ट और मीठे, ७ चमक।

खुली हुई बदनसीब आखें
यह देखती थी कि आदमी ने
इक अपने ही जैसे आदमी पर
तमाम दरवाज़े बन्द करके
बोहीमियत को जगा दिया है
लजीज अम्बार नेमतो[८] के
सियाह पर्दो मे दब गये हैं
और आखिरश राद ए-जहा से ज़मी की आगोश[९] ने वफा की

इसीलिए क्या उगा करेंगे
यह नर्म पौदे यह नर्म शाखे
कि इनको एक रोज हम उठाकर
खिज़ां की आगोश मे सुला दें

भूका है बंगाल

वामिक जौनपुरी

पूरब देस कि डुग्गी बाजी फैला दुख का जाल
दुख की अगनी कौन बुझाये सूख गये सब ताल
जिन हाथो ने मोती रोले आज वही कगाल
रे साथी आज वही कगाल
भूका है बगाल रे साथी भूका है बंगाल

पेट से अपने पीठ लगाये लाखो उलटे खाट
भीकमगाई से थक-थक कर उतरे मौत के घाट
जियन मरन के डाडे मिलाये बैठे हैं चंडाल
रे साथी बैठे हैं चंडाल
भूका है बगाल रे साथी भूखा है बगाल

८ स्वादिष्ट पदार्थ, ९. गोद ।

[illegible]
जान की ऐसी महगी शैं का उलट गया व्योपार
मुट्ठी भर चावल से वढकर मस्ता है यह माल
रे साथी सस्ता है यह माल
भूका है वगाल रे साथी भूका है वगाल

कोठरियो मे गाजे वैठे वनियें सारा अनाज
सुन्दर नारी भूक की मारी वेचे घर घर लाज
चौपट नगरी कौन समाले चार तरफ भूचाल
रे साथी चार तरफ भूचाल
भूका है वगाल रे साथी भूका है वगाल

पुरखो ने घर - वार लुटाये छोड के सवके साथ
माए रोयें विलख विलख कर वच्चे भये अनाथ
सदा सुहागन विधवा वाजे खोले सर के वाल
रे साथी खोले सर के वाल
भूका है वगाल रे साथी भूका है वगाल

अत्ती पत्ती चवा चवाकर जूझ रहा है देस
मौत ने कितने घूंघट मारे वदले सौ सौ भेस
काल विकट फैलाय रहा है वीमारी का जाल
रे साथी वीमारी का जाल
भूका है वगाल रे साथी भूका है वगाल

धरती माता के सीने मे चोट लगी है कारी
माया काली के फन्दे मे वक्त पडा है भारी
अव भी उठ जा नीद के माते देख तू जग का हाल
रे साथी देख तू जग का हाल
भूका है वगाल रे साथी भूका है वंगाल

कलकत्ते के बाज़ारों में

साहिर लुधियानवी

जहाने-कुहना[1] के मफलूज[2] फल्सफादानो[3]
निजामे-नौ[4] के तकाजे सवाल करते है

यह शाहराहे[5] इसी वास्ते बनी थी क्या
कि इनपे देस की जनता सिसक सिसक के मरे

ज़मी ने क्या इसी कारन अनाज उगला था
कि नस्ले-आदमो-हौआ बिलख बिलख के मरे

मिलें इसीलिए रेशम का ढेर बुनती है
कि दुख्तराने-वतन[6] तार तार को तरसें

चमन को इसलिए माली ने खूँ से सीचा था
कि उसकी अपनी निगाहे बहार को तरसे

जमी की कूवते-तखलीक[7] के खुदावन्दो
मिलो के मुन्तजिमो,[8] सल्तनत के फर्जन्दो

पचास लाख फसुर्दा गले सड़े लाशें
निजामे-ज़र[9] के खिलाफ एहतिजाज[10] करते हैं

खमोश होठो से दम तोड़ती निगाहो से
बशर बशर[11] के खिलाफ एहतिजाज करते हैं

१ पुराना ससार, २ अपग, ३ दार्शनिको, ४ नया विधान, ५ राजमार्ग, ६ देश की बेटिया, ७ उर्वरा शक्ति, ८ प्रबधक, ९ सरमायादारी, पूंजीवाद, १०. विरोध, ११ मानव।

वज़ारती वफ़द का फ़रेब

जोश मलीहाबादी

वहुत ही ताक[१] हैं तूले-ग्रमल[२] में ग्रहले-मिशन
वला के तेज़ हैं रद्दो-वदल मे ग्रहले-मिशन
वतन को पीस रहे हैं खरल मे ग्रहले-मिशन
छुरी दवाये हुए हैं वगल मे ग्रहले-मिशन
शफीक वन के मगर मुस्कुराये जाते हैं

कभी डरे ही न थे जो किसी तवाही से
शदीद तर थे जो दुनिया के हर सिपाही से
कभी दवे ही न थे शाने-कुज कुलाही से
जो सर कभी न झुके थे जलाले-शाही[3] से
हुज़ूरे-हज़रते-वेवल झुकाये जाते हैं

वशर के वास्ते ज़ालिम नही जो ग्रज़लम[४] हैं
दिलो के खून से रगीन जिनके परचम हैं
ज़मीन पर जो भडकते हुए जहन्नम[५] हैं
वह वालियाने-रियासत[६] जो नगे-ग्रालम[७] हैं
नज़र वचा के गले से लगाये जाते हैं

निगाहे-नाज़[८] मे राज़ो-नयाज़े-ग्राज़ादी
हर एक हर्फ़ मे सोज़ो-गुदाज़े-ग्राज़ादी
खुली है दोश पे ज़ुल्फे-दराज़े-ग्राज़ादी
वजा रहे हैं वलन्दी पे साज़े-ग्राज़ादी
वीटो की हाक भी लेकिन लगाये जाते हैं

हर एक मे हैं निहा वेपनाह शमशीरें
हर एक मौज मे गिर्दाव की हैं तस्वीरें

१ कुशल, २. ग्रमल को खीचने मे, ३ साम्राज्य का प्रताप, ४ घोर ग्रत्याचारी, ५ नर्क, [६ राजा-महाराजा, ७ ससार में वदनाम, ८. गर्व भरी ग्रांख ।

हर एक लोच पर पेचीदगी की तहरीरें
हर एक लट मे बटी जा रही है ज़ंजीरें
नये उसूल से गेसू बनाये जाते हैं

ज़हे तबस्सुमे-रगीने-शाहिदे-तहज़ीब[९]
जो तुर्फा नाज़ तो दिलदारिया अजीबो-गरीब
अनोखी चाल निराली रविश नयी तर्कीब
मुदब्बिराने-कुहनसाल[१०] को पै तर्गीब
तरह तरह के खिलौने दिखाये जाते है

ज़मी से फूट रहे हैं दगाओ के सोते
वह दे रहे हैं जो सब कुछ वह कुछ नही खोते
खुलूस होता तो फितनो के बीज क्यो बोते
दयारे-हिन्द मे गोरो की फौज के होते
सरीरे-अम्न[११] पे काले बिठाये जाते है

एहसासे-कामरां

मसूद अख्तर जमाल

तुझे मुसाफिरे-शब[२] सोच क्या है फिक्र है क्या
फरेबे-राह[३] से गुम क्यो निशाने-मंज़िल हो

हजार मौत के तूफां उठा करे लेकिन
गमे-हयात से क्यो चूर मौजे-साहिल हो

मुझे यकी नही आता कि तेरे होते हुए
हदीसे - जुल्मो-हवस[४] जिन्दगी का हासिल हो

९ सभ्यता की प्रेमिका की रगीन मुस्कराहट का क्या कहना, १० पुराने राजनीतिज्ञ, ११. शांति का सिंहासन।

एहसासे-कामरां

१ सफलता का एहसास, २ रात के मुसाफिर, ३ रास्ते का फरेब, ४ लोभ और अत्याचार की कहानी।

अगरचे रात है तारीक हौलनाक फ़ज़ा[५]
पर इसके खौफ से क्यों ज़र्द शमग्रे-महफ़िल हो

बहारे-शौक से शादाब[६] है चमन तेरा
खिज़ा के आने से मायूस[७] क्यो तिरा दिल हो

नकूश तेरे ज़माना मिटा नही सकता
यह इर्तिकाए-तमद्दुन[८] भुला नही सकता

यह बात और है इन्सानियत की महफिल मे
बिहीमियत[९] के खुदा का है इक्तिदार[१०] अभी

फ़ज़ाए-होश पे तारी है कौमियत का जुनू[११]
खिज़ा के रूप मे है मौसमे-बहार अभी

यह नाज़ियत हो कि फ़स्ताइयत बहर सूरत
फरेबे-शौक दिये जायेंगे हज़ार अभी

अभी है नादिरो-चगेज़ का असर बाकी
उठेंगे और भी तूफ़ाने-रोज़गार[१२] अभी

मिटाये कैसे कोई जुल्मो-जौर[१३] की रस्मे
कि ज़ालिमो पे है दुनिया को एतबार[१४] अभी

वही है महफिले-अक्लो-खिरद[१५] मे बेरब्ती[१६]
वही है बज़्मे-तमन्ना मे इंतिशार[१७] अभी

मगर हयात का ज़ामिन शबाब होगा ज़रूर
हरीफे-जुल्मते-शब[१८] आफ़ताब होगा ज़रूर

५ वातावरण, ६ हरा-भरा, ७ निराश, ८ सभ्यता का विकास, ९ पशुता, १० अधिकार, ११ उन्माद, १२ समय का तूफान, १३ अत्याचार, १४ विश्वास, १५ बुद्धि और विवेक की महफिल, १६ अस्त-व्यस्तता, १७ बगावत, अशान्ति, १८ रात के अंधकार का हरीफ।

आख़री मर्हला

कैफी आज़मी

हिसार बाधे हुए त्योरियां चढाये हुए
खड़े हैं हिन्द के सरदार सर उठाये हुए

बढे है झेले हुए कैदो-बन्द के आज़ार[१]
उठे हैं जंगे-खिलाफत के आज़माये हुए

शुजाए-हैदर - ओ - टीपू[२] की गोद के पाले
दिलेर नानक-ओ-रंजीत के सिखाये हुए

खुमार बाद.ए-इकबाल[३] का निगाहो मे
लबो पे नग्म.ए - टैगोर मुस्कुराये हुए

नफस मे आच गरजती हुई मशीनों की
कदम पे आतिशो-आहन[५] का सर झुकाये हुए

जबी[६] पे धान के खेतो की नर्म हरियाली
नज़र मे कहत[७] की परछाइया छुपाये हुए

भडक के दोशे-हवा[८] पर बिछा रहे हैं कमन्द
शरर[९] जो सर्द किताबो मे थे दबाये हुए

फज़ा मे सुर्ख फरेरा लुटा रहा है हयात[१०]
हवा की जद पे चरागे-अमल जलाये हुए

तडप के गिरने ही वाली है बर्क ज़िन्दा[११] पर
खडे हैं दर पे असीर[१२] आसरा लगाये हुए

१ कष्ट, २ हैदर और टीपू का साहस, ३ प्रताप की शराब का खुमार, ४ सास, ५ आग और लोहा, ६ ललाट, ७ अकाल, ८ हवा के कधे, ९ आग, १२ जिन्दगी, ११ जेलखाना, १२ कैदी।

अभी खुलेंगे न परचम, अभी पड़ेगा न रन[१३]
कि मुश्तइल[१४] है मगर मुत्तहिद[१५] नही है वतन

पुकारता है उफक से लहू शहीदो का
कि एक हाथ से खुलती नही गले की रसन[१६]

यह इन्तिशार[१७], यह हलचल यह मोर्चों मे शिगाफ[१८]
मज़ाक उड़ाते हैं अज्मे-जिहाद[१९] का, दुश्मन

निकल के सफ से खड़े हो गये हैं कुछ सावत
बढा के हाथ महब्बत से थाम लो दामन

फिर एक बार बढो लेके सुलह का पैगाम
फिर एक बार जला दो शकूक[२०] के खिर्मन

यह यास[२१] क्यो यह तमन्नाए-खुदकशी कैसी
नवैदे-फतह[२२] है कल्बे-अवाम[२३] की धड़कन

मिटा दो, मिलके मिटा दो निशा गुलामी का
ज़मीन छोड चुका कारवा गुलामी का

आज़ाद हिन्द फ़ौज

जगन्नाथ आजाद

पाइन्दाबाद हिन्द की अय फौजे-खुशनिहाद
वह दिन खुदा करे कि बर आये तिरी मुराद
मिट जाये बज्मे-दहर से यह जग यह फसाद
ज़िन्दा को तोड़ फोड़ दे अय हुर्रियत निशाद[१]

१३ युद्ध, १४. बिफरा हुआ, १५. सगठित, १६ रस्सी, १७ व्याकुलता, १८ दरार, १९ धर्मयुद्ध का सकल्प, २०. शक, २१. निराशा, २२ विजय की शुभ-सूचना, २३ जनसाधारण का दिल।

आजाद हिन्द फौज

१ आजाद नस्ल मे सबधित ।

अब वक़्त आ गया है कि हो आज़िमे-जिहाद[२]
हिन्दोस्ता की फौजे-ज़फ़र मौज जिन्दाबाद
परचम[३] तिरा हो चाँद सितारो से भी बलन्द
पहुँचा सके न दौरे-ज़माना तुझे गज़न्द[४]
अग़ियार[५] कर सके न कभी तुझ पे राह बन्द
पस्पाइयाँ[६] हो तेरे जवानो को नापसन्द
तू कामरा[७] हो और अदू[८] तेरे नामुराद[९]
हिन्दोस्ता की फौजे-ज़फर मौज ज़िन्दाबाद

"जयहिन्द" की सदाओं मे तेरे जवा बढें
हाथो मे लेके अम्नो-अमा के निशा बढें
नुसरत नसीब[१०] उनके कदम हों जहां बढ़ें
बहरे - वकारो - अज़मते - हिन्दोस्ता[११] बढें
दुनिया को भी वह शाद करें, हिन्द को भी शाद
हिन्दोस्ता की फौजे-ज़फर मौज ज़िन्दाबाद

आज़ाद हिन्द फ़ौज

तिलको चन्द महरूम

(अज़ीज़ जगन्नाथ आज़ाद की नज्म इसी उन्वान से किसी जरीदे में शाया हुई। टीप का मिस्रा मुझे बहुत पसन्द आया। इसी को लेकर यह चन्द बन्द मौज़ू हो गये। दोनों नज्मे उस वक्त कही गयी जब यह फौज बर्मा मे मसरूफे-अमल थी।)

अय जैशे - सरफरोशे - जवानाने - खुशनिहाद[१]
सीने पे तेरे कुन्द हुई तेगे - इस्तिदाद[२]

२. जिहाद का सकल्प कर, ३ झडा, ४. कष्ट, ५. दुश्मन. ६ हार, ७. सफल, ८. दुश्मन, ९. अभागा, १० सहायक, ११ हिन्दुस्तान की महानता और प्रतिष्ठा का समुद्र।

आजाद हिन्द फौज

१ जियाले नवजवानो की सर कटा देने वाली सेना, २ प्रचडता की तलवार, ।

गुर्वत[3] मे तूने दी है शुजाअत[4] की खूब दाद
अक्वामे-दहर[5] करती है जुरअत पे तेरी साद

तू कामरां रहे, तिरे दुश्मन हो नामुराद
हिन्दोस्ता की फ़ौजे-ज़फ़र[6] मौज ज़िन्दावाद

दरिया-ओ-दश्त-ओ-कोह मे तेरा विगुल वजे
जिसकी सदा से गुम्वदे-गर्दू[7] भी गूज उठे
मैंदा मे मौत भी जो मुजस्सम[8] हो सामने
तेरे दिलावरों के न हो पस्त हौसले

हो वल्कि उनका और भी जोशे-अमल ज़ियाद[9]
हिन्दोस्तां की फ़ौजे-ज़फर मौज ज़िन्दावाद

परदेस मे जो खेत[10] रहे हैं जवा तिरे
हैं दफ्न ज़ेरे-खाक खज़ाने वहा तिरे
वर्मा के जंगलो मे लहू के निशा तिरे
नक़्शे-दवाम[11] हैं वह तहे-आस्मा तिरे

ता रोज़े-हश्र[12] अहले-वतन को रहेंगे याद
हिन्दोस्ता की फौजे-ज़फ़र मौज ज़िन्दावाद

आज़ादिए-वतन की तमन्नाए-दिल नवाज़
ज़िन्दां मे घुट के रह गयी या दिल मे मिस्ले-राज़[13]
कहते थे जुर्म जिसको हुकूमत के हीलासाज़[14]
तेरे अमल हो उसको मिली खिलअते-जवाज़[15]

अव 'हक' है जिसका नाम रहा 'गदर और फसाद'
हिन्दोस्ता की फौजे-ज़फर मौज ज़िन्दावाद

गालिव था वस्किसाहिरे - अफरग[16] का फसू[17]
दो सौ वरस से था इल्मे-हिन्द[18] सर नगू[19]

३. विदेश, ४. वहादुरी, ५ दुनिया को क़ौमे, ६ विजयी सेना, ७ आकाश का गुवद, ८ साक्षात, ९. अधिक. १०. मारे गए, ११. न मिटने वाले चिन्ह, १२. हश्र के दिन तक, १३ रहस्य की तरह, १४. वहानेवाज, १५. औचित्य की खिअत, १६. गोरा जादूगर, १७ जादू, १८ भारत का ज्ञान, १९. नत-मस्तक।

तूने दयारे-गैर[२०] मे दिखला दिया कि यू
मर्दाने-कार करते हैं बातिल[२१] को गर्के-खू[२२]
बातिल हो ख्वाह कोहे-गरा ख्वाह गर्दबाद
हिन्दोस्ता की फौजे-ज़फर मौज जिन्दाबाद

जय हिन्द

तिलोकचन्द महरूम

पैदा उफके-हिन्द[१] से है सुबह के आसार
है मज़िले-आखिर मे गुलामी की शबे-तार[२]
आमद सहरे-नौ[३] की मुबारक हो वतन को
पामाले - महन[४] को

मश्रिक मे ज़ियारेज़[५] हुआ सुबह का तारा
फ़र्खन्दा-ओ-ताबिन्दा-ओ-जाबख्श-ओ - दिलआरा[६]
रौशन हुए जाते है दरो-बाम वतन के
ज़िन्दाने - कुहन[७] के

'जयहिन्द' के नारो से फज़ा गूज रही है
जयहिन्द की आलम मे सदा गूज रही है
यह वलवला यह जोश यह तूफान मुबारक
हर आन मुबारक

अहले-वतन आपस मे उलझने का नही वक्त
ऐसा न हो गफ्लत मे गुज़र जाये कही वक्त
लाज़िम[८] है कि मज़िल के निशा पर हो निगाहे
पुरपेच[९] है राहे

२० दुश्मन का घर, २१ झूठ, २२. खून मे डूबा हुआ ।

जय हिन्द

१. हिंदुस्तान का क्षितिज, २ अन्धेरी रात, ३. नयी सुबह का आगमन, ४ दुख से कुचला हुआ, ५. प्रकाश फैलाने वाला, ६ प्राणदायक, आकर्षक और खुश, ७ पुराना जेलखाना, ८ अनिवार्य, ९. पेचदार ।

सुभाषचन्द्र बोस

(बहादुरशाह जाफर के मजार पर)

जगन्नाथ आजाद

अय शहे-हिन्दोस्ता, अय लाल किले के मकी
आस्मा होने को है फिर इस वतन की सरजमी

यह वतन रौंदा है जिसको मुद्दतो अगियार[1] ने
जिस पे ढाये जुल्म लाखो चर्खे-नाहंजार[2] ने

मुद्दतों जिसको रखा किस्मत ने जिल्लत आशना[3]
जिसके हर पहलू मे पैदा पस्तियो की इतिहा

आज फिर उस मुल्क मे इक जिन्दगी की लहर है
खाक से अफलाक[4] तक ताबिन्दगी[5] की लहर है

आज फिर इस मुल्क के लाखो जवां बेदार हैं
हुर्रियत[6] की राह मे मिटने को जो तैयार हैं

आज है फिर बेनियाम इस मुल्क की शमशीर[7] देख
सोने वाले जाग, अपने ख्वाब की ताबीर देख

इस तरह लर्ज़े मे है बुनियादे-ऐवाने-फ़िरंग[8]
खा चुके हैं मात गोया शीशाबाज़ाने-फिरग

हुब्बे-कौमी के तरानो से हवा लबरेज़[9] है
और तोपो की दनादन से फज़ा लबरेज है

१. दुश्मन, २ बदज़ात आकाश, ३ अपमान से परिचित, ४ आकाश, ५ आभा, ६ आज़ादी, ७ तलवार, ८ अंग्रेजो के महल की बुनियाद, ९ भरा हुआ।

शोर गीरोदार[१०] का है फिर फज़ाओ मे बलन्द
आज फिर हिम्मत ने फेंकी है सितारों पर कमन्द

फिर उमंगें, आरज़ूएं हैं दिलो मे बेकरार
कौम को याद आ गया है अपना गुमगश्ता वकार[११]

नौजवानो के दिलो मे सरफरोशी की उमंग
इश्क बाज़ी ले गया है, अक्ल बेचारी है दंग[१२]

आज फिर इस देस मे झंकार तल्वारो की है
ज़र्रे ज़र्रे मे निहा ताबिन्दगी तारो की है

यह नज़ारा आह लफ्ज़ो मे समा सकता नही
"आख जो कुछ देखती है लब पे आ सकता नही"

फत्हो-नुसरत[१३] की दुआओ से हवा मामूर[१४] है
नार-ए-"जयहिन्द" से सारी फज़ा मामूर है

मुझको अय शाहे-वतन ! अपने इरादो की क़सम
जिनके सर काटे गये उन शाहज़ादो की कसम

तेरे मर्कद[१५] की मुकद्दस[१६] खाक की मुझको कसम
मैं जहा हू उस फज़ाए-पाक की मुझको कसम

अपने भूके जा बलब बगाल की मुझको क़सम
हाकिमो के दस्त पर्वर काल की मुझको कसम

लाल किले की, ज़वाले-शहरे-देहली[१७] की कसम
मोहसिने-देहली ! मआले-शहरे-दहली की कसम

मैं तिरी खोई हुई अज़्मत को वापस लाऊगा
और तिरे मर्क़द पे नुसरत याब[१८] होकर आऊगा

१० पकड़-धकड, ११ महिमा, १२ आश्चर्यचकित १३. विजय, १४ पूर्ण, १५. समाधि, १६ पवित्र, १७ देहली शहर का पतन, १८. विजयी।

यह किसका लहू है ?

(जहाजियो की बगावत, सन् १९४६)

साहिर लुधियानवी

अय रहबरे-मुल्को-कौम बता
आंखें तो उठा, नजरें तो मिला
कुछ हम भी सुनें, हमको भी सुना
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

धरती की सुलगती छाती के बेचैन शरारे[1] पूछते हैं
तुम लोग जिन्हे अपना न सके वह खून के धारे पूछते हैं
सडको की जबा चिल्लाती है सागर के किनारे पूछते हैं

यह किसका लहू है, कौन मरा
अय रहबरे-मुल्को-कौम बता
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

यह कौन सा जज्बा था जिससे फर्सूदा[2] निजामे ज़ीस्त[3] हिला
झुलसे हुए वीरा गुलशन मे इक आस उमीद का फूल खिला
जनता का लहू फौजो से मिला, फौजो का लहू जनता से मिला

यह किसका लहू है, कौन मरा
अय रहबरे-मुल्को-कौम बता
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

अय अज़्मे[4]-फना देने वालो पैगामे[5]-बका देने वालो
अब आग से क्यो कतराते हो, शोलो को हवा देने वालो
तूफान से अब डरते क्यो हो, मौजो को सदा देने वालो

१ चिंगारी, २. पुराना, ३ ज़िंदगी, ४ विनाश का सकल्प, ५ अनश्वरता का सदेश।

क्या भूल गये अपना नारा
अय रहबरे - मुल्को-कौम बता
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

हम ठान चुके है अब जी मे, हर ज़ालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो, हम आगे बढते जायेंगे
हर मज़िले - आज़ादी की कसम, हर मंजिल पर दोहरायेंगे

यह किसका लहू है, कौन मरा
अय रहबरे-मुल्को - कौम बता
यह किसका लहू है, कौन मरा ?

मंज़रे-रुख़सत

इकबाल अहमद सुहेल

अय अहले-वफा मातम न करो वह वादाशिकन गर जाता है
जाता है मुसाफिर गम न करो, मेहमान ही था घर जाता है

वह दौरे-मसर्रत[1] आने दो, कौमी परचम[2] लहराने दो
जाती है गुलामी जाने दो, सदियो का दलिद्दर जाता है

जिसने यह चमन बरबाद किया, मश्रिक को गुलाम आबाद किया
वह कहरे-मुजस्सम[3] जाता है, वह सहरे-मुसव्विर[4] जाता है

कुछ सर्व नही शमशाद नही, अजनब[5] है गुलिस्ताज़ाद[6] नही
क्या उसके मज़ालिम याद नही, जाने दो सितमगर जाता है

मंजरे-रुख़सत

१ ख़ुशी का दौर, २ राष्ट्रीय झडा, ३ साकार प्रकोप, ४ चित्रकार का जादू, ५ अनजान, गैर, ६ गुलिस्तान में पैदा होने वाले ।

दीवाने समझते थे जो हमे, अब वह भी समझते जाते है
ऐवाने-हुकूमत[७] का रस्ता ज़िन्दा[८] से भी होकर जाता है

हर तार बिखरता जाता है, सैयाद के दामे-रंगी[९] का
कुछ देर नही सैयाद भी खुद अब वाध के बिस्तर जाता है

लाले को दबाया सुम्बुल से कुमरी को लडाया बुलबुल से
जाता तो है अब सैयाद मगर गुलशन को लुटाकर जाता है

बरपा किया हरसूरक्से-शरर, खिर्मन[१०] को बनाया खाकस्तर[११]
अब बर्के-तवा[१२] है गर्मे-सफर, अब शोल. ए-मुज़्तर[१३] जाता है

अज़ साहिले-जावा ता ब हलब, हर सिम्त बपा है बज़्मे-तरब[१४]
ईरानो-फलस्तीनो-मिस्रो-अरब खुश है कि सितमगर जाता है

रग रग मे छुपा हो जो नश्तर निकलेगा ब आसानी क्योकर
देखो तो अभी ता वक्ते-सफर क्या और करम कर जाता है

अब दौरे-मै गुल रग[१५] चले या बादा कशो मे जंग चले
साकी तो इस मैखाने से बेशीशा-ओ-सागर जाता है

दोहराओ न गुज़रे किस्सो को, भडकाओ न बुझते शोलो को
इख्लास[१६] वह मरहम है जिससे हर ज़ख्मे-कुहन[१७] भर जाता है

मिल जुल के बढ़ाओ शाने-वतन, तामीर करो ऐवाने-वतन[१८]
मा जाए हैं फर्जन्दाने-वतन जो गैर था बाहर जाता है

हम तुमको बसर करना है यही जीना है यही मरना है यही
उठो यह चमन शादाब[१९] करो, अब गासिबे-खुदसर[२०] जाता है

अंजाम से गाफिल नादानो, मानो कि न मानो तुम जानो
इक दरसे-हकीकत[२१] देके तुम्हे इकवाले-सुखनवर जाता है

७ हुकूमत का महल, ८ जेलखाना, ९ रगीन जाल, १० खलियान, ११ राख, १२. जलती हुई बिजली, १३. बेचैन अगारे, १४ हसी-खुशी की महफिल, १५. लाल रग की शराब का दौर, १६ निष्ठा, नि स्वार्थता, १७ पुराना ज़खम, १८- देश का महल, १९. हरा-भरा, २० दूसरो का हक छीनने वाला, २१ सच्चाई का पाठ।

बशारत

सिकन्दर अली वज्द

चेहरे पे बिखर जायेंगे अनवारे-तबस्सुम[१]
पेशानिए-गेती[२] की शिकन कल न रहेगी

उठती है नकावे-रुखे-लैलाए हकीकत[३]
तारीकिए-औहामे-कुहन[४] कल न रहेगी

पायेगी दिल - आवेजिए - मलबूसे - उरूसी[५]
बेनूर सहर मिस्ले-कफन कल न रहेगी

खुल जायेगा सब पर दरे-मैखान.ए - इशरत[६]
इफराते-गमो-रजो-मुहन[७] कल न रहेगी

हो जायेगी इसान की फितरत[८] मुतवाज़िन[९]
बेगागिए-रूहो-बदन[१०] कल न रहेगी

आज़ादि-ए-अफकार[११] के गुल दिल में खिलेंगे
यह खारे-गुलामी[१२] की चुभन कल न रहेगी

गाने के लिए कुमरी-ओ-बुलबुल को चमन मे
मिन्नत कशीए-ज़ागो-ज़गन[१३] कल न रहेगी

शमशाद सिफत[१४] बस्त ए-आईने - गुलिस्ता[१५]
बूए-गुलो-नसरीनो-समन कल न रहेगी

१ मुस्कुराहट की चमक, २ धरती का ललाट, ३ सच्चाई की प्रेमिका के चेहरे का मुखपट, ४ पुराने भ्रमो का अन्धकार, ५ शादी का जोडा, ६ ऐश्वर्य के मैखाने का दरवाजा, ७ गम, रज और कठिनाइयों का बाहुल्य, ८ स्वभाव, ९ सतुलित, १० शरीर और आत्मा की बेगानगी, ११ सोचने की आज़ादी, १२ गुलामी के काटे, १३ चील-कौवो से प्रार्थना करना, १४ शमशाद की तरह, १५ गुलिस्तान के विधान का दफ्तर।

अफसुर्दा शगूफों[16] के जनाज़ो मे परेशां
मानिन्दे-सबा, रूहे-चमन कल न रहेगी

यह दुश्मने-इंसाफो-करम जुल्म की देवी
बेकस का लहू पी के मगन कल न रहेगी

अरबाबे-हिमम[17] शादों-सरअफराज़[18] रहेगे
यह सर कशिए-दारो-रसन[19] कल न रहेगी

फरियाद कुना सीन:ए-खावर[20] मे मुकैयद
आज़ादिए-मश्रिक की किरन कल न रहेगी

पुरहौल फज़ा,[21] हसरते-सद शामे-गरीबा
यह कैफीयते-सुबहे-वतन कल न रहेगी

१६ कलियाँ, १७. साहसी, हिम्मत वाले, १८. खुश और सर उठाकर, १९ फांसी का अहंकार, २०. पूर्व के सीने मे कैद फरियाद करती हुई, २१ भयानक।

सातवां अध्याय

आज़ादी का एलान

सन् १९४७

जश्ने-आज़ादी

जां निसार अख्तर

सीने से आधी रात के
फूटी वह सूरज की किरन
बरसे वह तारो के कंवल
वह रक्स[1] मे आया गगन
आये मुबारकबाद को
कितने शहीदाने-वतन[2]
आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है अपना वतन
आज़ाद है अपना वतन

अय रोदे-गगा[3] गीत गा
इठला के चल मौजे-जमन[4]
हा, अय हिमाला झूम जा
रक्सा हो अय दश्तो-दिमन[5]
हा, अय इलोरा के बुतो[6]
नग्मासरा हो, नग्माज़न[7]
आज़ाद है, आजाद है, आज़ाद है अपना वतन
आज़ाद है अपना वतन

अय परचमे - सहरग[8] तू
अपने वतन की आबरू
तू है हमारा नंगो-नाम[9]
हम तुझको करते हैं सलाम

जर्दी से तेरी रू नुमा[10]
बेलौस[11] खिदमत की लगन

१ नृत्य, २ वतन पर शहीद हुए, ३ गगा नदी, ४ यमुना की मौज, ५ जगल और घूरा, ६ मूर्तियो, ७ गीत गा, ८ तिरगा झण्डा, ६ लज्जा, १० प्रकट, ११ निस्वार्थ।

सब्ज़ी से तेरी जल्वागर[12]
हिम्मत, जवानी, बाकपन
तेरी सफेदी से अया
इसानियत, पाकीज़ापन[13]

अय परचमे-सहरग तू
अपने वतन की आवरू
तू है हमारा नगो-नाम
हम तुझको करते है सलाम
हम तुझको करते है सलाम

यौमे-आज़ादी[1]

सिराज लखनवी

ज़मीन हिन्द है और आस्माने-आज़ादी
यकीन बन गया अब तो गुमाने-आज़ादी
सुनो बलन्द हुई फिर अज़ाने-आज़ादी
सरे-नियाज़[2] है और आस्ताने-आज़ादी[3]

पहाड कट गया और नूरे-सहर[4] से रात मिली
खुदा का शुक्र गुलामी से तो निजात[5] मिली

हवाए-ऐशो-तरब[6] बादबान बन के चली
ज़मी वतन की नया आस्मान बन के चली
नसीमे-सुबह[7] फिर अर्जुन का बान बन के चली
बहारे-हिन्द तिरगा निशान बन के चली

१२ प्रकट, १३ पवित्रता।

यौमे-आज़ादी

१ आज़ादी का दिन, २ श्रद्धापूर्ण ललाट, ३ आज़ादी की चौखट, ४ प्रात काल का प्रकाश, ५ मुक्ति, ६ सुख और ऐश्वर्य की हवा, ७ प्रात समीर।

सिपाही देश का अपने हर इक जवान बना
बल अबरूओं[८] का कड़कती हुई कमान बना

नजरनवाज[९] है रंगे - बहारे - आज़ादी[१०]
हर एक जर्रा है आईना दारे - आजादी
है सरज़मीने-वतन जल्वाजोर-आजादी
सरो के साथ है अब तो वकारे-आजादी[११]

कहां हैं आज वह शमए-वतन के परवाने
बने हैं आज हकीकत उन्ही के अफसाने

जमी अपनी, फजा अपनी, आस्मां अपना
हुकूमत अपनी, अलम अपना, निशां अपना
हैं फूल अपने, चमन अपना, बागबां अपना
इताअत[१२] अपनी है, सर अपना, आस्तां अपना

जमाले-काबा[१३] नही या जमाले-दैर[१४] नही
सब अपने ही नज़र आते हैं कोई गैर नही

मुबारकबाद आज़ादी

इकबाल अहमद सुहेल

गुलज़ारे-वतन की कोई देखे तो फबन[१] आज
सरशार[२] है खुशबू से हर इक दश्तो-चमन[३] आज
गुचो[४] का सबा तोड गयी कुफ्ले-दहन[५] आज
है हर गुले-खन्दां[६] की ज़बां पर यह सुखन[७] आज
सद शुक्र कि टूटा दरे-ज़िन्दाने-मिहन[८] आज

८ भृकुटी, ९ आंखो को प्यारा लगने वाला, १० आज़ादी की बहार का रंग, ११. आज़ादी का प्रताप, १२ आराधना, १३ काबे का सौंदर्य, १४ मन्दिर का सौंदर्य।

मुबारकबाद आज़ादी

१ शोभा, २ डूबा हुआ, तृप्त, ३ कानन और उपवन, ४ कली, ५. मुंह का ताला, ६ मुस्कराता हुआ फूल, ७ बातचीत, ८ कष्ट के जेलखाने का दरवाज़ा।

फिर मौज ने डूबी हुई कश्ती को उभारा
बिगड़ी हुई तकदीर को हिम्मत ने सवारा
खोई हुई अज़मत[९] वह मिली हमको दुबारा
रौशन है फिर आज़ादिए-मश्रिक[१०] का सितारा
यह खुशखबरी लाती है सूरज की किरन आज

रुखसत है शबे-तार[११] गुलामी का अंधेरा
वह सामने है सुब्हे-सआदत[१२] का सवेरा
भारत से बिदेशी का उखडने लगा डेरा
लहराये न क्यो अज़्मते-कौमी[१३] का फरेरा
आज़ाद हुआ कैदे-गुलामी से वतन आज

गालिब हुई ताकत के मुकाबिल मे सचाई
सैयाद से छीनी है असीरो[१४] ने रिहाई
जीती है निहत्तो ने अहिंसा की लडाई
आज़ाद को तबरीक[१५] जवाहर को बधाई
सच हो के रहा दहर[१६] मे गांधी का वचन आज

वह ज़िन्द.ए-जावेद,[१७] वतन के वह फिदाई
जां अपनी जिन्होने रहे-मिल्लत[१८] मे गंवाई
हिम्मत ने उन्ही की, हमे साअत[१९] यह दिखाई
अंसारी-ओ-अजमल हो, तिलक हो कि देसाई
याद आते हैं हम सबको शहीदाने-वतन आज

सरमायाए-मिल्लत[२०] हुई जाबाजिए इफराद[२१]
कुर्बानी-ओ-ईसार की आखिर मे मिली दाद
कहते हैं यह अश्फाक-ओ-भगत, बिस्मिलो-आज़ाद
अल्लाह ने सुन ली दिले-मजलूम[२२] की फरियाद
ज़ीना है हुकूमत का वही दारो-रसन[२३] आज

९ महानता, १० पूर्व की आजादी, ११ अंधेरी रात, १२ सौभाग्य का प्रभात, १३, राष्ट्रीय महानता, १४. क़ैदी, १५ मुबारकबाद, १६ दुनिया, १७ शाश्वत, १८. धर्म की राह, १९ घडी, २०. धर्म की सम्पत्ति, २१ व्यक्तियो की कुर्बानी, २२ दुखी दिल, २३. फासी का फदा ।

जिस पाव से कल आती थी जजीर की झंकार
आज उसने किया मश्रिके - ख्वाबीदा[२४] को बेदार[२५]
वह हाथ जो कल हथकडियो मे थे गिरफ्तार
आजादिए - अक़्वाम[२६] के है आज अलमबरदार[२७]
हीरे से भी वज़नी है 'जवाहर' का सुख़न[२८] आज

अय बादे-सवा[२९] ख्वाब से टीपू को जगा दे
मरहूम जफरशाह के शाने[३०] को हिला दे
पहले तो अदब से सरे-तस्लीम[३१] झुका दे
फिर दोनो को यह मुज़्द ए - जाबख्श[३२] सुना दे
आजाद है कश्मीर से ले ता ब दकन आज

होगी उसी दुनिया मे कही झासी की रानी
वह ख़ाल्द.ए - हिन्द[३३] वह नौशाब.ए - सानी[३४]
है फख्रे-वतन[३५] जिनकी शुजाअत[३६] की कहानी
उनको सुनाओ जाके यह पैगाम जबानी
पूरी हुई आज़ादिए-कौमी[३७] की लगन आज

है याद हमे हज़रते-जौहर[३८] का वह इर्शाद[३९]
आयेंगे न वह हिन्द मे जब तक न हो आज़ाद
कह दे कोई उनसे कि हुई खत्म वह मेयाद[४०]
उजड़ी हुई महफिल है करे उसको फिर आवाद
आ जायें कि पूरा हुआ वह अहदे-कुहन[४१] आज

रफ्तारे - सियासत[४२] के जो नब्बाज़[४३] है माहिर[४४]
कहते हैं नये दौर के आसार[४५] हैं ज़ाहिर
मिटने को हैं सैयादिए - मग़्रिब[४६] के मजाहिर[४७]
मश्रिक के सिपहदोर असाकिर[४८] है जवाहिर
जात्रा के हमआवाज है कफकाज़ो - यमन[४९] आज

२४. सोया हुआ पूर्व, २५. जाग्रत, २६ कौमो की आजादी, २७ झण्डा उठाने वाले, २८ कलाम वचन, २९ प्रात -समीर, ३० कन्धे, ३१ स्वीकृति का सर, ३२ जीवनदायक शुभ सूचना, ३३ भारत की अमर नारी, ३४ द्वितीय अमृत, ३५ देश का गर्व, ३६ वहादुरी, ३७ राष्ट्रीय आजादी, ३८ महम्मदअली जोहर, ३९. वचन, ४०. मुद्दत. ४१ पुराना ज़माना, ४२ राजनीति की रफ्तार, ४३ नाडी परखने वाला, ४४ कुशल, ४५. लक्षण, ४६ पश्चिम के सैयाद, ४७ प्रदर्शन, ४८ सेनापति, ४९ दक्षिण यूरोपीय रूस और यमन।

अरबावे-वतन[५०] तुमको मुबारक हो यह महफिल
हा जश्न मना लो कि है मौका इसी काबिल
हो जाना न तुम जोशे-तरब[५१] मे कही गाफिल
तख़रीब[५२] तो आसान थी, तामीर[५३] है मुश्किल
है सामने मंज़िल अभी, कल से भी कठिन आज

गौतम ने चरागा किया कुल मुल्क मे यकसर
रौशन करो उल्फत का दिया दिल के भी अन्दर
क्यो हर्फ सुहेल आज न हो फैल के दफ्तर
इक शाइर ए - हिन्द* है सूबे की गवर्नर
उट्ठे दिले - शाइर से न क्यो मौजे-सुखन[५४] आज

आ ही गया

आनन्दनारायण मुल्ला

हुक्मे - माजूली[१] बनामे - तीरगी[२] आ ही गया
वादिए - शब[३] मे पयामे - रौशनी[४] आ ही गया

चीरता जुल्मत[५] को तह दर तह सहाव अन्दर सहाव[६]
फिर उफक[७] पर आफ्तावे-ज़िन्दगी[८] आ ही गया

अजुमन मे तिश्नाकामो[९] की वसद-मीना-ओ-जाम[१०]
आज साकी लेके इज्ने - मैकशी[११] आ ही गया

तेश ए - फर्हाद[१२] वहरे - कस्रे - खुसरो[१३] ता व के
कोहकन[१४] की जद मे कस्रे-खुसरवा[१५] आ ही गया

* श्रीमती सरोजनी नायडू।

५० देशवासी, ५१ सुख का जोश, ५२ विनाश, ५३ निर्माण, ५४ कलाम की मौज।

आ ही गया

१ पद से हटाने का हुक्म, २ अन्धकार के नाम, ३. रात की वादी, ४ प्रकाश का सन्देश, ५ अन्धकार, ६ बादल, ७ क्षितिज, ८ जीवन का सूर्य, ९. प्यासा, १० सुराही और प्याला, ११ मदिरा-पान का निमंत्रण, १२ फरहाद की कुदाल, १३. खुसरो के महल के लिए, १४ पहाड़ काटने वाला, फरहाद, १५ खुशरो का महल।

अय उरूसे-हिन्द[16] के बिखरे हुए मोती के हार
गूधने फिर तुझको तेरा[6] जौहरी आ ही गया

शमअ रखी जा रही है हिन्दे-नौ[17] के सामने
नज़्मे-अफरंगी[18] का शेरे-आखरी[19] आ ही गया

इक हकीकत[20] बन के मुल्ला ख्वाबे-अर्माने-वतन[21]
अय ज़िहे किस्मत[22] कि अपने जीते जी आ ही गया

अय सुब्हे-वतन[1]

सागर निजामी

अय सुब्हे-वतन अय सुब्हे-वतन
अय रूहे-बहार[2] अय जाने-चमन[3]
अय मुतरिबे-मन[4] अय साकिए-मन[5]
अय सुब्हे-वतन अय सुब्हे-वतन

ले जोशे-जुनू[6] की ज़र्बों[7] ने ज़ंजीरे-गुलामी तोड़ ही दी
जम्हूर[8] के सगीं[9] पजे ने शाही की कलाई मोड ही दी
तारीख़ के ख़ूनी हाथो से छीना है तिरा सीमी दामन[10]
अय सुब्हे-वतन अय सुब्हे-वतन

फिर लौट के आया सदियो मे इकबालो-तरब[11] का सैयारा[12]
किरनो मे उफक[13] पर फिर चमका पस्ती[14] के अधेरो का मारा
हैरा हैरा, नाज़ा नाजा,[15] खन्दा खन्दा,[16] रौशन रौशन[17]
अय सुब्हे-वतन अय सुब्हे-वतन

१६ भारत की दुलहन, १७ नवीन भारत, १८ अग्रेजो का कानून, १९ अन्तिम शेर, २० सच्चाई, २१ देश के अरमानो का स्वप्न २२ सौभाग्य।

अय सुब्हे-वतन

१. देश का प्रभात, २ बहार की आभा, ३ उपवन की जान, ४ मन के गायक, ५ मन के साकी, ६ उन्माद का जोश, ७ चोट, ८ गणतन्त्र, ९ पत्थर के, १० चादी का दाम, ११ प्रताप और सुख, १२ नक्षत्र, १३ क्षितिज, १४ पतन, गिरावट, १५ गर्वित, १६ मुस-कराता हुआ, १७ प्रकाशमान।

सोये हुए ज़र्रे[18] जाग उठे अनवारे-सहर[19] वेदार[20] हुए
एहसासे - ज़मीं[1] वेदार हुआ, अफ्कारे-बशर[22] वेदार हुए
विस्तर से खज़फरेज़े[23] उठे और लालो-गुहर वेदार हुए
आखो को मला गुलज़ारो ने, शाखो पे समर[24] वेदार हुए
नैनो से मस्ती वरसाती, ले जाग उठी हस्ती की दुल्हन
अय सुव्हे - वतन अय सुव्हे - वतन

पर्वत पर्वत, सागर सागर, परचम अपना लहराता है
महलो पे, मिलो पे, किलो पर अज़मत[25] के तराने गाता है
गुलवार रिदाए - आज़ादी,[26] सरशार[27] जवानी का परचम
यह अम्न के नग्मो का मुतरिव[28] इन्साफो-सदाकत[29] का यह अलम[30]
तहज़ीव का यह ज़र्री आंचल,[31] तामीर[32] का यह रगी दामन
अय सुव्हे - वतन अय सुव्हे - वतन

एलाने-आज़ादी

अमीन सलोनवी

आज यह महसूस होता है जहा आज़ाद है
यह ज़मी आज़ाद है यह आस्मा आज़ाद है

आज छूटे हैं तिलिस्मे-कैदे-अफरगी[1] से हम
आज अपनी आरज़ूओ की ज़वा आजाद है

चूमती है मज़िले-मकसद[2] मुसाफिर के कदम
आज गर्दे-कारवा से कारवा आज़ाद है

१८ कण, १९ सुवह के प्रकाश, २० जाग्रत, २१ धरती का एहसास, २२ मानव चेतना, २३ कण, २४ फल, २५ महानता, २६ आज़ादी की चादर, २७ तृप्त, सन्तुष्ट, २८ गायक, २९ न्याय और सच्चाई, ३० झण्डा, ३१ सुनहरी आचल, ३२. निर्माण ।

एलाने-आज़ादी

१ अंग्रेज़ो की कैद का जादू, २ उद्देश्य की मज़िल ।

सैद[3] और सैयाद दोनो हो गये हैं मुतमईन[4]
दर कफस[5] के खुल गये हैं पास्बा[6] आज़ाद है

नग्मासंजाने-चमन[7] को मुज़्दा[8] हो आई बहार
बागबा खुद कह रहा है गुलसिता आज़ाद है

देखता हूं रौनके-कौनैन[9] की बिखरी हुई
हर फज़ा आज़ाद है हर आस्मा आज़ाद है

दिल नशाते-रंगो-बू[10] मे आज है डूबा हुआ
अब वतन मिस्ले-नसीमे-बोस्ता[11] आज़ाद है

खू शहीदाने-वतन[12] का रग लाकर ही रहा
आज यह जन्नतनिशा हिन्दोस्ता आज़ाद है

जश्ने-आज़ादी

असरारुल हक मजाज

बसद[1] गुरूर बसद फख्रो-नाज़े-आजादी[2]
मचल के खुल गयी जुल्फे-दराज़े-आज़ादी[3]
महो-नजूम[4] हैं नग्मा तराज़े-आज़ादी[5]
वतन ने छेडा है इस तरह साज़े-आज़ादी[6]
ज़माना रक्स[7] मे है, ज़िन्दगी गज़लख्वा है

३ शिकार, ४ सन्तुष्ट, ५. पिंजरा, ६ पहरेदार, ७ चमन के गायक, ८. खुशखबरी, ९ ससार, १०. रग और सुगध के ऐश मे, ११ उपवन की हवा की तरह, १२ वतन पर शहीद होने वाले।

जश्ने-आज़ादी

१ सैकड़ो, २ आज़ादी का गर्व, ३. आज़ादी की लम्बी लटें, ४. चाद-तारे, ५ आज़ादी का गीत गाते हुए, ६ आज़ादी का वाद्य, ७ नृत्य।

हर इक जवी[८] पे है इक मौजे-नूरे-ग्राजादी[९]
हर एक ग्राख मे कैफो-सुरूरे-ग्राजादी[१०]
गुलामी खाक वसर[११] है हुजूरे-ग्राजादी[१२]
हर एक कस्र[१३] है, इक वामे-तूरे-ग्राजादी[१४]
हर एक वाम पे इक परचमे - जर ग्रफशा[१५] है

हर एक सिम्त निगाराने-यासमी पैकर[१६]
निकल पडे हैं दरो-वाम से महो-ग्रख्तर[१७]
वह सैले-नूर[१८] है खीरा[१९] है ग्रादमी की नजर
वसद गुरूरो - ग्रदा खन्दाजन[२०] है गर्दू[२१] पर
जमीने-हिन्द कि जौलागहे-गजाला[२२] है

सदा दो ग्रजुमे-ग्रफ्लाक[२३] रक्स फरमायें
वुताने-काफिरो-सफ्फाक[२४] रक्स फरमायें
शरीके-हल्क.ए-इदराक[२५] रक्स फरमायें
तरव[२६] का वक्त है, वेवाक रक्स फरमायें
ग्रव ऐसे मे कि तकाजाए-वज्मे-रिन्दा है[२७]

यह इकिलाव का मुज्दा[२८] है, इकिलाव नही
यह ग्राफ्ताव का परतौ[२९] है, ग्राफ्ताव नही
वह जिसकी तावो-तवानाई[३०] का जवाव नही
ग्रभी वह सईए - जुनूखेज[३१] कामियाव नही
यह इतिहा[३२] नही, ग्रावाजे-कारे-मर्दा[३३] है

८ ललाट, ९ ग्राजादी के प्रकाश की मौज, १० ग्राजादी का नशा, ११ धूलधूसरित, १२ ग्राजादी के चरणो मे, १३ महल, १४ ग्राजादी के तूर की छत, १५ सोना विखेरता हुग्रा झण्डा, १६ चमेली जैसे ग्राकार की मूर्तिया, १७ चाद-सितारे, १८ प्रकाश की वाढ, १९ चकाचौंध, २० मुसकराता हुग्रा, २१ ग्राकाश, २२ हिरनो के दौडने का मैदान, २३ ग्राकाश के तारे, २४ कातिल ग्रौर काफिर वुत, २५ ज्ञान-गोष्ठी के शरीक, २६ ग्रानन्द, २७ मदिरा पीने वालो की वज्म का तकाजा, २८ खुशखवरी, २९ ग्रक्स, ३० चमक ग्रौर शक्ति, ३१ उन्मादप्रद कोशिश, ३२ ग्रन्त, ३३ मर्दों के काम का ग्रारम्भ।

सुब्हे-आज़ादी का तुलूअ[१]

याह्या आजमी

इक नैयरे-नौ[२] सीन ए-मश्रिक[३] ने उछाला
है जिसकी शुआओं[४] से हर इक सम्त[५] उजाला

लहरायेगा आजादिए-किश्वर[६] का फरेरा
अब साहिले-मदरास से ता कोहे-हिमाला

मुद्दत से जो अफसुर्दा-ओ-गमगीनो-हज़ी[७] था
है रग ही अब उस रुखे-गेती[८] का निराला

सदियो की गुलामी की शबे-तार[९] है रुखसत[१०]
मश्रिक[११] के शबिस्तानो[१२] मे छाया है उजाला

है महरे-जहाताब[१३] की अब मद्दे-मुकाबिल
जो शमअ, सहर तक अभी लेती थी संभाला

जुल्मत कद.ए-हिन्द[१४] मे क्यो हो न चरागा
सर जैबे-उफक[१५] से महे-ताबा[१६] ने निकाला

मामूर[१७] है हर गोश ए-दामाने-वतन[१८] आज
करता है निसार औजे-फलक[१९] लूलूए-लाला

आसा न था जिस बारे-अमानत[२०] का तहम्मुल[२१]
सद शुक्र वतन ने है उसे आज समाला

१ आजादी के प्रभात का उदय, २ नया सितारा, ३ पूर्व का सीना, ४ किरणें, ५ चारो ओर, ६. देश की स्वतन्त्रता ७ दुखी, उदास और शोकातुर, ८ धरती का चेहरा, ९ अंधेरी रात, १० विदा, ११ पूर्व, १२. शयनागार, १३ प्रकाशमान सूर्य, १४ भारत का अंधकार गृह, १५. क्षितिज का गरेबान, १६ प्रकाशमान सूर्य, १७ परिपूर्ण १८ वतन के दामन का हर कोना, १९ आकाश की ऊंचाई, २० अमानत का बोझ, २१ सहनशीलता ।

हमारी कहानी

कमाल ग्रहमद सिद्दीकी

तीन सौ साल से हावी था गुलामी का निज़ाम
ग्रजनवी हाथो ने तोडे जो सितम मत पूछ
ज़ुल्म सहते थे, पे फरियाद न कर सकते थे
पूजना पडते थे गैरो के सनम मत पूछ

ज़िन्दगी के लिए वेरहम कवानीन[1] की मुहर
ग्रज्म[2] पर कैद थी, होटो के लिए ताले थे
सर उठाने की इजाज़त भी नही थी हमको
जुर्म इतना था कि वह गोरे थे हम काले थे

ज़िन्दगी जब्रे-गरांवार[3] से पज़मुर्दा,[4] निढाल
ग्रजनवी हाकिमे-वक्त,[5] ग्रहले-वतन थे महकूम[6]
हाय ऐयामे-ग्रसीरी,[7] वह ग्रज़ीयत[8] वह ग्रज़ाव
हर तरफ मौत का सन्नाटा, फ़ज़ाए मस्मूम[9]

हम तरसते थे वहारो मे वहारो के लिए
फूल खिलते थे गुलिस्तानो मे मुर्झाये हुए
कभी फाके की हिकायत[10] कभी इफ्लास[11] की वात
ज़िन्दा रहते थे मगर ज़ीस्त से उक्ताये हुए

यह भी कहने की इजाज़त न थी मज्लूम[12] हैं हम
होट सीने के कवानीन थे, सौ पहरे थे
हुक्म था इनको छुपाग्रो, न करो इनका इलाज
सीन ए-ज़ीस्त[13] मे जो घाव वहुत गहरे थे

१ कानून (व० व०), २ इरादा, ३ ग्रत्याचार से पीडित, ४ उदास, ५ शासक, ६ गुलाम. ७ जेल के दिन, ८ कष्ट, ६. विपाक्त, जहरीली, १० कहानी, ११ दरिद्रता, १२ पीडित, १३ जिन्दगी के सीने मे।

हर कदम पर नये मकतल[१४] थे, नये ज़िन्दा[१५] थे
ज़िन्दगानी के लिए दारो-रसन[१६] थे क्या क्या
ज़ुल्म और जब्र से ताराज[१७] न था अय काश
अपने गुलशन मे गुलो-सर्वो-समन थे क्या-क्या

ज़िन्दगी मुज़्तरिबो - नौहाकुना[१८] रहती थी
ज़ुल्म की दाद न थी, जौर की फरियाद न थी
बन्दिशें इतनी कि जी जलता था दम घुटता था
नज़र आजाद न थी, सास भी आज़ाद न थी

मक़सदे-ज़ीस्त[१९] थी आज़ादिए-जम्हूरे-वतन[२०]
सर मे सौदा था यही, दिल मे यही एक लगन
यह तमन्ना थी कि आज़ाद हो अपना गुलशन
वक्फ[२१] थी इसके लिए कल्ब[२२] की इक इक धड़कन

दिल मे जो आग भडकती थी, भड़कती ही रही
अपनी मजिल से किसी वक्त भी गाफिल न रहे
हुर्रियतसोज़,[२३] सितम पेशा[२४] हुकूमत के खिलाफ
हमने हर वक्त बगावत के अलम लहराये

आज आज़ादिए-जम्हूर कोई ख्वाब नही
आज आईन हमारा है हमारा है 'निज़ाम
मोतबर[२५] आज है दुनिया मे हमारी आवाज
आज चढता हुआ सूरज हमे करता है सलाम

१४ वधस्थल, १५ कैदखाना, १६ फासी के फन्दे, १७ लूट, बरबादी, १८ बेचैन और आर्तनाद में लीन, १९ जीवन का उद्देश्य, २०. देश की आजादी, २१ सुरक्षित, २२ दिल, २३ आज़ादी को जलाने वाला, २४. अत्याचारी, २५. विश्वसनीय।

आफ़तावे-ताज़ा[1]

सिकन्दर अली वज्द

दामाने-चाक[2] अश्के-मसर्रत[3] से तर है आज
दो सौ बरस के बाद तुलूए-सहर[4] है आज

शमए-यकीं[5] के दम से शिकस्तों[6] की शब[7] कटी
महरे-मुबीं[8] पैगम्बरे-फ़त्हो-ज़फ़र[9] है आज

सामाने-सद हज़ार बहारां लिए हुए
अपनी जिलौ[10] मे गर्दिशे-शम्सो-कमर[11] है आज

मुर्दा दिलो मे दौड गया खूने-ज़िन्दगी
चेहरो पे हुर्रियत[12] की शफक[13] जल्वागर[14] है आज

पानी की बूंद कतर ए-आवे-हयात[15] है
मौजे-हवा मे मरहमे-ज़ख्मे-जिगर है आज

गुलचीं के साथ दौरे-तिही दामनी[16] गया
हर शाखे-गुल से बारिशे-लालो-गुहर है आज

गुलशन का इंकिलाब ने नक्शा बदल दिया
शाही[17] शिकारे-बुलबुले - बेबालो-पर है आज

उड़ती हैं गर्दे-राह[18] की मानिन्द मंज़िलें
बेबाक रख्शे-उम्र[19] जो गर्मे-सफर है आज

१ नया सूरज, २ फटा हुआ दामन, ३ खुशी के आंसू, ४ प्रभात का उदय, ५ विश्वास की शमा, ६ पराजय, ७ रात, ८ प्रकाशमान सूर्य, ९ विजय का सन्देश लाने वाला, १० सवारी के सामने का रुख ११ चन्द्र और सूर्य का चक्र, १२ आजादी, १३ लाली, १४ जल्वा-दिखा रही है, १५ अमृत की बूंद, १६ खाली दामन का जमाना, १७ बाज, १८ मार्ग की धूल, १९ उम्र का घोडा।

इक दिलनवाज़ ख्वाब हकीकत[20] मे ढल गया
नख्ले-उमीदे-अहले-नज़र[21] बारवर[22] है आज

महसूस हो रहा है अनोखा सुहानापन
इक सादा झोपडा ही सही अपना घर है आज

सब ताजिराने-तीको-सलासिल[23] चले गये
अय वज्द लुत्फे-अर्जे-मताए-हुनर[24] है आज

२०. सच्चाई, २१. नजर वालो की आशा का वृक्ष, २२. फलो से लदा हुआ, २३. हार और ज़जीरों के व्यापारी २४ हुनर की दौलत का आनन्द ।

आठवां अध्याय

आज़ादी के बाद से आज़ादी की रजत जयन्ती तक

पांच सौ बरस तवील[1] रात

कैसरुल जाफरी

वह रात पांच सौ बरस जो ज़हर ढालती रही
जो सब्ज सब्ज़ वादियो मे साप पालती रही
जो नारियल की छाव मे लहू उछालती रही

पहाड बन के जो खडी थी रौशनी की राह में
वह रात बह गयी सहर के सैले-बेपनाह[2] मे

वह सैले-बेपनाह क्या ? दिलों का अज्मे-आहनी[3]
वह सैले-बेपनाह क्या ? नजर की शोला अफगनी[4]
वह सैले-बेपनाह क्या ? जुनू की पाक दामनी

जुनू की पाक दामनी से हर रविश चमन बनी
सवर के हर खिजां नसीब शाखे-गुलबदन बनी

धुआ नयी सहर की शोख रौशनी मे घुल गया
फजा मे आज परचमे-नशातो-रंग[5] खुल गया
जजीराहाए-दीव, दमन, गोवा का दाग धुल गया

जबीने-अर्जे-कायनात[6] पर हैं दाग और भी
सिसक रहे हैं तीरगी मे कुछ चराग और भी

नोट . दीव, दमन और गोवा के दुवारा हिन्दुस्तानी हुकूमत मे शामिल होने पर यह नज्म कही गयी है।

१ लम्बी, २ प्रचड बाढ, ३. दृढ सकल्प, ४. शोले बरसाना, ५ सुख और सुदरता का झंडा, ६. दुनिया के धरती का ललाट।

गोवा के सितम शिग्रार

तिलोकचन्द महरूम

घोड़ों पे है सवार हवा के सितम शिग्रार[1]
कायल नहीं है रोज़े-जज़ाके[2] सितम शिग्रार
क्या सामने न होंगे खुदा के सितम शिग्रार ?
ठहरेंगे मुस्तहक[3] न सज़ा के सितम शिग्रार ?
दुश्मन हैं गर्चे सिदको-सफा[4] के सितम शिग्रार
कब तक सितम करेंगे गोवा के सितम शिग्रार

कब तक रहेंगे खूने-शहीदा से सुर्खरू[5]
सारा जहान उन पे करेगा तुफू तुफू[6]
हिन्दोस्तान पर यह हुकूमत की ग्रारजू
होकर ज़लील खोयेगी मग्रिब की ग्राबरू
जायेंगे इज्जत ग्रपनी गवा के सितम शिग्रार
कब तक सितम करेंगे गोवा के सितम शिग्रार

गासिब[7] को ज़ेरे-चर्ख[8] मिली है ग्रमा[9] कभी ?
क्या रुक गयी है गर्दिशे-हफ्त ग्रास्मा कभी ?
ग्रायेगा इनको रास न दौरे-जमा कभी
मिट जायेंगे यह दुश्मने-ग्रम्नो-ग्रमा कभी
कब तक रखेंगे खुद को छुपा के सितम शिग्रार
कब तक सितम करेंगे गोवा के सितम शिग्रार

बरसाई हैं उन्होंने निहत्तो पे गोलिया
डायर की तरह खुद को समझते हैं काम्रा[10]
लेते हैं ग्रहले-हिन्द की गैरत का इम्तिहा
इक ग्राग भी है बहरे-ग्रहिंसा[11] के दर्मिया
सुन लें यह बात कान लगा के सितम शिग्रार
कब तक सितम करेंगे गोवा के सितम शिग्रार

१ जालिम, २ कयामत का दिन, ३ पात्र, ४ सच्चाई ग्रौर पाकीजगी, ५ खुश, ६ धिक्-धिक्, ७ दूसरों का हक मारने वाला, ८ ग्राकाश के नीचे, ९ शरण, १० कामयाब, ११ ग्रहिंसा का समुद्र ।

वादिए-गुल

रिफअ़त सरोश

जाग अय वादिए-गुल
देख वह बर्फ के चश्मो के करीब
कितने सैयाद कमीगाह मे घुस आये है
कितने गुलची तिरी अज्मत को हरीसाना[1] निगाहो से खडे तकते है
कितने जल्लाद लिये तेगे-हवस[2]
सर कलम करने को आये हैं गुलो-लाला के
जाग अय वादिए-गुल

तेरी पाकीजा फज़ा
आज फिर हो गयी बारूद की बू से बोझल
आज फिर मकरो-तशद्दुद[3] के कदम
रौंदने सब्जःए-नौरस को बढे आते हैं
जाग अय वादिए-गुल

जाग इस तरह कि हर गुचा बने शोल.ए-अज्म[4]
जाग इस तरह कि हर फूल शरर[5] बन जाये
हर शरर दामने-गुलची को जलाकर रख दे
जाग इस तरह कि गुलज़ार के सीने मे दबी आग लहक कर जागे

हर लपट नाग बने
और सैयाद को बढकर डस ले
जाग अय वादिए-गुल

१. लोभी, २ लोभ की तलवार, ३ फरेब और हिंसा, ४ सकल्प का शोला, ५ चिंगारी।

मादरे-हिन्द से

नजीर वनारसी

क्यो न हो नाज़ खाकसारी पर
तेरे कदमो की धूल हैं हम लोग
आज आये हैं तेरे चरणो मे
तू जो छू दे तो फूल हैं हम लोग
देश भगति भी हम पे नाज़ करे
हम को आज ऐसी देश भगति दे
तेरी जानिव है दुश्मनो की नज़र
अपने वेटो को अपनी शक्ति दे
मा हमे रण मे सुर्खरू[1] रखना
अपने वेटो की आवरू रखना

तूने हम सव की लाज रख ली है
देशमाता तुझे हज़ारो सलाम
चाहिये हमको तेरा आशीर्वाद
शस्त्र उठाते हैं लेके तेरा नाम
लड़खडायें अगर हमारे कदम
रण मे आकर सभालना माता
विजलिया दुश्मनो के दिल पे गिरें
इस तरह से उछालना माता
मा हमे रण मे सुर्खरू रखना
अपने वेटो की आवरू रखना

हो गयी वन्द आज जिनकी ज़वां
कल का इतिहास उन्हे पुकारेगा
जो वहादुर लहू मे डूव गये
वक्त उन्हे और भी उभारेगा

१ विजयी ।

सास टूटे तो गम नही माता
जग मे दिल न टूटने पाये
हाथ कट जायें जब भी हाथो से
तेरा दामन न छटने पाये
मा हमे रण मे सुर्खरू रखना
अपने बेटो की आबरू रखना

पयामे-सुलह[1]

तिलोकचन्द महरूम

लाई पैगाम मौजे-बादे-बहार[2]
कि हुई खत्म शोरिशे - कश्मीर[3]

दिल हुए शाद अम्न केशो के
है यह गाधी के ख्वाब की ताबीर

सुलहजोई मे अम्नकोशी मे
काश होती न इस कदर ताखीर

ताकि होता न इस इस कदर नुक्सा
और होती न दहर मे तश्हीर[4]

बच गये होते नौजवां कितने
जिनको मरवा दिया बसर्फे-कसीर[5]

जिक्र क्या उसका, जो हुआ सो हुआ
उन बेचारो की थी यही तकदीर

काम लें अब जरा तहम्मुल[6] से
दोनो मुल्को के साहबे-तदबीर[7]

१ शांति का सदेश, २ वसन्त की हवा की मौज, ३ कश्मीर की बगावत, ४. प्रसिद्धि, ५ अधिक धन खर्च करके, ६. शान्ति, ७. समझदार लोग।

दिल से तख़रीब[८] का ख़याल हो दूर
और हो जायें माइले-तामीर[९]

रग इस मे ख़ुलूस[१०] का भर दें
खिच रही है जो अम्न की तस्वीर

अहदो-पैमा[११] हो वक्फ़े-इस्तकलाल[१२]
उनकी तकमील[१३] मे नही तक्सीर[१४]

अहले-अख़बार हो वफा आमोज़[१५]
कातए-दोस्ती[१६] न हो तहरीर[१७]

आमतुन्नास[१८] हो इधर न उधर
किसी उन्वान इश्तिआल पज़ीर[१९]

अलमे-आश्ती[२०] वलन्द रहे
अन्दरुने-नियाम[२१] हो शमशीर

हर दो जानिब की बेटिया बहने
है जो मजबूरे-क़ैदे-बेज़जीर

जिस कदर जल्द हो रिहा हो जायें
उनका क्या जुर्म ? क्यो रहे वह असीर

है तकाजा यही शराफत का
दोनो मुल्को की इसमे है तौकीर[२२]

रहे आबाद हिन्दो-पाकिस्ता
तेरी रहमत से अय ख़ुदाए-कदीर

ग़रज परवाज हो चुका महरूम
अब कहे कुछ 'हफीज़' और 'तासीर'

८ विनाश, ९ निर्माण मे रत, १० निष्ठा, ११ वचन, १२ स्थायित्व के लिए, १३ पूरा करना, १४ कमी, १५ वफा सिखाने वाले, १६ दोस्ती को काटने वाली, १७ लेखनी, १८ जन-साधारण, १९ उत्तेजित, २०. दोस्ती का झडा, २१ म्यान के अदर, २२ प्रतिष्ठा।

हम एक हैं

जा निसार अख़्तर

एक है अपनी ज़मी　　एक है अपना गगन
एक है अपना जहा　　एक है अपना वतन
अपने सभी सुख एक हैं　　अपने सभी गम एक हैं

आवाज दो हम एक है

यह वक्त खोने का नही　　यह वक्त सोने का नही
जागो वतन ख़तरे मे है　　सारा चमन ख़तरे मे है
फूलो के चेहरे जर्द हैं　　जुल्फे फजा की गर्द है
उमडा हुआ तूफान है　　नर्गे मे हिन्दोस्तान है
दुश्मन से नफरत फर्ज है　　घर की हिफाजत फर्ज है
वेदार हो वेदार हो　　आमाद.ए - पैकार[1] हो

आवाज़ दो हम एक है

यह है हिमाला की ज़मी　　ताजो-अजन्ता की जमी
सगम हमारी आन है　　चित्तौड अपनी शान है
गुलमर्ग का महका चमन　　जमना का तट गोकुल का वन
गगा के धारे अपने है　　यह सब हमारे अपने हैं
कह दो कोई दुश्मन नजर　　उठे न भूले से इधर
कह दो कि हम बेदार हैं　　कह दो कि हम तैयार हैं

आवाज दो हम एक है

उठो जवानाने - वतन　　बांधे हुए सर से कफन
उठो दकन की ओर से　　गंगो-जमन की ओर से
पजाब के दिल से उठो　　सतलज के साहिल से उठो
महाराष्टर की खाक से　　देहली की अर्ज़े-पाक से
बगाल, से गुजरात से　　कश्मीर के बागात से
नेफा से राजस्थान से　　कुल खाके-हिन्दुस्तान से

आवाज़ दो हम् एक है
हम एक हैं
हम एक हैं

१ लडाई के लिए तैयार ।

बुतशिकनी

चीनी जारहियत[1] से मुतास्सिर

कैफी आजमी

पूजा था तुम्हें बुत की तरह हमने किसी दिन
गो जां पे अकीदत मे कई बार बनी भी

माथे से कई बार लहू सजदे मे टपका
आखो से मै-दर्द कई बार छनी भी

तुम साजे-वफा को कभी खातिर मे न लाये
गर्दन थी भुकाना जिसे अकडी भी तनी भी

घबरा गयी साजिश भी अगर तुम रहे खामोश
की बात तो शर्मा गयी नावक फिगनी भी

इक बात समझ लोगे तो खुल जायेंगी आखें
पूजा है तो आती है हमे बुतशिकनी भी

जा दी है सदा, देगे सदा अपने वतन पर
गो आज बहुत सस्ती है हुब्बलवतनी भी

१ आक्रमण।

लहू का टीका

आनन्दनारायण मुल्ला

वतन फिर तुझको पैमाने-वफा[1] देने का वक्त आया।
तिरे नामूस[2] पर सब कुछ लुटा देने का वक्त आया

वह खित्ता[3] देवताओ की जहा आरामगाहे थी
जहा वेदाग नक्शे - पाए - इसानी से राहे थी
जहा दुनिया की चीखें थी, न आसू थे न आहे थी
उसी को जग का मैदा वना देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

रुपहली वर्फ पर है सुर्ख खू की आज इक धारी
सहर की नर्म किरनो ने यहा दोशीज़गी[4] खोई
हुई आलूदा यह मासूम दुनिया अप्सराओ की
अब इन नापाक धब्बो को मिटा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

गिराकर हर निज़ाए - दर्मियां[5] की चारदीवारी
सियासत की धडेबाजी, जवा की तफरिकाकारी[6]
मिटा कर सूबा-ओ - ईमानो - मिल्लत की हदें सारी
हिमाला पर नयी सरहद वना देने का वक़्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

हर इक आसू का शोला[7] जज्ब करके दिल के खिर्मन[8] मे
हर इक फरियाद की लै ढाल कर इक अज्मे-आहन[9] मे
हर इक नारे की बिजली करके आसूदा निशेमन[10] मे
फिर इस विजली को दुश्मन पर गिरा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

१ वफा का वचन, २ इज्जत, ३ धरती का टुकड़ा, ४ कुवारापन, ५ वीच का वैमनस्य, ६. भेदभाव, ७ ज्वाला, ८ खलियान, ९. दृढ सकल्प, १० घोसला।

हर इक बाजारो-कू[११] को रज़्मगह[१२] शायद बनाना हो
हर इक दीवारो-दर पर मोर्चा शायद बनाना हो
खुद अपनी किश्त[१३] को आतिशकदा[१४] शायद बनाना हो
हर इक चप्पे पे आहूती चढा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

यह अहले-खाना[१५] की गासिब[१६] लुटेरो से लडाई है
यह चढती रात की रौशन सवेरो से लडाई है
चरागे - आदमियत की, अधेरो से लडाई है
हर इक बस्ती मे इसां को सदा देने का वक़्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

निकावे-सुर्ख़[१७] के पीछे है पीली शक्ले-खाकानी[१८]
वही मपफाक[१९] नज़रे हैं, वही है चीने - पेशानी[२०]
वही चगेज का जज्वा, वही ख्वावे - जहावानी[२१]
अब इन ख्वाबो को मट्टी मे मिला देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने - वफा देने का वक्त आया

जवानाने-वतन आओ कतार अन्दर कतार आओ
दिलो मे आग, नज़रो मे लिए बर्क़ो-शरार[२२] आओ
बढो, कहरे-ख़ुदा[२३] अब बन के सूए-कारज़ार[२४] आओ
जलाले - गैरते - कौमी[२५] दिखा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

बहादुर हिन्द के लडते हैं कैसे आज दिखलाओ
रिवायाते - शुजाअत[२६] को नये कुछ बाब[२७] दे जाओ
मिटो तो दास्ताने हो, जियो तो ताजदार आओ
लहू का, मा को फिर टीका लगा देने का वक्त आया
वतन फिर तुझको पैमाने-वफा देने का वक्त आया

११ बाज़ार और कूचे, १२ युद्ध का मैदान, १३ खेती, १४ आग का घर, १५ घर के मालिक, १६ दूसरों का हक़ मारने वाला, १७ लाल मुखपट, १८ बादशाह की सूरत, १९ निर्दयी, २० ललाट की रेखाएँ, २१ बादशाह का ख्वाब, २२ बिजली और चिंगारिया, २३ ख़ुदा का प्रकोप, २४ युद्ध की तरफ़, २५ राष्ट्रीयता के सम्मान का प्रताप, २६ बहादुरी की परम्परा, २७ अध्याय ।

हिमाला की जानिब चलो

सैयद हुर्मतुल इकराम

चलो, हिमाला की जानिब चलो कि तेगजनो[१] !
उबल रहे हैं चटानो से बिजलियो के शरार[२]
फजा के दोश[३] पे लर्जा[४] है साग्रतो की पुकार
वफा के गिर्द है फितनातराजियो[५] का हिसार[६]
वतन की ग्रान पे मिटना है तुमको हमवतनो !

यह सरज़मीन है वलियो, महात्माग्रो की
ग्रजल[७] से एक हसी छाव खेमाजन[८] है यहा
सदाकतो[९] की तरावत चमन चमन है यहा
कदम कदम पे महब्बत का बांकपन है यहा
यह सरजमी है ग्रहिंसा के देवताग्रो की

मजाल क्या कि किसी का कदम इधर ग्राये
पुकारते हैं हुमकते हुए से ख्वाब हमे
पुकारते हैं महकते हुए गुलाब हमे
पुकारते है खनकते हुए रबाब हमे
बढो कि ग्राच न रंगे-हयात पर ग्राये

उठो कि रूह शहीदो की बेकरार न हो
नसीम ग्राई है लेकर धमक बगूलो[१०] की
ग्ररक ग्ररक है जबी सोगवार फूलो की
न झुकने पाये नज़र प्यार के उसूलों की
उठो कि ग्रात्मा गाधी की शर्मसार न हो

१. तलवार चलाने वाला, २ चिंगारी, ३. कधा, ४ कपायमान, ५ उपद्रवकारियों, ६ चार-दिवारी ७ ग्रादिकाल, ८ डेरा डाले हुए, ९. सच्चाई, १० धून का भवर।

हयात प्यार की आगोश मे निखरती है
रिया-ओ-मकर[11] का गाज़ा[12] न चाहिये इसको
गरजती तोपो का नग्मा न चाहिये इसको
बिगुल का बैण्ड का तुहफा न चाहिये इसको
ज़मीन कृष्ण की बसी से प्यार करती है

बढो कि सहमा हुआ इतिका[13] का जादू है
सदाए देता है हिन्दोस्ता का मुस्तक्बिल[14]
पुकारता है उमगो को जल्वए - मज़िल
बुला रहा है तुम्हे वक्त का धडकता दिल
बढो कि काफिलासालार अपना नेहरू है

बढो, हयात को ज़रबारो - गुलफशा[15] कर दो
धुआ धुआ है ज़ुलैखाए-अम्न[16] का रुखसार[17]
बुझा बुझा सा है यूसुफ के हुस्न का पिन्दार[18]
बढो कि लुटती है किनआने - ज़िन्दगी की बहार
लहू चढा के महब्बत को जाविदा[19] कर दो

फूल ज़ख्मी हैं

अजमल अजमली

मैं आज सोच रहा हू कि क्या कहू तुमको
रफीक[1] कहता हू यारो, तो शर्म आती है

यह वार सिर्फ हमारे वतन पे वार नही
निगारे-हुजल ए-गगो-जमन[2] पे वार नही

११ दिखावा और ढोंग, १२ पाउडर, १३ विकास १४ भविष्य, १५ सोने और फूलो से ढक दो, १६ अम्न की ज़ुलैखा, १७ कपोल, १८ घमड, १९ अमर।

फूल ज़ख्मी हैं

१ दोस्त, २ गगा और जमना के छपरकट के बेलबूटे।

यह वार वह है महब्बत के फूल जख्मी हैं
सुहाने ख्वाब, सजीले उसूल जख्मी है

रिवायतो से लहू बूद बनके टपका है
समाजवाद के सीने मे हश्र[3] बरपा है

मैं आज सोच रहा हू कि क्या कहूं तुमको
रफीक कहता हूं यारो तो शर्म आती है

चीन की पैमांशिकनी[1] के नाम

मजरूह सुल्तानपुरी

दस्ते - पुर खू[2] को कफे - दस्ते - निगारा[3] समझे
कत्लगह[4] थी जिसे हम महफ़िले - यारा समझे

कुछ भी दामन मे नही खारे-मलामत[5] के सिवा
अय जुनू हम भी किसे कूए-बहारां समझे

हा वह बेदर्द तो बेगाना ही अच्छा यारो
जो न तौकीरे - गमे-दर्द गुसारा[6] समझे

खन्दाजन[7] इस पे रहे हल्क ए - जजीरे-जुनू[8]
जो न कुछ मजिलते - सिलसिला दारा[9] समझे

तोड दें हम जो न तल्वार तो कहिए मजरूह
तेगजन[10] क्या हुनरे - रहमशिआरा[11] समझे

३. प्रलय।

चीन की पैमांशिकनी के नाम

१. वादा-खिलाफी, २ खून मे डूवा हुआ हाथ, ३ माशूका के हाथ का पजा, ४. वध-स्थल, ५. धिक्कार के काटे, ६ दर्दो-गम खाने वालो की इज्जत, ७ मुसकराते, ८ उन्माद की जजीर का कड़ी, ९ फासी के सिलसिले की प्रतिष्ठा, १०. तलवार का धनी, ११ दयालुओं का गुण।

शाख़े-गुल ही नहीं

नरेशकुमार शाद

चीन की जाबिरो-मगरूर[१] हुकूमत से कहो
इन्किसारी[२] ही सही मेरे वतन का दस्तूर
वक्त पडने पे यह बार्गैरतो-ख़ुद्दार[३] वतन
तोड सकता है हर इक मर्दे मुकाबिल[४] का गुरूर

बावजूद इसके इसे ज़ोम[५] नहीं कुव्वत का
क्योंकि यह अम्नो-महब्बत का नुमाइन्दा है
इक दिलआवेज़ जहाताब सितारे की तरह
ऐटमी दौर की ज़ुल्मत[६] मे दरख़शन्दा[७] है

यह वतन वह है कि हर फर्दे-बशर[८] की खातिर
काकुले-बरहमे-गेती[९] को सवारा जिसने
पचशील ऐसे उसूलो की ज़ियापाशी[१०] से
आलमी अम्न के चेहरे को निखारा जिसने

तूने तो अहदे-रफाकत[११] का उडाया है मज़ाक
तूने तो अम्न को तल्वो से मसल डाला है
तूने तो अपनी हवसनाक[१२] सियासत के तुफैल
मेरे फूलो को शरारो[१३] मे बदल डाला है

फूल अहिंसा के यही मेरे जवानाने-वतन
रज्मगाहों[१४] मे जो तनते हैं कमानो की तरह
टूट पडते हैं जो बिजली की तरह नख़वत[१५] से
और टकराते हैं दुश्मन से चटानो की तरह

१ अत्याचारी और घमडी, २. नम्रता, ३. स्वाभिमानी, ४ सामने आने वाला, ५ घमड, ६ अधेरे, ७ चमकदार, ८ व्यक्ति, ९ धरती की बिखरी हुई लटें, १०. चमक, ११. दोस्ती का वचन, १२ लोभी, १३. चिंगारिया, १४ युद्ध का मैदान, १५. अहकार।

मुल्कगीरी की हवस अपनी निगाहो मे लिए
एक ही रुख देखा है बस मेरे वतन का तूने
आज वह बाग नही आग का दरिया है मगर
तुझको ललचाया है जिस बाग के रगो-बू[१६] ने

बेशक इख्लास[१७] मे अज्मत[१८] है हिमाला की-सी
और फितरत[१९] मे है पाकीजगिए-गंगो - जमन[२०]
लेकिन अब तुझको यह अहसास भी हो जायेगा
शाखे-गुल ही नही तल्वार भी है मेरा वतन

दोस्तो, आओ सूए-हिमाला चलें

जफर गोरखपुरी

दोस्तो आओ सूए-हिमाला चलें
देर से है परेशा परेशा फना[१]

हम अंधेरो मे पैगम्बराने - सहर[२]
हम उजालो के रौशन निशा दोस्तो

हम बहारो का मुस्तक्बिले-जरफशा[३]
लाला-ओ-गुल के हम पास्बा दोस्तो

आओ तूफा की सूरत दिलो मे उठें
आओ हो जाये बर्के-तपा[४] दोस्तो

तोप के रुख पे बन्दूक के सामने
आओ बन जायें कोहे-गरा दोस्तो

१६ रग और सुगध, १७ दोस्ती, निस्वार्थता, १८ महानता, १९ प्रकृति, २० गगा-जमना की पवित्रता।

दोस्तो, आओ सूए-हिमाला चलें

१ वातावरण, २ सुबह के सदेश-वाहक, ३ सुनहरी भविष्य, ४ बिजली की लपक।

दोस्तो आओ सूए-हिमाला चलें
खू उगलती डगर शोलाज़न[५] राह से

नकहतो - रग[६] वन कर उवलते चलें
ज़ुल्म की खूफशा[७] खूफशा रात मे

शमग्र के साथ खुद भी पिघलते चलें
अपनी आखो मे फूलो के सपने लिए

एक इक खार का सर कुचलते चलें
तेग उठा लें जुनू[८] की कयादत[९] मे हम
और जुनू से भी आगे निकलते चलें

दोस्तो आओ सूए-हिमाला चलें
जहद[१०] को, अज्म[११] को, शोल ए-रूह[१२] को
अपनी दौलत कहें अपनी कूवत कहे।

दार[१३] से ज़िन्दगानी को आवाज़ दें
सरफरोशी को जीने की कीमत कहे।
राइफल से सुनें नग्म.ए - आरज़ू[१४]
जख्म को फूल से खूबसूरत कहे
वज़्मे-पैमाना - ओ - साजो-शमशीर[१५] मे
सिर्फ शमशीर को अपनी किस्मत कहे
दोस्तो आओ सूए - हिमाला चलें
आँधियो से कहो आज इक इक दिया
जिन्दा रहने की खातिर शररवार[१६] है
जुल्मतो[१७] से कहो आज इक इक नज़र
घात और साज़िशो से खबरदार है
ज़ालिमो से कहो आज एक एक दिल
जितना दीवाना है उतना हुशियार है
कातिलो से कहो आज इक इक जिगर
सख्त होकर हिमाला की दीवार है
दोस्तो आओ सूए - हिमाला चलें

५ आग बरसाती हुई, ६ रग और सुगध, ७ खून बरसाने वाली, ८ उन्माद, ९ नेतृत्व, १० सघर्ष, ११ सकल्प, १२ रूह का शोला, १३ फासी का फदा, १४ अभिलाषा का गीत, १५ तलवार, साज और पैमाने की बज्म, १६ चिंगारी बरसाने वाली, १७ अधकार।

मेरे आज़ाद वतन

काजी सलीम

मिरे आजाद वतन मेरी उमीदो के चमन
तू मिरा ख्वाब[१] है और ख्वाब की ताबीर भी है

आज अय जाने - जहाँ तूने पुकारा है मुझे
तेरी आवाज मे जादू भी है तासीर भी है

तेरी ललकार पे सब फर्क मिटे एक हुए
यह सियह रात नयी सुबह की तनवीर[२] भी है

हो मुबारक तुझे मजिल का तसव्वुर तो मिला
वह तसव्वुर जो चरागे - रहे-तामीर[3] भी है

हम अगर आज असीरे - गमे - दौरां[४] हैं तो क्या
इसमे कुछ शाइब'ए - खूबिए - तकदीर[५] भी है

किस्मते - दीद:ए - तर[६] खूने - जिगर जानते हैं
आज़माइश है जहाँ अज़्मते - शब्बीर[७] भी है

सर उठाया है जो बातिल[८] ने हमेशा की तरह
हकपरस्ती मे वही कूवते - तसखीर[९] भी है

हम वह दिल वाले हैं करते है जो ताजीमे-वफा[१०]
दोस्ती जिनके लिए दोस्त की तौकीर[११] भी है

जिसने तोड़े है महब्बत की शरीअत के उसूल
वह गुनहगार भी है काबिले - ताज़ीर[१२] भी है

इस खताकार से कह दो कि अगर वक़्त पड़े
बासुरी कृष्ण की अर्जुन का कड़ा तीर भी है

१. स्वप्न, २ प्रकाश, ३ निर्माण-मार्ग का चिराग, ४. जमाने के गम मे गिरफ्तार, ५. तक़दीर की खूबी की झलक, ६ अश्रु भरी आख का भाग्य, ७. इमाम हुसैन की महानता, ८ झूठ, ९ वशीकरण शक्ति, १० वफा का सम्मान, ११ इज्जत, १२ दड देने योग्य।

नागुज़ीर[1]

(एक हकीक़त पसन्दाना नुक्त ए - निगाह)

एजाज सिद्दीकी

जंग इक जब्र[2] है हम अम्न पसन्दो के लिए
इस हकीकत से कोई है जो खबरदार न हो

कौन ऐसा है सरे - विस्तरे - एहसासो - शऊर[3]
धूप सर पर हो मगर ख्वाव से वेदार न हो

है सरासर तपिशो-सोज[4] की फितरत के खिलाफ
आग सीने मे लगे आख शररवार[5] न हो

पत्थरो को तो वहरहाल कुचलना होगा
क्या करे कोई अगर रास्ता हम्वार न हो

दोस्तो हम नही इस रक्से - जुनू[6] के कायल
जो सरे-वज्म[7] तो हो और सरे - दार[8] न हो

इश्क झूठा है, गजल झूठी है, फन झूठा है
यह अगर वक्त की धड़कन से खबरदार न हो

जंग इक जब्र है हम अम्न पसन्दो के लिए
काट मौजूद है दुश्मन की कमन्दो के लिए

१ अनिवार्य, २. जबरदस्ती, ३ चेतना और अनुभूति की शैया पर, ४ गर्मी और जलन, ५ चिंगारी बरसाने वाली, ६ उन्माद का नृत्य, ७. वज्म में, ८ फासी के तख्ते पर।

फ़र्ज़

क़ैफी आज्मी

ग्रोर फिर कृष्ण ने अर्जुन से कहा
न कोई भाई न बेटा न भतीजा न गुरु
एक ही शक्ल उभरती है हर आईने में
आत्मा मरती नही जिस्म बदल लेती है
धडकन इस सीने की जा छुपती है उस सीने मे

जिस्म लेते हैं जनम जिस्म फना[1] होते हैं
ग्रोर जो इक रोज़ फना होगा वह पैदा होगा
इक कडी टूटती है दूसरी बन जाती है
खत्म यह सिलसिल ए-ज़ीस्त[2] भला क्या होगा

रिश्ते सौ, जज्बे भी सौ, चेहरे भी सौ होते हैं।
फर्ज सौ चेहरो मे शक्ल अपनी ही पहचानता है।
वही महबूब वही दोस्त वही एक अज़ीज़
दिल जिसे इश्क ग्रौर इदराक[3] ग्रमल मानता है

ज़िन्दगी सिर्फ ग्रमल सिर्फ ग्रमल सिर्फ ग्रमल
ग्रौर यह बेदर्द ग्रमल सुलह भी है जग भी है
ग्रम्न की मोहनी तस्वीर मे हैं जितने रग
उन्ही रंगो मे छुपा खून का इक रंग भी है

जंग रहमत है कि लानत, यह सवाल ग्रब न उठा
जंग जब ग्रा ही गयी सर पे तो रहमत होगी
दूर से देख न भडके हुए शोलो का जलाल[4]
इसी दोज़ख के किसी कोने मे जन्नत होगी

१ नष्ट, २ जीवन-क्रम, ३ बुद्धि, ४ प्रताप, तेज।

जख्म खा जख्म लगा जख्म हैं किस गिनती में
फर्ज़ जख्मो को भी चुन लेता है फूलो की तरह
न कोई रंज न राहत न सिले की परवा
पाक हर गर्द से रख दिल को रसूलो की तरह

ख़ौफ़ के रूप कई होते हैं अन्दाज़ कई
प्यार समझा है जिसे ख़ौफ है वह प्यार नही
उगलिया और गडा और पकड और पकड़
आज महबूब का बाज़ू है यह तलवार नही

साथियो दोस्तो हम आज के अर्जुन ही तो हैं

कौन दुश्मन है

सरदार जाफरी

यह टैंक, तोप, यह बम्बार आग बन्दूकें
कहा से लाये हो, किसकी तरफ है रुख इनका
दयारे - वारिसो - इकबाल का यह तोहफा है
जगा के जग के तूफा ज़मीने - नानक से
उठे हो वर्क गिराने कबीर के घर पर

गुलाम तुम भी थे कल तक, गुलाम हम भी थे
नहा के खून मे आई थी फस्ले - आज़ादी
अभी तो सुबह की पहली हवाएं सनकी हैं
अभी शगूफो ने खोली नही है आख अपनी
अभी बहार के लब पर हसी नही आई
न जाने कितने सितारे बुझी सी आखो के
न जाने कितने फसुर्दा हथेलियो के गुलाब
तरस रहे हैं अभी रंगो - रोशनी के लिए

हमारे पास है क्या दर्दे-मुश्तरक के सिवा
मज़ा तो जब था कि मिलकर इलाजे-जा करते

खुद अपने हाथ से तामीरे - गुलसितां करते
हमारे दर्द मे तुम और तुम्हारे दर्द मे हम
शरीक होते तो फिर जश्ने - आज़ादिया करते

मगर तुम्हारी निगाहो का तौर है कुछ और
यह बहके बहके कदम उठ रहे हैं किस जानिब
किधर चले हो यह शमशीर आज़माने को
समझ लिया है जिसे तुमने मुल्क की सरहद
वह सरहदे-दिलो-जा है, हमारा जिस्म है वह
हसी, बलन्द, मकद्दस, जवान, पाकीज़ा
है इसका नाम खयावाने - जन्नते - कश्मीर
है इसका नाम गुलिस्ताने - दिल्ली-ओ-पजाव
हम उसको प्यार से कहते हैं लखनऊ भी कभी

तुम उसको तेग के होठो से छू नही सकते
अदब से आओ कि गालिब की सरज़मी है यह
अदब से आओ कि है मीर का मज़ार यहा
निज़ाम - ओ - काकी - ओ-चिश्ती के आस्ताने हैं
झुका दो तेगो के सर बारगाहे-रहमत मे

हमारे दिल मे रफाकत[1] भी और प्यार भी है
तुम्हारे वास्ते यह रूह बेकरार भी है
अगर्चे कहने को जी चाहता नही लेकिन
जवाबे - अहले - हवस,[2] तेगे-आवदार[3] भी है
उधर बहन है कोई, कोई भाई, कोई अज़ीज़
गुज़श्ता बादापरस्तो[4] की यादगार कोई
रफीके-मुहवस-ओ - ज़िन्दा,[5] रफीके-दार[6] कोई
हमारी तरह से रुसवाए - कूए - यार कोई
लबों पे जिनके तबस्सुम है अहदे-रफ्ता[7] का
नज़र मे ख्वाब हैं बीते हुए ज़माने के

१. दोस्ती, २. लोभियों का जवाब, ३ तेज़ तलवार, ४ पुराने मदिरापायी. ५ जेल के साथी, ६ साथ फासी पर चढने वाले, ७ अतीत ।

दिलो मे नूर चरागे-उमीदे-फर्दा[८] के
वह सब जो गैर नजर आ रहे हैं अपने हैं

उधर भी हल्क़ःए-यारा,[९] हुजूमे-मुश्ताका[१०]
इधर भी चाहने वालो की कुछ कमी ही नही
हज़ारो साल की तारीख है सबूत इसका
खडे हैं सीने पे ज़ख्मो के गुल खिलाये हुए
दयारे-हीर की यादो से दिल जलाये हुए
चिनावो-झेलमो-रावी से लौ लगाये हुए

हमारे बीच मे हाइल हैं आग के दरिया
तुम्हारे और हमारे लहू के सागर हैं
बहुत बलन्द सियह नफरतो की दीवारें
हम उनको एक नज़र मे गिरा भी सकते हैं
तमाम जुल्म की बातें भुला भी सकते हैं
तुम्हें फिर अपने गले से लगा भी सकते हैं
मगर यह शर्त है तेगो को तोडना होगा
लहू भरा हुआ दामन निचोडना होगा
फिर इसके बाद न तुम गैर हो न गैर हैं हम

तुम आओ गुलशने-लाहौर से चमन बरदोश[११]
हम आये सुब्हे-बनारस की रौशनी लेकर
हिमालिया की हवाओ की ताजगी लेकर
और उसके बाद यह पूछें कि कौन दुश्मन है

८ कल की आशा के दिये का प्रकाश, ९ दोस्तो का हल्का १० जिज्ञासुओ का जमघट,
११ उपवन कांधे पर उठाये हुए।

सुब्हे-फ़र्दा[1]

सरदार जाफरी

(१)

इसी सरहद पे कल डूबा था सूरज होके दो टुकड़े
इसी सरहद पे कल ज़ख्मी हुई थी सुब्हे-आज़ादी[2]
यह सरहद ख़ून की, अश्को की, आहो की, शरारो की
जहा बोई थी नफरत और तलवारें उगाई थी

यहा महबूब आखो के सितारे तिलमिलाये थे
यहा माशूक चेहरे आसुओ से झिलमिलाये थे
यहाँ बेटो से मा, प्यारी बहन भाई से बिछडी थी

यह सरहद जो लहू पीती है और शोले[3] उगलती है
हमारी खाक के सीने पे नागन बन के चलती है
सजा कर जग के हथियार मैंदा मे निकलती है
मैं इस सरहद पे कब से मुन्तज़िर हू सुब्हे-फर्दा का

(२)

यह सरहद फूल की, खुशबू की, रगो की, बहारो की
धनक[4] की तरह हसती, नदियो की तरह बल खाती
वतन के आरिज़ो[5] पर ज़ुल्फ के मानिन्द लहराती
महकती, जगमगाती, इक दुल्हन की माग की सूरत
कि जो बालो को दो हिस्सो मे तो तक्सीम करती है
मगर सिंदूर की तलवार से, सन्दल की उगली से

यह सरहद दिलवरो की, आशिको की, बेकरारो की
यह सरहद दोस्तो की, भाइयो की, गमगुसारो की

१. आगामी कल की सुवह, २ आज़ादी की सुवह, ३ ज्वाला, ४ इद्र-धनुप, ५ कपोल।

सहर को आये खुर्शीदे-दरख्शा[६] पास्वा बनकर
निगहबानी हो शब को आस्मा के चाद तारो की
ज़मी पामाल[७] हो जाये भरे खेतो की युरिश[८] से
सिपाहे[९] हमलाआवर हो दरख्तो की कतारो की
खुदा महफूज़[१०] रक्खे गैरो की निगाहो से
पड़ें नजरें न इस पर खू के ताजिर[११] ताजदारो की
कुचल दें इसको फौलादी कदम भारी मशीनो के
करे यलगार[१२] इस पर ज़र्बे-कारी[१३] दस्तकारो की
उड़ें चिगारियो के फूल पत्थर के कलेजे से
झुके तेगो[१४] की महरावो मे गर्दन कोहसारो[१५] की
लबो की प्यास ढाले अपने साकी अपने पैमाने
चमक उठें मसर्रत से निगाहें सोगवारो[१६] की
महब्बत हुक्मरा[१७] हो, हुस्न कातिल, दिल मसीहा[१८] हो
चमन मे आग बरसे शोला पैकर गुल अज़ारो के
वह दिन आये कि आसू होके नफरत दिल से बह जाये
वह दिन आये यह सरहद बोस ए-लब बनके रह जाये

(३)

यह सरहद मनचलो की, दिलजलो की, जानिसारो की
यह सरहद सरज़मीने-दिल के बाके शहसवारो की
यह सरहद कजकुलाहो[१९] की, यह सरहद कजअदाओ[२०] की
यह सरहद गुलशने - लाहौरो - दिल्ली की हवाओ की
यह सरहद अम्नो-आज़ादी के दिल अफरोज़ ख्वाबो की
यह सरहद डूबते तारो, उभरते आफ़ताबो की
यह सरहद खू मे लिथड़े प्यार के ज़ख्मी गुलाबो की

मैं इस सरहद पे कब से मुन्तज़िर हू सुब्हे-फर्दा का

६ प्रकाशमान सूर्य, ७ नष्ट, ८ हमला, ९ फौजें, १० सुरक्षित, ११ व्यापारी, १२ हमला, १३ प्रबल चोट, १४ कुदाल, १५ पहाड़, १६ दुखी, १७ शासक, १८ चिकित्सक, १९ टोपी, २० तिरछी अदाएं।

ताशक़न्द की शाम

सरदार जाफरी

मनाओ जश्ने - महब्बत कि खू की बू न रही
बरस के खुल गये बारूद के सियह बादल
बुझी-बुझी-सी है जगो की आखरी बिजली
महक रही है गुलाबो से ताशकन्द की शाम

जगाओ गेसुए - जाना[1] की अम्बरी[2] रातें
जलाओ साइदे - सीमी[3] की शम्ए - काफूरी
तवील[4] बोसो के गुलरग जाम छलकाओ

यह सुर्ख जाम है खूबाने-ताशकन्द[5] के नाम
यह सब्ज़ जाम है लाहौर के हसीनो का
सफेद जाम है दिल्ली के दिलबरो के लिए
घुला है जिसमे महब्बत के आफ्ताब का रग

खिली हुई है उफुक पर शफक[6] तबस्सुम की
नसीमे-शौक चली मेहरबा तकल्लुम[7] की
लबो की शोला फशानी है शबनम अफशानी
इसी मे सुब्हे-तमन्ना नहा के निकलेगी

किसी की जुल्फ न अब शामे-गम मे बिखरेगी
जवान खौफ[8] की वादी से अब न गुज़रेंगे
जियाले मौत के साहिल पे अब न उतरेंगे
भरी न जायेगी अब खाको-खू से माग कभी
मिलेगी मा को न मर्गे-पिसर[9] की "खुशखबरी"
कोई न देगा यतीमो को अब "मुबारकबाद"

१ प्रेमिका की लटें, २ सुगधित, ३, चादी की कलाई, ४. लम्बी, ५ ताशकन्द की सुदरिया, ६ लालिमा, ७ बातचीत, ८ भय, ९ पुत्र की मृत्यु ।

खिलेंगे फूल वहुत सरहदे - तमन्ना पर
ख़बर न होगी यह नर्गिस है किसकी आखो की
यह गुल है किसकी जवी,[१०] किसका लव है यह लाला
यह शाख किसके जवा वाजुग्रो की ग्रगड़ाई

वस इतना होगा, यह धरती है शहसवारो की
जहाने - हुस्न के गुमनाम ताजदारो की
यह सरजमी है महब्वत के खास्तगारो[११] की
जो गुल पे मरते थे शवनम से प्यार करते थे

खुदा करे यह शवनम यू ही वरसती रहे
ज़मी हमेशा लहू के लिए तरसती रहे

रूहे-ताशक़न्द

रिफग्रत सरोश

जाम छलकाग्रो वनामे - ताशकन्द
फिर सवा लाई पयामे - ताशकन्द

ग्रय मिरे हुस्ने-तख़ैयुल[१] झूम जा
ग्रय मिरी फिक्रे-रसा[२] वरवत उठा

ग्रहले-दिल को राहे-उलफत मिल गयी
मशग्रले - ग्रम्नो - सदाकत[३] मिल गयी

शल हुए फिर दस्तो-वाजू जग के
ताज़ादम हैं ज़िन्दगी के वलवले

१०. ललाट, ११. ग्रभिलाषी ।

रूहे-ताशक़न्द

१. कल्पना, २. दूर तक जाने वाली फिक्र, ३ शान्ति ग्रौर सच्चाई का मशाल ।

अम्न का चेहरा हुआ फिर ताबनाक[४]
फिर महाज़े - जंग[५] पर उडती है खाक

फिर हुए खामोश तोपो के दहन
घुट गयी है फिर सदाए - अहरमन[६]

जगबन्दी अम्न की तज्दीद[७] है
एक ज़र्री[८] बाव की तम्हीद[९] है

इक नया परचम खुला है अम्न का
इक नया नग्मा सुना है अम्न का

अम्न हुस्ने - एशिया के वास्ते
अम्न इसा की बका के वास्ते

अम्न चश्मे - हक निगर की रौशनी
अम्न हुस्ने - शेर की ताबिन्दगी[१०]

अम्न रक्स-ओ-नग्मा-ओ-चंग-ओ-रबाब
अम्न 'मीर'-ओ-'गालिब'-ओ-'खुसरो' का ख्वाब

वीर-ओ-गौतम की नवाए-दिल है अम्न
ज़िन्दगी का हाल-ओ-मुस्तक्बिल है अम्न

नानक-ओ-चिश्ती के दिल की है सदा
अम्न है गाधी का दरसे-हकनुमा[११]

अम्न ही पैगाम है इकबाल का
अम्न है नग्मा जवाहरलाल का

हिन्दो - पाकिस्तान का दिल एक है
कारवा दो और मंज़िल एक है

४ रोशन, ५ युद्ध का मोर्चा, ६. शैतान की आवाज, ७. नवीनता, ८. सुनहरा, ९ भूमिका, १० चमक, ११ सत्य का पाठ।

एक ही चश्मे[12] की दो नहरें हैं यह
एक ही सागर की दो लहरें है यह

अम्ने-आलम के निगहवानो ! उठो
आमरियत[13] की कलाई मोड दो

जाग उठो अय अहले-फन ! अहले-कलम
इक नयी तारीख करनी है रकम[14]

मिल्लतो-मज़हव की तफरीकें[15] मिटाओ
आदमियत को नये मर्कज़ पे लाओ

जाम छलकाओ वनामे - ताशकन्द
फिर सवा लाई पयामे-ताशकन्द

अहबावे-पाकिस्तान के नाम

जगन्नाथ आजाद

एक नया माहौल, इक ताज़ा समा पैदा करें
दोस्तो ! आओ महव्वत की ज़वा पैदा करें

हो सके तो इक वहारे-गुलसिता पैदा करें
अपने हाथो से न अव दौरे-खिज़ा पैदा करें

ताव के वेगानगी[1] एहसास परतारी रहे
एक माहौले-वफाए-दोस्ता[2] पैदा करें

अय रफीको ! जग के शोले तो ठडे हो चुके
आओ अव इनकी जगह इक गुलसिता पैदा करें

१२ स्रोत, १३ निरकुशता, १४. कलमवद्ध, १५ भेदभाव।

अहवावे-पाकिस्तान के नाम

१ परायापन, २ दोस्तों की वफा का वातावरण।

दोस्तो ! जिस पर हमे भी नाज़ था तुमको भी फख्र
फिर वही सरमाय-ए-दर्दे निहा[3] पैदा करें

बू कभी बारूद की जिसके करीब आने न पाये
एक ऐसा आलमे-अम्नो-अमा[4] पैदा करें

कल लिखी थी हमने औरो के लहू से दास्ता
अपने खूने-दिल से अब इक दास्ता पैदा करें

कह रहा है हमसे यह मुस्तक्बिले-बर्रे-सगीर[5]
हिन्दो-पाक इक इत्तिहादे-जिस्मो-जा[6] पैदा करें

जज्ब ए-नफरत अगर ।दल मे निहा[7] हो जायेगा
एक दिन आयेगा दोनो का ज़ियां[8] हो जायेगा

क्या कहू मैं अब जो हाले-गुलसिता हो जायेगा
शोल ए-बेबाक अगर खस[9] मे रवा हो जायेगा

हस रही है आज इक दुनिया हमारे हाल पर
दोस्तो ! इस तरह तो दिल खूचका[10] हो जायेगा

हम अगर इक दूसरे पर मेहरवां हो जायें आज
हम पे गोया इक ज़माना मेहरवा हो जायेगा

जाद ए-महरो-वफा[11] पर हम न गर मिलकर चले
जो है जर्रा राह का सगे-गरा हो जायेगा

इक हमारी और तुम्हारी दोस्ती की देर है
जो मुखालिफ आज है कल हमज़बा हो जायेगा

फिर गज़ल को लौट आयेगी मिरी फिक्रे-जमील[12]
और ही मेरा कुछ अन्दाज़े-बयां हो जायेगा

और अगर यारो ! ज़रा भी हमने इसमे देर की
हर गुले-तर[13] एक चश्मे-खूंफशा[14] हो जायेगा

३ छुपे हुए दर्द की दौलत, ४ शान्ति का ससार, ५ महाद्वीप का भविष्य, ६ शरीर और आत्मा की एकता, ७ छुपा हुआ, ८ नुकसान, ९ सूखी घास, १०. खून मे डूबा हुआ, ११ मेहरबानी और वफा का मार्ग, १२ सुन्दर चिंतन, १३ ताजा फूल, १४ खून टपकाती हुई आख।

मुझको हैरत है तुम्हे इसका ज़रा भी गम नही
जिस कदर कद्रे[15] हमारी थी परेशा हो गयी

कुछ खबर भी है कि इस आतिश नवाई[16] के तुफैल
"खाक मे क्या सूरतें होंगी कि पिन्हा हो गयी"

याद भी है कुछ वह रगारंग बज्म आराइयां
"आज जो नक्शो-निगारे-ताके-निसिया[17] हो गयी"

दोस्तो ! तुमने दिया जब साथ इस्तिब्दाद[18] का
गालिब-ओ-इकबाल की रूहें परेशा हो गयी

परचमे-इख्लास[19] गर्द[20] से ज़मी पर गिर गया
अय कई बरसो की मेहनत ! तुझ पे पानी फिर गया

मेरी नज़रो से जो मुस्तक्बिल[21] को देखो दोस्तो
वह अंधेरा जो मुसल्लत[22] था हवा होने को है

मुद्दतो जो सीन ए-माज़ी[23] मे सरबस्ता[24] रहा
अब वह मुस्तक्बिल के हाथो राज़ वा[25] होने को है

कह रही हैं मुझसे आज अय दोस्तो तस्वीरे-हाल
आदमी पर आदमी का हक अदा होने को है

नाल ए-सैयाद ही इस दौर की मज़िल नही
खूने-गुलची से कली रगी कबा होने को है

मुद्दतो जो नेहरू-ओ-लेनिन के होंटो पर रही
आज दुनिया उस नवा से आशना होने को है

"आख जो कुछ देखती है लब पे आ सकता नही"
क्या कहू मैं आज मग्रिब क्या से क्या होने को है

सीनाचाको की जुदाई का ज़माना जा चुका
"बज़्मे-गुल की हमनफस" बादे-सबा होने को है

सुबह की ज़ौ[26] से दमक उठने को है बर्रे-सगीर
और ज़ुल्मत रात की सीमाब पा[27] होने को है

१५ मूल्य, १६ अग्निस्वर, १७ विस्मृति के ताक के बेलबूटे, १८. जुल्म, १९ दोस्ती का झंडा, २०. आकाश, २१ भविष्य, २२ छुपा हुआ, २३ भूतकाल का गर्भ, २४ छुपा हुआ, २५ खुलना, २६ चमक, प्रकाश, २७ पारे की तरह ।

बंगला देश

कैफी आज़मी

मैं कोई मुल्क नही हू कि जला दोगे मुझे
कोई दीवार नही हू कि गिरा दोगे मुझे
कोई सरहद भी नही हू कि मिटा दोगे मुझे
यह जो दुनिया का पुराना नक़्शा
मेज पर तुमने बिछा रक्खा है
इसमे कावाक[1] लकीरो के सिवा कुछ नही
तुम मुझे इसमे कहा ढूँढते हो
मैं इक अर्मान हूँ दीवानो का
सख़्तजा ख्वाब हू कुचले हुए इसानो का
पीने लगता है जब इसान का इसान लहू
लूट जब हद से सिवा होती है
ज़ुल्म जब हद से गुज़र जाता है
मैं अचानक किसी कोने मे नज़र आता हू
किसी सीने से उभर आता हू
आज से पहले भी तुमने मुझे देखा होगा
कभी मश्रिक[2] मे कभी मग्रिब[3] मे
कभी शहरो मे कभी गावो मे
कभी बस्ती मे कभी जगल मे
मेरी तारीख ही तारीख है
जुगराफिया[4] कोई भी नही
और तारीख भी ऐसी
जो पढाई तो नही जा सकती
लोग छुप छुप के पढा करते है
कि मैं गालिब[5] कभी मगलूब[6] हुआ
कातिलो को कभी सूली पे चढाया मैंने

१. टेढो, वक्र, २. पूर्व, ३ पश्चिम, ४. भूगोल, ५ छाया हुआ, बलवान, ६ पराजित ।

श्रौर कभी श्राप ही मस्लूब[७] हुश्रा
फर्क इतना है कि कातिल मिरे मर जाते हैं
मैं न मरता हू
न मर सकता हूं
कितने नादान हो तुम
तुमने खैरात मे पाये हैं जो टैंक
उनको लेकर मिरे सीने पे चढे श्राते हो
रात-दिन करते हो नापाम बमो की बारिश
देखो थक जाश्रोगे
कौनसे हाथ मे पहनाश्रोगे जजीर बताश्रो
कि मिरे हाथ तो हैं सात करोड
कौनसा सर मिरी गर्दन से जुदा कर दोगे
मेरी गर्दन पे है सर सात करोड

फ़त्हे-बंगला

जां निसार श्रख्तर

किसी कोने मे भी दुनिया के श्रगर जुल्म हुश्रा
हमने श्रावाज़ उठाई कि यह जुल्म बन्द करो
श्रपनी नापाक सियासत का फसू[१] बन्द करो
यह तशद्दुद,[२] यह मज़ालिम, यह जुनू[३] बन्द करो

श्रर्जे-बगला[४] तुझे मिटते हुए देखा न गया
श्रपनी रग रग मे हमीयत[५] का लहू जाग उठा
फर्ज की श्रांच से गैरत का लहू जाग उठा

तूकि टैगोर की, नजरुल की जन्मभूमि है
कल भी थी श्राज भी है, तुझसे श्रकीदत[६] हमको

७ सलीब पर चढ़ा हुश्रा।

फत्हे-बगला
१ जादू, २ हिंसा, ३ उन्माद, पागलपन, ४ बगाल की धरती, ५. खुद्दारी, ६ श्रद्धा।

तेरे गीतो से महब्बत का चलन सीखा है
तेरी नज्मो ने सिखाई है बगावत हमको

तुझसे बेगाना[७] जो रहते तो रहते कैसे
अपनी सरहद से मिली है तिरी सरहद ऐसे
बाहे बाहो मे महब्बत से पडी हो जैसे

हमने सीने से कलेजे से लगाया बढकर
तेरे रौंदे हुए कुचले हुए इसानो को
हम उठे तेरे लिए तेरी महब्बत के लिए
हमने सोचा भी नही आग के तूफानो को

तेरा दुख बाट लिया, दर्द तिरा बाट लिया
तुझ से हर शर्त रफाकत[८] की निभा दी हमने
सिर्फ अल्फाज़[९] नही, अपना लहू नज्र किया
आदमियत[१०] ! तिरी तौकीर[११] बढा दी हमने
किस तरह साथ दिया जाता है मजलूमो[१२] का
इक नयी राह ज़माने को दिखा दी हमने

हम लडे हैं तिरे शाने से मिलाकर शाना[१३]
हौसले तेरे जवानो के अटल देखे हैं
जब भी चमके हैं तिरे हाथ सियह रातो मे
हमने जलते हुए बारूद महल देखे हैं
जिस जगह खून गिरा है तिरे नौख़ेजो[१४] का
हमने उगते हुए मट्टी से कंवल देखे हैं

चप्पा चप्पा तिरी धरती का गवाही देगा
दोनो देसो के जवानो का लहू साथ बहा
खून और खून मे तफरीक[१५] भी क्यो हो, लेकिन
आदमी एक रहा, उसका लहू एक रहा

कल छिडा था जो फसाना तिरी आजादी का
सिर्फ इतना नही उस बात की तक्मील है तू

७ अनजान, गैर, ८. दोस्ती, ९ शब्द, १० मानवता ११ इज्जत, १२ पीडित, १३ कंधा,
१४ नये पौधे, १५ भेदभाव, वैमनस्य ।

काफले खोज मे निकले है जो आज़ादी की
उनके रस्ते मे नया सगे - सरे - मील है तू

अर्ज़े - वगला ! तिरी नौखेज़ वहारो को सलाम
गुनगुनाते हुए पदमा के किनारो को सलाम
तेरी खुशियो से भरी राहगुज़ारो को सलाम

आज हमको तिरी धरती से चले जाना है
तेरे फूलो तिरी कलियो को दुआएं देकर
तेरी महकी हुई जुल्फो की वलाएं लेकर

तू हसी है, तिरी महकी हुई जुल्फें भी हसी
तेरे अवरू भी हसी, तेरी आखें भी हसी

अर्ज़े - वगला तुझे कल और हसी वनना है
कितने तारो से सजेंगे तेरे गेसू जाने
कल तिरे वाग मे झूमेगी वहारें क्या क्या
हम तलक आये न आये तिरी खुशवू जाने
हम तुझे याद रहे या न रहे, तू जाने

बंगला देश

मैकश अकवरावादी

क्या किया खून शहीदाने - वतन का पूछो
फस्ले - गुल वाग मे आई हुई लगती है मुझे

लड़खडाती हुई आती है नसीमे - सहरी[1]
चोट सीने पे यह खाई हुई लगती है मुझे

रुखे-खुर्शीद[2] का मश्रिक मे यह क्या हाल हुआ
हर तरफ आग लगाई हुई लगती है मुझे

१ प्रात-समीर, २ सूर्य का चेहरा।

जुल्फे - बंगाल परेशा, रुखे - नमकी[3] जख्मी
बूए - गुल खूं मे नहाई हुई लगती है मुझे

यह घटा आग जो बरसाती है गुलशन पे मगर
बगला देश से आई हुई लगती है मुझे

जान दी जिसने वतन के लिए मुजरिम[4] है वही
यह भी कातिल की उडाई हुई लगती है मुझे

अब कोई दिन मे हुआ जाता है तर्कश[5] खाली
मौत कातिल की भी आई हुई लगती है मुझे

जाने वाले हैं जो अब चांद से भी दूर परे
यह जमी उनकी सताई हुई लगती है मुझे

हाल क्या हो गया यह मेरे वतन का 'मैकश'
गम की एक छावनी छाई हुई लगती है मुझे

बंगला देश की कहानी
बंगला देश की ज़बानी

ज़िया सरहदी

मैं शहरे - अहले - वफा,[1] रगो - नूर[2] का चश्मा[3]
तमाम हुस्ने - मुजस्सम,[4] तमाम शौको - जुनूं[5]
है मेरा इश्क नुमाया दिलो की धडकन मे
जहा मे आम है मेरी निगाह का अफसूं[6]

३ नमकीन चेहरा, ४ अपराधी, ५ तूण (जिसमे तीर रखे जाते हैं)

बंगला देश की कहानी
बगला देश की ज़बानी

१. वफादार लोगो का शहर, २ रग और प्रकाश, ३ स्रोत, ४ साकार सौंदर्य, ५. उन्माद और अभिलाषा, ६. जादू, ।

बहार मुझसे खफा है हयात मुझसे खफा
मुझे तो मजमए-कातिल[७] ने आके घेरा है

है शहर शहर तबाही की धूल मे गलता[८]
गली गली मे जहालत का आज फेरा है

हयात मौत की बाहो मे कसमसाती है
कि मेरी मुन्हो पे छाया हुआ अधेरा है

लहू की फस्ल उगाई गयी मिरे दिल पर
मिरे वजूद को ज़ख्मो ने अब विखेरा है

लुटे लुटे से हैं सब रास्ते यहा मेरे
जो राहबर है वही अस्ल मे लुटेरा है

यह किमने अम्नो - मुकू ं कर दिया तहो-वाला[९]
है आज खून मे लरजा खलीजे - बगाला[१०]

उगे हुए हैं बहुत आज मेरे चेहरे पर
हज़ारो ज़ख्म, बयाबा मे बालियो की तरह

तडप रहे हैं कही आज अधखिले गुचे
खिज़ा की गोद मे मजरूह[११] पछियो की तरह

ज़मी पे ढेर हैं अब इल्मो - फन[१२] के सब मीनार
हयात चीख रही है तबाहियो[१३] की तरह

सुलग रही हैं कई बस्तियां उजालो की
सियाह रात मे शैतानी मशअलो की तरह

हरेक राह पे हैं खंजरो की दीवारें
मुहीब[१४] सायों की सूरत, जुनूनियो[१५] की तरह

बदल न जाये कही अब हयात का अन्दाज़
यह खामुशी ही न हो इकिलाब का आगाज़[१६]

७ कातिलों का समूह, ८ डूबा हुआ, ९ नष्ट, १०. बगाल की खाडी, ११ घायल, १२ ज्ञान और कला, १३ बरबादिया, १४ भयानक, १५ पागल, १६ प्रारम ।

लहू की माग घटा दी है आज इसा ने
मताए - शीश ए - दिल[17] और हो गयी अर्जा[18]

जमाना वक्त के कातिल से आज कहता है
अगर हो प्यास तो पी ले लहू का सैले - रवा[19]

मगर लहू की यही तिशनगी[20] बता देगी
जबीने - वक्त[21] पे तारीख इक बना देगी

इसी ज़मी से इसी खाक से उभरते चलो
बढो दिलेरो ! अधेरो से जग करते चलो

सिसकती रात का ढाचा पिघलने वाला है
सहर करीब है सूरज निकलने वाला है

रौशनी

(शिमला कान्फ्रेस के मौके पर)

यूसुफ नाजिम

ज़िह्न[1] के ताक मे खुशियो के दिये जल उठे
दिक[2] के वीराने मे सगीत की लहरें उभरी
आरजूओ के हसी ताजमहल बनने लगे
हसरतें दौड के आयी कि बलाए ले लें
अम्न का जब भी कही ज़िक्र हुआ बात चली

जब से इसान ने धरती पे कदम रक्खा है
कोई दिन ऐसा न आया कि यहा कत्ल न हो
कोई साल ऐसा न गुज़रा कि यहाँ जग न हो

१७ दिल के शीशे की दौलत, १८ सस्ती, १९ बहता हुआ सैलाब, २० प्यास, २१ समय का ललाट ।

रौशनी

१. बुद्धि, २ क्षय ।

अपने इस मतिको - मज्हब[3] के अजायबघर में
✓ लोग आते रहे इसान मगर कम आये

✓ इल्मो - तहज़ीबो - तमद्दुन[4] की नुमाइशगह मे
कितने चगेज़ लिए अम्न का परचम आये

अपनी दुनिया मे यही खेल हुआ है बरसो
✓ कितने कातिल यहा बा दीद ए - पुरनम[5] आये

ज़िन्दगी सदियो से ज़ख्मो के सियहखानो[6] में
सर पटकती है कोई लेके तो मरहम आये

ज़ीस्त महराओ मे हर सम्त पुकार आई है
ज़ुल्मते - शब[7] मे कोई इसका भी हमदम आये

आग के शोले तो दुनिया मे बहुत पहुँचे हैं
✓ अब तमन्ना है कोई तोहफ ए - शबनम[8] आये

ज़िहन के ताक मे खुशियो के दिये जल उठे
अम्न का जब भी कही ज़िक्र हुआ बात चली

शिमला समझौता

जमील ताबा

हम वतन के हैं हकीकत मे हमारा है वतन
सच तो यह है कि हमे जान से प्यारा है वतन
हमने मिलजुल के महब्बत से सवारा है वतन

क़ौमी यक जहती-ओ-वहदत[1] की कसम खाते हैं

३ धर्म, ४. ज्ञान, सभ्यता और सस्कृति, ५. अश्रुभरी आख, ६. अधेरे घर, ७ रात का अधकार, ८ ओस की भेंट।

शिमला समझौता

१. एकता।

अय वतन हम तिरी अज्मत[२] की कसम खाते हैं
सरनिगू हम तिरे परचम को न होने देंगे

मुख्तलिफ साज भी है और हमआवाज भी हैं
वक्त पड जाये तो हम मार का अन्दाज भी हैं
जंगजू भी हैं, मुजाहिद भी है, जावाज़ भी हैं

जज्ब.ए - शौके - शहादत की कसम खाते हैं
अय वतन हम तिरी अज्मत की कसम खाते हैं
सरनिगू हम तिरे परचम को न होने देंगे

अम्न का दर्स जमाने को दिया है हमने
चाके - हरदिल को महब्बत से सिया है हमने
ऐसी बुनियाद पे समझौता किया है हमने

जज्ब.ए - ईसारो - मुरव्वत[३] की कसम खाते हैं
अय वतन हम तिरी अज्मत की कसम खाते हैं
सरनिगू हम तिरे परचम को न होने देंगे

दोस्त के दोस्त हैं अगियार[४] के अगियार है हम
जो महब्बत से मिले उसके परस्तार है हम
अम्ने - मुहकम[५] के जमाने मे तलबगार हैं हम

अपने पैगामे - महब्बत की कसम खाते है
अय वतन हम तिरी अज़्मत की कसम खाते हैं
सरनिगू हम तिरे परचम को न होने देंगे

अय वतन तेरी तरफ जो भी उठायेगा नज़र
सरज़मी पर तिरी रक्खेगा कदम जो वढकर
हम कलम कर देंगे उस दुश्मने-बदवख्त[६] का सर

हम जवा मर्द शुजाअत[७] की कसम खाते हैं
अय वतन हम तिरी अज्मत की कसम खाते है
सरनिगू हम तिरे परचम को न होने देंगे

२ महानता ३. मुरव्वत और त्याग का जज्वा, ४ दुश्मन, ५ स्थायी शान्ति, ६ अभागा दुश्मन, ७ बहादुरी।

आज़ादी की पच्चीसवीं सालगिरह

(खुशी का साल, सोच के लम्हे)

सागर निज़ामी

मुबारक मेरे दर्दे-नातमामी[1] तुझे यह जश्ने-सीमी-ओ-शहाना[2]
कि नाले दहल रहे हैं ज़मज़मो मे है आहे-सुब्हगाही[3] इक तराना

मुबारक मुब्हे-सीमी का तरन्नुम[4] मुबारक जश्ने-इशरत[5] का तराना
कि हर साज़े-शिकस्ता[6] बन गया है नये दिलदोज नग्मो का खजाना

कभी जिस तरह अपने खू की जमना बहाई थी शहीदाने-वतन ने
बहा दे तू भी साकी अजुमन मे शराबे-अहमरीं[7] के सुर्ख दरिया

लुटा दी जिस तरह अपनी जवानी चमन पर अन्दलीबाने-चमन[8] ने
लुटा दे तू भी अपने मस्त नग्मे मेरे मुतरिब हो तेरा बोलबाला

अंधेरो की चटानो को हटाकर नये खुर्शीद को हमने उभारा
अंधेरे फिर बढ़े तो हम पलट कर उलट देंगे अंधेरो पर उजाला

दिले-सैलाब[9] से उभरे हैं हम तो किनारा क्या हमे देगा सहारा
हैं वह पर्वरदः-ए-तूफा[10] कि हम तो भवर मे ढूंढ लेते हैं किनारा

तलातुम[11] से हुई है अपनी कुश्ती भवर को तोडकर निकली है कश्ती
भवर ने अब अगर गुस्ताखिया[12] की तो फिर कर देंगे इसको पारापारा[13]

चरण धरती के अपनी हमने पूजे सरो के फूल राहो मे बिछाये
उदासी जब भी इसके रुख पे छाई दिले-पुरखू[14] का आईना दिखाया

१ मधुरा दर्द, २ रजत और महान जश्न, ३ सुबह के वक्त का आर्तनाद, ४ स्वर-माधुर्य, ५ ऐश्वर्य का समारोह, ६ टूटा हुआ साज़, ७ लाल रंग की शराब, ८ चमन के बुलबुल, ९ सैलाब का दिल, १० तूफान मे पले हुए, ११ जोश, १२ उद्दण्डता, १३. टुकडे-टुकडे, १४ खून मे डूबा हुआ दिल।

हज़ारो लाला-ओ-गुल का लहू किया है गल्ता इसमे बापू का लहू भी
हुई है खून रुहे-बागबा भी तो है अपना चमन कुछ मुस्कुराया

अबद[१५] की सरहदो से भी उधर है शहीदाने - वफा का कस्रे आली[१६]
नही गजे-शहीदा[१७] अस्ल मे है नये काखे-अजल[१८] का आस्ताना

कहा है ताजो - तख्तो - तब्लो-परचम दफो-नक्कारा-ओ - चग चगाना
नसीमे-सुब्ह[१९] ने फूक डाला बिल आखिर हर निशाने - ज़ालिमाना

दिया उनको तगैयुर[२०] की तडप ने सबक तिश्नालबी-ओ-बेबसी[२१] का
कभी थे जिनके दस्ते-नाजनी[२२] मे सुबू-ओ - सागरो - चगो-चुगाना[२३]

नही यह अहदे-अफ्सू-ओ-फमाना,[२४] न उगले हको-बातिल[२५] का जमाना
जिसे कहती है दुनिया हको-बातिल,वह है सदियो के अफसानो का मलबा

नये खुर्शीद की हर इक किरन है मचलती सुब्ह का रगी तराना
तराने की हर इक मौजे-तरब मे तडपते है नये नग्माते - फर्दा[२६]

नही बुलबुल तरन्नुम ही तरन्नुम सबा मे है तमाजत[२७] का तलातुम
हर इक कोयल के दिल मे मोजिजन है नये असरार के शोलो का दरिया

चमन के बागबा कम जानते हैं मिज़ाजे - फस्ले-गुल हम जानते है
कि हर पत्ते की रूहे-शबनमी मे है पोशीदा शरारो का खज़ाना

मुसाफिर के लिए इक गाम चलना खिरामे-सुब्ह[२८] है अज्मे-सफ़र[२९] का
कि मजिल अस्ल मे मजिल नही है फकत मजिल का है इक इस्तिआरा[३०]

यह साहिल का सुकू तो इक फुसू[३१] है सुकू पे अपनी मदहोशी जुनू[३२] है
कि है अजान तुफानो का मरूज़न[३३] सफ़र मे नर्म रफ्तारिए-दरिया[३४]

जो दलदल मे नही दिल मे खिला है मुअत्तर[३५]और खुनक[३६]मैं वह कवल हू
महक मेरी कमन्दे-हर जमा है कहा जायेगे बचकर हालो-फर्दा[३७]

१५ अनतकाल, १६ भव्य महल, १७ शहीदो का खजाना, १८ मौत के महल की चौखट, १९ प्रात-समीर, २० परिवर्तन, २१ बेबसी और प्यास का पाठ, २२ सुदरियो के हाथ, २३ सुराही, प्याला और साज, २४ टोना-टोटका और कहानिया, २५ सच और झूठ, २६ कल के गीत, २७ गर्मी, २८ सुबह की मद गति २९ यात्रा का सकल्प ३० रूपक, ३१ जादू, ३२ पागलपन, ३३ केन्द्र, ३४ दरिया की नर्म गति, ३५. सुगधित, ३६ ठडा, ३७ आज और कल ।

वही तेगो-तफग और खू के दरिया वही सहरा वही तहज़ीबे-सहरा
उन्हे कलिया जलाने का जुनू है हमे गुचे खिलाने की तमन्ना

मिरे फ़िक्रो-नजर पे क्यो नही है जनाबे - मोहतसिब[३८] की हुक्मरानी
कि है लौहो-कलम पे उनका कब्जा उन्ही का जामे-जम पर है इजारा[३९]

तलातुम[४०] की लताफत उसने खो दी खुद अपने हाथ से कश्ती डुबो दी
तलातुम से लरज़ के जिस किसी ने मुनाफिक[४१] नाखुदाओ को पुकारा

उसे हक है न जर्फे-बादया[४२] पर न कश्ती पर न बहरे-बेकरा[४३] पर
खुदी को अपनी तूफा मे डुबोकर खुदा को भी कभी जिसने पुकारा

सितारे मे चमक उस वक्त तक है कि गो पर्वर जमीने-दम जब तलक है
अगर पर्वर जमीन कोताहिया की उसी दिन डूब जायेगा सितारा

उतरने दो उफक की सीढियो से नयी किरनो के ताजा काफले को
अभी तो मुबहदम डाली है हमने फजा पर इक निगाहे - ताइराना

अभी वह शोखो-ओ-मस्ती कहा है, मिरे कमसिन[४४] बुताने सादारू मे
कि खुद जहहाद[४५] की आखें पुकारें कहा है वह हुजूमे - काफिराना

किया खूने-जिगर से गर चरागा ता हर ज़र्रा बनेगा माहपारा
अबद तक जगमगाता ही रहेगा मेरी धरती की अज्मत का तारा

सुरूरे-बाद ए - हुब्बे-वतन[४६] से नही बढकर नशाते - जामो - 'सागर'
अगर मदहोशियो ने राह रोकी उलट देंगे बिसाते - जामो - मीना

(१६ अगस्त सन् १९७२)

३८ धर्म-उपदेशक, ३९ अधिकार, ४० तूफान, ४१ कपटी, मक्कार, ४२. बादशान की सहन-शक्ति, ४३ असीम समुद्र, ४४. कम उम्र, ४५ ज़ाहिद का बहुवचन, ४६. देशभक्ति की शराब का नशा।

जश्ने-सीमीं पर

जां निसार अख्तर

उफके-वक्त से फूटी हैं शुआए[1] क्या क्या
रौशनी है कि सरे-हद्दे-नजर आ पहुची

हमने जिस मौजे-गुले-तर की कसम खाई थी
आज नजदीक वह मौजे-गुले-तर आ पहुची

कहकशा[2] बनके जो ख्वाबो मे झलकती थी कभी
जेरे-पा[3] आज वही राहगुजर आ पहुची

ऐसा लगता है कि बनवास के दिन बीत गये
राम के लौट के आने की खबर आ पहुची

आओ माथे के पसीने से तराशें मोती
जुल्फे-लैलाए-वतन ता ब कमर आ पहुंची

और कुछ देर की है बात कि एलान करें
अपने ख्वाबो की जवासाल सहर आ पहुची

रूहे-फन[4] जाग जरा रूहे-सुखन जाग जरा
फिक्रे-नौ[5] लेके कोई मिसरए-तर आ पहुची

नजर नजर को जो है तेरा इन्तिजार तो हो
उरूसे-सुब्ह ! मुकम्मल तिरा सिंगार तो हो

कोई कसर न रहे तेरे जेबो जीनत मे
बहारे-खुल्द जरा जी मे शर्मसार तो हो

हरम हो दैर हो तेरे असीर[6] ठहरेंगे
यह तेरी जुल्फ जरा और तावदार तो हो

१ किरणें, २ आकाशगगा, ३ पैर के नीचे, ४. कला की आत्मा, ५ नया चिन्तन, ६. क़ैदी।

अभी तो गोशए - तर्फे - नकाव[७] उट्ठा है
जहां फरोज तिरा हुस्ने - ताज़ाकार तो हो

बहुत है तुझको सियासत से चाहने वाले
हमारी तरह कोई तेरा जा निसार तो हो

अय वतन ! तेरे लिए अर्सःए - पुरखार[८] मे भी
अपनी पलको पे चुने ख्वावे - वहारी हमने

तेरी तारीख[९] लिखी अपने लहू से वरसो
वाज़िया तेरे लिए जान की हारी हमने

देके माथे पे तिरे अपने लहू का टीका
तेरी जुल्फें तिरे माथे पे सवारी हमने

आज भी तुझसे वही अहदे-वफा है अपना
थाम रक्खा है तिरा दस्ते-निगारी हमने

चलो कि हर्फे - वफा आज फिर से दुहरायें
चलो कि अहदे - वफा फिर से उस्तुवार करें[१०]

हमी ने मौसमे-वर्को-वला[११] को वदला था
चमन की आवो - हवा और साज़गार करें

नही कि चारए - गमहाए-रोज़गार[१२] नही
उठो कि चारए - गमहाए-रोजगार करें

चमन के फूल न हो चन्द दामनो के लिए
नये तरीक से गुलशन का कारोवार करें

कहां वह दौर कि फुर्सत के रात दिन ढूंढें
हरएक लम्हा को वक्फे नशातकार करें

यकीं है वक्त का पहिया हमी से घूमेगा
कुछ और कुवते-वाज़ू पे एतवार करें

७ गराव का कोना, ८ कटीली धरती, ९ इतिहास, १० मजवूत, दृढ, ११ विजली और विपत्तियो का मौसम, १२ रोज़गार के ग़म का इलाज ।

छलक उठेंगे फज़ा में हज़ार मैखाने
ज़रा सी देर तो मैख्वार इन्तिज़ार करें

कौमो की ज़िन्दगी मे हैं कुछ माहो-साल क्या
अब तक मिला जो वक़्त बहुत मुख़्तसर[13] मिला

अब जाके हममे आई हैं खुद एतमादिया[14]
अब जाके ज़िन्दगी का हमे कुछ हुनर मिला

अय रहरवो नवेद[15] कि राहें संवर गयी
कितना हसीन आज हमे राहबर मिला

अब तक संभल संभल के उठाते रहे कदम
लगता है अब कही हमें इज़्ने-सफर[16] मिला

सदके तिरे निगारे-वतन[17] देख तो इधर
हमसे भी एक वार नज़र से नज़र मिला

अय काश तेरा हुस्न, महो-माहताब[18] हो
माथे से तेरे वारिशे-रंगे-गुलाव हो

तेरा हरएक अज़्मे - जवां[19] कामियाव हो
कुछ और भी सिवा तिरा जोरे-शवाव[20] हो

बहारे-आज़ादी

नुशूर वाहिदी

यह जश्ने-सीमी[1] है इस दौर के अवाम[2] का जश्न
ज़मी से ता व फलक[3] इस नये निज़ाम का जश्न

१३ थोड़ा-सा, १४. आत्मविश्वास, १५ खुशखबरी, १६ यात्रा का निमत्रण, १७ देश के चित्र, १८ चाद-सूरज, १९ जवान सकल्प, २० यौवन-वल ।

वहारे-आज़ादी

१. रजत समारोह, २ जन-साधारण, ३ आकाश ।

यह जश्न मुल्क की इक खुश सलीकगी[४] का ज़ुहूर[५]
यह जश्न अपनी हकीकत के इन्तिज़ाम का जश्न

यह जामे-जम की हसी महफिलो का रक्स नही
यह जश्न नग्मागराने-शिकस्ता जाम[६] का जश्न

यह जश्न कुहना[७] इमारत की साज़िशो से अलग
है ज़िन्दगी मे गरीबो की एक शाम का जश्न

यह जश्न वहदते-हस्ती[८] के एतराफ[९] के साथ
है अम्नो-सुलह के परचम के एहतिमाम का जश्न

अभी है दूर महब्बत मे पुख्तगी[१०] का मकाम
अभी है जश्न भी दुनिया के ज़ौके-खाम[११] का जश्न

अभी तो चलते हैं लेकिन बहकते चलते है
अभी तो काफले वाले भटकते चलते हैं

यह जश्न वह है कि जिसका नही जवाब कोई
जले है शब के चरागो मे इकिलाब कोई

यह शहर बाग है हज़रत महल की यादो का
हर एक कूचा है खिलता हुआ गुलाब कोई

नज़र नवाज़ है दिल्ली की चाँदनी भी मगर
अवध की शाम का मिलता नही जवाब कोई

हसी तसव्वुरे-माज़ी[१२] नकूशे - मुस्तक्बिल[१३]
यह लखनऊ है कि है गोमती का ख्वाब कोई

पिऊँ हरम[१४] की कि लू दैर[१५] की मै रगी[१६]
दरूने-मैकदा[१७] मुश्किल है इन्तिखाब कोई

४ शिष्टता, ५ प्रकटन, ६ टूटे हुए जाम के गीत गाने वाले, ७ पुराना, ८ अस्तित्व का एकत्व, ९ स्वीकृति, १० मजबूती, ११ कच्ची अभिलाषा, १२ भूतकाल की कल्पना, १३ भविष्य के चिह्न, १४ काबा, १५ मदिर, १६ रगीन शराब १७ मदिरालय के अदर,

मुझे यकी है हर आदमी की नेकी का
हुजूमे-शर[१८] से नही मुझमे इज्तिराव[१९] कोई

पिघलती जाती है दीवारे-बर्फे-सरमाया[२०]
निकलने वाला है शायद कि आफताव कोई

तजाद[२१] कौलो अमल[२२] का है मैकदे की शिकस्त[२३]
उलट के जाम को पीता है कव शराव कोई

जमाना अहले-अदव[२४] का मकाम पूछे है
यह आप कौन हैं हर शख्स नाम पूछे है

दौलते-सीमीं[१]

शमीम किर्हानी

नज़र नज़र को मुबारक हो यह अज़ीम सहर
जो ज़ुल्मतो[२] के कफस[३] से गुजर के आई है
किरन किरन पे है मुहरे-तबस्सुमे-अवदी[४]
कि मक्तले-शहदा[५] से निकल के आई है
सियाह खानः‍ए-जम्हूरे-वक्त[६] की कन्दील
फराजे - दारो-रसन[७] से उतर के आई है

सहर के नाम से दिल जिसको याद करता है
वह जामे-सुर्ख है रिन्दाने-तिश्ना लव[८] के लिए
वराए-चेहर ए-आलम[९] है वोसः‍ए-इख्लास[१०]
तो हर्फे-नर्म है बीमारे-नीमशव[११] के लिए

१८ उपद्रवो का जमघट, १९ तकलीफ, व्याकुलता, २० सरमाये के वर्फ की दीवार, २१. प्रतिकूलता, २२ कथन और व्यवहार, २३ हार २४ साहित्यकार।

दौलते-सीमीं

१. चादी की दौलत, २ अधेरा, ३ पिंजरा, ४. अनन्तकाल की मुस्कुराहट की मौत, ५ शहीदो का वधस्थल ६ वक्त के जम्हूर का अ धेरा-घर, ७ फासी की रस्सी की ऊचाई, ८ प्यासे होंठो वाले मदिरापायी, ९ ससार के चेहरे के लिए, १० निष्ठा का चुवन, ११ आधी रात का रोगी।

जो कैदखानःए-माज़ी[१२] से फूट निकला है
वह ज़िन्दगी का उजाला है और सबके लिए

खुदा करे कि उफक की यह दौलते-सीमी[13]
जहा मे सूरते-कैफे-शराब[१४] और बढे
जमीन प्यार की शबनम से भीगती जाये
सुकू की नीद, महब्बत का ख्वाब और बढे
निगाहे-बद से रहे दूर सुब्हे-आजादी
जमाल[१५] और फज़ू[१६] हो शबाब और बढे

शजरे-नूर[१]

फजा इब्ने-फैजी

निशाने-फतह[२] है पन्द्रह अगस्त का यह दिन
नये निजाम, नये बन्दोबस्त का यह दिन

यह दिन तो इक शजरे-नूर है सहरजादो
इसे लहू की हरारत[3] से तुमने सीचा था
यह हसती सुबहो का मंशूर[४] है कमरजादो
जिसे निढाल शबो की थकी जबीनो[५] पर
खते-शुआअ[६] की सूरत मे तुमने लिखा था

उफक[७] संवरते रहे और सहर दमकती रही
चराग जलते रहे तीरगी[८] पिघलती रही
जमीने-शब[९] से उजालो की फस्ल उगती रही
कली चटकती रही, जिन्दगी महकती रही

१२ अतीत का कारागार, १३. चादी की दौलत, १४ शराब के नशे की तरह, १५ सौन्दर्य, १६ अधिक।

शजरे-नूर

१ प्रकाश का वृक्ष, २ विजय-पताका, ३ गर्मी, ४ मेनिफेस्टो, ५ ललाट, ६ किरण की लकीर, क्षितिज, ८ अंधकार, ९ रात की धरती।

यह मेरे अहद के जम्हूर[१०] की नयी दुनिया
नये शऊर[११] के कदमो की चाप सुनती है
जराहतो[१२] के खयाबा[१३] से फूल चुनती रही
दुरीदा जिस्म[१४] रही ओर गीत बुनती रही

बडे शऊर,[१५] बडी आगही[१६] से लोगो ने
दमकते जागते ख्वाबो की पास्वानी[१७] की
खुमार हद से बढा तो नशे को छलकाया
सुबू मे लेके शराबो की पास्बानी की
सबो[१८] को नज्र[१९] किया खुशबुओ का सरमाया
बहार बनके गुलाबो की पास्बानी की
मगर ब ईं हमा[२०] गुलरेजी-ओ हिनावन्दी[२१]
ब वस्फे - शोखी - ओ-तम्कीनो-आरजूमन्दी[२२]
कभी कभी बडी शिद्दत से सोचता हूं मैं
कही कही मिरे माहौल की जबीनो[२३] पर
खराशो-सोजो-जराहत[२४] का यह गुबार है क्यो
नफस[२५] नफस मे वही शोला क्यो पिघलता है
कदम कदम पे वही हश्रे-रोजगार हैं क्यो
मिरे कदम के अमीनो ! रफीको ![२६] हमनफसो !
कुछ ऐसा रास्ता सोचो, कुछ ऐसा काम करो
जो कल्बो-रूह[२७] के जख्मो को मुन्दमिल[२८] कर दे
वह शेर लिखो जो इस दौर के तकाजो को
हसी-ओ-खूबरू लफ्जो मे मुन्तकिल[२९] कर दे
वह जज्बा ढूढ के लाओ सुलगते सीनो से
जो बर्फे-वक्त को शोलो के मुत्तसिल[३०] कर दे
दयारे-शौक[३१] मे नाफिज[३२] करो वह इस्लाहात[३३]
फसादे-जिहनो-नजर[३४] को जो मुज्महिल[३५] कर दे
जो जिन्दगी को संवारे, नजर को दिल कर दे

१०. गणतंत्र, ११ शिष्टता, १२. घाव, १३ उपवन, १४ फटा हुआ शरीर, १५ शिष्टता, १६ बुद्धिमानी, १७ रखवाली १८ हवा, १९ भेंट, २०. इस सबके बावजूद, २१ फूल बरसाना और मेहदी लगाना, २२ आरजूमदी, शोखी के गुण के कारण, २३ ललाट, २४ जख्म की जलन और खराश, २५ सास, २६ दोस्तो, २७ दिल और आत्मा, २८. भरना, २९. परिवर्तित, ३० निकट, ३१ अभिलाषा का नगर, ३२ लागू, ३३. सुधार, ३४. नजर और दिमाग के फसाद, ३५ उदास ।

शवाव करवटें ले, नीद से वदन जागे
खुमार टूटे, नशा चहके, अंजुमन जागे
वकद्रे-शौक चले कारोवारे-हमनफसा[३६]
गज़ल की आख खुले, गमज़ए-सुखन जागे
हदीसे-लुत्फ की खुशवू से महफिलें महकें
नवाए-गर्म से महरावे-फिक्रो-फन जागे
नया लहू मिले तहजीव की उमगो को
वुझे वुझे हुए खावो का वाकपन जागे
नजर समझ सके हालात के तकाजो को
जवीने-वक्त[३७] की सोई हुई शिकन जागे
खिलाये फूल ज़मीरो-जवा[३८] की आजादी
शऊरे-खुशनफसी का चमन चमन जागे
सलीवो-दार[३९] की आवाज गीत मे ढल जाये
वुझा वुझा सा है जो सोज़े-जानो-तन[४०] जागे
यही है जिन्दादिलाने-जुनू का मशा भी
गिज़ाल[४१] के आहग[४२] से खुतन[४३] जागे

जो तुम गुज़र गये इन मजिलो से आसूदा[४४]
तो जव भी कोई मुअर्रिख[४५] कलम उठायेगा
तुम्हारी फहमो-फरासत[४६] के गीत गायेगा
लिखेगा तुमको कि यह फातहे-ज़माना[४७] थे
नकीवे-सुल्ह[४८] थे, इसाफ का खज़ाना थे
सदाकतों[४९] का मुरक्का,[५०] वफा का पैकर[५१] थे
उखूवत और ममावात[५२] के पयम्वर थे
वगरना सोच लो यह भी कि वक्त और तारीख
कभी किसी गलती को माफ करते नही
यह ढूंढ लेते हैं सच्चाइयो के कातिल को
जुनूने-कमनज़री[५३] को माफ करते नही
लिहाज़ करते नही नामो-ताजो-मसव[५४] का

३६ दोस्तो का कारोवार, ३७ समय का ललाट, ३८ ज़वान और अंत करण, ३९ क्रॉ
और फासी, ४० शरीर और प्राण की जलन, ४१ हिरन, ४२ आवाज, ४३. मध्य एशिय
मे एक जगह जहा के मृग वहुत मशहूर हैं, ४४ सम्पन्न, ४५ इतिहासका
४६ बुद्धिमानी, ४७ विश्व-विजेता, ४८ शान्ति-दूत, ४९ सच्चाई, ५० चित्र, ५१. आकृति
५२ वरावरी, ५३ सकीर्णता का उन्माद, ५४ मान-मर्यादा ।

वह कोई हो, यह किसी को माफ करते नही

यह दिन तो इक शजरे-नूर[५५] है सहरज़ादो
इसे लहू की हरारत से तुमने सीचा था
यह हंसती सुब्हो का मंशूर है कमरजादो
खते-शुआअ की सूरत मे तुमने लिखा था

मंज़िल ब मंज़िल

रिफअत सरोश

मुबारक जश्ने-आजादी कि मजिल मुस्कुराती है
कि रूहे - इरतिका[१] इक नग्मःए-दिलकश सुनाती है
तबस्सुम है फजाओ मे, तरन्नुम है हवाओ में
मगर इस दम शहीदाने-वतन की याद आती है

वह जिनके नक्शे-पा[२] हैं सगे-मील अब अपनी राहो के
हयाते-जाविदा[३] ने ले लिया है जिनको बाहो में
उन्ही का फैज[४] है मजिल ब मजिल बढ रहे हैं हम
न जाने किस कदर नादीदा[५] मंजर हैं निगाहो मे

हम इसा को महब्बत की नयी राहे दिखाते हैं
गुलामो को नयी तहजीबे-आजादी सिखाते हैं
वही हम थे सरे-मजिल जो थक कर बैठ जाते थे
वही हम हैं कि अब मजिल ब मजिल बढते जाते हैं

५५. प्रकाश का वृक्ष।

मजिल ब मंजिल

१. विकास की आत्मा, २. पद-चिह्न, ३ अमर जीवन, ४ दया, ५ अनदेखा।

जश्ने-सीमीं

वकार वासकी

हमसे पूछो कि लहू कितने शहीदो का वहा
कितने दीवाने चढे दार पे हक की खातिर
कितनी आंखो ने वहाये यहा अश्को के गुहर[१]

ग़दर के नाम पे कितनो के जनाज़े निकले
कितने दिल टूट गये कितने जिगर चाक हुए
काफले कितने लुटे, कितने ही घर खाक हुए
तव कही जाके मसर्रत[२] की घडी आई है

अपनी तारीख फकत जग की तारीख नही
यह महव्वत के हसी फूलो से गुलनार भी है
दोस्ती और रवादारी का शहकार भी है
इसमे जावाज़ो की कुर्वानी-ओ-ईसार भी है

हम कि तूफा भी हैं, आधी भी है, हगामे-रजिज़[३]
वज्म मे पहुचें तो हम गुचा सिफत खिलते हैं
दोस्त वन जायें तो दुश्मन से गले मिलते हैं

हम वगावत मे भगत हैं तो महव्वत मे हैं हीर
हम शुजाअत[४] मे है टीपू तो हैं खुसरो से फकीर

आवरू की हो अगर वात सो शोला हम हैं
अम्न की जिक्र जो छिड जाये तो नग्मा हम है

सरहदो के हैं मुहाफिज़[५] तो वहारो के अमीं
हमको ताकत पे भरोसा है अहिंसा पे यकीं[६]

जगे-आज़ादि-ए-गुलशन का तराना है हम
दोस्तदारी-ओ महव्वत का फसाना है हम

खुद जिओ, जीने दो, उल्फत का सलीका[७] है यही
जश्ने-सीमीं के मनाने का तरीका है यही

१ मोती, २ खुशी, ३ युद्ध का हगामा, ४. वहादुरी, ५. रक्षक, ६. विश्वास, ७. योग्यता, शिष्टता।

अहद

जकिया सुल्ताना नैयर

अय वतन क्यो है तिरे चांद से माथे पे शिकन
हमने तोड़े है न तोड़ेंगे वफा के बन्धन
फिर तिरी खाक से हम अहदे-वफ़ा करते हैं
तुझपे मर मिटने की फिर आज दुआ करते हैं
फिर महब्बत को तिरी राहनुमा करते हैं
फिर तिरी खाक से हम अहदे-वफा करते हैं

फिर तिरी खाक को हम रगे-हिना[1] कर देंगे
अपना सब कुछ तिरी इज्ज़त पे फिदा कर देंगे
जो तिरी राह मे मरते हैं जिया करते हैं
फिर तिरी खाक से हम अहदे-वफा करते हैं

किसी गुस्ताख[2] को गुलशन मे न आने देंगे
पैरहन लाला-ओ-गुल का न जलाने देंगे
हम वह है बर्क[3] को जो मौजे-सबा करते हैं
फिर तिरी खाक से हम अहदे-वफा करते हैं

बर्क है अब्र[4] है और शोलाफशा[5] बादे-समूम[6]
है फसीलो पे तिरी लाख बलाओं[7] का हुजूम[8]
ऐसे तूफा मे कोई नीद लिया करते हैं
फिर तिरी खाक से हम अहदे-वफा करते हैं

इनके सोये हुए एहसास की वादी पे न जा
अपने दीवानो की तारीक[9] सवादी[10] पे न जा
कि अधेरे मे भी सौ दीप जला करते हैं
फिर तिरी खाक से हम अहदे-वफा करते हैं

१. मेंहदी का रग, २ उद्दण्ड, ३. बिजली, ४ बादल, ५ शोले बरसाती हुई, ६ आंधी, ७ विपत्तिया, ८ समूह, जमघट, ९ अधकारमय, १० कालिमा ।

वादाकश तेरे ज़माने को दिखा देंगे वतन
राज़े-मैख़ान ए-ईसार[११] वता देंगे वतन
किस तरह जाम शहादत का पिया करते है
फिर तिरी ख़ाक से हम अहदे-वफा करते हैं

ज़िन्दगी का तुझे फिर्दौस[१२] वना दें तो सही
अपने सज्दो से तुझे और सना दें तो सही
काव -ए-अम्न[१३] रहे तू यह दुआ करते है
फिर तिरी ख़ाक से हम अहदे-वफा करते है

तेरे गाते हुए दरियाओ के धारो की कसम
तेरे सूरज तेरे चन्दा तिरे तारो की कसम
दिल के दागो के कही दीप वुझा करते हैं
फिर तिरी ख़ाक से हम अहदे-वफा करते है

हमने जो ख़ून के धारो से किये हैं रौशन
जिनकी ज़ौ[१४] से हर इक दिल मे सितारो की लगन
वह दिये क्या किसी सरसर[१५] से वुझा करते है
फिर तिरी ख़ाक से हम अहदे-वफा करते है

माहो-अंजुम[१६] से वलन्दी मे वढा देंगे तुझे
है तो नाचीज़ मगर अर्श[१७] वना देंगे तुझे
हैं वह वन्दे जो चट्टानो को ख़ुदा करते है
फिर तिरी ख़ाक से हम अहदे-वफा करते हैं

जिनका मक्सूद[१८] तिरी आन पे मिट जाना है
और फिर मिट के हयाते-अवदी[१९] पाना है
वह कही मौत से मरऊव[२०] हुआ करते है

अय वतन क्यो है तिरे चाद से माथे पे शिकन
हमने तोडे है न तोडेंगे वफा के वन्धन
फिर तिरी ख़ाक से हम अहदे-वफा करते है

११. त्याग के मदिरालय का रहस्य, १२. स्वर्ग, १३ शान्ति का काबा, १४ चमक, १५ तेज़ हवा, १६ चाद-तारे, १७ आकाश, १८. उद्देश्य, १९. अनश्वर जीवन, २०. प्रभावित ।

हमारी तारीख़[1]

जां निसार अख्तर

अय वतन ! अय मिरी गगा की, हिमाला की ज़मी
सैंकडो साल फरोज़ा[2] हैं तिरी याद के साथ
यह नही है कि नज़ारे ही हसी हो तेरे
हुस्ने-तहज़ीब[3] भी है, हुस्ने-खुदादाद[4] के साथ

कितने सूरज तिरे माथे से उगे क्या कहिये
अब भी ज़र्रों मे निहा जिनकी चमक लगती है
कितनी तहजीबो के गुलज़ार खिले हैं तुझमे
तेरी धरती कोई सतरग धनक[5] लगती है

कितनी धाराओ के सगम से बनी यह धारा
कितनी सदियो की कहानी यह फज़ा कहती है
मौज दर मौज कोई जज्बे-निहा[6] हैं क्या है।
या तहे-आब[7] कोई सरस्वती बहती है

कोई रिश्ता है मगर फिक्र की यकजहती का
एक ही रग मे हर ज़िह्न ढला है बरसो
बादाकश भूल न जायेंगे कि मैखाने मे
मै-ए-वहदत[8] का कोई दौर चला है बरसो

बुतकदो मे नज़र आ जाते है मस्जिद के नकूश
अक्स मस्जिद मे भी मिल जाते हैं बुतख़ानो* के
यह जो पैवन्द पे पैवन्द लगा रक्खे हैं
यही अन्दाज़ हसी हैं तिरे दीवानो के

एक ही गीत मे सगीत मे ढलने के लिए
पर्दःए-रूह से निकली थी सदाएं छन कर

१. इतिहास, २. प्रकाशमान, ३. सभ्यता का सौंदर्य, ४. स्वाभाविक सौंदर्य, ५ इंद्र-धनुष, ६ छुपा हुआ जज्बा, ७ पानी के नीचे, ८ अद्वैत की मदिरा।

* हिन्दी और ईरानी तर्ज़े-तामीर के मिलाप की तरफ इशारा है जो आगे चलकर हिन्दुस्तानी फने-तामीर कहलाया।

जुम्बिशें हाथ की यकसा सी नज़र आती थीं
साज़ की लय कही रंगो की लकीरें बनकर*

कल्ब[९] बेचैन थे इक रंग मे ढल जाने को
कौनसा दिल था जो चाहत का परस्तार[१०] न था
अपनी हर एक खुशी बांट लिया करते थे
कोई त्योहार किसी एक का त्योहार न था

कोई भी घर हो, दिवाली के दिये जलते थे
ईद भर देती थी सीनो मे उजाले क्या क्या
रग होली का हर एक दिल मे बिखर जाता था
चेहरे चेहरे पे दमक उठते थे लाले क्या क्या

अजनबी[११] हाथो ने लिक्खी थी जो तारीख तिरी
उसको क्या नाम दें "सोची हुई तुहमत[१२] के सिवा"
अपने हर प्यार को नफरत मे बदलना चाहा
क्या पुकारे उसे चालाक सियासत के सिवा

अय वतन हम तिरी तारीख लिखेंगे फिर से
तेरी तारीख है दिलजोई-ओ-दिलदारी की
तेरी तारीख महब्बत की, वफा की तारीख
तेरी तारीख उखूवत की रवादारी की

तेरी तारीख सदाकत की हसी कदरो की
दिल के रिश्तो की, मुरव्वत मे बसी नजरो की
तेरी तारीख है भगती के अमर नग्मो की
तेरी तारीख है खुद रूह के आदर्शों की

तेरी तारीख है कुरआन का, गीता का वरक
आश्ती,[१३] अम्न, अहिंसा के उसूलो का सबक़

* मूसीक़ी और मुसव्वरी के फन मे जो रूहजान हिन्दुओ और मुसलमानो के इश्तिराक से वजूदपजीर हुआ उसकी तरफ इशारा है।

९ दिल, १० पूजक, ११ अपरिचित, १२ इल्जाम, आरोप, १३ दोस्ती।

दहर से अपना मुकाबिल कोई अब तक न उठा
कोई गौतम, कोई चिश्ती, कोई नानक न उठा

तफरिकाबाज़[१४] सियासत ने बहुत खेल रचे
अपना आदर्श था पर जान से प्यारा हमको
तूने देखा है कि हम मिलके उठे मिलके बढे
तूने जब चौंक के इक बार पुकारा हमको

जल उठे तेरे लिए हम किसी जंगल की तरह
बर्क पर बर्क गिराते हुए बादल की तरह
ख़ूने-आदादा[१५] से सुलगती हुई मशअल की तरह

आज आज़ाद हैं हम, ज़िहन हमारा आजाद
तंग जज्बात[१६] के घेरो से निकल आये हैं
जो फिरंगी की सियासत ने कभी बोये थे
उन तअस्सुब[१७] के अघेरो से निकल आये हैं

कुछ अघेरो के परस्तार अगर हैं भी तो क्या
रौशनी हो तो अंधेरों की कहा चलती है
सैंकडो साल के माथे पे दमक है जिसकी
अपने सीनो मे वही शमए-हसी जलती है

एक है अपना वतन, एक ज़मी, एक हैं हम
एक है फिक्रो-अमल, एक यकी, एक हैं हम
कौन कहता है कि हम एक नही, एक हैं हम

नदी की आवाज़

शमीम किरहानी

हसीन नागिन सी एक नद्दी
न जाने कितने हजारो सालो से वह रही है

१४ साम्प्रदायिकता फैलाने वाली, १५ दुश्मनो का ख़ून, १६. सकीर्ण भावना, १७ भेदभाव।

कोई कहानी सी कह रही है

मिरे किनारे पडे हुए थरथरा रहे है
हयाते-गौतम के शाहपारे
अशोक की शान्ति के कत्बे[1]
वह हार सजोगिता ने डाला जो पृथ्वीराज के गले मे
वह नर्म कोरा घडा जो तूफान मे सहारा था सोहिनी का
जो लेके महिवाल की खुशी को नदी मे गर्काब हो गया था
वह टूटा-फूटा सितार जिस पर गरीब मीरा ने अपने गीत गाये
वह वीन जिस पर महान तुलसी ने अपने रघुपत के राग छेडे
कबीर का आरिफाना[2] बरबत
जो हमको देता था यह सन्देसा कि रामो-रहमान एक ही हैं
सब एक अल्लाह के है बन्दे यह सारे इसान एक ही है
यही किनारा है वह किनारा
कि जिस पे तारीखे-जिन्दगी[3] के हसी नजारे चमक चुके हैं
अजीम अकबर के आस्माने-वफा के तारे चमक चुके हैं
जमाले-मुमताज़ के पुजारी का मरमरी ख्वाब जल्वागर है
यह ताजमहलो की रहगुजर है
हरएक प्यासे को मेरे साहिल ने सागरे-रगो-बू[4] दिया है
मिरे ही पाकीजा जल मे अक्सर नमाजियो ने वजू किया है
मिरे ही किनारे हर एक मस्जिद हर एक मन्दिर की नुकरई[5]
बत्तिया जली हैं
मिरी रवादारियो की लहरो मे मुख्तलिफ[6] कश्तिया चली हैं
इधर से गुजरा है आरिफो[7] का गिरोह अक्सर
सभाले अपने अमल के हाथो मे अपनी हस्ती का सब्ज परचम[8]
वह सब्ज परचम कि जिसके आंचल मे चाद तारे मचल रहे थे
खुदाए-वाहिद के पाक नग्मे हवा मे कर्वट बदल रहे थे
नवाए-शंकर से दिल के शीशो मे शोल.ए-इश्क ढल रहे थे
फकीर नानक के सोजे-दिल से चराग राहो मे जल रहे थे
पयामे-चिश्ती की रौशनी मे मिले जुले पाव चल रहे थे
यह मुत्तहिद पाव के निशा हैं

१ क़ब्र पर लगा हुआ पत्थर, २. ज्ञानपूर्ण, ३ जीवन का इतिहास, ४ रग और सुगन्ध का सागर, ५ चांदी की, ६ विभिन्न, ७ ज्ञानियो, ८ झडा।

हवा के नासाजगार[९] हाथों ने खाक सी डाल दी है लेकिन
यह सारे नक्शे-दवामे-उल्फत[१०] अभी हसी हैं अभी जवां है
चले चलें इस डगर पे हम तुम तो यह डगर हामिले-सफर है
इसी डगर की अंधेरी वादी के पार ही मज़िले-सहर है

उरूसे-यकजहती

रिफअत सरोश

मैं यकजहती[१] हू
कौमी इत्तिहाद और एकता का पैकरे-रगी[२]
वतन हिन्दोस्तां मेरा
यहा हर अहले-फन है तर्जुमा[३] मेरा
यहा का हर बशर है पास्वा[४] मेरा
मुझे तारीख ने खुद अपने हाथो से सवारा है
अवामी कूवतो[५] ने रूप को मेरे निखारा है
मुझे अकबर ने ताजे-खुसरवी[६] वख्शा
जहागीर और खुर्रम ने किया सिक्का मिरा जारी
ज़फर ने ताजे-जर[७] ठुकरा दिया मेरी महब्बत मे
वह टीपू हो, कि नाना फरनवीस-ओ-लक्ष्मीवाई
सभी ने हक के परचम को उठाया मेरी उल्फत मे
मिरी खातिर शहीदाने-वतन ने खू वहाया है
मुझे मेरे वतन के सूरमाओ ने सजाया है
संवारा है मुझे किस प्यार से, कितनी महब्वत से
कि नानक की सदा हूं मैं
कि चिश्ती की नवा हूं मैं
लवे-खुसरौ पे मेरा जिक्र आकर वन गया नग्मा

९ प्रतिकूल, १० प्रेम के स्थायी चिन्ह।

उरूसे-यकजहती

१ एकता, २ सुन्दर आकृति, ३ प्रतिनिधि, ४. रखवाला, ५ जनता की शक्ति, ६ राजमुकुट, ७ सोने का ताज।

कबीरो-गालिबो-टैगोर ने मेरी हयाते-जाविदा[८] के ज़मज़मे[९] गायें

फ़ज़ाओं मे वतन की
मेरे हुस्नो-इर्तिका[१०] के गीत लहराये
हज़ारो आंधियां आईं मिरा गुलशन जलाने को
वतन के पास्वानो ने बचाया आशियाने को
वह दादाभाई नौरोजी, तिलक और गोखले
भगतसिंह, बोस, आज़ादो-जवाहरलाल, मौलाना हुसैन आज़ाद
सभी मुशफिक रहे मेरे, सभी मोहसिन[११] रहे मेरे
सभी ने आबियारी[१२] की मिरी किश्ते-तमन्ना[१३] की
सभी ने बांकपन बख्शा मिरे दिल की उमगो को
रवादारी के चश्मे उनके फैज़े-नूर से जारी
दिलो की ममलिकत मे अब भी है इनकी अमलदारी

ज़मीन-ओ-आस्मां बदले
मगर कुछ और निखरा इब्तिदाआते-जहां से हुस्न मेरा, दिलकशी मेरी

मैं यकजहती हूं
कौमी इत्तिहाद और एकता का पैकरे-रंगी
मैं नाकूसो-अज़ा[१४] की रूह हूं, वहदत[१५] मिरा मस्लक[१६]
मुझे सब मज़हबो से प्यार है, मैं सब का आईना
मैं रूहे-गीता-ओ-कुरआं
मिरा मसकन दिले-इंसा

हर एक लब पर रवां मेरी अकीदत[१७] के तराने हैं
ज़बाने-अहदे-हाज़िर पर मिरे दिलकश फसाने हैं
उरूसे-ज़िन्दगी[१८] हूं मैं दरख्शां[१९] मेरा मुस्तक्बिल[२०]
मैं इसानो के ज़र्री ख्वाब का हासिल

८ अनश्वर जीवन, ९ गीत, १०. विकास और सौंदर्य, ११ एहसान करने वाला, १२ सिंचाई, १३ अभिलाषा की खेती, १४ शंख और अज़ान, १५ अद्वैत, १६ उद्देश्य, १७ श्रद्धा, १८ जिंदगी की दुल्हन, १९ उज्ज्वल, २०. भविष्य।

नफ़रतों की सिपर[1]

सरदार जाफरी

वह नफरतों की सिपर रख के दिल पे आते हैं
वह बदनसीब वह महरूमे-दर्दे-इंसानी[2]
उन्हे मिली ही नही चश्मे-तर[3] की ताबानी[4]
न उनकी बात मे लुकनत न आख मे नम है
न ज़ौके-चाके-गरीबा न चाक दामानी
लबो पे नार.ए-वहशत निगाह बरहम है
कलम है हाथ मे, तल्वार दस्ते-कातिल मे
बस अपना जौहरे-तेगे-ज़बा[5] दिखाते है
बयाने-खूनो-कफन[6] करके मुस्कुराते हैं
उन्हे खबर नही इक चीज ज़ख्मे-दिल भी है
कि जिससे होती है तहज़ीबे-नफ्से-इंसानी[7]

बहरूपनी

कैफी आजमी

एक गर्दन पे सैकड़ो चेहरे
और हर चेहरे पर हज़ारो दाग
और हर दाग बन्द दरवाजा
रौशनी इनसे आ नही सकती
रौशनी इनसे जा नही सकती

१. ढाल, २. मानवता के दर्द से वंचित, ३ अश्रु-भरी आंख, ४ चमक, ५ ज़बान की तलवार का जौहर, ६. खून और कफन का बयान, ७ मानव-सभ्यता।

तंग सीना है हौज मस्जिद का
दिल वो दोना पुजारियो के वाद
चाटते रहते हैं जिसे कुत्ते
कुत्ते दोना जो चाट लेते हैं
देवताओ को काट लेते हैं

जाने किस कोख ने जना इसको
जाने किस सहन मे जवान हुई
जाने किस देश से चली कमवख्त
वैसे यह हर जवान वोलती है
जख्म खिडकी की तरह खोलती है
और कहती है झाक कर दिल मे
तेरा मजहव तिरा अजीम खुदा
तेरी तहजीव के हसीन सनम[1]
सवको खतरो ने आज घेरा है
वाद इनके जहा अ घेरा है

सर्द हो जाता है लहू मेरा
वन्द हो जाती हैं खुली आखें
ऐसा लगता है जैसे दुनिया मे
सभी दुश्मन है कोई दोस्त नही
मुझको जिन्दा निगल रही है जमी

ऐसा लगता है राक्षस कोई
एक गागर कमर मे लटकाये
आस्मा पर चढेगा आखिर शव
नूर सारा निचोड लायेगा
मेरे तारे भी तोड लायेगा

यह जो धरती का फट गया सीना
और वाहर निकल पडे हैं जुलूस
मुझसे कहते हैं "तुम हमारे हो"

१ वुत, मूर्तिया ।

मैं अगर इनका हू तो मैं क्या हूं
मैं किसी का नही हू अपना हूं

मुझको तन्हाई[2] ने दिया है जन्म
मेरा सब कुछ अकेलेपन से है
कौन पूछेगा मुझको मेले मे
साथ जिस दिन कदम बढाऊगा
चाल मैं अपनी भूल जाऊगा

यह और ऐसे ही चन्द खयाल
ढूढने पर भी आज तक मुझको
जिनके मा बाप का मिला न सुराग[3]
जिह्न मे यह उडेल देती है
मुझको मुट्ठी मे भीच लेती है

चाहता हू कि कत्ल कर दू इसे
वार लेकिन जब इस पे करता हू
मेरे सीने पे जख्म उभरते हैं
मेरे माथे से खू टपकता है
जाने क्या मेरा इसका रिश्ता है

आधियो मे अजान दी मैंने
शख फूका अधेरी रातो मे
घर के बाहर सलीब लटकाई
एक इक दर से उसको ठुकराया
शहर से दूर जाके फेंक दिया

और एलान कर दिया कि उठो
बर्फ सी जम गयी है सीनो पर
गर्म बोसो से इसको पिघला दो
कर लो जो भी गुनाह वह कम है
आज की रात जश्ने-आदम है

२ अकेलापन, ३ पता।

यह मिरी ग्रास्तीन से निकली
दौड के रख दिया चराग पे हाथ
मल दिया फिर ग्रंधेरा चेहरे पर
होट से दिल की बात लौट गयी
दूर तक ग्राके बरात लौट गयी

उसने मुझको ग्रलग बुला के कहा
ग्राज की जिन्दगी का नाम है खौफ
खौफ ही वह ज़मी है जिसमे
फिरके[४] उगते हैं फिरके पलते हैं
धारे सागर से कट के चलते हैं

खौफ जब तक दिलो मे बाकी है
सिर्फ़ चेहरा बदलते रहता है
सिर्फ लहजा बदलते रहता है
कोई मुझको मिटा नही सकता
जश्ने-ग्रादम मना नही सकता

दिल के ग्रन्दर जो रावण है

ग्रसरार ग्रकबराबादी

उम्मीदो के बाग सजाकर ग्ररमानो के फूल खिलाग्रो
सच्चाई के किरदारो से दिलदारो के दिल गरमाग्रो
तदबीरो से तकदीरो की तस्वीरो मे रग सजाग्रो

खुशियो का सूरज चमका कर ग्रंधियारो का ज़ोर घटाग्रो
दिल के ग्रन्दर जो रावण है उस रावण मे ग्राग लगाग्रो

४ सम्प्रदाय ।

सागर के मैले पानी से अम्बर भी मैला होता है
अन्दर ही जब जंग छिड़ी हो बाहर अम्न से क्या होता है
फूलो के मन की जुल्मत[1] से गुलशन भी काला होता है

रूहो के काले शोलो पर नेकी का अमृत बरसाओ
दिल के अन्दर जो रावण है उस रावण मे आग लगाओ

दिल के अगारो मे जलकर आखो मे आसू आते हैं
अपने निर्मल पैमानो मे अन्दर की ज्वाला लाते हैं
धरती पर गिरने से पहले अपना राज़ बता जाते हैं

नर्मी की गर्मी से अपने सीने के पत्थर पिघलाओ
दिल के अन्दर जो रावण है उस रावण मे आग लगाओ

धुधला हो जब मन का दर्पण फिर दर्शन से क्या होता है
जिस बन्धन से बाध न टूटें उस बन्धन से क्या होता है
नफरत का जो विष बरसाये उस सावन से क्या होता है

बदहाली को दूर भगाकर खुशहाली को पास बुलाओ
दिल के अन्दर जो रावण है उस रावण मे आग लगाओ

दिल के अन्दर की शक्ति से कट जाती है ज़जीरें भी
दिल के अन्दर की नर्मी से झुक जाती हैं शमशीरें भी
दिल के अन्दर की गर्मी से बन जाती हैं तकदीरें भी

अन्दर का ससार बसा कर बाहर का ससार सजाओ
दिल के अन्दर जो रावण है उस रावण मे आग लगाओ

१ अधकार।

मुस्तक़्बिल के ख़्वाब

खुर्शीद अहमद जामी

हमारे अज़्म से पैदा नया हिन्दोस्ता होगा
मुकद्दर[1] वक्त के आगोश मे पलकर जवां होगा

रुख़े-तहज़ीव[2] का गाज़ा[3] शफक की सुर्खिया होगी
तमद्दुन[4] के हसी आरिज़[5] पे नूरे-कहकशां[6] होगा

ज़मी खेतो की सूरत मे खज़ानो को उगायेगी
हकाइक पर सुनहरे मस्त ख्वाबो का गुमा होगा

दिले - फौलाद पिघलेगा मशीनें गडगडायेंगी
हयातो - इर्तिका[7] का नक्श नक्शे-जाविदा[8] होगा

टटोला जायेगा ज़र्रो का दिल कुहसार[9] का सीना
शऊरे-ज़िन्दगानी[10] विजलियो पर हुक्मरा[11] होगा

दिलआरा खम व खम जैसे किसी महबूब के गेसू
नशातअगेज़[12] यू ही कारखानो का धुआ होगा

वदल जायेंगे दरियाओ के रुख मौसम के अफसाने
गुरूरे-वक्त[13] पर छाया हुआ अज्मे-जवा[14] होगा

वतन की सरजमी पे सनअतो[15] का वाकपन होगा
निगाहे - शौक के आगे वहारो का समा होगा

नजर अफरोज़ सहराओ मे तालावो के होटो पर
सुरूरो - कैफ[16] का नग्मो का सैलावे-रवा होगा

चमन शादाव होगा मुर्ग़े-इशरत गुनगुनायेगी
न गम की विजलिया होगी न फाको का निशा होगा

१ भाग्य, २. सभ्यता का चेहरा, ३ पाउडर, ४ संस्कृति, ५ कपोल, ६ आकाश-गंगा का प्रकाश, ७ जीवन और विकास, ८ अमर चिह्न, ९ पहाड़, १०. जीवन-चित्र, ११ शासक' १२ सुखप्रद, १३ समय का गुरूर, १४ दृढ संकल्प, १५ उद्योग-धंधे, १६ नशा।

मुस्तक़्बिल के ख़्वाब

हुर्मतुल इकराम

क़ाफले वालो ! ज़रा तेज़ चलो, तेज़ चलो
कितने दिलदार हैं आगाज़े-सफर[1] के लम्हात[2]
बामे-गर्दूं[3] से उतरती है सितारो की बरात
अपने शोलो से उलझने लगी तारीख की लौ
नूर अफगन[4] हैं जबीनो[5] पे दिलो के परतौ[6]
जिन्दगी सजती है किस शोख़ अदा का महमिल
खम व खम राहगुज़ारो के धड़कने लगे दिल
वुसअते-नजद[7] मे वेदार हुआ जौके-जुनूं[8]
इश्क की नब्जो मे भडकी नये अन्दाज़ से आग
दिल के हर तार पे लहराते है अगारो के राग
कितना है शोख़ जवा[9] काकुलो-रुख़[10] का अफसू[11]
हुस्न ने भेजा है दीवानो को पैगाम नया
बढ गयी कहके सबा तेज चलो, तेज चलो
काफले वालो ! जरा तेज़ चलो, तेज़ चलो

बढते कदमो के दिये जलते चले जाते हैं
सासो की आच से कुहसार गले जाते हैं

जरसे-वक्त[12] की आवाज खिलाती है कवल
मौजे-इनफास[13] है या वजते हैं सीनो मे दुहुल[14]

हौसले, शोरिशे-तूफा को सदा देते हैं
कतरे को मजिले-गौहर[15] का पता देते है

मुजमिद[16] लम्हो के खिर्मन[17] पे लपकते हैं शरार
झिलमिलाता हुआ उडना है मराहिल[18] का गुबार

१. यात्रा का आरभ, २. क्षण, ३ आकाश की छत, ४ प्रकाश फैलाते हुए, ५ ललाट, ६ अक्स, ७ नजद का विस्तार, ८ उन्माद का जौक, ९ चर्ब ज़बान, १० चेहरा और लटें, ११ जादू, १२. समय की घटी, १३. सासो की मौज, १४ नक्काश, १५ मोती की मजिल, १६. स्थिर, १७ खलियान, १८ समस्याए ।

सोज़े - पिन्हा की तडप कब हुई पाबन्दे-रसूम[१६]
किसको बतलाइये कलियो की चटक का मफहूम[२०]

आई आवाजे - दिरा[२१]! तेज़ चलो, तेज़ चलो
काफले वालो! ज़रा तेज़ चलो, तेज़ चलो

इर्तिक़ा[१] का सफ़र

हुर्मतुल इकराम

फसाना मजिले - दुश्वार[२] का न दुहराओ
लगा के जान की बाजी कदम बढाये हैं
यह राह कितनी ही पुरख़ार[३] है तो गम कैसा
कि हम तो शोलो पे चलकर यहा तक आये हैं

अज़ीम राहरवो[४]! है यह इर्तिका का सफर
फराज़े - वक्त[५] पे सूरज की तरह बढना है
दिलो की ज़ख्म नसीबी बजा सही लेकिन
गुबारे - राह को मरहम समझ के बढना है

नयी फजाएं, नयी जिन्दगी, नया माहौल
यह एहतिमाम जरूरी है दौरे - नौ[६] के लिए
निचोडनी है ज़िया[७] माहतावो - अजुम[८] की
हरएक शमअ की अफसूतराज़[९] लौ के लिए

यह कह रही हैं ज़माने की मुल्तजी[१०] नजरें
हकीकतो को नयी ज़िन्दगी अता कर दो

१६ रीति-रिवाज की पाबन्द, २० अर्थ, मतलब, २१. घटे की आवाज़।

इर्तिका का सफर

१. विकास, २ कठिन मजिल, ३ कटीली, ४. यात्रियो, ५. समय की ऊंचाई, ६. नया युग, ७ चमक, प्रकाश, ८ चाद-तारे, ९ जादू-भरी, १० प्रार्थी।

तकाज़ा है सहरे - ताज़ा की शुआओ का
हमारे जल्वो की पाइन्दगी अता कर दो

तडप रही हैं उमंगो की बिजलिया दिल मे
सितारे नाच रहे हैं दमकते माथो पर
अजाइम[११] अपनी बलन्दी पे नाजफरमा[१२] हैं
हयात करती है बैत हमारे हाथो पर

गमे - हयात के मारे हुओ ! न घबराओ
तुम्हारे होठो को हम मुश्तइल[१३] हंसी देंगे
उठो और उठ के करो सुब्हे-नौ का इश्तिकबाल[१४]
हम आफताब[१५] हैं दुनिया को रोशनी देंगे

मुस्तक़्बिल[१] के ख़्वाब

शमीम किरहानी

नमे - सबा[२] से न जोशे - नमू से है बेदार
चमन की खाक हमारे लहू से है बेदार
लहू जो विर्स ए - दिल[3] है अज़ीम माज़ी[४] का
लहू जो मौजे-नमू[५] है नखीले - हक[६] के लिए
लहू जो कातिबे - तारीखे - नौबहारा है
लहू जो हर्फे-अबद है वरक वरक के लिए

उसी लहू का तबस्सुम वह तलअते-सहरी[७]
जुलूसे-दीदा-ओ-दिल[८] जिसकी रहगुजर मे है

११ सकल्प, १२. गर्वित, १३ उत्तेजित, १४ स्वागत, १५ सूर्य।

मुस्तक़्बिल के ख़्वाब

भविष्य, २ आर्द्र हवा, ३ दिल का विरसा, ४ महान् भूत, ५ विकास की मौज, ६. सत्य
ा पौधा, ७ प्रभात-दर्शन, ८ दिल और आख का जुलूस।

लजामे - नैयरे - दौरा[९] है जिसके हाथो मे
वह शहसवारे - सहर[१०] मज़िले - बहार मे है

शरीके - जज्वः ए - मजिल[११] है वेशुमार कदम
मिला है जिनको तमन्ना का अज़्मे - सीमावी[१२]
नवैदे - कतए - मसाफत[१३] है कारवा के लिए
दिनो की कुल्फते[१४] - गुर्वत, शवो की वेख्वावी

सफर की राह कोई राहे - कहकशा[१५] तो नही
कदम कदम पे यहा सगे-राह मिलते हैं
मगर इसी रहे - ज़ुलमत[१६] मे, पा वरहना[१७] सही
अमीरे काफल -ए - महरो - माह[१८] मिलते है

नवाए-अम्न[१९] है वागे - दराए - अहले - सफर[२०]
नही पसन्द तशद्दुद[२१] का लहने - शोर आमेज[२२]
वह एक हर्फे - मुलाइम जिसे वफा कहिये
सदाए - तुन्दे - जरस[२३] से ज्यादा जौक अगेज[२४]

तमीज़े-वन्दा-ओ-आका[२५] न फर्के-रगो - नसव[२६]
यह इक जहाने - मुसावात[२७] है वशर के लिए
रवा है काफल. - ए - नौवहारे - जम्हूरी[२८]
जमी पे एक अवद आशना[२९] सहर के लिए

९. समय के सूर्य की लगाम, १०. सुवह के सवार, ११ मज़िल की भावना मे शरीक, १२. तडपता हुआ सकल्प, १३ रास्ता पूरा करने की खुशखवरी, १४ कष्ट, १५ आकाश गगा का मार्ग, १६ अन्धकार का मार्ग, १७ नगे पाव, १८ चाद-सूरज के काफले का सरदार, १९ शाति की आवाज, २० सहयात्रियो के घटे की आवाज, २१. हिंसा, २२ कोलाहलयुक्त गीत २३ घटी की तेज़ी की आवाज़, २४ अभिलापापूर्ण, २५ मालिक और सेवक का अन्तर, २६ रग और खान्दान का फर्क, २७ वरावरी की दुनिया, २८ गणतन्त्र की वहार का कारवा, २९ अन्तराल मे परिचित ।

पयाम

नाजिश परतावगढी

मिरा यकी, मिरा अज्म,[1] मेरी वेबाकी
मिरा ज़मीर[2]—अमानत है सुब्हे - फर्दा[3] की
मिरे खुलूसे - सुखन[4] को वचाके रखना मगर
मिरी हयात को हर्गिज न रहगुजर देना
मिरे कलम को मिरे साथ दफ्न कर देना
कि यह अजाव नयी नस्ल तक पहुच न सके

यह नौवहारे-वतन, ताज़ा वारदाने-चमन
सियाहियो का जिगर इनको चाक करना है
दिलो मे अज्मो - इरादे की रौशनी लेकर
सवारना है इन्हे आरिज़े - उरूसे - वतन[5]
मिजाजे - लाला - ओ - गुल की शिगुफ्तगी लेकर
सफर को जादा - ओ - सम्ते-सफर[6] की हाजत है
हयाते - कौम को खूने - जिगर की हाजत है

मैं चाहता हू मिरे वाद जो कलम उट्ठे
चमन की वात करे, गुल की दास्ता लिक्खे
हदीसे - हुस्न वहर्फे - दिल जवा लिक्खे
न यह कि मेरी नरह मेरे वाद भी शाइर
तमाम दर्दो - अज़ीयत की दास्ता लिक्खे
तमाम उम्र हिकायाते - खूचकां[7] लिक्खे
मैं इसलिए वसद इसरार[8] सवसे कहता हू
मिरी हयात को हर्गिज न रहगुज़र देना
मिरे कलम को मिरे साथ दफ्न कर देना
कि यह अज़ाव नयी नस्ल तक पहुच न सके

(इक्तिवास)

१ सकल्प, २ अन्त करण, ३ आगामी कल की सुवह, ४ कथन की निष्ठा, ५ वतन की दुल्हन के कपोल, ६ यात्रा का मार्ग और दिशा, ७ खून मे डूवी हुई कथा, ८ आग्रह करके।

वेदारिए-हिन्द

खलीलुर्रहमान आजमी

इस गुम्बदे-नीलगू[1] के नीचे
हर रोज़ खला[2] की वुसअतो[3] मे
रथ पर अपने सवार होकर
सूरज आता है और ज़मी के
चेहरे के नकूश हैं उभरते
किरनो मे नहा के हैं निखरते
असनामे-हसी[4] जिन्हे अजता
सदियो से है गोद मे छुपाये
पडती है यही शुआए-रगी[5]
साची के अज़ीम माबुदो[6] पर
रुकती है कुनारका के ऊपर
लेते हैं जहा पे सास अब भी
बन बन के बुताने-माह पैकर[7]
रेतीली ज़मी पे सर्द पत्थर
है देखती चश्मे-मरमरी से
करते हुए अश्के शबनमी को
टकराती है गाह यह जियाए[8]

मीनारो से इस मिनाक्शी के
उडती हुई बदलिया जहा पर
फैलाये हुए परो को अपने
डूबी हुई कुहर मे पडी हैं

मिटने की नही यह शानो-शौकत
बेमिस्ल यह पाक सरज़मी है

१ नीला गुम्बद—आकाश, २ शून्य, ३ फैलाव, ४ सुन्दर मूर्तियां, ५ रगीन किरण, ६ आराधना-घर, ७ चाद जैसे आकार वाली मूर्तिया, ८ चमक ।

इस साज़े-सुकूत[९] मे फसू[१०] है
बेदारिए-रूह पे सुकू है
उडता है हवा मे आज देखो
आज़ादिए-हिन्द का फरेरा

फिर अब्रे-करम[११] उठा है हर सू
भर जायेंगे कोहो-दश्तो-दरिया[१२]
प्यासा न रहेगा आज कोई
जी भर के पियेगी आज जनता
मजिल की तरफ चलो रफीको ![१३]
हर ज़र्रा है यह पयाम देता
हा आगे बढे चलो अज़ीजो
जिस सम्त नवाए-जिन्दगी हो
जिस सम्त कि अम्नो - शाति हो
यक जिहती-ओ-आश्ती[१४] हो जिस जा
हर इक को नसीब सरखुशी हो
जन्नत का रहे न हमको अर्मा
धरती इतनी बदल गयी हो
किस्सा न हो रामराज कोई
आंख अपनी अब इसको देखती हो
आशा के खिले हो फूल हरसू
हर सम्त वसन्त आ गया हो
हर रज को हम भुला चुके हो
दुख की तस्वीर मिट चली हो

आओ सुनो गीत अब खुशी के
दामोदर और महानदी के
रक़्सा है सदाए-बर्को-फौलाद[१५]
वीराने भी हो रहे हैं आबाद
पजाब हो याकि आन्धरा हो

९. निस्तब्धता का साज़, १०. जादू, ११. दया के बादल, १२ जगल और नदिया १३ दोस्तो, १४ एकता और दोस्ती, १५ बिजली और फौलाद।

दुर्गापुर हो कि हो भिलाई
हर सिम्त मशीन गा रही हो
आया अब अहदे-आहनी[१६] है
दोशीज.ए-कुहसार[१७] भी अब
दुल्हन की तरह से सज रही है
माथे पे चमक रहा है झूमर
सचमुच की कोई यह लक्ष्मी है
लब पर नही कोई आहो-फरियाद
अब गम की बिसात उठ रही है

कदमो मे है अपने फत्हो-नुसरत[१८]
हर लहज़ा है जश्न अहदे-नौ[१९] का
लहराती है बंसरी की तानें
आखो मे बसा है फिर कन्हैया
अगियार[२०] का हाल अब ज़ूबू[२१] है
जो अपना अदू[२२] है सरनिगू[२३] है
जागो जागो मिरे रफीको!
सूरज निकला है इस की किरनें
अपनी रूहो मे आज भर लो
हाथो मे अब अपने जाम उठाओ
इस जाम मे हुर्रियत[२४] की मै है
जी भरके उछालो और पी लो
यह कैसी हवाए चल रही हैं

अब दूर नही वह लम्हःए-ऐश
वीरानो के भाग फिर खुलेंगे
टप टप टपकेंगी रस की बूदें
बरखा अमृत की खूब होगी

(उडिया से अनुवाद)

१६. दृढ सकल्प, १७ पहाडी कुमारी, १८ विजय, १९ नया युग, २० दुश्मन, २१ बुरा, २२ दुश्मन, २३ नतमस्तक, २४. आज़ादी।

ज़मीमा (परिशिष्ट)

हमारे कौमी रहनुमा

सुल्तान शहीद

सीमाब अकबराबादी

पूछ अय मैसूर अपने माज़िए-जौनाक[1] से
बरहना शमशीर[2] इक चमकी थी तेरी खाक से

अय सरगापटम अय महदे-कमाले-हैदरी[3]
है अमानत तुझमे तस्वीरे-जलाले-हैदरी[4]

वह शहीदे-ज़ौके-आज़ादी, वह गाज़ी वह जवा
जो बदलना चाहता था नक्श ए-हिन्दोस्ता

जिनकी नज़रो मे वतन का हालो-इस्तिक्बाल[5] था
जो दकन की गोद मे इक आतिशे-सैयाल[6] था

अय शहीद अय मर्दे-मैदाने-वफा तुझ पर सलाम
तुझ पे लाखो रहमतें, लाइन्तिहा[7] तुझ पर सलाम

उड रहे है आज जो माहौल मे सैलाव के
यह भी कुछ ज़र्रे है तेरी खाके-आतिश ताव के

आह, कैसा बागवा शामे-चमन ने खो दिया
अपने हाथो खुद तुझे अहले-वतन ने खो दिया

आहनी पैकर[8] तिरा अब हाथ आ सकता नही
लेके मश्अल भी कोई ढूंढे तो पा सकता नही

ऐन बेदारी है यह ख्वावे-गरां[9] तेरे लिए
है शहादत इक हयाते-जाविदा[10] तेरे लिए

आ, फिर अरबावे-वतन[11] की मुश्किलें आसान कर
फिर शरीके-जंगे-आज़ादी हो, सीना तान कर

१ उज्ज्वल भूतकाल, २ नंगी तलवार, ३ हज़रत अली की बहादुरी के कमाल का पालना, ४ हैदरी जलाल की तस्वीर, ५ स्वागत, ६ बहती हुई आग, ७ असीम, ८ लोहे की आकृति, ९ गहरी नींद, १० अमर जीवन, ११ देशवासी ।

टीपू सुल्तान

इज्तवा रिजवी

नज़र से आज जो गुज़री हैं चद तस्वीरें
वह दिल पे नक्श हैं जैसे लहू की तहरीरें

वसी है जगे-सरगा पटाम आखो मे
किसी शहीद पे साया किये हैं शमशीरें

गुलाम कौम तुझे कुछ हया भी आती है
है तेरे चाद पे खाक अफगनी[1] की तदवीरें[2]

तिरा चराग सरे-शाम बुझ गया, लेकिन
सहर के भेस मे फैलेंगी इसकी तन्वीरें[3]

मिरे शहीद ! तिरे नामे-पाक से कौमे
करेंगी आयःए-हुव्वे-वतन की तफ्सीरें

पयामे-सई-ए-सरफराज़िए-वतन[4] है तू
शहीदो-गाज़ी-ओ-जर्रारो-सफशिकन[5] है तू

सियासते-वतनी की फज़ा थी जहर आलूद[6]
हवाए-गर्व[7] थी नासाजगारो-ना मसऊद[8]

सवाहे-दौलते-तैमूरिया की आई थी शाम
पडा था नैयरे-इकवाले-हिन्द[9] सर वसजूद[10]

गुलो को लोरिया देता था एतवारे-वहार[11]
चमन मे सब्ज़ए-वेगाना पा रहा था नुमूद[12]

१ धूल फॅकना, २ उपाय, ३ प्रकाश, ४ वतन के सर उठाने की कोशिश का सन्देश, ५ शहीद, गाज़ी और वहादुर, ६. जहर मे सना हुआ, ७ पश्चिम की हवा, ८ अशुभ और प्रतिकूल, ९ हिन्द के प्रताप का सूर्य, १० सजदे मे, ११ वहार का विश्वास, १२. आविर्भाव ।

है तेरे बाद तेरी याद इफ़्तिख़ारे-वतन[13]
तिरा मज़ार है शमए-सरे-मज़ारे-वतन

पुकारती हैं सरगापटम की दीवारें
कि हम को याद हैं वह गोलिश्रो की बौछारें

दहन कुशादा[14] हैं चोटो के घाव क्या मालूम
यह कब हमीयते हुब्बे-वतन[15] को ललकारें

शहीद जिन्द ए-जावेद[16] हैं वही सावंत
जो नामे-पाके-वतन[17] पर लड़ें, मरें, मारें

इस एक जाने-गरामी[18] पे लाख जा सदके
इस एक मौत पे सौ उम्रे-जाविदा[19] सदके

टीपू की आवाज़

आले अहमद सुरूर

गो रात की जबी[1] से सियाही न धुल सकी
लेकिन मिरा चराग बराबर जला किया

जिससे दिलो मे अब भी हरारत[2] की है नमूद[3]
बरसो मिरी लहद[4] से वह शोला उठा किया

फीका है जिसके सामने अक्से जमाले-यार[5]
अज़्मे-जवा[6] को मैंने वह गाजा[7] अता किया

१३ देश का गर्व, १४ फैला हुआ मुह, १५. देश-भक्ति की गैरत, १६ अमर शहीद, १७ देश का पवित्र नाम, १८ आदरणीय व्यक्ति, १९ अनश्वर आयु।

टीपू की आवाज

१ ललाट, २ गर्मी, ३ आविर्भाव, ४ कब्र, ५ प्रेमिका के सौंदर्य का प्रतिबिंब, ६ दृढ सकल्प, ७ पाउडर।

मेरे लहू की वूद मे गल्ता[८] थी विजलिया
खाके-दकन[९] को मैंने शरर आशना[१०] किया

साहिल की आख मे मगर आई न कुछ नमी
दरिया मे लाख लाख तलातुम हुआ किया

ख्वावे-गरा[११] से गुचो की आखें न खुल सकी
गो शाखे-गुल से नग्मा वरावर उठा किया

यह वज्म ऐसी सोई कि जागी न आज तक
फितरत का कारवा है कि आगे वढा किया

मारा हुआ हू गो खलिशे-इन्तिज़ार[१२] का
मुश्ताक आज भी हूं पयामे-वहार का

चांद सुल्ताना

अफसर सीमावी अहमदनगरी

उख्वत[1] के परस्तारो की इक रगी दुनिया थी
हरीमे - नूरो - नग्मा,[2] वज्मे - नाहीदो - सुरैया[3] थी

वह दुनिया शमए-आज़ादी के परवानो की वस्ती थी
जहा फितरत सवरती थी, जहा मस्ती वरसती थी

वह दुनिया जिन्दगी के फूल वरसाती हुई दुनिया
मुलाइम नुज्हतो[4] की रक्स फरमाती हुई दुनिया

जहा इक सांस भी लेने से घवराते थे हगामे
जलाले-वेग्रमा[5] से डर के सो जाते थे हगामे

८ डूबी हुई, ९ दक्खन की धूल, १० आग से परिचित, ११ गहरी नीद, १२ इतिजार की चुभन।

चांद-सुल्ताना

१ वरावरी, २ प्रकाश और गीत की चहारदिवारी, ३ नाहीद और सुरैया की वज्म (शुक्रग्रह और परवीन), ४ कोमल पवित्रता, ५ प्रताप।

वह दुनिया रश्के-फिर्दौसे - बरी[६] मालूम होती थी
खुदा का शाहकारे-बेहतरीं[७] मालूम होती थी

जहा इश्को-जुनू[८] हुस्नो-वफ़ा की राजधानी थी
महब्बत मसनद आरा थी, महब्बत पर जवानी थी

जहा ईसारो-खुद्दारी[९] के परचम लहलहाते थे
जहा मासूम बच्चे मौत से आंखें लडाते थे

मुसलसल बाद ए-आसूदगी[१०] के दौर चलते थे
लहू से परवरिश पाये हुए अर्मा निकलते थे

अदू जिसका खराबे-गम,[११] शिकारे-नामुरादी[१२] था
हर इक साहिल नशी जासोज़ तूफानो का आदी था

वही गुलशन अब इक वीरान ए-आबाद है गोया
गिलाफे-साज़ मे लिपटी हुई फरियाद है गोया

अभी किले की दीवारो मे वह अनवार[१३] बाकी हैं
तिरे ज़ौके-तपिश[१४] के मुज्महिल[१५] आसार बाकी है

यह दीवारे तिरी जुरअत[१६] का अफसाना सुनाती हैं
हनोज़[१७] इनमे हिमाला की अदाएं पाई जाती हैं

हनोज़ उन सरफरोशो के तराने हैं फज़ाओ मे
तिरी आवाजे-पा[१८] महफूज़ है अब तक हवाओ मे

दिले-वीरा को मुद्दत से है तेरा इन्तिजार आ जा
खुदारा अय बहादुर इन्किलाबी शहसवार आ जा

६ स्वर्ग से अधिक सुदर, ७ सर्वश्रेष्ठ शाहकार, ८ प्रेम उन्माद, ९ राजगद्दी पर आसन जमाये हुए, १० तृप्त कर देने वाली मदिरा, ११ ग़म मे बर्बाद, १२ दुर्भाग्य का शिकार, १३. प्रकाश, १४ अभिलाषा की आग, १५. कमजोर, १६ साहस, १७ अभी तक, १८ पैरों की आहट।

बहादुरशाह ज़फ़र

अर्श मलसियानी

सुवह फर्गाना[1] मे थी और हुई रगून मे शाम
आले-तैमूर[2] की आशुफ्ता सरी[3] तुझको सलाम

लम्ह ए-आखिरे - खुर्शीद[4] सिराजुद्दीन था
मक्तःए-दर्द[5] फजाए-गज़ले - रगीन था

वह शहे-नेक नफस, नेक नसव, नेक नज़ाद[6]
वह शहे-नेक नज़र, नेक निशा नेक निहाद[7]

पैकरे-खुल्को-वफा,[8] खूगरे-आमाले - हसन[9]
खुसरवे-फिक्रे-रसा,[10] वादशहे-फहमो फतन[11]

साहिवे-तर्जे - नवी,[12] मालिके - अन्दाजे कुहन[13]
फख्रे-दी,[14] फख्रे-ज़मी, फख्रे-ज़मा, फख्रे-जमन

लाल किले का वह सूफी, वह महव्वत का अमी[15]
जिसकी मिट्टी से भी महरूम है दिल्ली की ज़मी

मर्दे-दरवेश शराफत का गुनहगार भी था
पारसा रिन्द भी था शाइरे-दीदार भी था

जिसका दरवार था इक मजमए-आली नफसा[16]
जिस जगह कौसरो-तस्नीम[17] से ढलती थी ज़वा

१ एक शहर (वावर का जन्म-स्थान), २ तैमूरलग की सतान, ३ सरफिरापन, ४ सूर्यास्त का समय, ५ दर्द का अन्त, ६ शरीफ नस्ल, ७ अच्छी आदत वाला, ८ शील और वफा की मूर्त्ति, ९ अच्छे कामो का आदि, १० दीर्घ चितन का वादशाह, ११ विवेक का वादशाह, १२ नये तर्ज का देने वाला, १३. पुराने अदाज का माहिर, १४. दीन का गौरव, १५ अमानतदार, १६ श्रेष्ठ नफस वालो का जमघट, १७ जन्नत की नहरें।

मर्तबादाने - अदीबानो - हकीमाने - वतन[१८]
हम नशीने - शुअराहओमादानो - हमाफन[१९]

गालिबो-ज़ौक के अफ़्कार[२०] का वह कद्र शनास
जिसको था मोमिनो-आर्ज़ू की अज़मत का पास

जिसके अशआर से आती थी उखूवत[२१] की निदा[२२]
साज़े-हिन्दी की नवा, नग्मःए-उर्दू की सदा

मुश्किल अस्नाफ़े-सुखन जिसके लिए थे आसा
जिसको कहते है ज़मीनो का शहे-अर्श निशा

जब बिदेसी की हुकूमत से ज़मी तग हुई
इसी काइद[२३] की कयादत मे बडी जंग हुई

न हुआ गर्चे जफरमन्दो - जफरयाब[२४] मगर
फलके-हिन्द पे ताबिन्दा है अज नामे-ज़फर

लक्ष्मीबाई

मख़्मूर जालन्धरी

जिनका दिल दर्द का सर चश्मा है गहवारा है
जिनका आसू फकत आसू नही सैयारा[१] है

हमदमी जिनकी बहारो की सहर होती है
हमरही जिनकी सितारो की सहर होती हैं

१८ देश के हकीम, अदीब और प्रतिष्ठित, १९ शाइरो के साथ बैठने वाला, हर फन का जानने वाला, २० चिंतन, २१ बराबरी, २२ आवाज, २३. नेता, २४ विजयी ।

लक्ष्मीबाई

१ नक्षत्र ।

जिनके अफ़कार शरारे[2] नही शबनम के गुहर[3]
जिनका आदर्श अंधेरा नही राहत की सहर

जिनकी तख़लीक[4] मे गम, गम भी ख़िरदमन्दी[5] का
जिनकी तामीर[6] मे एहसास चमनवन्दी का

जिनका पैगाम तबस्सुम ही तबस्सुम हर सू
जिनकी आवाज तरन्नुम ही तरन्नुम हर सू

उनसे गेसू भी परेशा नही देखे जाते
चाके-दिल दीद ए-गिरिया[7] नही देखे जाते

उनने उजडा हुआ गुलशन नही देखा जाता
वर्क की ज़द मे नशेमन नही देखा जाता

जिस्म पर बन्दे-सलासल[8] नही देखा जाता
शहद मे ज़हरे-हलाहल नही देखा जाता

उनसे बेदादो-शकावत[9] नही देखी जाती
ज़ेरे-पा फूल की मैयत नही देखी जाती

चूर जख्मो से सरापा नही देखा जाता
ख़ूने-नाहक का तमाशा नही देखा जाता

उनमे तौहीने-सदाकत[10] नही देखी जाती
उनमे इसाफ की ज़िल्लत नही देखी जाती

जब कोई जुल्म के अम्बार लगा देता है
दोस्त दुश्मन के लबादे मे दगा देता है

रूहे-आज़ाद को सूली पे चढा देता है
जब कोई माग का सिंदूर मिटा देता है

२ चिंगारी, ३ मोती, ४ रचना, ५ बुद्धिमानी, ६ निर्माण, ७ अश्रु-भरी आख, ८ जंजीरो का बधन, ९ अन्याय और अत्याचार, १० सत्य का अपमान ।

लब तक आई हुई फरियाद दबा देता है
जब कोई आतिशो-आहन को हवा देता है

हुस्न है नूरो-ज़िया,[११] हुस्न है खुर्शीदो-कमर[१२]
हुस्न है सब्ज़ा-ओ-गुल हुस्न है बर्ग और समर[१३]

हुस्न है अज्मो-अमल हुस्न है वर्क और शरर
हुस्न है शामे-अवध हुस्न बनारस की सहर

हुस्न है प्यार की तारो भरी इक राह गुजर
हुस्न है सज्दे का नज़राना दरे-उल्फत पर

हुस्न है जज्बःए-ईसार[१४] का रौशन पैकर
हुस्न है फिक्र की परवाज़े-नजर[१५] का शहपर[१६]

लक्ष्मी बाई तिरे हाथ मे तेग और सिपर[१७]
हुस्न की सारी रिवायात की थी सिलके-गुहर[१८]

तेरी यलगार[१९] मे तामीर[२०] थी तखरीब[२१] न थी
तेरे ईसार[२२] मे तर्गीब[२३] थी तादीब[२४] न थी

तेरी तल्वार पे खूने-दिले-मजलूम न था
तेरे राहवार की ज़द मे कोई मासूम न था

हुर्रियत[२५] थी तिरे इक्दाम मे तहकीर न थी
मुज़्दःए-जहदे-बका[२६] थी तिरी शमशीर न थी

सरकशी तेरी कोई हिर्से-फुतूहात[२७] न थी
गारते-जुल्म[२८] थी नामावरे-आफ़ात[२९] न थी

तेरी यलगार तिरी अज्मते-देरीना[३०] है
तेरी पैकार इस आदर्श का आईना है

कोई औरत जो नज़ाकत मे कवल होती है
वक्त आ जाये तो दुश्मन की अजल[३१] होती है

११ प्रकाश और चमक, १२ चाद-सूरज, १३ पत्ता और फल, १४ कुर्बानी की भावना, १५ नज़र की उड़ान, १६ परिन्दे के बाज़ू का सबसे मजबूत पर, १७. ढाल, १८ मोती का धागा, १९ हमला, २० निर्माण, २१ विनाश, २२ कुर्बानी, २३. उपदेश, २४ सज़ा देना, २५ आज़ादी, २६. अमरता के सघर्ष की खुशखबरी, २७ विजय का लोभ, २८ अत्याचार का नाश करने वाली, २९ विपत्तियो की सदेशवाहक, ३०. पुरानी प्रतिष्ठा, ३१ मौत।

झांसी की रानी

राही मासूम रजा

नागहा[1] चुप हुए सब, आ गयी बाहर रानी
फौज थी एक सदफ,[2] उसमे थी गौहर[3] रानी
मतलए - जहद[4] पे थी गैरते - अख़्तर[5] रानी
अज़्मे - पैकार[6] मे मर्दों के बराबर रानी

है भला जग से यह शौके मुलाकात[7] कहा
किसी चलती हुई तल्वार मे यह बात कहा

आ गये शमए - शुजाअत[8] के करी[9] परवाने
दिल मे तूफान हैं कैसे, यह कोई क्या जाने
खायेंगे आज जराहत[10] की हवा, दीवाने
आज तारीख को मिल जायेगे कुछ अफसाने

अगले वक्तो का जो किस्सा कोई दुहराता है
सबका कब्ज़े की तरफ हाथ चला जाता है

रानी कहती है कि यह बात तो मैं जानती हू
जैसा तुम कहते हो वैसा ही तुम्हें मानती हू
मैं तो इन हाथो को इक अर्से से पहचानती हू
तुम भी वाकिफ[11] हो, वही करती हू जो ठानती हू

सर उठाये हुए आऊगी, अगर आऊगी
वरना लडते हुए मैदान मे मर जाऊगी

फस्ले - गुल शेरो से शर्मा गयी, मौसम बदला
सावले चेहरो पे धूप आ गयी, मौसम बदला
एक खुशरग घटा छा गयी, मौसम बदला
मौत ऐवानो से शरमा गयी, मौसम बदला

१ सहमा, २ सीप, ३ मोती, ४ सयर्य के उदय होने का स्थान, ५ तारो को शरमाने वाली, ६ युद्ध का संकल्प, ७ मिलने की अभिलाषा, ८ बहादुरी की शमा, ९ निकट, १० जख्म, ११. परिचित।

इब्तिदा गौस[१२] ने की, उसको वजा नाज़ हुआ
"घन गरज"[१३] कहने लगी जग का आगाज़ हुआ

यह लडाई तो है बस काम जिगर वालो का
मुह खुला रह गया हैरत से नजर वालो का
हौसला देखिये इन रहगुज़र वालो का
शबे - अफरंग[१४] पे हमला है सहर वालो का

जख्म खिल उट्ठे हैं, जिस सम्त नज़र जाती है
फौज झासी की नही बादे-सहर[१५] जाती है

कई रातो की सहर आई, लडाई न रुकी
दोपहर बारहा कजलाई, लडाई न रुकी
वक्त लेता रहा अगडाई, लडाई न रुकी
मौत की काली घटा छाई, लडाई न रुकी

राह है एक, जवा और मुसिन[१६] गुजरे हैं
एक सी रातें हुईं, एक से दिन गुज़रे है

दूर इक रोज़ हुआ इक तुतुके - गर्द[१७] बलन्द
क़िले वालो पे कई दिन से थी हर राह जो बन्द
देख के गर्द का बादल, हुई हिम्मत दो चन्द
शौक से फेंकी हर इक शख्स ने नजरो की कमन्द

खिल उठी दिल की कली, ऐसी हवा आने लगी
तातिया टोपे के नारो की सदा आने लगी

खलबली पड गयी गोरो मे, वह जर्रार[१८] आया
जिसकी चालाकी है मशहूर वह सालार[१९] आया
लो सजाने के लिए मौत का बाजार आया
नक्दे-जा लेके वह मँदा का खरीदार आया

अब बिगड जायेगी इस जग की सूरत मानो
सर जो काधो से न भागें तो गनीमत जानो

१२ रानी झासी का एक सरदार, १३ एक तोप का नाम, १४ अग्रेजो की रात, १५ सुबह की हवा, १६ वृद्ध, १७ धूल का भवर, १८ वीर, महान्, १९ सेनापति ।

गोरे सरदारो ने मौके की नजाकत देखी
तातिया टोपे के हमराह कयामत देखी
रज्मगह[20] मे थी लडाई की जो हालत देखी
यूनियन जैक की आती हुई शामत[21] देखी

तातिया आ गया, अब कोई सहारा न रहा
लडके मरने के अलावा कोई चारा न रहा

जीत कर हो गयी अग्रेजो की हिम्मत दोचन्द[22]
गोरे सीनो मे हुई दिल की हरारत[23] दोचन्द
यक बयक हो गयी रफ्तारे-कयामत[24] दोचन्द
किलेवालो मे हुआ जोशे-शहादत दोचन्द

जान देकर उन्हे मरने का करीना आया
मौत के माथे पे दहशत से पसीना आया

एक दर पर किया गद्दारो ने आखिर कब्जा
उसी दरवाजे से अग्रेजो ने हल्ला बोला
उनमे आगन लडे, कमरे लडे, दालान लडा
अब बहुत गर्म है रानी, तिरी झाँसी की हवा

चल यहा से, यहा रुकने मे भलाई नही अब
क्या फिरगी ने कही और लडाई नही अब

अय फरेरे[25] की हवा, तुझ से बिछडती हूँ मैं
मेरी मानूस[26] फजा, तुझ से बिछडती हू मैं
देख तो हाल मिरा, तुझ से बिछडती हू मैं
रुखसत अय शहरे-वफा, तुझ से बिछडती हू मै

मुन्दमिल[27] जख्मे-गरीबुलवतनी[28] हो कि न हो
क्या पता रास्ते मे छाव घनी हो कि न हो

आज बेजान है झासी की हर इक जिन्दा गली
है किसी कुचले हुए नाग की मानिन्द पडी

२० युद्ध-स्थल, २१ मौत, २२ अधिक, २३ गर्मी, २४ प्रलय की गति, २५ झडा, २६ परिचित, २७ भरना, २८ विदेश का जख्म।

न किसी ताक मे परवाना, न आगन मे हसी
डमरू वाला है किधर, कुछ तो कहो पार्वती

धूल सी उडती है ज़िहनो के शबिस्तानो[२९] मे
देवता भी नही मौजूद सनमख़ानो[३०] मे

चमक आवेजो की, चूडी की खनक जलती है
लोरिया जलती हैं, कुन्दन की दमक जलती है
कही पैराहने - यूसुफ की महक जलती है

लक्ष्मीबाई नही अब यहा हुशियार रहो
अब यह सर रोज़[३१] की झासी है खबरदार रहो

अय खज़फरेजो,[३२] ज़रा राह से हो जाओ परे
अय जमी ! लक्ष्मीबाई है इसे रास्ता दे
आस्मा देख शहाबो[३३] की भी मशअल न जले
अय शबे - तार[३४] ! खबरदार, अधेरा ही रहे

लक्ष्मीबाई ज़रा घोडे को महमेज़[३५] करो
अपनी रफ्तार को अब तेज़ बहुत तेज़ करो

है तआकुब[३६] मे फिरगी का रिसाला, हुशियार
रास्ते मे भी लडाई के हैं इम्कान[३७] हज़ार
यह ज़माना तिरी जुरअत[३८] तिरी सौलत[३९] पे निसार
लक्ष्मीबाई तू इस वक्त है दुर्गा अवतार

अपनी कीमत को ज़रा जान ले कमयाब[४०] है तू
मादरे - हिन्द की तारीख का इक बाब है तू

अय फरस तुझ पे है अजाम का अब दारोमदार
पीछे बूकर का रिसाला है, जरा रह हुशियार
बढा कि दुनिया के वफादारो मे हो तेरा भी शुमार
तेरी रफ्तार पे शाइर का तख़ैयुल[४१] भी निसार

२९. शयनागार, ३० मदिर, ३१ अग्रेजसेनापति, ३२ धूल के कण, ३३. उल्का, ३४. अधेरी रात, ३५ घोडे को एड देने का काटा जो सवारो की एडी में लगा रहता है, ३६. पीछा, ३७ सम्भावना, ३८ साहस, ३९ जलाल, ४० दुर्लभ, ४१ कल्पना ।

है यही फिक्र कि पहुंचाये इसे जल्दी से
तेरा तो पेट मिला जाता है पगडण्डी से

पहले आवाज थी, फिर दूर उठा एक गुबार
और फिर उससे बरामद हुए अंग्रेज सवार
रानी ने अपने वफादारो को देखा इक बार
और फिर सूत के तलवार हुई वह तैयार

चोट वह खाई, तआकुब[४२] का नशा टूट गया
पहले ही वार मे सरदार[४३] का जी छूट गया

दोपहर आई, गयी, शाम हुई, रात आई
दिल मे रानी के न दम लेने की पर बात आई
कालपी जाग कि तेरे लिए सौगात आई
मुन्तजिर जिसका था तू, देख कि वह जात आई

दुर्गा आई है, बअन्दाजे-दिगर[४४] आई है
कह दो दरवाजो से जागें कि सहर आई है

पेशवाओ की रिवायत[४५] ने भी बाधा है कफन
और यह नव्वाब हैं बादे के, जबी पर है शिकन
यह है झासी की मुसाफिर कि नही जिसको थकन
तातिया टोपे है बेचैन, पडे फिर कोई रण

यह बहादुर भी अब इक बार बहम निकलेंगे
कालपी से भी बगावत के अलम निकलेंगे

कालपी मे भी मगर जम न सके उनके कदम
अपने हिस्से मे वहा भी रहा बस हार का गम
आफतावो के हुए सरसरे - मैदान कलम
सरनिगू फिर भी न हो पाया बगावत का अलम

मौका आता है, पे यह सुन ले कि कम आता है
ग्वालियर उठ, तिरी जानिब से अलम आता है

४२ पीछा, ४३ एक अंग्रेज सेनापति (रूकर), ४४ नये ढग से, ४५ परम्परा।

सिंधिया ने जो चपोरास्त[४६] की ली अपने खबर
देखी बदली हुई खुद अपनी ही फ़ौजो की नज़र
जग के नाम पे हर इक था झुकाये हुए सर
याद आई उसे तब आगरे की राहगुज़र

वक्त था सख्त बहुत थोड़े से गद्दारो पर
झासी वालो ने उन्हें रख लिया तल्वारो पर

ग्वालियर ! देख फिरंगी का निशा आ पहुचा
सिंधिया के लिए सर रोज़ यहाँ आ पहुचा
अपनी तोपें लिए वह शोला, ज़बा आ पहुचा
दामने-निकहते-गुल तक वह धुआ आ पहुचा

चलो मैंदा मे गुलिस्ता की हिफाज़त के लिए
हा उठो फस्ले-बहारां की हिफ़ाज़त के लिए

गुल हुआ रानी ने तलवार निकाली, भागो
वार रानी का है, जायेगा न खाली, भागो
टालने से न अजल[४७] जायेगी टाली, भागो
सबसे कहती है यह बहती हुई लाली, भागो

याद इस तेग को है मारने के कितने हाथ
एक मकतब मे रही है मलेकुल मौत[४८] के साथ

जिस तरफ तेग का मुह उठ गया आफत आई
ज़ख्मो के फूल खिले फ़स्ले-जराहत[४९] आई
जो भी सर उठ गया, उस सर पे मुसीबत आई
लाश पर लाश गिरी, एक कयामत आई

काश हर मोर्चे पर लक्ष्मी बाई होती
तब फिरंगी से बराबर की लड़ाई होती

४६ दाहिने-बायें, ४७. मौत, ४८ मौत का फरिश्ता, ४९ ज़ख्मो की फस्ल ।

यह वह रानी है जिसे अपना नही है कोई गम
जख्म के वास्ते बहता हुआ खू है मरहम
उसने मैदान मे लड मरने की खाई है कसम
साथ वाले गो हर इक हमले मे हो जाते है कम

लाशें जब देखती है अपने वफादारो के
और बढ जाती है यह साये मे तलवारो के

जख्मे-सर[५०] बाध ले, इतनी इसे फुर्सत ही नही
देख ले मुडके कभी, इसकी यह आदत ही नही
यह समझती है कि पीछे कोई आफत ही नही
अब किसी मोर्चे पे हार की सूरत ही नही

पर फिरंगी ने जवा मर्दो का मुह फेर दिया
मोर्चा तोड लिया, लक्ष्मी को घेर लिया

मुट्ठी भर लोग मगर भाग के जायेंगे कहा
ग्वालियर दूर है, रुक कर उसे अब देखें जहा
पास हर लहजा चला आता है गोरो का निशा
रानी ने रुक के कहा एक लडाई हो यहा

अपनी तारीख[५१] को हम लाशो से आबाद रखें
वह लडाई हो कि अग्रेज जिसे याद रखें

एक इक करके अदा कर गये सब हक्के-वफा[५२]
अब फिरगियो के मजमे मे है रानी तन्हा
माना अग्रेज ने तलवार का उसकी लोहा
हाथ उसके न रुके, और न सर उसका झुका

लडती इस शान से है लडते है अफसर जैसे
मुतमइन[५३] यू है कि हमराह हो लश्कर जैसे

५०. सर का घाव ५१ इतिहास, ५२ वफ़ा का हक, ५३ निश्चित ।

नागहां पुश्त[५४] की जानिब से किया एक ने वार
सर पे रानी के पडी धोके से कारी तलवार
दाहिनी आंख तलक पहुंची जो तलवार की धार
बेखबर हो गया अब अपनी सवारी से सवार
सीने पर जख्म लगा घोडे पे समला न गया
गिरके भी हाथ से तलवार का कब्जा न गया

अय जमी देख तिरी सम्त यह कौन आता है
तुझमे यह किसका लहू जज्ब[५५] हुआ जाता है
जंग के शोर मे सन्नाटा सा सन्नाटा है
यह फरेरा है कि लाशा है, यह आखिर क्या है
हम न इसको कभी यू जा से गुज़रने देंगे
हम इसे याद बना लेंगे, न मरने देंगे

इन्तिज़ार इसका है फर्दा[५६] के परीखानो[५७] को
एक बाब और मिला, जहद के अफसानो को
रोकता मैं नही आखो के छलक जाने को
भर ले इस चीज से अब शेर के पैमाने को
टूटकर बरसेगी, यह ऐसी घटा है शाइर
अब तो उस जंग का आगाज हुआ है शाइर

५४ पीठ, ५५ शुष्क, ५६ कल (आगामी), ५७ सुन्दरता का घर।

पयामे-वफ़ा

(मिसेज़ बेसेन्ट की खिदमत मे)

ब्रजनारायण चकबस्त

हिन्द बेदार हुआ यु तिरी बेदारी से
जैसे बरसो का मरीज़ उठता है बीमारी से
कौम आजाद हुई तेरी गिरफ्तारी से
चादनी फैल गयी हुस्ने-वफादारी से

तू नज़रबन्द है जल्वा है तिरा हर घर मे
शमअ फानूस मे है नूर है महफिल भर मे

हुक्म हाकिम का है फरियादे-जवानी रुक जाये
दिल की बहती हुई गगा की रवानी रुक जाये
कौम कहती है हवा बन्द हो, पानी रुक जाये
पर यह मुम्किन नही अब जोशे-जवानी रुक जाये

हो खबरदार जिन्होने यह अजीयत[1] दी है
कुछ तमाशा यह नही कौम ने कर्वट ली है

आज से शौके-वफा[2] का यही जौहर होगा
फर्श काटो का कही फूलो का बिस्तर होगा
फूल हो जायेगा छाती पे जो पत्थर होगा
कैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा

संतरी देख के इस जोश को शरमायेंगे
गीत जजीर की झकार पे हम गायेंगे

1 कष्ट, 2 वफ़ा की अभिलाषा।

बालगंगाधर तिलक

ब्रजनारायण चकबस्त

मौत ने रात के पर्दे मे किया कैसा वार
रौशनी सुब्हे-वतन की है कि मातम का गुबार[1]
मारिका सर्द है, सोया है वतन का सरदार
तनना शेर का बाकी नही सूनी है कछार

बेकसी छाई है तकदीर फिरी जाती है
कौम के हाथ से तलवार गिरी जाती है

उठ गया दौलते-नामूसे-वतन[2] का वारिस
कौमे - मरहूम के एजाजे-कुहन[3] का वारिस
जानिसारे - अजली[4] शेरे-दकन का वारिस
पेशवाओ के गरजते हुए रण का वारिस

थी समाई हुई पूना की बहार आखो मे
आखरी दौर का बाकी था खुमार आखो में

मौत महाराष्ट्र की या तिरी मरने की खबर
मुर्दनी छा गयी इसान तो क्या पत्थर पर
डालिया झुक गयी, मुर्झा गये सहरा के शजर[4]
रह गये जोश मे बहते हुए दरिया थमकर

सर्दो-शादाव[5] हवा रुक गयी कुहसारो की
रौशनी घट गयी दो चार घडी तारो की

१ शोकालाप का अधेरा, २ देश के सम्मान की दौलत, ३ प्राचीन चमत्कार, ४ वृक्ष, ५ ठडे और हरे-भरे।

था निगहवाने-वतन[६] दवदव ए-श्राम[७] तिरा
न डिगें पाव यह था कौम को पैगाम तिरा
दिल रकीवो[८] के लरजते थे यह था काम तिरा
नीद से चौंक पडे सुन जो लिया नाम तिरा

याद करके तुझे मजलूमे-वतन[९] रोयेंगे
वन्द.ए-रस्मे-जफा[१०] चैन से अव सोयेंगे

जिन्दगी तेरी वहारे-चमनिस्ताने-वफा
श्रावरू तेरे लिए कौम से पैमाने-वफा
श्राशिके-नामे-वतन कुश्त ए - श्रर्माने-वफा
मर्दे-मैदाने-वफा, जिस्मे-वफा जाने-वफा

हो गयी नज्रे-वतन हस्तिए-फानी[११] तेरी
न तो पीरी[१२] रही तेरी न जवानी तेरी

श्रौजे-हिम्मत[१३] पे रहा तेरी वफा का खुर्शीद
मौत के खौफ पे गालिव रही खिदमत की उमीद
वन गया कैद का फर्मान भी राहत की नवैद[१४]
हुए तारीकिए-जिन्दा[१५] मे तिरे वाल सपेद

फिर रहा है मिरी नजरो मे सरापा[१६] तेरा
श्राह वह कैदे-सितम श्रौर वुढापा तेरा

मोजिजा[१७] श्रश्के-महव्वत[१८] का दिखाया तूने
एक कतरे से यह तूफान उठाया तूने
मुल्क को हस्तिए-वेदार वनाया तूने
जज्व ए-कौम के जादू को जगाया तूने

६ सरक्षक, ७ जलाल, प्रताप, ८ दुश्मन, ९ देश के पीडित, १० श्रत्याचारी, ११ नश्वर श्रस्तित्व, १२ वुढापा, १३. हिम्मत की चरम सीमा, १४ शुभ सूचना, १५ जेलखाने का श्र धेरा, १६ श्राकार, १७ चमत्कार, १८ प्रेम के श्रासू।

इक तडप आ गयी सोते हुए अर्मानो मे
बिजलिया कौंद गयी क़ौम के वीरानो मे

लाश को तेरी सवारें न रकीबाने-कुहन[19]
हो जबी के लिए सन्दल की जगह खाके-वतन
तर हुआ है जो शहीदो के लहू से दामन
दें उसी का तुझे पजाब के मज़लूम[20] कफन

शोरे-मातम[21] न हो झकार हो ज़जीरो की
चाहिए कौम के भीषम को चिता तीरो की

तिलक

हसरत मोहानी

अय तिलक अय इफ्तिखारे-जज्ब ए-हुब्बे-वतन[1]
हक शनासो-हक पसन्दो-हक यकीनो-हक सुखन[2]

तुझसे कायम है बिना[3] आज़ादिए-बेबाक[4] की
तुझसे रौशन अहले-इखलासो-वफा[5] की अजुमन

सबसे पहले तूने की बरदाश्त अय फर्ज़न्दे-हिन्द[6]
खिदमते-हिन्दोस्ता मे कुल्फते - कैदे - मुहन[7]

जात तेरी रहनुमाए - राहे - आज़ादी[8] हुई
थे गिरफ्तारे - गुलामी वरना याराने-वतन[9]

१९ पुराने दुश्मन, २० पीडित, २१. शोकालाप।

तिलक

१ देश-भक्ति की भावना का गर्व, २ सत्य को पहचानने वाला, समझने वाला, बोलने वाला और विश्वास करने वाला, ३ आधार, ४ स्वतत्रता, ५ निष्ठावान और वफादार, ६ भारत के सपूत, ७ 'कारावास की तकलीफें, ८ आज़ादी का पथ-प्रदर्शक, ९. देशवासी।

तूने खुद्दारी का फूका श्रय तिलक ऐसा फसू
यक क़लम जिस से खुशामद की मिटी रस्मे-कुहन[10]

नाज़ तेरी पैरवी[11] पर 'हसरते'-श्राज़ाद को
श्रय तुझे कायम रखे तादैर रब्बे - जुलमनन[12]

गोपालकृष्ण गोखले

ब्रजनारायण चकवस्त

लरज़ रहा था वतन जिस खयाल के डर से
वह श्राज खूं रुलाता है दीदःए-तर[1] से
सदा यह श्राती है फल फूल श्रौर पत्थर से
ज़मी पे ताज गिरा कौमे-हिन्द के सर से
हबीब कौम का दुनिया से यू रवाना हुश्रा
ज़मी उलट गयी, क्या मुकलिब[2] जमाना हुश्रा

बढी हुई थी नहूसत, ज़वाले-पैहम[3] की
तिरे ज़हूर से तकदीर कौम की चमकी
निगाहे - यास[4] थी हिन्दोस्ता पे श्रालम की
श्रजीब रौ थी मगर रौशनी तिरे दम की

तुझी को मुल्क मे रौशनदिमाग समझे थे
तुझे गरीब के घर का चराग समझे थे

वतन को तूने सवारा किस श्राबो-ताब के साथ
सहर का नूर बढे जैसे श्राफ्ताब के साथ
चुने रिफाह[5] के गुल हुस्ने-इतिखाब[6] के साथ
शबाब कौम का चमका तिरे शबाब के साथ

१० पुराने रीति-रिवाज, ११ पीछे चलना, १२ खुदा ।

गोपालकृष्ण गोखले

१. श्रश्रु-भरी श्रांख, २ परिवर्तित, ३ निरतर पतन, ४. निराश दृष्टि, ५ भलाई, ६ सलीके से ।

जो आज नश्वो-नुमा[७] का नया ज़माना है
यह इंकिलाब तिरी उम्र का फसाना है

रहा मिज़ाज मे सौदाए-कौम[८] खू बनकर
वतन का इश्क रहा दिल की आरज़ू बनकर
बदन मे जान रही वक़्फ़े-आबरू[९] बनकर
रगो मे जोशे-महब्बत रहा लहू बनकर

खुदा के हुक्म से जब आबो-गिल बना तेरा
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा

वतन की जान पे क्या क्या तबाहिया आईं
उमड उमड के जहालत की बदलिया आईं
चरागे-अम्न बुझाने को आंधिया आईं
दिलो मे आग लगाने को बिजलिया आईं

इस इंतिशार[१०] मे जिस नूर का सहारा था
उफक पे कौम के वह एक ही सितारा था

हदीसे-कौम[११] बनी थी तिरी ज़बा के लिए
ज़बा मिली थी महब्बत की दास्ता के लिए
खुदा ने तुझको पयम्बर किया यहा के लिए
कि तेरे हाथ मे नाकूस[१२] था अज़ा के लिए

वतन की खाक तिरी बारगाहे आला है
हमे यही नयी मस्जिद नया शिवाला है

दिलो पे नक्श हैं अब तक तिरी ज़बा के सुखन
हमारी राह मे गोया चराग हैं रौशन
फकीर थे जो तिरे दर के खादिमाने-वतन[१३]
उन्हें नसीब कहा होगा अब तिरा दामन

तिरे अलम मे वह इस तरह जान खोते हैं
कि जैसे बाप से छुटकर यतीम रोते हैं

७. प्रकटन, ८. क़ौम का उन्माद, ९ इज्जत के लिए समर्पित, १० बेचैनी, ११ क़ौम की हदीस, १२ शंख, १३ देश-सेवक।

अजल[१४] के दाम मे आना है यू तो आलम को
मगर यह दिल नही तैयार तेरे मातम को
पहाड कहते हैं दुनिया मे ऐसे ही गम को
मिटा के तुझको अजल ने मिटा दिया हमको

जनाज़ा हिन्द का दर से तिरे निकलता है
सुहाग कौम का तेरी चिता मे जलता है

रहेगा रज ज़माने मे यादगार तिरा
वह कौन दिल है कि जिसमे नही मज़ार तिरा
जो कल रकीब[१५] था, है आज सोगवार तिरा
खुदा के सामने है मुल्क शर्मसार[१६] तिरा

पली है कौम तिरे साय:ए - करम[१७] के तले
हमे नसीब थी जन्नत तिरे कदम के तले

शहीद भगतसिंह

तिलोकचन्द महरूम

ज़िन्दो मे शहीदो का वह सरदार आया
शैदाए - वतन,[१] पैकरे - ईसार[२] आया
है दारो-रसन[३] की सरफराज़ी का दिन
सरदार भगतसिह सरे-दार[४] आया

ता दारो - रसन शौक से इठला के गया
तू शाने-शहादत अपनी दिखला के गया
टुकडे होता है दिल तेरे मातम[५] मे
लाशे का तू अग-अग कटवा के गया

१४ मौत, १५ दुश्मन, १६ लज्जित, १७ दया की छाया।

शहीद भगतसिह

१. देश पर मरने वाली, २ कुर्बानी की मूर्ति, ३ फासी का तख्ता, ४ फासी पर, ५ शोक।

पीकर मै-शौक[६] झूमना वह तेरा
बेपरवायाना घूमना वह तेरा
है नक्श तिरे अहले-वतन के दिल पर
फासी की रसन को चूमना वह तेरा

देख अय हिलाले-शाम

(भगतसिंह की फासी पर)

तिलोकचन्द महरूम

दौरे-फलक[१] ने हमको बनाया है गो गुलाम
आजादिया है वह, न तजम्मुल,[२] न एहतिशाम[३]
उजडी हुई अगर्चे है बज्मे-वतन[४] मगर
छलका नही अभी मै हुब्बे-वतन[५] का जाम
देख अय हिलाले-शाम[६]

जिन्दां मे हो रहा है वह फासी का एहतिमाम[७]
पैदा सकूते-मर्ग[८] के आसार हैं तमाम
दरवाजे काल कोठरियो के वह खुल गये
निकले हैं उनसे आज जवानाने-खुशखिराम[९]
देख अय हिलाले-शाम

खोले हुए है अपना दहन देवे इन्तिकाम
जल्लाद की निगाह है शमशीरे-बेनियाम[१०]
वह बढके मरने वालो ने नारा किया बलन्द
जिससे लरज उठे दरो-दीवारो-सकफो-बाम[११]
देख अय हिलाले-शाम

रजुओ की शराब ।

देख अय हिलाले-शाम

काश का दौर, २ ऐश्वर्य, ३. वैभव, ४ देश की महफिल, ५ देश-प्रेम, ६ संध्या का चाद, ध ८ मृत्यु की शाति, ९ मतवाली चालवाले नौजवान, १० नगी तलवार, ११ अट्टालिका त ।

यु झूम रहे है जैसे हो नौशाहे - शादकाम[12]
अहले - वतन को करते हुए आखरी सलाम
फांसी की रस्सियों को दिया बोसा शौक से
चेहरे है रंगे-जौके - शहादत से लालाफाम[13]
देख अय हिलाले-शाम

अब आगे क्या बताऊ मैं नाजुक है यह मकाम
अय सुनने वाले अश्क बहा और जिगर को थाम
फन्दे गले मे डाल के तख्ते निकाल के
जल्लाद कर चुका है, जो करना था उसको काम
देख अय हिलाले-शाम

नज्रे-फना[14] हुई वह मचलती जवानिया
तीनो का एक लहजे मे किस्सा हुआ तमाम
मातम का शोर हिन्द मे हर सू बपा हुआ
तारो ने आखो आखो मे दी इत्तिलाए-आम[15]
गुम है हिलाले - शाम

कटता है अब्र अब[16] शहीदाने-जेरे-दाम[17]
होता है आह उनके ठिकाने का एहतिमाम[18]
रहना गवाह वियास की मौजो कि किस तरह
लाशो के नीममोख्ता[19] टुकड़े हुए तमाम
तू भी हिलाले-शाम

(सन् १९३१)

१२. खुश मन, १३ सुर्ख, १४ मौत की दृष्टि, १५ आम सूचना, १६ अब, १७ जाल मे फंसे हुए शहीद, १८ प्रबंध, १९. अधजला।

नौहःए-सी० आर० दास

तिलोकचन्द महरूम

आलम न पूछिये दिले-हसरत असास[१] का
पैकर है कुल्फतो-गमो-हिर्मानो-यास[२] का

वक्फे-हज़ार दर्द है फिर जाने - नातवा[3]
फिर दिल को सामना है गमे-बेकियास[४] का

लेकर रहेगा कश्ति-ए-सब्रो-करार[५] को
तूफा उठा है आज वह बीमो-हिरास[६] का

ज़ालिम को लाग जौहरे-मर्दानगी से है
शिकवा है गर्दिशे-फलके-नाशनास[७] का

डूबा है आज कौकवे - उम्मीदे - हुर्रियत[८]
मातम बपा है हिन्द मे सी० आर० दास का

वह फख्र-हिन्द, नाज़िशे-बगाल[९] चल बसा
कौमो-वतन को छोड के बदहाल चल बसा

महबूबे - जाने-कौम, मुहिब्बे-वतन[१०] गया
हिन्दोस्ता तमाम अज़ाखाना[११] बन गया

सोज़े-गमे-फिराक[१२] मिला हमको, और वह
सूए-बिहिश्त[१३] छोड के दारुलमुहन[१४] गया

बादे-बहार ताज़ा करेगी चमन को क्या
वह फूल था जो नाज़िशे-सहने-चमन[१५] गया

१ निराश दिल, २ कष्ट, दुख और निराशा, ३ दुर्बल शरीर, ४. असीम गम, ५ सब्र और सतोष की नाव, ६ भय और निराशा, ७ अपरिचित आकाश की गर्दिश, ८ आज़ादी की आशा का सितारा, ९ बगाल का गर्व, १०. देश-प्रेमी, ११ शोकघर, १२ विरह के गम की जलन, १३ स्वर्ग की ओर, १४ आजमाइश की जगह, १५. चमन के आगन का फख्र।

आज़ाद था वह मर्दे-जरी[16] इस कदर कि हाय
बेदम हुआ तो तोड़ के जिन्दाने-तन[17] गया

जां आ गयी वतन की लबों पर मगर तिरा
खाली न एक बार भी चर्खे-कुहन[18] गया

जिसके लिए फजाए-वतन कैदखाना हो
जुज़-मर्ग[19] क्या रिहाई का उसकी बहाना हो

खुशिया मनाओ, ऐश करो दुश्मनाने-हिन्द
रुखसत हुई है दास के हमराह जाने-हिन्द

मरने से उसके पैकरे-बेजा[20] हुआ यह मुल्क
सी० आर० दास था दिलो-जानो-ज़बाने-हिन्द

जोशो-खरोशे - बलबला ए - हुर्रियत[21] गया
बाकी कहा है ताकतो-ताबो-तवाने-हिन्द[22]

था मीरे - कारवा वही और राहबर वही
उसके बगैर जाये किधर कारवाने-हिन्द

मारा है मारे हिन्द को मारा नही उसे
अय मौत ! था वह चारा ए-दर्दे-निहाने-हिन्द[23]

यारब अदम मे उसकी जरूरत पडी थी क्या
पैदा वहा भी दोअमली हो गयी थी क्या

अय रहनवर्दे-आलमे-बाला[24] यह क्या किया
पस्ती से कौम को न निकाला यह क्या किया

दो एक हल्के तौके - गुलामी[25] के तोड कर
फिर उसपे तूने हाथ न डाला, यह क्या किया

१६ बहादुरी, १७ शरीर रूपी कारागार, १८ बूढा आकाश, १९ मौत के सिवा, २० निर्जीव शरीर, २१ आज़ादी का जोश, २२ भारत की शक्ति, २३. भारत के छुपे हुए दर्द का इलाज, २४ परलोक के मार्ग पर जाने वाले, २५ गुलामी की जंजीर की कडिया ।

था दोस्तो को तेरी सवारी का इन्तिजार
उतरा जनाज़ा ज़ेरे-हिमाला, यह क्या किया

दरमान्दगी[२६] मे छोड गया बेकसो को तू
ग्रय सरफराजे-हिम्मते-वाला,[२७] यह क्या किया

ढारस बंधा बधा के गरीबो की चल बसा
सभला न ग्राह लेके सभाला, यह क्या किया

रूपोश[२८] ग्राखरी झलक उम्मीद की हुई
चारो तरफ है यास की ग्राधी उठी हुई

लरजा थे मुद्दई[२९] तिरी जुरग्रत[३०] के सामने
खस[३१] थे वह मौजे-बहरे-तबीग्रत[३२] के सामने

जैसे तवा हो महरे-मुनव्वर[३३] के रूबरू
यू हीलाजू थे तेरी सदाकत[३४] के सामने

सीना सिपर हुग्रा न कोई सरफरोशे-कौम
तेरी तरह हर एक मुसीबत के सामने

कुहना फसू तराजे-सियासत[३५] फिरग के
थे तिफ्ल[३६] तेरी फहमो-फरासत[३७] के सामने

दी क्या समझ खुदा ने कि नाजो-निगम[३८] को हेच
समझा तू मुल्को - कौम की खिदमत के सामने

तडपेंगे ग्राह ! जब न सुनेंगे सदा तिरी
पुर होगी बज़्मे-हुब्बे-वतन[३९] मे न जा तिरी

(सन् १९५२)

२६ दुख, २७ बहादुर, साहसी, २८ छुपा हुग्रा, २९ वादी, ३० साहस, ३१. घास, ३२ तबीयत के समुद्र की मौज, ३३ प्रकाशमान सूरज, ३४ सच्चाई, ३५ नाज ग्रौर नेमत, ३६ बच्चे, ३७. बुद्धिमानी, ३८ धन-दौलत, ३९ देश-भक्तो की बज़्म।

अश्के-खूं

(नौह ए-वफाते-शेरे-पजाब लाला लाजपत राय)

तिलोकचन्द महरूम

अपनी किस्मत पर बहाओ अश्के-खूं, अय अहले-हिन्द
आज टूटा वखिय ए-जख्मे - दरू,[1] अय अहले-हिन्द

चाराकार अपने हुए जाते हैं नत्र पैवन्दे-खाक[2]
आस्मा है शामिले - वख्ते-जवू,[3] अय अहले - हिन्द

कौम मे ताजा अभी था मातमे - सी० आर० दास
थी फजाए - मुल्क[4] अब तक नीलगू[5] अय अहले-हिन्द[6]

मादरे - हिन्दोस्ता ने दिल पे खाया और जख्म
वार कारी[7] कर गया फिर चर्खे-दू,[8] अय अहले-हिन्द

मुद्दतो तडपायेगा हम बेकसो को आह आह
लाजपत राय के दिल का यह सकू, अय अहले-हिन्द

सख्तिया सह सह के दौरे - आस्मा[9] की, गिर गया
कस्रे-आजादी[10] का का वह मगी सतू,[11] अय अहले-हिन्द

दूर मजिल और हम आवारःए - दश्ते - बला[12]
अब किधर को जायेंगे बेरहनुमू,[13] अय अहले-हिन्द

याद अगर चाहो कि हो रूहे-शहीदे - हुर्रियत[14]
जज्ब-ए - ईसार[15] को कर दो फजू[16] अय अहले - हिन्द

१ छूने हुए दर्द के टाके, २ मिट्टी मे मिलना, ३ दुर्भाग्य मे शरीक, ४ देश का वातावरण, ५ नीला, ६ भारतवासी, ७ तगडी चोट, ८ कमीगा आसमान, ९ आसमान का दौर, १० आजादी का महल, ११ मजबूत खभा, १२ विपत्तियो के जगल मे भटकने वाले, १३ पथ प्रदर्शक के बिना, १४. आजादी के नाम पर मरने वाले, १५ कुर्बानी की भावना, १६ अधिक।

अक्ले - दूरअंदेश,[१७] आजादी दिला सकती नही
चाहिए इस दश्त[१८] मे जोशे-जुनू, अय अहले - हिन्द

भेंट आज़ादी की कैसे कैसे रहबर हो गये
बारहा जागे नसीबे अपने और फिर सो गये

मिट गयी आखिर तिलक और गोखले की यादगार
हो गया अहले-वतन की आरजुओ का फिशार[१९]

चल दिया वह आह जिसने बज़्मे - हुब्बे-कौम[२०] मे
किश्वरे - पजाब का कायम रखा इज्ज़ो - वकार[२१]

योरुप और अमरीका मे थी धाक जिसके नाम की
तुझ पे अय खाके-वतन कुर्बां हुआ वह नामदार

आह वह खिदमत गुजारे-कौम,[२२] वह सरदारे-कौम
जासिपारो - दर्दमन्दो - दिलनवाज़ो - दिलफिगार[२३]

लाजपतराय तिरा नेमुलबदल[२४] मुम्किन नही
दुश्मने - हिन्दोस्ता है गर्दिशे - लैलो - नहार[२५]

आह तेरी मौत पर जिनके जिगर टुकडे हुए
उनको ढारस कौन दे अय बेकसो के गमगुसार

गोशबर आवाज[२६] हैं बैठे हुए तेरे रफीक[२७]
तेरे दर्शन के लिए मुज्तर[२८] है चश्मे - अश्कबार[२९]

यास की तस्वीरे - हैबतखेज़[३०] है पेशे-नज़र[३१]
मिट मिटा कर रह गये उम्मीद के नक्शो-निगार

नाव है मझधार मे और नाखुदा कोई नही
अब खुदा का आसरा है जो लगा दे उसको पार

१७. दूरदर्शी बुद्धि, १८ जगल, १९ निचोड देना, २० देश-भक्तो की वज्म, २१ विनम्रता और प्रतिष्ठा, २२ देश-सेवक, २३. जान देने वाला, हमदर्द दिल रखने वाला, ज़ख्मी दिल वाला, २४ खाली जगह को भरने वाला, २५. सुवह-शाम का चक्र, २६ आवाज़ पर कान लगाये हुए, २७ दोस्त, २८ बेचैन, २९ अश्रु-भरी आख, ३० भयानक तस्वीर, ३१ नजर के सामने।

अय कि तेरी जात थी सुव्हे - तमन्नाए - वतन[32]
कुछ तसल्ली दे उन्हे, वेकल हैं अवनाए-वतन[33]

सो गया तू आह ! अय शेरे - नयस्ताने - वतन[34]
थी तिरी इक इक गरज सरमाय ए - शाने - वतन[35]

देख लेती कामियाव अपने इरादो मे तुझे
मुन्तज़िर उस रोज़ की थी चश्मे - हैराने - वतन[36]

दिल तिरे पहलू मे धडका, हो गयी वेताव कौम
जा तिरे कालिव[37] से निकली और गयी जाने-वतन

तेरे मिटने से पता मज़िल का मिट कर रह गया
अय निशाने - मज़िले - खिदमत गुज़ाराने - वतन[38]

आयेगी क्योकर हरारत फिर तने - अफसुर्दा[39] मे
किससे भर पायेगी रौनक वज्मे - वीराने - वतन[40]

कौन होगा जगे - आज़ादी मे रहकर पेश पेश
सर वकफ[41] तेरी तरह अय मर्दे-मैदाने - वतन

तेरे छुपने से अधेरी रात का आलम हुआ
कौन सी वदली मे है अय माहे - तावाने-वतन[42]

माडले से जिस तरह आया था, फिर इक वार आ
ताकि हो जाये वहारी फिर गुलिस्ताने - वतन

फिर चमन का पत्ता पत्ता तहनिय तख्वानी[43] करे
महवे इस्तिकवाल[44] हो फिर सर्वो - रेहाने-वतन[45]

दुश्मने - तासीर[46] है यह नालःए - हसरत[47] असर
नौहाख्वानी,[48] नौहाख्वानी अय दिले- गमदीदा कर[49]

३२ वतन की आरजुओं की सुवह, ३३ वतन के वेटे, ३४. देश के शेर, ३५ वतन की शान की सम्पत्ति, ३६ व्याकुल देश की आखें, ३७ शरीर, ३८ देश की सेवा करने वालों की मज़िल का निशान, ३९ उदास शरीर, ४० देश के वीराने की वज्म की रौनक, ४१ सर हथेली पर लिये हुए, ४२ देश का चाद, ४३. स्तुति करना, ४४ स्वागत में व्यस्त, ४५ देश के सरो और घास, ४६ तासीर का दुश्मन, ४७ निराशा का आर्तनाद, ४८ शोकगीत, ४९ शोक-भरा दिल।

लालःए - खूनी[५०] जिगर अपना हुआ वक्फे - खिजा[५१]
मुन्तजिर तेरे रहे हम अय बहारे - जाविदा[५२]

"इस चमन मे मुर्गे-दिल[५३] गाये न आजादी के गीत
यह तराना आह ! गोशे-बागबा[५४] पर है गरा[५५]

नग्मः ए - साजे मसर्रत[५६] रास क्या आये उन्हे
जिन गरीबो के मुकद्दर मे हो फरियादो-फुगा[५७]

खाक पर गिरता है ताजे - आबरूए - हिन्द[५८] आज
उठ गया अफसोस, नामूसे - वतन[५९] का पास्बा[६०]

नामलेवा आरियन तहजीब का जाता रहा
यादगारे - अज्मते - देरीनःए - हिन्दोस्ता[६१]

बेशःए - हुब्बे - वतन[६२] का शेरे - गर्रा[६३] मर गया
बाइसे - सदगूना[६४] हसरत है खमोशी का समां

लिखने बैठे गर कोई तेरी जिगरसोजी का हाल
यक बयक उट्ठे कलम से और कागज से धुआ

कारनामे जिसमे होगे तेरे अय जांबाजे - कौम[६५]
खूने - दिल से लिक्खी जायेगी वह रगी दास्ता

जो हुआ करता है इनआमे - मुहिब्बाने - वतन[६६]
तूने पाया सबसे बढ चढ कर बवक्ते - इम्तिहा[६७]

सख्तिया अगियार[६८] की, अपनो की बेपरवाइया
जेलखाने, जिल्लतें[६९], पाबन्दिया, रुस्वाइयां

५०. खन के रग का लाला, ५१ पतझड की भेंट, ५२ अनश्वर वहार, ५३. दिल का पक्षी, ५४ बागबान के कान, ५५ भारी, ५६ खुशी के साज का गीत, ५७ फर्याद और आर्तनाद, ५८ हिन्द की इज्जत का ताज, ५९. देश की लाज, ६०. पहरेदार, ६१ हिन्दुस्तान की प्राचीनता की यादगार, ६२ देशभक्ति, ६३. सिंह, ६४ सैकडो निराशाओ का कारण, ६५ कौम पर मरने वाला, ६६ देशभक्ति का इनाम, ६७ परीक्षा के समय, ६८ दुश्मन, ६९ अपमान,

मरने वाले ! अब न होगी कुछ परेशानी तुझे
अब कोई मुजरिम बनायेगा न जिन्दानी[७०] तुझे

देस से अपने न तुझको अब निकालेगा कोई
देखना होगा न दागे - खानावीरानी[७१] तुझे

अब बना सकता नही कोई तुझे शाही असीर[७२]
खीचनी होगी न अब जजीरें - तूलानी[७३] तुझे

उड गया तू तोडकर अपने कफस की तीलिया
कौन पकडेगा अब अय मुर्गे - गुलिस्तानी[७४] तुझे

लाठियो से अब तिरी तहकीर[७५] कर सकता है कौन
कौन दे सकता है अब ताने - गराजानी तुझे

कौन है जो तुझ पे अब पावन्दिया आइद करे
छू नही सकते कवानीने - जहाबानी[७६] तुझे

साहिले - हिन्दोस्ता को अब न तरसेगी नजर[७७]
अब न दुख देगा दयारे-गैर[७८] का पानी तुझे

तेरे मरने पर न खुश हो वदसगालाने - वतन[७९]
जोम[८०] मे अपने समझकर पैकरे - फानी[८१] तुझे

जिन्द ए - जावेद[८२] तू, पाइन्द.ए - जावेद[८३] तू
लाजपतराय मुवारक हो यह कुर्वानी तुझे

जिन्दगानी थी तिरी शमए - फरोजाने - वतन[८४]
मौत हो जायेगी तेरी शोल.ए - जाने - वतन[८५]

(सन् १९२८)

७० कैदी, ७१ घर की वर्वादी का दाग, ७२ कैदी, ७३ लवी जजीर, ७४ चमन के पक्षी, ७५ अपमान, ७६ शासन के कानून, ७७ दृष्टि ७८ दुश्मन के घर का पानी, ७९ देश के लिए वुरी भावना रखने वाला, ८० घमड, ८१ नश्वर शरीर, ८२ अमर, ८३ सदा रहने वाला, ८४ देश की जलती हुई शमा, ८५ देश की जान का शोला ।

पयामे-हुर्रियत[1]

तिलोकचन्द महरूम

यह जो शोरे-मातमे-दास[2] है ब सबीले-शेव ए-आम[3] है
यही मौत वरना है जिन्दगी, यही शै हयाते - दवाम[4] है

वह जबा से अपनी सुना गया वह अमल से अपने दिखा गया
कि वफापरस्ते - वतन[5] है जो खुरो-ख्वाब[6] उसपे हराम है

वह शबाब जिसको है यह अलम कि वतन है वक्फे-हजार[7] गम
न हरीफे - शाहिदो - नग्मा[8] है, न हरीसे-बादा-ओ-जाम[9] है

इसी कशमकश मे जो मर गया, वही दामे-गम से रिहा हुआ
जो न फडफडाये तो क्या करे वह परिन्द जो तहे-दाम[10] है

यह हैं मकरो - हीला के सिलसिले इन्हे 'दास' जैसे हैं तोडते
न कोई है वारिसे - साहबी,[11] न कोई किसी का गुलाम है

यह वतन का दौरे-सियाह भी न रहेगा दौरे - ज़माना मे
न हमेशा जल्व ए-सुब्ह[12] है न हमेशा परतवे-शाम[13] है

तिलके - हज़ी[14] ने जो कुछ कहा, नही शाइराना मुबालिगा[15]
सुनो इसको अहले-वतन जरा कि यह हुर्रियत का पयाम है

१ आज़ादी का सदेश, २ जीतेन्द्रनाथ दास जिसने भूख हडताल करके सन् १६३१ मे जान दी, ३ आमदस्तूर के अनुसार, ४ अमर जीवन, ५ वतन के वफादार, ६ नीद और भोजन, ७ सुदरियो और गीतो का हरीफ ८ शराब और प्याले का लोलुप, ६ शोकातुर तिलक, १० अतिशयोक्ति ।

मोतीलाल नेहरू

आनन्दनारायण मुल्ला

मोजिज़न[1] होने लगा था जब ज़रा दरियाए-कौम[2]
कुछ असर जब कर चला था नश्श ए-सहबाए-कौम[3]
जब नज़र आने लगी थी मंज़िले-फ़र्दाए-कौम[4]
उठ गया दुनिया से अपना रहनुमा अय वाए-कौम[5]

फूल जब खिलने को थे सहने-चमन वीरां हुआ
महर[6] अपना, जब सहर होने को थी पिन्हां हुआ

जब मुरत्तब[7] होगा अफसाना तिरा हिन्दोस्तां
नामे-नेहरू सुर्ख़ हर्फ़ों में रकम होगा वहां
जह्दे-आज़ादी की दो जिल्दों में होगी दास्तां
यानी तेरी और जवाहर की सवानेह-उम्रियां[8]

कुछ तिरी बातें हैं कुछ तेरे पिसर[9] का ज़िक्र है
कौम की तारीख़ भी तेरे ही घर का ज़िक्र है

तेरी फ़ितरत में निहां था कौनसा ऐसा गुहर[10]
हाथ जिस ज़र्रे पे रक्खा वह हुआ रश्के-कमर[11]
बन गया खद्दर भी तेरे जिस्म पर मल्बूसे-ज़र[12]
अजीब खूबी बन के खिलते थे तिरे अन्दाज़ पर

इक अदाए-दिलबरी[13] थी फ़ितनासामानी[14] तिरी
एक शाने-खुसरवी[15] थी चीने-पेशानी[16] तिरी

यूं तबीअत में तिरी क्या-क्या उबाल आता न था
बहस में क्या क्या तुझे गैज़ो-जलाल[17] आता न था

१ मौजें मारना, २ क़ौम का समुद्र, ३ क़ौम की शराब का नशा, ४ कौम के भविष्य की मंज़िल, ५ अय राष्ट्र, ६ चांद, ७ संपादित, ८ आत्मकथाएं, ९ पुत्र, १० मोती, ११ चांद को शरमाने वाला, १२ सोने के वस्त्र, १३ मोह लेने वाली अदा, १४ उपद्रव मचाने वाली, १५ बादशाहों की शान, १६ ललाट के बल, १७ क्रोध।

हा मगर दिल मे कभी तेरे मलाल[18] आता न था
खातिरे-नाजुक[19] के आईने मे बाल आता न था
एक ही छीटे मे सब गर्दे-कुदूरत[20] घुल गयी
इक घटा आई, घिरी, गरजी, बरसकर खुल गयी

अपने जख्मो के लिए तू तालिबे-मरहम[21] न था
जुज़ खयाले - कौम[22] तेरे दिल मे कोई गम न था
बेखबर फिक्रे - वतन से तू कभी इकदम न था
हमको एक एक दम तिरा इक ज़िन्दगी से कम न था
तेरे खुम[23] मे चार कतरों के सिवा बाकी न था
हा मगर उनका बदल महफिल मे अय साकी न था

कौन कहता है हमे इस सानिहे[24] का गम नही
मौत तेरी इक बलाए - नागहा[25] से कम नही
जहदे - आजादी[26] मे लेकिन फ़ुर्सते-इकदम नही
हा सफे-मंदा के शायां[27] महफिले - मातम नही
अपने सीनो मे अभी जोशे-तमन्ना है वही
चश्म पुरनम है मगर तावे - तमाशा[28] है वही

अहद हुब्बे-कौम का बाधा है दिल से उस्तुवार[29]
अब तो आज़ादी मुकद्दर मे है या कुजे-मजार[30]
आ रहे हैं लफ्ज यह अपनी जबा पे बार बार
पढके तेरी लाश पर, जाते हैं सुए - कारजा[31]
शुद फिदा बर मुल्क, ता नामे-वतन पाइन्दाबाद[32]
मुर्द - मीरे - लश्करे-मा, मीरे लश्कर ज़िन्दाबाद

१८ अफसोस, १९ कोमल दिल, २० मलिनता की धूल, २१ मरहम का इच्छुक, २२ राष्ट्र के ध्यान के अलावा, २३. प्याला, २४ दुर्घटना, २५ अचानक टूटनेवाली विपत्ति, २६. आजादी की जग, २७ की तरह, २८ तमाशा देखने की शक्ति, २९, दृढ, ३० कब्र का एकान्त, ३१ समर की तरफ, ३२ उसने देश पर प्राण न्योछावर कर दिये ताकि वतन का नाम बाकी रहे। सेनापति मर गया, सेनापति जिन्दाबाद।

आह मोतीलाल

तिलोकचन्द महरूम

आह ! अय नामदार मोतीलाल
नाज़िशे - रोज़गार[१] मोतीलाल
मातमी है तेरा जहा सारा
फख्रे - शहरो - दयार[२] मोतीलाल
लाल था वदनसीव भारत का
बाइसे - इफ्तिखार[३] मोतीलाल
था सरताजे - आवरूए - वतन[४]
गौहरे - शाहवार[५] मोतीलाल
हुक्म उसका रवा दिलो पर था
गो न था ताजदार मोतीलाल
वागे-हुब्बे- वतन[६] मे आया था
वन के वादे-वहार[७] मोतीलाल
जोग तूने लिया वतन के लिए
अय सदाक़त-शिआर[८] मोतीलाल
जिन्दगी तूने अपने हाथो से
की वतन पर निसार[९] मोतीलाल
चल दिया, और वदनसीवो को
कर गया अश्कवार[१०] मोतीलाल
रहवरे - आज़मे - वतन[११] न रहा
आह ! वह आलमे-वतन[१२] न रहा

अय मुहिब्वे-वतन,[१३] फिदाए-वतन
दर्द मे तू हुआ दवाए-वतन

१ समय की सज़ा, २ शहर और घर का गर्व, ३ गर्व का कारण, ४ वतन की इज्जत का सरताज, ५ वादशाहो के योग्य मोती, ६ देशभक्ति का उपवन, ७ वहार की हवा, ८ सच्चा, ९ न्यौछावर, १० रुला दिया, ११ देश का महान नेता, १२ देश की दशा, १३ देश-भक्त ।

हो सका और किस की हिम्मत से
तूने जो कुछ किया बराए वतन
हुई नजदीक मज़िले - मक़्सूद[14]
तू हुआ जब से रहनुमाए-वतन
तेरी जुरुग्रत[15] पे नाज़ था इसको
सरनिगूं[16] क्यो न हो लवाए-वतन[17]
हर नये मरहले[18] पे मातमे-नौ[19]
आह ! अय बख़्ते-नारसाए-वतन[20]
देखिये कब हो दौरे-आलम[21] मे
खत्म दौराने - इब्तिलाए - वतन[22]
तेरा जल्वा था इक शुआए-उम्मीद[23]
हो गयी तीरा[24] फिर फज़ाए-वतन[25]
कही जन्नत मे तू न हो मुज्तर[26]
कि फलक[27] रस हैं नाला हाए-वतन
वह जो है तेरी यादगारे अजीज़[28]
उसके हक मे है यह दुआए-वतन
कि सलामत रहे जवाहरलाल
ता कयामत[29] रहे जवाहरलाल

मोतीलाल नेहरू

आले-अहमद सुरूर

हम मस्त ज़माने के सितम भूल भी जायें
था पीरे-मुगा[1] का जो करम याद रहेगा

१४. गतव्य स्थल, १५ साहस, १६ नतमस्तक, १७ देश का झडा, १८ समस्या, १९ शोकालाप, २० वतन का दुर्भाग्य, २१ ससार-चक्र, २२. देश की विपत्तियो का समय, २३ आशा की किरण, २४ अधियारी, २५ देश का वातावरण, २६ बेचैन, २७ आकाश, २८. प्रिय यादगार, २९ प्रलय तक।

मोतीलाल नेहरू

१. पुराने पीनेवाले।

जो वादिए-ज़ुल्मत[२] मे था शमए-हिदायत[३]
उश्शाक[४] को वह नक्शे-कदम[५] याद रहेगा

सगम के सनमखाने[६] का इक पैकरे-खूबी[७]
था महरमे-असरारे-हरम[८] याद रहेगा

इक शोल ए-बेवाक[९] की लौ नक्श रहेगी
इक नालःए-शबगीर[१०] का दम याद रहेगा

गो ताजा निहालाने-चमन[११] पर हैं निगाहे
हा अगले शगूफों[१२] का भरम याद रहेगा

हम इश्के-जुनू पेशा[१३] से रखते हैं अकीदत[१४]
इस इश्क का इक एक कदम, याद रहेगा

गुलज़ार मे गो मौजे-सबा[१५] खूब है लेकिन
वीराने पे वह अब्रे-करम[१६] याद रहेगा

रहलते-महम्मद अली[१]

जोश मलीहाबादी

अय मताए - बुर्दःए - हिन्दोस्ता - ओ-एशिया[२]
अय कि था नाखुन पे तेरे उक़्द ए-हक[३] का मदार

गश था काविश[४] पर तिरी अन्दाज़ ए-सुब्हो-मसा[५]
खम थी कदमो पर तिरे नैरंगिए - लैलो-निहार[६]

२ अंधेरी वादी, ३ आदेश की शमा, ४ प्रेमी का बहुवचन, ५ पदचिन्ह, ६. मंदिर, ७. गुणों की आकृति, ८ हरम के राज जानने वाला, ९ लपकती हुई ज्वाला, १०. रात को उठने वाला आर्तनाद ११ उपवन के पौधे, १२ फूल, १३. प्रेमोन्माद जिनका पेशा हो, १४. श्रद्धा, १५ हवा की [illegible], १६ दया का बादल।

रहलते-महम्मदअली

१ महम्मदअली की मृत्यु, २ सच्चाई की गिरह, ३ सत्य की गुत्थी, ४ छान-बीन, ५. सुबह-शाम का [illegible] ६ समय का जादू।

अय गुरूरे-मुल्को-मिल्लत[७]! तू वहा लेता था सास
मौत जिस मंजिल पे बनती है हयाते-पायदार[८]

वक्त के सैलाब से तेरा सफीना है बलन्द
सीरते - पैगम्बरे - इस्लाम[९] के आईनादार

तुझको बख्शी थी मशीयत[१०] ने इक ऐसी जिन्दगी
जिस बहादुर ज़िन्दगी को मौत पर आता है प्यार

तेरे आगे लर्जा बर अन्दाम[११] थी रूहे-फिरग[१२]
अय दिले - हिन्दोस्ता के अज्मे-नुन्दो-उस्तुवार[१३]

ततने से तेरी हैबत आफरी[१४] आवाज के
थी हुसैन इब्ने-अली की इस्तिकामत[१५] आशकार

डूब जाती थी दिले-बातिल मे लहराती हुई
तेरे लहजे की लचकती थी वह तेगे-आबदार[१६]

मोडकर रख दी थी तूने जग के मैदान मे
अहले-बिदअत[१७]की कलाई,खजरे-बातिल[१८]की धार

तुझसे आता था पसीना अफसरो-औरंग[१९] को
अय कि हिम्मत थी तिरी कूवतशिकन,[२०]मुल्ता शिकार

खून मे तेरे निहां थी जुम्बिशे - तेगे - अली[२१]
खाक मे तेरी वदीअत[२२]था मिज़ाजे-जुलफिक्कार[२३]

तेरी सीरत मे थी मुज़मिर[२४] सूलते - पैगम्बरी[२५]
तेरी फितरत मे थी पिन्हा[२६] सतवते-पर्वरदिगार[२७]

कौम को वख्शा है तेरी मौत ने वह बाकपन
कज[२८] हुई जाती है माथे पर कुलाहे-इफ्तिखार[२९]

७ देश और धर्म के गर्व, ८ स्थायी जीवन, ९ इस्लाम के पैगम्बर की सीरत, १० ईश्वर-इच्छा, ११ कपायमान, १२ अ ग्रेजो की रूह, १३ दृढ और मजबूत सकल्प, १४ भयानक, १५ दृढता, १६ तेजधार तलवार, १७ विधर्मी, १८ झूठ का खजर, १९ अधिकारियों और अ ग्रेजो, २० शक्ति तोड देने वाली, २१ हज़रत अली की तलवार की लचक, २२ अमानत, २३ कुदरती शराफत, २४ छुपी हुई, २५. पैगम्बरों का रोवदाव, २६ छुपा हुआ, २७ खुदा का आतक, २८ टेढी, २९ गर्व की पगड़ी ।

मज़ारे-रहनुमा[1]

(बर मज़ारे-डाक्टर अंसारी मरहूम)

असारुलहक मजाज़

सुनें अरबाबे - दिल[2] अहले - नज़र[3] भी
निहां[4] है संगपारो[5] मे गुहर[6] भी

जमाले - कौम[7] भी, साहब नज़र भी
मुसाफिर भी खिज़र[8] भी चारागर भी

खुनक[9] और मरमरी मदफन[10] मे पिन्हा[11]
खरोशे - बर्क - ओ - तूफाने - शरर[12] भी

सकूने - दैर,[13] तक्दीसे - कलीसा[14]
गुदाज़े - उम्मते - खैरुलबशर[15] भी

यह तुर्बत[16] है अमीरे - कारवा की
यह मज़िल भी है शमए-रहगुज़र[17] भी

नेताजी

तिलोकचन्द महरूम

गुलामी मे अबतर थी हालत वतन की
हुई रूह फर्सा[1] अज़ियत[2] वतन की

१ मार्गदर्शक की कब्र, २ दिलवाले, ३ गहरी नजर रखने वाले, ४ छुपा हुआ, ५ पत्थर के टुकडे, ६ मोती, ७ क़ौम का सौंदर्य, ८ एक कल्पित फरिश्ता (मार्गदर्शक), ९ ठडी, १० कब्र, ११ छुपा हुआ, दफ्न, १२ बिजली का जोश और आग का तूफान, १३. मदिर की शान्ति, १४ मदिर की पवित्रता, १५ खैरुलबशर के अनुयायियो-जैसी नरमी, १६ क़ब्र, १७ मार्ग का चिराग।

नेताजी

१ घातक, २ कष्ट।

कहां चैन तुझसे मुहिब्बे - वतन[3] को
लुटेरो ने लूटी जो राहत वतन की

किया मुज़्तरिब[4] तेरी गैरत[5] ने तुझको
न देखी गयी तुझसे जिल्लत[6] वतन की

दिले-पुर हमीयत[7] से पाकर इशारा
किया रजे-गुर्बत[8] को तूने गवारा

वतन के लिए बेवतन होके निकला
सरापा असीरे - मिहन[9] होके निकला

बकारे - वतन[10] तुझसे फैला जहा मे
चमन से शमीमे-चमन[11] होके निकला

यहीं[8] राहते-कस्रो-ऐवा[12] को छोडा
तलबगारे-गोरो-कफन[13] होके निकला

हुई कारगर[14] तेरी तदबीर[15] आखिर
कि टूटी गुलामी की जजीर आखिर

सुभाषचन्द्र बोस

दर्शनसिंह दुग्गल

अजाइम[1] का तूफा भला कब रुका है
कोई कहदे बातिल[2] की आधी से बढकर
कि इसान की रूह सोई नही है

३ देश-प्रेमी, ४ बेचैन, ५ लज्जा, ६ अपमान, ७ स्वाभिमानी दिल, ८ विदेश के रज, ९ दुखो में गिरफ्तार, १० वतन की गरिमा, ११. चमन की सुगध, १२. महलो का ऐश्वर्य, १३. कब्र और कफ़न का इच्छुक, १४ सफल, १५ उपाय ।

सुभाषचन्द्र बोस

१. सकल्प, २. झूठ ।

यह शेवन का मसकन[3] यह वीरो की धरती
कवी आत्माओं से खाली नही है
अभी इसके जर्रों मे है वह हरारत[4]
जो बातिल[5] के शोलो को खामोश कर दे

वह आशिक वतन का वह धरती का शैदा
वह राना का सानी[6], वह टीपू का पैकर[7]
तगद्दुद[8] के आगे भला सर झुकाता ?

वह बगाल की सरजमी[9] का सितारा
लहू मे जो डूबा तो कुछ और निखरा
वतन की हवाओ का आजाद नग्मा
जमी का तराना सुनाता रहेगा

गांधीजी

(एक तमसील)

असर लखनवी

तू फूल है कवल का असरार[1] का खजाना
तेरा जो दम न होता अधेर था जमाना

पाकी-ओ-सरबलन्दी[2] तुझको हुई वदीअत[3]
अय सरखुशे-हकीकत,[4] अय आरिफे-यगाना[5]

इक एक पखडी मे हैं जमा हुस्न[6] लाखो
मौजे - हजार नग्मा तर्तीबे - सद[7] तराना

बादे - समूम[8] तुझको छू ले, मजाल क्या है
तेरी बहार दाइम,[9] अय नक्शे-जाविदाना[10]

---

३ स्थान, ४ गर्मी, ५ झूठ, ६ तरह का जवाब, ७ आकृति, ८ हिंसा, ९ धरती ।

गांधीजी

१ रहस्य, २ पवित्रता और सर ऊचा करना, ३ दी गयी (खुदा की तरफसे), ४ सच्चाई के नशे मे चूर, ५ आत्मज्ञानी, ६ सौंदर्य, ७ सौ गानो का क्रम, ८ आधी, ९ स्थिर, १०. अमर चिन्ह ।

तूफान सर से गुज़रें खाये नसीब पलटा
हर इंकिलाब[११] तेरा बन जायेगा फसाना

अल्लाह रे पा सबाती[१२] कायम है तू जहा था
क्या क्या नही निकाला बदबी[१३] नेशाख्माना[१४]

तेरी जडें दर आयी खुद वक्त के जिगर मे
खुद वक्त भी हुआ है तम्कीन[१५] का निशाना

भौंरो के गोल आये दिल मे छुपाये लूके[१६]
थे जिनके होठ प्यासे, रस के नही लहू के

वहशी हवाए दौडी ताराजे[१७] आबरू को
देती हुई थपेड़े मोजिज[१८] नुमाउलू[१९] को

रानाईए - अदब[२०] की रगीनिया झुलसने
शोलो की नज्र करने शादाबिए-नमू[२१] को

चाहा कि फिर न उबले चश्मा[२२] शिगुफ्तगी[२३] का
फुकार[२४] कर दे ठडा खौले हुए लहू को

हीले[२५] तराशे क्या क्या इज्जत के होके दरपै
अजामकार[२६] खुद ही खो बैठे आबरू को

क्या क्या न सर खपाया, पाया न भेद तेरा
मकडाई चाल वाले निकले थे जुतुस्तू[२७] को

हरचन्द तू हमेशा सच और शान्ति का
पैगाम लहजा लहजा देता रहा अदू[२८] को

लाफानियत[२९] की मूर्ति, इसानियत के देवता
जो पाकदिल नहीं है, क्या समझे तेरी खू[३०] को

अपना हुआ निशाना, हर शातिरे-ज़माना[३१]
"तू फूल है कवल का, असरार[३२] का खज़ाना"

११ क्राति, १२ अमरता, १३ बुरा चाहने वाला, १४ वाद-विवाद, १५ सब्र की शक्ति, सहनशीलता, १६ शोला, १७ बरबाद, १८ चमत्कार दिखाने वाली, १९ ऊचाई, २०. अनतकाल की सजावट, २१ प्रकटन का हराभरापन, २२ स्रोत, २३ ताज़गी, २४. फूक मारना, २५. बहाने, २६. अन्त मे, २७ खोज, २८ दुश्मन, २९ अमरता, ३०. आदत, स्वभाव, ३१ जमाने का शातिर, ३२. रहस्य ।

महात्मा गांधी का क़त्ल

आनन्दनारायण मुल्ला

मश्रिक[1] का दिया गुल होता है, मग्रिब[2] पे सियाही छाती है
हर दिल सुन सा हो जाता है, हर सास की लौ थर्राती है
उत्तर दक्षिण पूरब, पश्चिम, हर सम्त[3] से इक चीख आती है
नौए-इसा शानो[4] पे लिए गाधी की अर्थी जाती है

आकाश के तारे बुझते है, धरती से धुआ-सा उठता है
दुनिया को यह लगता है जैसे सर से कोई साया उठता है

कुछ देर को नब्ज़े-आलम[5] भी चलते-चलते रुक जाती है
हर मुल्क का परचम[6] गिरता है हर कौम को हिचकी आती है
तहज़ीबे - जहा[7] थर्राती है तारीखे-बशर[8] शर्माती है
मौत अपने किये पर खुद जैसे दिल ही दिल मे पछताती है

इसा वह उठा जिसका सानी[9] सदियो मे भी दुनिया जन न सकी
मूरत वह मिटी नक्काश[10] से भी जो, बन के दुबारा बन न सकी

देखा नही जाता आखो से यह मजरे-इब्रतनाके-वतन[11]
फूलो के लहू से प्यासे हैं अपने ही खसो-खाशाके-वतन[12]
हाथो से बुझाया खुद अपने वह शोल ए - रूहे-पाके - वतन
दाग इस से सियहतर[13] कोई नही दामन पे तिरे अय खाके-वतन

पैगाम अजल[14] लाई अपने इस सबसे बडे मुहसिन के लिए
अय बाए तुलूए-आजादी,[15] आजाद हुए इस दिन के लिए

१ पूर्व, २ पश्चिम, ३ दिशा, ४ कधा, ५ ससार की नाडी, ६ झण्डा, ७ ससार की सभ्यता, ८. मानव का इतिहास, ९ जवाब, १० मूर्तिकार, ११ देश की दयनीय दशा, १२ घास-फूस, १३ काला, १४ मौत का सदेश, १५ आज़ादी का उदय ।

जब नाखुने-हिकमत[१६] ही टूटे, दुश्वार[१७] को आसा कौन करे
जब खुश्क हो अब्रे-बारा[१८] ही शाखो को गुलअफशा कौन करे
जब शोल ए-मीना सर्द हो खुद जामो को फरोजा[१६] कौन करे
जब सूरज ही गुल हो जाये, तारो मे चरागा कौन करे

नाशादे-वतन[२०] ! अफसोस तिरी किस्मत का सितारा टूट गया
उगली को पकडकर चलते थे जिसकी वही रहबर[२१] छूट गया

इस हुस्न मे कुछ हस्ती मे तिरी अज्दाद[२२] हुए थे आके बहम[२३]
इक ख्वाबो-हकीकत[२४] का सगम, मिट्टी पे कदम, नजरो मे इरम[२५]
इक जिस्म नहीफो-जार[२६] मगर इक अज्मे-जवानो-मुस्तहकम[२७]
चश्मे-बीना, मासूम का दिल- खुर्शीद नफस[२८], जौके-शबनम[२६]

वह इज्ज[३०], गुरूरे-सुल्ता[३१] भी जिसके आगे झुक जाता था
वह मोम कि जिससे टकराकर लोहे को पसीना आता था

सीने मे जो दे काटो को भी जा[३२] उस गुल की लताफत[३३] क्या कहिये
जो जहर पिये अमृत करके उस लब की हलावत[३४] क्या कहिये
जिस सास से दुनिया जा[३५] पाये उस सास की निकहत[३६] क्या कहिये
जिस मौत पे हस्ती नाज करे उस मौत की अज्मत[३७] क्या कहिये

यह मौत न थी कुदरत ने तिरे सर पर रक्खा इक ताजे-हयात[३८]
थी जीस्त[३६] तिरी मेराजे-वफा[४०] और मौत तिरी मेराजे-हयात[४१]

यकसा[४२] नजदीको-दूर[४३] पे था, बाराने-फैजे-आम[४४] तिरा
हर दश्तो-चमन हर कोहो-दिमन[४५] मे गूजा है पैगाम तिरा
हर खुश्को-तरे-हस्ती[४६] पे रकम[४७] है खत्ते-जली[४८] मे नाम तिरा
हर जर्रे मे तेरा माबद[४६] है हर कतरा तीरथ धाम तिरा

१६ बुद्धि के नाखून, १७ कठिन, १८ बरसात के बादल, १६ प्रकाशमान, २०. दुखी देश, २१ नेता, २२ पूर्वज, २३ एक, २४ स्वप्न और सत्य, २५ स्वर्ण, २६ जर्जर शरीर, २७ जवान और दृढ सकल्प, २८ सूरज की सास वाला, २६ ओस की नरमी का मजा जानने वाला, ३० विनम्रता, ३१ बादशाहो का घमण्ड, ३२ जगह, स्थान, ३३ कोमलता, ३४ मिठास, ३५ प्राण, ३६ सुगध, ३७ महानता, ३८ जीवन का मुकुट, ३६ जिन्दगी, ४० वफा की पराकाष्ठा, ४१ जीवन की मेराज, ४२ एक जैसा, ४३ निकट और दूर, ४४ दया की बारिश, ४५ पहाड, ४६ हस्ती का गीला और सूखा, ४७ अकित, ४८ बडे अक्षर, ४६ अराधना-घर।

इक लुत्फो-करम[५०] के आईं मे मरकर भी न कुछ तरमीम[५१] हुई
इस मुल्क के कोने-कोने मे मिट्टी भी तिरी तकसीम हुई

तारीख[५२] मे कौमो की उभरे कैसे कैसे मुमताज बशर[५३]
कुछ मुल्के-जमीं के तख्तनशी कुछ तख्ते-फलक[५४] के ताज वसर[५५]
अपनो के लिए जामो-सहबा,[५६] औरो के लिए शमशीरो-तवर[५७]
नर्दे-इसा[५८] पिटती ही रही दुनिया की विसाते - ताकत[५९] पर

मखलूके-खुदा[६०] की वनके सिपर[६१] मैदा मे दिलावर एक तू ही
ईसा के पयम्बर[६२] आये वहुत इसा का पयम्बर एक तू ही

बाजूए-खिरद[६३] उड उडके थके तेरी रिफअत[६४] तक जा न सके
जिह्नो की तजल्ली[६५] काम आई खाके भी तिरे काम आ न सके
अल्फाजो-मआनी[६६] खत्म हुए, उनवा[६७] भी तिरा अपना न सके
नजरो के कंवल जल जल के बुझे परछाईं भी तेरी पा न सके

हर इल्मो-यकी[६८] से वालातर[६९] तू है वह सिपहरे-ताबिन्दा[७०]
सूफी की जहा नीची है नजर शाइर का तसव्वुर[७१] शर्मिन्दा

पस्तिए-सियासत[७२] को तूने अपने कामत[७३] से रिफअत[७४] दी
ईसा की तगखयाली[७५] को इसान के गम की वुसअत[७६] दी
हर सास से दरसे-अम्न[७७] दिया, सर जब्र[७८] पे दादे-उल्फत[७९] दी
कातिल को भी, गो लब हिल न सके, आखो से दुआए-रहमत दी

"हिसा" को अहिसा का अपनी पैगाम सुनाने आया था
नफरत की मारी दुनिया मे इक "प्रेम सदेसा" लाया था

इस प्रेम सदेसे को तेरे, सीनो की अमानत वनना है
सीनो से कुदूरत[८०] धोने को इक मौजे-नदामत[८१] वनना है

५० दया और प्रेम ५१ संशोधन, ५२ इतिहास, ५३ श्रेष्ठ व्यक्ति, ५४ आकाश का सिंहासन, ५५ मुकुटधारी, ५६ शराब और जाम, ५७, तलवार और कब्र, ५८ चौसर की गोट—इसान, ५९ शक्ति की बिसात, मखलूक, ६१ ढाल, ६२. नबी, ६३ वुद्धि और बाज, ६४ ऊचाई, ६५ प्रकाश, ६६ शब्द और अर्थ, ६७ शीर्षक, ६८ ज्ञान और विश्वास, ६९ श्रेष्ठ, ऊचा, ७०. चमकता हुआ आकाश, ७१ कल्पना, ७२ राजनीति की गिरावट, ७३ क़द, ७४ ऊचाई, ७५ सकीर्णता, ७६. विस्तार, ७७ शाति का पाठ, ७८ अत्याचार, ७९ उल्फत की दाद, ८० मैल, ८१ लाज की मौज।

इस मौज को बढते बढते फिर सैलावे-महब्बत[८२] बनना है
इस सैले-रवा के धारे को इस मुल्क की किस्मत बना है

जब तक न बहेगा यह धारा, शादाब[८३] न होगा बाग तिरा
अय खाके-वतन[८४] ! दामन से तिरे धुलने का नही यह दाग तिरा

जाते जाते भी तू हमको इक जीस्त का उनवा[८५] देके गया
बुझती हुई शमए-महफिल को फिर शोलए-रक्सा[८६] देके गया
भटके हुए गामे-इसा[८७] को फिर जादए-इसा[८८] देके गया
हर साहिले-जुल्मत[८९] को अपना मीनारे-दरख्शा[९०] देके गया

तू चुप है लेकिन सदियों तक गूजेगी सदाए-साज[९१] तिरी
दुनिया को अंधेरी रातो मे ढारस देगी आवाज तिरी

गांधी

हुर्मतुल इकराम

आगोश मे फूलो की, थिरकता हुआ शोला
अगारो के गहवारे[1] मे सोई हुई शबनम[2]
इक जज्बा,[3] इक एहसास,[4] इक अन्दाज, इक आवाज
निखरा हुआ इक दर्द, तपाया हुआ इक गम
इसान की सूरत मे धडकता हुआ इक दिल
पैकर[5] मे अनासिर[6] के कोई दीदए-पुरनम[7]
सीने मे समोये हुए गगा का तमव्वुज[8]
काधे पे हिमाला का उठाये हुए परचम
नैरगिए-अफकार[9] का सिमटा हुआ दरिया

८२ प्रेम की बाढ ८३ हरा-भरा, ८४ देश की मिट्टी, ८५ शीर्षक, ८६ नाचता हुआ शोला, ८७ इसान के कदम, ८८. इसानी मार्ग, ८९ अधकार, ९० प्रकाशमान मीनार, ९१ साज की आवाज।

गांधी

१. पालना, २. ओस, ३ भावना, ४ अनुभूति, ५ आकृति, ६. तत्त्व, ७ अश्रु-भरी आख, ८ तूफान, ९ चितन का फरेब।

बेताबिए-जज्बात[10] का ठहरा हुआ तूफा
फारूक का मतवाला, उखूवत[11] का पुजारी
गौतम का दिल आराम, अहिंसा की रगे-जा[12]
अपनी ही खताओ का वह नक्कादे-जवा-फिक्र[13]
वह अपने ही असरार[14] का इक सैले-खरामा[15]
माहौल के सीने का दहकता हुआ लावा
तारीख के माथे पे सजाई हुई अफशा

सानिहा

(गाधीजी की मौत से प्रभावित होकर)

असरारुल हक मजाज़

दर्दो-गमे-हयात[1] का दरमा[2] चला गया
वह खिज्र-अस्रो - ईसीए-दौरा[3] चला गया

हिन्दू चला गया, न मुसलमा चला गया
इसा की जुस्तुजू[4] मे इक इसा चला गया

रक्सा चला गया, न गजलख्वां चला गया
सोजो-गुदाज़ो-दर्द[5] मे गलता[6] चला गया

बरहम[7] है जुल्फे-कुफ्र[8] तो ईमा है सरनिगू[9]
वह फख्रे-कुफ्रो-नाज़िशे-ईमा[10] चला गया

बीमार ज़िन्दगी की करे कौन दिलदही
नब्बाज़ो - चारासाज़े - मरीज़ा[11] चला गया

१० भावनाओ की व्याकुलता, ११ बराबरी, १२ प्राण-धमनी, १३ चिंतक और समालोचक, १४ रहस्य, १५ मद गति से बहने वाली बाढ ।

सानिहा

१ जीवन का दर्द और गम, २ इलाज, ३ जमाने का मार्ग-प्रदर्शक और समय का उपचार करने वाला, ४ खोज, ५ दर्द और जलन, ६ डूबा हुआ, ७ बिखरी हुई, ८ कुफ्र की जुल्फ, ९ नतमस्तक, १० कुफ्र का गर्व और ईमान का गर्व, ११ मरीजो का इलाज करने वाला ।

किसकी नज़र पड़ेगी अब "इसिया"[12] पे लुत्फ़ की
वह महरमे-नज़ाकते-इसियां[13] चला गया

वह राजदारे - महफ़िले-यारा[14] नही रहा
वह गमगुसारे - बज़्मे - हरीफ़ा[15] चला गया

अब काफ़िरी मे रस्मो-रहे-दिलबरी[16] नही
ईमा की बात यह है कि ईमा चला गया

इक बेख़ुदे - सुरूरे - दिलो - जा[17] नही रहा
इक आशिके - सदाक़ते - पिन्हा[18] चला गया

बा चश्मे-नम[19] है आज ज़ुलैखाए-कायनात
ज़िन्दाशिकन[20] वह यूसुफ़े-ज़िन्दा[21] चला गया

अय आरज़ू वह चश्म ए-हैवा[22] न कर तलाश
ज़ुल्मात[23] से वह चश्म ए-हैवा चला गया

अब सगो-खिश्तो - खाको-खज़फ़सर[24] बलन्द हैं
ताजे-वतन[25] का लाले-दरख्शा[26] चला गया

अब अहिरमन[27] के हाथ मे है तेगे-खूचका[28]
खुश है कि दस्तो-बाज़ुए-यज़दा[29] चला गया

देवे-बदी[30] से मारिकःए-सख्त[31] ही सही
यह तो नही कि ज़ोरे-जवाना[32] चला गया

क्या अहले-दिल[33] मे जज़्ब.ए-गैरत[34] नही रहा
क्या अज़्मे-सरफ़रोशिए-मर्दां[35] चला गया

•

१२. पाप, गुनाह, १३. पाप की कोमलता का मरहम. १४ यारो की महफ़िल का राज़ जानने वाला, १५. सहयोगियो की वज्म का गम-गुसार, १६ दिलवरी की रस्म, १७ दिल और जान के नशे मे बेख़ुद, १८ छुपी हुई सच्चाई का आशिक, १९ अश्रु-भरी आख लिये हुए, २० कैद तोडने वाला, २१. कारागार का यूसुफ, २२ अमृत का स्रोत, २३ आवे-हयात के स्रोत की जगह, २४ ईट, पत्थर, धूल और कण, २५ देश का मुकुट, २६. चमकता हुआ लाल, २७ बदी का देवता, २८. खून में डूबी हुई, २९ नेकी के खुदा के हाथ और वाज़ू, ३०. वदी का देव, ३१. कठिन मारका, ३२ जवानो की शक्ति, ३३. दिल वाले, ३४ लज्जा की भावना, ३५ मर्दों का सर कटाने का सकल्प ।

क्या बागियो की आतिशे-दिल[36] सर्द[37] हो गयी
क्या सरकशो का जज़्ब ए-पिन्हा[38] चला गया

क्या वह जुनूनो-जज़्ब ए-बेदार[39] मर गया
क्या वह शबाबे-हश्र बदामा[40] चला गया

खुश है बदी जो दाम[41] यह नेकी पे डाल के
रख देंगे हम बदी का कलेजा निकाल के

रौशनी का सफ़ीर

शमीम किरहानी

मैं न ठहरा, कदम को बढाता गया
वहशते-वक्त[1] ने अपना चाके-गरीबा[2] सिया भी न था
शाम की काली काली हथेली पे कोई दिया भी न था
सहमी सहमी सी परछाइयो के तले ज़ीस्त[3] हैरान थी
कोई साया न था, कोई आहट न थी, राह सुसान थी
मुस्कुराता गया, गुनगुनाता गया
मैं न ठहरा, कदम को बढाता गया

मेरे नग्मों[4] की नर्म आहटें सुन के ज़र्रो मे जान आ गयी
दिल तड़पने लगे, ज़िन्दगी जाग उठी, मौत घबरा गयी
तीरगी[5] काप उठी, आरज़ुओ[6] के दिल मे दिया जल पडा
पीछे पीछे मिरे चाँद तारो का इक कारवा चल पड़ा
चल पड़ा गो अँधेरा डराता गया
मैं न ठहरा, कदम को बढ़ाता गया

३६ दिल की आग, ३७ ठडी, ३८ छुपी हुई भावना, ३९. जाग्रत भावना और उन्माद, ४० हश्र बरपा करने वाला यौवन, ४१. जाल।

रौशनी का सफ़ीर

१ वक्त की बेचैनी, २ फटा हुआ गरेबान, ३ ज़िंदगी, ४ गीत, ५. अंधकार, ६. इच्छा।

मुझको रोका गया, मेरे साथी सितारों को रोका गया
रौशनी के मुसाफिर जिधर को वढे उनको टोका गया
रात के राहजन,[७] दौलते-कहकशा[८] लूट कर ले गये
लेकिन आजाद तारे फना होके भी रौशनी दे गये
जुल्म माना नही, उसने जुल्मत[९] का फिर बोलवाला किया
यह समा देखकर मैंने अपने लहू से उजाला किया
चश्म ए-नूर[१०] मे फिर नहाता गया
मैं न ठहरा, कदम को बढाता गया

एम० एन० राय

गोपाल मित्तल

महर[१] से ताबनाकतर[२] जर्रा[३]
देवता से वलन्दतर[४] इसां
हर अदा उसकी कुफ्र[५] का अन्दाज़
लेकिन उस पर भी साहवे - ईमा[६]

जाने कितना जमील[७] था वह नक्श[८]
जो वहर रग नातमाम[९] रहा
इन्तिहा[१०] उसके जर्फ[११] की मत पूछ
खुम लुढा कर जो तिश्नाकाम[१२] रहा

जाने किन मजिलो मे ले पहुंचा
ज़ौके - तकमीले - जुस्तुजू[१३] उसको
ले उडी किन बलन्दियो की तरफ
उसकी परवाज़े - आरजू[१४] उसको

७. चोर, ८. आकाश-गगा की दौलत, ९ अधकार, १० प्रकाश का स्रोत।

एम०-एन० राय

१. सूर्य, २. प्रकाशमान, ३ कण, ४ श्रेष्ठ, ५ अवज्ञा, ६ ईमान वाले, ७ सुदर, ८. मूर्ति, ९ अपूर्ण, १० सीमा, ११ सहनशीलता, १२. प्यासा, १३. खोज की तकमील का ज़ौक, १४ उड़ने की तमन्ना।

साज़ हरचन्द टूट जाता है
नग्म.ए - शौक[१५] मर नही सकता
मौत का सर्द[१६] और जालिम हाथ
उसको खामोश कर नही सकता

उसकी मानूस[१७] नासुबूर[१८] निगाह
कल्व[१९] को अब भी गुदगुदाती है
ऐसा महसूस[२०] हो रहा है मुझे
उसकी आवाज़ अब भी आती है

सरोजनी नाइडू

कैफी आजमी

अज़ीज़[१] मा, मिरी हंसमुख, मिरी बहादुर मा
तमाम जौहरे - फितरत[२] जगा दिये तूने
महब्बत अपने चमन से, गुलो से, खारो से
महब्बतो के खज़ाने लुटा दिये तूने

बना बना के मिटाये गये नकूशे-अमल[३]
तिरे बगैर मुकम्मल न हो सकी तस्वीर
वह ख्वाब झासी की रानी को जिसने चौंकाया
तिरा जिहादे - मुसलसल[४] उसी की है ताबीर[५]

इसे हयात का सोला सिंगार कहते हैं
तिरी जबी[६] पे हैं कुछ सिलवटें भी टीका भी
नज़र मे जज्बे - यकी,[७] दिल मे सोज़े-आज़ादी[८]
दहकता फूल भी है तू, महकता शोला भी

१५ शोक का गीत, १६ ठडा, १७ जानी-पहचानी, १८ आतुर, १९ दिल, २० अनुभव ।

सरोजनी नाइडू

१ प्यारी, २ प्रकृति के जौहर, ३. अमल के चिह्न, ४ निरतर धर्मयुद्ध, ५ स्वप्न-फल, ६. ललाट, ७. विश्वास की भावना, ८ आज़ादी की जलन ।

जरा ज़मीन को महवर[९] पे घूम लेने दे
समाज तुझसे तिरा सोज़ो-साज़ मांगेगी
जमाल[१०] सीखेगा ख़ुद एतमादिया[११] तुझसे
हयाते-नौ[१२] तिरे दिल का गुदाज़ मांगेगी

यादे-क़िदवाई

तिलोकचन्द महरूम

मज़िल को हम रवा थे बसद शौक और 'रफी'
हिम्मतफज़ाए-काफलःए-रहनवर्द[१] था

हर मरहले[२] को उसने तदब्बुर[३] से तै किया
जुरअत[४] मे बेमिसाल, जिहानत[५] मे फर्द[६] था

जो मुश्किल आई सामने ठुकरा दिया उसे
हर सगे-राह[७] एक ही ठोकर मे गर्द[८] था

अय आह ! उसका काम उसी ने किया तमाम
अहले-वतन के वास्ते जो दिल मे दर्द था

हिन्दोस्ता मे कौन है अब उसका जानशी
"हक मगफ़िरत[९] करे अजब आज़ाद मर्द था"

९. धुरी, १० सौंदर्य, ११ आत्म-विश्वास, १२ नया जीवन।

यादे-किदवाई

१ काफले की हिम्मत बढाने वाला और रास्ता दिखाने वाला, २ समस्या, ३. बुद्धिमानी, ४ साहस, ५ बुद्धिमानी, ६ व्यक्ति, ७ रास्ते का पत्थर, ८ धूल, ९ मुक्ति।

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

परवेज शाहिदी

कौन उभरा मश्रिके - हस्ती[1] से मिस्ले - आफ्ताब[2]
ज़र्रे ज़र्रे पर छिंडकता रौशनिए - इकि़लाब[3]

अज़्मे - रासिख़[4] दिल मे कश्ती पै ब पै खेता हुआ
सर मे सौदाए - वतन अगडाइया लेता हुआ

जिह्ने - रौशन की सुनहरी आतिशी चिगारिया
अपनी सासो मे लिए मुस्तक्बिले - हिन्दोस्ता[5]

आंख, आखो से खिराजे - रौशनी[6] लेती हुई
आग दिल की, चेहर.ए - रौशन पे लौ देती हुई

आख के रगीन डोरो मे मचलता इकि़लाब
जुम्बिशे - मिज़गा[7] से गिर गिर के समलता इकिलाब

जगमगाती थरथराती सुर्ख़ कानो की लवें
दिल की जिन्दा धड़कनो का जैसे अफसाना कहें

नुत्क़[8] के साचे मे सहरे - सामरी[9] ढलता हुआ
पर्द.ए - अल्फ़ाज[10] मे इक तूर[11] सा जलता हुआ

जुम्बिशे - लब[12] हुर्रियत[13] के शोले भडकाती हुई
सुब्हे - आजादी जबी[14] पर रक्स फ़रमाती हुई

शोल ए - गुफ्तार[15] परचम बनके लहराता हुआ
जल्वःए - किरदारे - माहो - ख़ुर[16] को शर्माता हुआ

१ हस्ती का पूर्व, २. सूर्य की तरह, ३ क्राति का प्रकाश, ४. दृढ सकल्प, ५. हिन्दुस्तान का भविष्य, ६ प्रकाश का लगान, ७ पलक का झपकना, ८ वाणी, ९ जादू, १०. शब्दो के पर्दे मे, ११ एक पहाड, जहा हज़रत मूसा को खुदा की तजल्ली दिखाई दी थी, १२ होठो की हरकत, १३ आज़ादी, १४ ललाट, १५ बातचीत की ज्वाला, १६ चाद-सूरज के चरित्र का जल्वा।

नूर दिल का सुब्हे-रौशन की खबर देता हुआ
दीदाहाए-कोर[१७] को जौके-नज़र[१८] देता हुआ

पैकरे-बेरूह[१९] मे इक रूह सी भरता हुआ
हर नफ़स कौमे हज़ी[२०] को ताज़ादम करता हुआ

शोल:ए-सोज़े-यकी,[२१] आफ़त पे आफत झेलता
इख्तिलाफाते-ज़बू[२२] की आधियो से खेलता

नाज़िशे-खुद एतमादी[२३] रक्स फ़रमाती हुई
इस्तिक़ामत[२४] को तलव्वुन[२५] पर हसी आती हुई

इल्मो-हिकमत[२६] को गुरूरे-नौजवानी[२७] बख्शता
कुलज़ुमे-अफ्कार[२८] को हुस्ने-रवानी[२९] बख्शता

नब्ज़े-मुस्तक्बिल[३०] पे अपनी उगलिय रक्खे हुए
ज़िहन मे जैसे नया हिन्दोस्ता रक्खे हुए

ताज़गी सहने-गुलिस्ता[३१] की कली के रूप मे
खुद हकीक़त[३२] जल्वाफरमा आदमी के रूप मे

बूढ़ा मांझी*

आनन्दनारायण मुल्ला

माझियो! साथियो! अय मेरे रफ़ीको! यारो
अय जवासाल मिरे हमसफरो!
मुझको धारे से हटाने की यह कोशिश न करो

* हिन्द-चीन जग के दौरान अन्दरूनी तौर पर ऐसी साज़िश भी की जा रही थी कि नेहरू को हटा दिया जाये जो ज़ाहिर है कामियाब न हो सकी, न हो सकती थी। यह नज्म उसी साज़िश के पसमज़र मे है।

१७ अधे की आखें, १८ नज़र का ज़ौक, १९ निर्जीव शरीर, २० दुखी राष्ट्र, २१ विश्वास की जलन का शोला, २२ दयनीय विरोध, २३ आत्मविश्वास का गर्व, २४ दृढ़ता, २५ चपलता, चचलता, २६ ज्ञान, २७ नौजवानी का घमण्ड, २८ चिन्तन की नदी, २९ प्रवाह का सौंदर्य, ३० भविष्य की नाडी, ३१ उपवन का आगन, ३२ सच्चाई।

साल्हासाल हुए मैं भी तुम्हारी ही तरह
अपनी किरनो से उजाली हुई कश्ती लेकर
दामने-मौज को देता हुआ चादी की लकीर
एक उठते हुए सूरज की तरह आया था
चादरे-आब[१] पे चलती थी मिरी कश्ती यूँ
फर्शे-मखमल पे कदम जैसे धरे
नाज से कोई हसी रक्कासा[२]
सीन ए-बहर[३] पे जिस तरह खिले नूर[४] का फूल
मेरी सासो मे थी खुशबुए-नसीमे-सहरी[५]
मेरे सीने मे फरोजा थे उमीदो के चराग
मेरे हर कतर ए-खू[६] मे थी सितारो की तडप
मेरी नजरो मे थे कुछ कौसे-कुज़ह[७] रगे-उफक
और आगोशे-उफक[८] मे कुछ दूर
रंगो-निकहत[९] के वह पुरकैफ[१०] जजीरे[११] थे जहा
सीपी और मूगे की खुशरंग गुफाओ के करीब
बेहिजाबाना[१२] फकत ओढ के इक चादरे-माह[१३]
सो रही थी मिरे ख्वाबो की हसी जलपरिया
और जहा से मिरी दुनियाए-तमन्ना[१४] की तरफ
जगमगाती हुई इक काहकशा[१५] जाती थी
और वह रोज है और आज का रोज
मेरी नज़रो मे जजीरें हैं वही
मेरे सीने मे है उम्मीद वही, अज़्म[१६] वही
कितने साथी मिरे इस राह मे मुझसे छूटे
कितने शल[१७] होके मिरे साथ सफर कर न सके
कितने गर्काब[१८] हुए
कितने किनारे से लगे
मैं मगर फिर भी उफक ही पे जमाये नज़रें
उसी जानिब हूं रवा

१ पानी की चादर, २. नर्तकी, ३ समुद्र का सीना, ४ प्रकाश, ५ प्रात-समीर की सुगध, ६ खून की बूद, ७ इन्द्र-धनुष, ८ क्षितिज की गोद, ९ रग और सुगध, १० मस्त, ११. द्वीप, १२ निस्सकोच, १३ चाद की चादर, १४ अरमानो की दुनिया, १५ आकाश-गगा, १६ सकल्प, १७ थककर, १८ डूबा हुआ, जलमग्न ।

ग्रौर ग्रब मुझको यह लगता है कि जैसे मैं हू
ग्रपने बेडे की ग्रकेली कश्ती
ग्रपनी कश्ती का ग्रकेला माझी
ग्रौर उन सालों मे जो बीत गए
जब भी तूफानो ने चाहा मिरा रस्ता रोकें
मिरी ज़रबो[19] ने किया सीन ए-तूफा[20] को दोनीम[21]
ग्रौर मौजो पे रवा यु था सफीना मेरा
जैसे शाही[22] की फजा मे परवाज़[23]
जैसे सीनो मे नहगो[24] के उतरता है मिरा खजरे-तेज़
उफ़के[25] शर्क से लेकर उफके-गर्ब[26] तलक
हुक्मरानी[27] थी मिरी, मैं था ग्रमीरे-कुलजुम[28]
मैंने इस बहर[29] की हर मौज के सीने पे की सब्त[30]
ग्रपने पतवार की मुहर
कतरे[31] कतरे ने बजाया मिरा डंका हर सू
ग्रौर मिरे वोल बने बहर के गीत
कोई ग्राधी कभी गुल कर न सकी मेरी निगाहो के चराग
छीन पाई कोई बिजली न कभी
मेरे होठो से तबस्सुम मेरा
ग्रौर किसी शोरिशें-तूफा[32] के दबाये न दबी
मेरी गूजी हुई ललकार की लै—

ग्रौर ग्रब फिर है उफक तीरा-ग्रो-तार[33]
इक नयी ग्रौर भयानक सी उठी है ग्राधी
जिस से डर है कि न बुझ जाये हर इक नज्मे-फलक[34]
ग्रौर हर सम्त ग्रन्धेरा ही ग्रन्धेरा छा जाये
ग्राज इन ताजा बलाग्रो[35] के खिलाफ
तुम समझते हो कि ग्रब मुझमे वह ताकत न रही
इस उमडती हुई ग्राधी से जो टक्कर लेकर
खे के ले जाऊ सफीने को किसी मामन[36] मे

१६. चोटो, २०. तूफान का सीना, २१ दो टुकडे, २२ वाज, २३ उडान, २४ मगरमच्छ घड़ियाल, २५ पूर्व का क्षितिज, २६ पश्चिम का क्षितिज, २७ राज्य, शासन, २८ कुलज़ुम का सरदार, २६. समुद्र, ३०. ग्र कित, ३१. बूंद, ३२ तूफान की वगावत, ३३ ग्र धकारमय, ३४. ग्राकाश के तारे, ३५ विपत्तिया, ३६ रक्षा-स्थान ।

और तबाही से बचा लू इसको
मेरे नादान रफीको ! यारो
इतना कमजोर न जानो मुझको
यह तो सच है कि मैं बूढा हू, जवासाल नही
अब बहुत दूर नही मजिले-आखिर मेरी
और कानो मे मिरे
तेज से तेजतर आती हैं समन्दर की पुकार
फिर भी रखता हू वही हौसला-ओ-अज्म[३७] अभी
मेरे बाजू मे सकत[३८] है, मिरी कश्ती मे है दम
और बफरे हुए गर्दाबो[३९] के जख्मी सीने
खूचका[४०] हैं मिरे पतवार के वारो से अभी
आज तक मैं किसी तूफान से हारा तो नही
डर के ढूढा कभी गैरो का सहारा तो नही
कभी घबरा के किनारे को पुकारा तो नही
और इस साअते-नाजुक[४१] मे भी
अपनी कश्ती किसी साहिल के हवाले तो न की
अपने उडते हुए परचम को उतारा तो नही
और ताकत के खुदाओ की गुलामी तो न की
मेरी गैरत को गवारा यह नही
मौत मजूर मगर यह मुझे मजूर नही
किसी साहिल के पसेपुश्त[४२] छुपू
किसी चौखट पे जबी[४३] घिस के तलबगारे-अमा[४४] बन जाऊं
अपने गीतो को भुलाकर किसी आका[४५] की ज़बा बन जाऊं
जब तलक दम मे है दम मुझसे यह होगा न कभी
छोड दू अपने वह ख्वाबो के जजीरे, वह उफक
और सफीने का किसी और तरफ रुख फेरू
दो तरीके हैं हर आफत से निपटने के लिए
एक बुज़दिल के लिए एक बहादुर के लिए
लड के करता है इसे ज़ेर[४६] जो है मर्दे-जरी[४७]
छूट जाती है मगर हाथ से बुजदिल के सिपर[४८]

३७ हिम्मत और इरादा, ३८ शक्ति, ३९. भवर, ४० खून में डूबे हुए, ४१. कोमल घडी, ४२. पीछे, ४३ ललाट, ४४ शरण का इच्छुक, ४५ मालिक, ४६ पराजित, नीचे, ४७ शक्तिशाली मर्द, ४८ ढाल।

ग्रौर वह हो जाता है खतरे का शिकार
ग्राज तलक मैंने हर इक तूफा को
सीनःए-बहर से ललकारा है
एक मांझी के लिए
ग्रब्रो-बादो-महो-खुर्शीदो-कुवाकिब[४९] के सिवा
न कोई दोस्त न हमराज न साथी न ग्रज़ीज
इसकी कश्ती है फकत इसकी उरूस[५०]
ग्रौर तूफानो की बजती हुई सीटी, दाया
सीन ए-वहर है मा की ग्रागोश
ग्रौर इक रोज़ यही उसका मजार[५१]
ग्रय जवासाल मिरे सोहराबो !
मुझको मैंदा से हटाने की यह कोशिश न करो
वरना फिर माग के रुस्तम की तरह
मादरे-वहर[५२] से ग्रपनी वह पुरानी ताक़त
तुमसे ग्रामादःए-पैकार[५३] न हो जाऊ कही
ग्रौर तुम्हारे यह सफीने जिन्हे समझे हो तुम ग्राहन[५४] के जहाज़
मेरी इक फूक से सब कागज़ी नाव की तरह
मुन्तशिर[५५] होके न उड जायें कही

माझियो ! साथियो ! ग्रय मेरे रफीको ! यारो
ग्रय जवासाल मिरे हमसफ़रो !
मुझको धारे से हटाने की यह कोशिश न करो

दिलतंग न हो

रविश सिद्दीकी

न रहा तेग.ए-फ़रहाद[१] तो दिलतग न हो
हिम्मते - बाजु-ए-मज़दूर[२] ग्रभी बाकी है

४९ चाद, सूरज, तारे, हवा ग्रौर बादल, ५० दुल्हन, ५१ कब्र, ५२- समुद्र की माता, ५३ लडने के लिए तत्पर, ५४ लोहा, ५५ टुकडे-टुकडे ।

दिलतंग न हो

१ फरहाद का कुदाल, २ मजदूर की बाहो की हिम्मत ।

ज़ुल्फ़े-आशुफ़्तःए-गेती[3] भी सवर जायेगी
हमनफ़स इश्क की आशुफ्तासरी[4] बाकी है

क्यो हैं दरमान्द ए-हसरत[5] तिरे अश्को के चराग
हल्कःए - अंजुमने - नीमशबी[6] बाकी है

दिल हो बदार तो हैं शौक के पैगाम बहुत
सुबह बाकी है, नसीमे - सहरी[7] बाकी है

वादिए-इश्क[8] से जब बादे-सबा[9] आयेगी
दिले-नेहरू के धडकने की सदा आयेगी

जवाहरलाल नेहरू

साहिर लुधियानवी

जिस्म की मौत कोई मौत नही होती है
जिस्म मिट जाने से इसान नही मर जाते
धडकनें रुकने से अरमान नही मर जाते
सास थम जाने से एलान नही मर जाते
होठ जम जाने से फर्मान नही मर जाते
जिस्म की मौत कोई मौत नही होती है

वह जो हर दीन से मुनकिर था, हर इक धर्म से दूर
फिर भी हर दीन, हर इक धर्म का गमख्वार रहा
सारी कौमो के गुनाहो का कडा बोझ लिए
उम्र भर सूरते - ईसा[1] जो सरे - दार[2] रहा
जिसने इंसानो की तक़सीम[3] के सदमे झेले

३ धरती की बिखरी हुई लटें, ४ बेचैनी, व्याकुलता, ५ निराशा से निढाल, ६ आधी रात की अंजुमन का हलका, ७. प्रात -समीर, ८ इश्क की वादी, ९ हवा।

जवाहरलाल नेहरू

१ हज़रत ईसा की तरह,, २. फासी पर, ३. बटवारा।

फिर भी इन्सा की उखूवत[४] का परस्तार रहा
जिसकी नजरो मे था इक आलमी तहजीब[५] का ख्वाब
जिसका हर सास नये अहद का मेमार[६] रहा
जिसने जरदार मईशत[७] को गवारा[८] न किया
जिसको आईने - मुसावात[९] पे इस्रार[१०] रहा
उसके फर्मानो की, एलानो की ताजीम[११] करो
राख तकसीम की, अर्मान भी तकसीम करो

मौत और जीस्त[१२] के सगम पे परेशा क्यो हो
उसका बख्शा हुआ सहरग[१३] अलम लेके चलो
जो तुम्हे जाद.ए - मजिल[१४] का पता देता है
अपनी पेशानी पे वह नक्शे - कदम[१५] लेके चलो
दामने - वक्त पे अब खून के छीटे न पडें
एक मर्कज़[१६] की तरफ दैरो - हरम[१७] लेके चलो
हम मिटा डालेंगे सरमाया - ओ - मेहनत का तजाद[१८]
यह अक़ीदा, यह इरादा, यह कसम लेके चलो
वह जो हमराज रहा हाजिरो - मुस्तक्बिल[१९] का
उसके ख्वाबो की खुशी, रूह का गम लेके चलो

जिस्म की मौत कोई मौत नही होती है
जिस्म मिट जाने से इंसान नही मर जाते
धड़कनें रुकने से अर्मान नही मर जाते
सास थम जाने से एलान नही मर जाते
होठ जम जाने से फ़र्मान नही मर जाते
जिस्म की मौत कोई मौत नही होती है

४ बराबरी, ५ विश्व-सभ्यता, ६ निर्माता, ७ पूजीवादी व्यवस्था, ८ सहन, ९ बराबरी का विधान, १० आग्रह, ११ सम्मान, आदर, १२. जिन्दगी, १३ तिरगा, १४ मजिल का मार्ग, १५ पदचिन्ह, १६ केन्द्र, १७ मन्दिर, मस्जिद, १८ विरोधाभास, १९ वर्तमान और भविष्य।

नेहरू

मख़दूम मोहिउद्दीन

हज़ार रंग मिले, इक सुबू[1] की गर्दिश में
हज़ार पैरहन आये गये ज़माने में
मगर वह सन्दलो-गुल[2] का गुबार[3] मुश्ते-बहार[4]
हुआ है वादिए-जन्नत निशां में आवारा
अजल[5] के हाथ से छूटा हुआ हयात का तीर
वह शशजिहत[6] का असीर[7]
निकल गया है बहुत दूर जुस्तुजू[8] बनकर

मसीहा

कैफी आज़मी

मैंने तन्हा[1] कभी उसको देखा नहीं
फिर भी जब उसको देखा वह तन्हा मिला
जैसे सहरा में चश्मा[2] कहीं
या समन्दर में मीनारे-नूर[3]
या कोई फ़िक्र[4] औहाम[5] में
फ़िक्र सदियों अकेली अकेली रही
ज़िहन[6] सदियों अकेला अकेला मिला
और अकेला अकेला भटकता रहा
हर नये, हर पुराने ज़माने में वह

१ प्याला, जाम, २ चन्दन और गुलाब, ३ धूल, ४. बहार की रँगलियाँ, ५ मौत, ६ विभिन्न दिशाओं, ७ कैदी, ८- खोज।

मसीहा

१ अकेला, २ स्रोत, ३ प्रकाश का मीनार, ४ चिन्तन, ५. भ्रम, ६ दिमाग।

बेज़बा[७] तीरगी[८] मे कभी
और कभी चीखती धूप मे
चादनी मे कभी ख्वाब की
उसकी तकदीर थी इक मुसलसल[९] तलाश
खुद को ढूढा किया हर फसाने मे वह
जिन तकाज़ो ने उसको दिया था जनम
उनकी आगोश[१०] मे फिर समाया न वह
खून मे वेद गू जे हुए
और जबी[११] पर फरोज़ा अज़ा[१२]
और सीने पे रक्सा सलीब[१३]
बेझिझक सबके काबू मे आता गया
और किसी के भी काबू मे आया न वह
बोझ से अपने उसकी कमर झुक गयी
कद मगर और कुछ और बढता रहा
खैर-ओ-शर[१४] की कोई जग हो
ज़िन्दगी का हो कोई जिहाद[१५]
या कोई मारिका[१६] इश्क का
वह हमेशा हुआ सबसे पहले शहीद
सबसे पहले वह सूली पे चढता रहा
हाथ मे उसके क्या था जो देता हमे
सिर्फ एक कील उसी कील का इक निशां
नश ए-मै[१७] कोई चीज़ है
इक घडी, दो घडी, एक रात
और हासिल वही दर्दे-सर
उसने ज़िन्दा[१८] मे लेकिन पिया था जो ज़हर
उठके सीने पे बैठा न उसका धुआ

७ खामोश, ८ अधकार, ९ निरतर, १० गोद, ११ ललाट, १२ अज़ान, बांग, १३ क्रास, जिस पर हज़रत ईसा को लटकाया गया था, १४. नेकी और बदी, १५ धर्मयुद्ध, १६ मोर्चा, जग, १७ मदिरा का नशा, १८ जेल, कारागार।

ख़्वाबों का मसीहा

एजाज सिद्दीकी

ख़्वाब, जो एक मुदब्बिर[1] ने कभी देखे थे
ख़्वाब वह टूट गये
वह मुदब्बिर न रहा
वह मुदब्बिर, वह मुफक्किर,[2] वह सियासत का इमाम
जिसने की अपने तदव्वुर[3] की ज़िया[4] से रौशन
इक नयी सुबह, नयी लौहे-उफक,[5] इक नयी शाम
जोमे - खुर्शीद[6] को भी तोड गयी जिसकी किरन

जिसकी ताबिश[7] से सितारो की लवें थर्राईं
लम्स[8] से जिसके फरोज़ा हुई कन्दीले - सहर[9]
जुल्मतें[10] अपनी तगो-ताज़[11] से खुद घबराईं
उसने जब डाल दी मस्तूर[12] अंधेरो पे नज़र

ख़्वाब जो एक मसीहा ने कभी देखे थे
ख़्वाब वह टूट गये
वह मसीहा न रहा
वह मसीहा, वही ईसा नफसो-खिज्रे - हयात[13]
फूक दी जिसने नयी रूह तने-मुर्दा मे
जिसने दी मश्रिक को मग्रिब की गुलामी से निजात[14]
जिसने खुशियो को बिखेरा रहे-आज़ुर्दा[15] मे

जिसने ऐटम के खुदाओ के भी मुह फेर दिये
शोलःए - जग[16] को हर बार किया जिसने सर्द
जो चहकता ही रहा अम्न का पैगाम लिए
जिसने महसूस किया वाकई इसान का दर्द

१ राजनीतिज्ञ, २ चिंतक, ३ राजनीति, ४ चमक, ५ क्षितिज की तखनी, ६ सूर्य का घमड, ७ गर्मी, ८ छूना, ९ प्रात काल की कदील, १० अधकार, ११ दौड-धूप, १२. गुप्त, १३ जीवन की सांसो का आना-जाना १४ मुक्ति, १५ दुखो का मार्ग, १६ युद्ध की आग।

ख्वाब, इक मुहसिने-आजम[१७] ने जो देखे थे कभी
ख्वाब वह टूट गये
और वह मुहसिन न रहा
मुहसिने-कौमो-वतन,[१८] मर्जा-ए-तहज़ीबो-कमाल[१९]
चारासाजे - गमे - जा,[२०] मुल्क का मेमारे-अज़ीम[२१]
मर्दे - मैदाने - अमल,[२२] वाकिफे-मुस्तक्बिलो-हाल[२३]
जिसके अन्फास[२४] से फूटी थी अज़ाइम[२५] की शमीम[२६]

मजिलें जिसकी थी हर जाद ए-मंज़िल[२७] से अलग
जिसने काटो से किया प्यार, गुलो को चूमा
अपनी महफिल जो सजाता रहा, महफिल से अलग
जिसकी दिलसोज नवाओ[२८] से जमाना झूमा

ख्वाब, जो एक मुसव्विर ने कभी देखे थे
ख्वाब वह टूट गये
वह मुसव्विर न रहा
रंग भरता रहा जो कौम की तस्वीरों मे
रूहो - जज्बातो - खयालात[२९] की यकजिहती का
खूने - दिल जिसका छलकता रहा तकरीरो मे
एक ही रग अया जल्वःए - सदरग से था

कुछ मुरक्को[३०] मे धडकता हुआ जम्हूर का दिल
कुछ मुरक्को मे सिसकते हुए चेहरो का जमाल[३१]
कुछ मुरक्को मे बफरती हुई मौजे - साहिल[३२]
कुछ मुरक्को मे नये हिन्द की सनअत[३३] का कमाल

ख्वाब, इक रहनुमा ने जो कभी देखे थे
ख्वाब वह टूट गये
रहनुमा भी न रहा

१७ महान उपकारी, १८ राष्ट्र का उद्धार करने वाला, १९ सभ्यता और कमाल का शरण-स्थल, २०. दुख का इलाज करने वाला, २१ महान निर्माता, २२. अमल के मैदान का हीरो, २३ वर्तमान और भविष्य से परिचित, २४ साँसें, २५ संकल्प, २६. खुशबू, २७. मंजिल का रास्ता, २८. आवाज, गीत, २९ भावनाओ और विचारो की आत्मा, ३० चित्र, ३१ सौंदर्य, ३२. किनारे की मौज, ३३. उद्योग।

ऐसा रहवर कि जो हर पेचो-खमे-रह[३४] मे चला
न गमे - कज सफरा[३५] था न गमे - तन्हाई
जिसका हर लफ्ज़ था रहरो के लिए बांगे-दरा[३६]
ऐसा राही कि जो मजिल का शनासाई था.

तेश ए-फिक्र[३७] से राहो के जिगर को चीरा
दस्ते-पुर अज़्म[३८] से हमवार किया जादो[३९] को
लाख तूफान थे रस्ते मे मुखालिफ[४०] थी हवा
लेके चलता ही रहा खानमा वरवादो को

ख्वाब, इक ज़ौहरे - तावा ने जो देखे थे कभी
ख्वाब वह टूट गये
वह जवाहर न रहा
वह जवाहर कि जो चमका गया तकदीरे-वतन[४१]
इर्तिका[४२] का जो पयामी[४३] था नकीवे-तहज़ीब[४४]
वह जवाहर, जो वहर रग था तनवीरे-वतन[४५]
दी "नयेहिन्द" की तारीख उसी ने तर्तीव[४६]

जिसके सीने मे महकता ही रहा सुर्ख़ गुलाव
जिसकी आंखो मे मचलती रही सहवाए-उसूल[४७]
ज़िन्दगी जिसकी थी मुस्तक्विले-आलम[४८] की किताव
जिसके हर सफहे पे है फलसफ ए-रद्दो-कवूल[४९]

वह नये हिन्द का मेमार, नये दौर का ख्वाव
अपनी तावीर को इक जिन्दा हकीकत देकर
वन गया "आलमी तारीख" मे आप अपना जवाव
दावते - आश्ती - ओ - अम्नो - महव्वत[५०] देकर

ख्वाव टूटे हैं न टूटेंगे कभी दीवानो
ख्वाव तो रूकशे - तावीर[५१] हुआ करते हैं

३४ मार्ग के मोड, ३५ टेढे साथी, ३६ घटे की आवाज, ३७ चिन्तन की कुदाल, ३८ सकल्प से भरे हाथ, ३९ मार्ग, ४० विपरीत, ४१ देश का भाग्य, ४२ विकास, ४३. सदेशवाहक, ४४ सभ्यता का एलान करनेवाला, ४५ देश का प्रकाश, ४६ सपादित, ४७ उसूलों की मदिरा, ४८ समार का भविष्य, ४९. स्वीकार करने या ठुकराने का फ़लसफा, ५० प्यार, मुहव्वत और दोस्ती का निमत्रण, ५१ स्वप्नफल से शर्मिन्दा।

ख्वाब जिसने तुम्हे बख्शे हैं, उसे पहचानो
कस्र[५२] ख्वाबो ही से तामीर हुआ करते हैं
उसकी तक्लीद[५३] करो
उसकी ताजीम[५४] करो
उसकी ताईद[५५] करो
उसकी तकरीम[५६] करो
जिसने ख्वाबो के जजीरे[५७] मे हमे छोडा है
इक बडे सब्रशिकन वक्त पे मुह मोडा है

सुर्ख़ गुलाबों ने कहा

सलाम मछली शहरी

गुफ्तुगू है आपस मे अहमरी[१] गुलाबो की
हम सहर[२] है नेहरू के ताबनाक ख्वावो[३] की

किस खुलूसे-शफकत[४] और किस कदर करीने से
वह लगाये रहते थे, हमको अपने सीने से

चाहता था क्या दिल का साज, हम समझते हैं
उनके ख्वाबे - जरीं[५] का राज़ हम समझते है

इक इरम[६] सजाते थे वह हमारी खुशबू से
हम करीब रहते थे ख्वावहाए-नेहरू[७] से

उनके ख्वाब का हासिल, इक हसीन दुनिया थी
महफिले - वहारा थी, वज्मे - शेरो-नग्मा थी

५२. महल, ५३. पीछे चलना, ५४ इज्जत, ५५ समर्थन, ५६ आदर, ५७ टापू।

सुर्ख गुलावो ने कहा

१. लाल, २ प्रभात, ३ चमकदार स्वप्न, ४ दया की निष्ठा, ५ सुनहरा स्वप्न, ६. स्वर्ग, ७. पडित नेहरू के स्वप्न।

उनके फिक्र की वुसअत[८], उनके दिल की अज्मत[९] है
हम उन्ही के ख्वाबो का अक्से-नूरो-निकहत[१०] हैं

हम तो यह समझते हैं अब नयी सहर होगी
और यह सहर बेशक जन्नते-नज़र होगी

अब मिलेगी इक ताबीर उनके दिल के ख्वाबो की
और अवाम समझेंगे बात हम गुलाबो की

जवाहर ज्योति

रिफअत सरोश

मशअले - अम्नो - महब्बत है जवाहर ज्योती
इसकी लौ है कि तबस्सुम है लबे-नेहरू[१] का
इसकी लौ है कि महब्बत का अमर नग़मा है
इसकी लौ है कि तकल्लुम[२] है लबे-नेहरू का

यह जवाहर की अमर जोत है या मशअले-नूर[३]
मशअले-नूर है या एक तरो - ताजा गुलाब
हा यही फूल है पैगामे - महब्बत का अमी[४]
हा यही शोला है गुलशन मे निहाले-शादाब[५]

नौजवानो की उमंगो का यह रक्सा[६] शोला
आलमी अम्न की ज्योती है गज़लख्वा[७] जिसमे
आधिया लाख चलें फिर भी नही बुझ सकता
नूरे-मुस्तक़्बिले-इसा[८] है, पर अफशा[९] जिसमे

८. फैलाव, ९ महानता, १० प्रकाश और सुगंध का प्रतिबिंब ।

जवाहर ज्योति

१ नेहरू के होंठ, २ बातचीत, ३ प्रकाश की मशाल, ४. अमानतदार, ५. हरा-भरा दरख्त, ६ नृत्य करती हुई, ७ ग़ज़ल गाती हुई, ८ इसान के भविष्य का प्रकाश, ९. छुपा हुआ ।

यह जवाहर की अमर जोत ही वह सूरज है
जिसकी किस्मत मे है हर लम्हा दरख्शा[10] रहना
दिन हो या रात इसी शान इसी अज्मत[11] से
जागना और जमाने का निगहबां रहना

नेहरू की वसीयत

अख्तर असारी

मैंने इस देश के ख्वाबो से महब्बत की है
आरजूओ के जुलूसो की कियादत[1] की है
मसलके-जहदो-कशाकश[2] की हिमायत की है
केशे-तख्लीके-मकासिद[3] की इशाअत[4] की है
ख्वाबे-फर्दा[5] के तसव्वुर[6] की इबादत[7] की है

कोई दुनिया मे है जन्नत के सराबो[8] पे निसार
कोई कुदरत के पुर असरार[9] हिजाबो[10] पे निसार
कोई मैखान ए-उल्फत की शराबो पे निसार
चश्मे-पुरखश्म[11] के रगीन इताबो[12] पें निसार
हम रहे हुर्रियते-मुल्क[13] के ख्वाबो पे निसार

आह यह दश्तो-जबल,[14] यह चमन खुल्दसवाद[15]
वादिए-गगो-जमन, खित्त ए - फिर्दौस नजाद[16]
जिन बहारो से रहा मेरा तखैयुल[17] आबाद
ता अबद[18] उनकी महब्बत मे रहूगा दिलशाद
होके बरबाद भी मैं हो नही सकता बरबाद

१० चमकदार, ११. महानता ।

नेहरू की वसीयत

१. नेतृत्व, २ सघर्ष का मार्ग, ३ उद्देश्य की सृष्टि का धर्म, ४ प्रकाशन, ५. कल की नींद, ६. कल्पना, ७ आराधना, ८. मरीचिका, ९ रहस्यमय, १० शर्म, सकोच, ११ क्रोधभरी आख, १२. कोप, १३ देश की आजादी, १४ जगल और पहाड, १५ स्थायी रहने वाला स्वर्ग, १६. नजाद की जन्नत का भाग, १७ कल्पना, १८ अनतकाल तक ।

श्रौर यह हिन्द के सीने पे मचलती गगा
नब्ज़े-हस्सास[१९] के मानिन्द उछलती गंगा
कभी तूफा कभी सैलाब[२०] उगलती गंगा
कभी सिमटी हुई बच बच के निकलती गगा
हर नयी रुत मे नया रंग बदलती गगा

जिसको मैंने कभी इठलाते हुए देखा है
इक श्रजब नाज़ से लहराते हुए देखा है
श्रौर कभी गैज़[२१] से थर्राते हुए देखा है
श्रालमे-कहर[२२] मे बल खाते हुए देखा है
खास श्रदा से कभी सुस्ताते हुए देखा है

इसको तहज़ीबे-मुसलसल[२३] की श्रलामत[२४] कहिये
इक कुहनसाल[२५] तमद्दुन[२६] की रिवायत[२७] कहिये
दामने-हाल[२८] मे माज़ी[२९] की श्रमानत कहिये
रम्ज़े-गीराईए-तारीखो-सिकाफत[३०] कहिये
जिसपे तशरीह[३१] फिदा हो वह इशारत[३२] कहिये

श्रारज़ू है इसी मीरास मे खो जाऊ मैं
इन्ही श्रम्वाज[३३] की श्रागोश मे सो जाऊ मैं
जानो-दिल को इन्ही लहरो मे समो जाऊ मैं
कश्तिए-उम्र[३४] यही श्रपनी डुबो जाऊ मैं
ज़ुज्वे-खाके-वतन[३५] इस तौर से हो जाऊ मैं

मेरी मिट्टी सिफते-बाद[३६] उडा दी जाये
हिन्द की श्रर्ज़े-मुकद्दस[३७] पे लुटा दी जाये
देस की खाक के ज़र्रों मे मिला दी जाये
लहलहाते हुए खेतो मे सुला दी जाये
श्रौर जो बच रहे गगा मे बहा दी जाये

१९ भावुक नाड़ी, २० बाढ, २१ क्रोध, २२ क्रोध की दशा, २३ सभ्यता, २४ लक्षण, २५ पुराना, २६ सस्कृति, २७ परम्परा, २८ वर्तमान का दामन, २९ भूतकाल, ३० सभ्यता श्रौर इतिहास के फैलाव का प्रतीक, ३१ विवरण, ३२ इशारा करना, ३३. मौजें, ३४ उम्र की नाव, ३५ देश की धूल का श्रग, ३६ हवा की तरह, ३७ पवित्र धरती।

सन्दल-ओ-गुलाब की राख

अली सरदार जाफरी

मेरे वतन की जमी के उदास आचल मे
न आज रग न खुशबू, भरी हुई है धूल

खबर नही कि है किस दिलजले की राख जिसे
झुका के सर को पहाडो ने भी किया है कुबूल

सुना है जिसकी चिता से यह खाक आई है
वह फस्ले-गुल[1] का पयम्बर[2] था अहदे-नौ[3] का रसूल

उसे खबर थी खिज़ा[4] किस चमन मे सोती है
वह जानता था कि क्या है बहार का मामूल[5]

सिखाया कशमकशे-जंगो-अम्न[6] मे उसने
जराहतो[7] को चमन बन्दिए-जहा[8] का उसूल

उन्ही दिलो मे महब्बत की क्यारिया बोई
उगे हुए थे जहा सिर्फ नफरतो के बबूल

अता[9] हुई थी उसे रोजो-शब की बेताबी
वह उसकी जुरअते-रिन्दाना,[10] उसका शौके-फुजूल[11]

जो आज मौत के दामन मे इक सितारा है
वह जिन्दगी के गरीबा मे था गुलाब का फूल

वफा का जिक्र ही क्या, उसकी बेवफाई ने
खिराजे-इश्को-महब्बत[12] किया है हमसे वसूल

वह बिरहमन कि जिसे मस्जिदो ने प्यार किया
वह बुतशिकन कि जो बज्मे-बुतां[13] मे था मकबूल[14]

१ बहार का मौसम, २ सदेशवाहक, खुदा का प्रतिनिधि, ३. नवयुग, ४ पतझड़, ५ नियम, ६ शाति और युद्ध का सघर्ष, ७ जख्म, ८ दुनिया के बाग को सजाने का, ९ प्रदान, १० बहादुरी, ११ असीम शौक, १२ प्रेम की श्रद्धा, १३ सुदरियो की महफिल, १४. लोकप्रिय।

वह जिस्म आज है जो सन्दलो-गुलाब की राख
वतन की खाक के सज्दो मे अब भी है मशगूल[१५]

उतर रहा है कुछ इस तरह अपनी धरती पर
कि आस्मान से जिस तरह रहमतो का नजूल[१६]

अब उसके फैज़ से वजर भी लहलहायेंगे
खिलेंगे खारे-बयाबा[१७] से भी बहार के फूल

अमानते-ग़म

(लालबहादुर शास्त्री की मौत पर)

अली सरदार जाफरी

वह जब तलक था, उफक पर हमे खयाल न था
कि रौशनी की किरण भी है इस अधेरे मे
यह नफरतो का अधेरा जो दिल का दुश्मन है

हज़ारो लाखो सितारे तुलूअ[१] होते हैं
सियाह[२] रात के सीने पे तैरने के लिए
और उसके बाद वह सैलावे-सुवह[३] मे जाकर
जो डूबते हैं तो उनका पता नही चलता
मगर यह नन्हा सितारा, यह नूर का नुक्ता[४]
जो दिलफिगार भी था और बेकरार भी था
गुरूब[५] होके जो चमका तो आफ्ताब[६] बना
गरीबो-आजिज़ो-मिस्कीनो-बेज़रो-नादार[७]
वह इकिसार[८] मे डूबा खुलूस[९] का पैकर[१०]

१५ व्यस्त, १६ अवतरण, उतरना, १७ जगल के काटे।

अमानते-ग़म

१ उदय, २ अधेरी, ३ सुवह की बाढ, ४. बिन्दु, ५ अस्त, ६ सूर्य, ७ दरिद्र, विनम्र और मजबूर, ८ विनम्रता, ९ निष्ठा, १० आकृति।

जिसे मिली थी शराफत दुखे हुए दिल की
न जाहो - हश्मते - हाकिम[11] न दौलते - दुनिया
अता हुआ था उसे सिर्फ मुफलिसी[12] का गुरूर
वह एक अश्क का कतरा[13] था, उसका सरमाया

बस एक दर्दे - महब्बत, बस एक दौलते - गम
और उसका आखरी तुहफा अमानते - गम है
यह बार उठेगा इसी इज्जो - इकिसार[14] के साथ

अमानते - गमे - इन्सा,[15] अमानते - गमे-दिल[16]
यह इक चराग है कन्दीले - महरो - मह[17] की तरह
जो यह न हो तो ज़माने मे रौशनी क्यो हो

यह एक फूल है जो ज़ख्म के गुलिस्ता मे
खिला, नहाया, शहीदो के खू की बारिश मे
नहाया ख्वाहिशे - अम्नो - अमा की शबनम मे

यह ताशकन्द के सीने का सुर्ख फूल भी है
इसी को कहते हैं लाहौर की जबी का गुलाब
महक रहा है जो दिल्ली के अब गरीबा मे

उठो कि जश्ने - दिलो - जा[18] मनाया जायेगा
हर इक चमन मे यही गुल खिलाया जायेगा
यह गुल जो दर्दे - महब्बत, अमानते - गम है
यह गुल जो शोख भी, खू गश्ता[19] भी, मलूल[20] भी है
खुदाए - इश्क भी है, अम्न का रसूल भी है

११. शान-शौकत, १२ दरिद्रता, १३ बूद, १४. विनम्रता, १५ इसान के ग़म की अमानत, १६. दिल के ग़म की अमानत, १७ चाद-सूरज, १८ दिल और जान का समारोह, १९. खून मे डूबा हुआ, २०. उदास ।

ज़ाकिर हुसैन

कुवर महेन्द्रसिंह वेदी 'सहर'

तेरी फितरत[१] मे है गोविन्द का ईसार[२] मगर
इब्ने-मरियम[३] का मुकल्लिद[४] तिरा किरदार, मगर
राम और कृष्ण के जीवन से तुझे प्यार मगर
बाद ए - हुब्बे - महम्मद[५] से भी सरशार मगर

सिख न ईसाई, न हिन्दू न मुसलमान है तू
तेरा ईमान यह कहता है कि इंसान है तू

हिन्दुओ से तुझे लेना है जिहानत[६] का कमाल
और सिक्खो से शुजाअत[७] कि न हो जिसकी मिसाल
अहले-इस्लाम से लेना है इबादत का जलाल[८]
और ईसाइयो से सब्र, लगन, इस्तकलाल[९]

इन अनासिर[१०] को महब्बत से मिलाना होगा
किश्वरे - हिन्द का इंसान बनाना होगा

मन के मन्दिर को मुनव्वर[११] करे नूरे-इस्लाम[१२]
काबःए - दिल[१३] मे शामो - सहर राम का नाम
कभी गगा कभी कौसर से मिलें जाम पे जाम
यू बनें शीरो - शकर[१४] तेरी हुकूमत मे अवाम

राम हो और, रहीम और न होने पाये
अब कोई बच्चा यतीम और न होने पाये

तुझसे उम्मीद यह है मुल्क मे इफ्लास[१५] न हो
तंगदस्ती न नज़र आये कही यास[१६] न हो

१ प्रकृति, २ क़ुर्बानी, ३ हजरत ईसा, ४ अनुयायी, ५ महम्मद की मुहब्बत की मदिरा, ६ प्रतिभा, ७ बहादुरी, ८ प्रताप, ९ स्थिरता, १० तत्त्व, ११ प्रकाशमान, १२ इस्लाम का प्रकाश, १३ दिल का काबा, १४ दूध और शक्कर, १५ गरीबी, १६ निराशा।

अलमो - रंज का, दुखदर्द का एहसास न हो
और तअस्सुब[१७] की किसी कौम मे बू बास न हो

असरे - अम्नशिकन[१८] को तहो-बाला[१९] कर दे
तू जो आया है तो दुनिया मे उजाला कर दे

रौशन चेहरे

(डाक्टर जाकिर हुसैन की मृत्यु से प्रभावित होकर)

फसीह अकमल क़ादरी

वक्त के साये मे जो लम्हे[१] जवां होते है
उम्रे - बेमाया[२] के एहसास से ढल जाते हैं
बाज़ लम्हे मगर ऐसे भी हुआ करते है
जिन से सदियो के मिटे नक्श उभर आते हैं

यह वह लम्हे हैं जो तारीख[३] के औराक[४] मे भी
जीनते - अस्रे - गरामाया[५] कहे जाते हैं
यही लम्हात है माज़ी[६] के दरख्शा महताव[७]
इन्ही लम्हात से आईने चमक पाते हैं

यही लम्हात जो आगोशकुशा[८] होते हैं
आदमी को हदे - इम्का[९] मे कहा रखते हैं
यही लम्हात जो देते हैं नफस[१०] को एहसास[११]
फिक्रे - इसा[१२] को हकाइक[१३] से गरा[१४] रखते हैं

१७ भेदभाव, १८ शाति भग करने वाला तत्त्व, १९ नष्ट-भ्रष्ट।

रौशन चेहरे

१ क्षण, २ दरिद्र आयु, ३. इतिहास, ४. पृष्ठ, ५ बहुमूल्य समय की शोभा, ६ भूतकाल, ७ चाद, ८ हाथ फैलाये हुए (गोद मे लेने के लिए), ९ सभावना की सीमा, १० सास, ११ अनुभूति, १२ इसान की चेतना, १३. सच्चाई, १४ महगा।

यह गरांवारिए-एहसास[१५] यह तखईले-हयात[१६]
हर नये मोड पे तामीर मे ढल जाती है
परे - परवाज़े - मलाइक[१७] न जहा तक पहुचे
ऐसे संगीन इरादो मे वदल जाती है

इन्ही संगीन इरादो का उजाला लेकर
मज़िले - जहदो - अमल[१८] मे जो क़दम रखता है
इक धनक[१९] टूट के राहो मे विखर जाती है
एक सूरज है जो क़दमो का भरम रखता है

यह धनक नस्ल की तामीर[२०] मे काम आती है
रंग सीनो मे उतरते है उजाले वनकर
जादुए - तीरगिए - शव[२१] नही चलता उस दम
रोशनी रक्स कुना[२२] रहती है हाले वनकर

यही हाले कई चेहरो पे ठहर जाते है
और हर चेहरे को खुर्शीद कहा जाता है
कही आज़ादो - जवाहर कही ज़ाकिर उनको
जाहिरी लफ्ज़ो मे इक नाम दिया जाता है

नाम का फर्क कोई फर्क नही होता है
मसलिहत[२३] ऐसे कई खोल वना देती है
कोई सूरज भी किसी खोल मे छुप सकता है
गर्द क्या चाद के चेहरे को छुपा सकती है

ज़िन्दगी एक हक़ीकत[२४] है मगर सोचता हूं
ख्वाव वेदारी[२५] पे छा जाये यह नामुम्किन है
मौत तो चेहरो का कजला ही दिया करती है
मौत इन चेहरो को कजलाय यह नामुम्किन है

● ●

१५ एहसास की कठिनाई, १६ जीवन की कल्पना, १७ फरिश्तो के पर, १८ सघर्ष और अमन की मज़िल, १९ इद्र-धनुष, २० निर्माण, २१ रात के अधेरे का जादू, २२. नाचती हुई, २३ समझ-बूझ, २४ सच्चाई, २५ नींद ।